𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒦𑒰𑒭𑒰 𑒥𑒱𑒠𑓂𑒨𑒼𑒞𑒢

𑒠𑒲𑒢𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒗𑒰

एहि ग्रन्थक विषयमे

प्राच्य विद्याक प्रकाण्ड पण्डित डा. आर. एल. टर्नर लिखैत छथि :

अपनेक *मिथिलाभाषाविद्योतन* पाबि प्रसन्न भेलहुँ । एहि सुन्दर अथच कठिन भाषाक परिचय हमरा अपन वयोवृद्ध गुरु जार्ज ग्रिअर्सन साहेबक ग्रन्थसभसँ भेल। ओ एहि भाषाक जटिलताकेँ, खास कए धातुरूपावलीसम्बन्धी जटिलताकेँ सोझरएबाक स्तुत्य प्रयास कएने छलाह; तथापि बहुत अंश अवशिष्ट रहि गेल छलनि। मैथिली भाषाक सौभाग्यवश अपने एहि क्षेत्रमे अवतीर्ण भेलहुँ ओ···· ओहि अवशिष्ट अंशकेँ बहुत मात्रामे पूर्ण कए देलहुँ ।

विश्वविख्यात भाषाविद् डा. सुनीति कुमार चटर्जी कहैत छथि :

मैथिलीमे आइ धरि प्रकाशित समस्त व्याकरणमध्य ई सर्वाङ्गोपाङ्ग आ परिपूर्ण अछि। यद्यपि ग्रन्थकार सूत्र-पद्धति अपनाए संस्कृतक प्रति श्रद्धा प्रकाश कएलनि अछि तथापि हम एहि ग्रन्थमे संस्कृतसँ नितान्त भिन्न मैथिलीक जे किछु विलक्षणता छैक से स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित पबैत छी ।···· आधुनिक मैथिलीक क्रियापदमे जे सर्वनामयोग देखल जाइत अछि तकर एहिमे पूर्ण विश्लेषण कएल गेल अछि।···· ई व्याकरण एक एहन महापण्डितक रचना बूझि पड़ैत अछि जे ·· अपन मातृभाषाक अङ्ग-प्रत्यङ्गक मर्मज्ञ होथि ओ बुद्धिमत्तापूर्वक ओकर वर्णन करबामे प्रवृत्त होथि।

मिथिलाभाषाविद्योतन

मैथिली भाषाक व्याकरण

महावैयाकरण

श्रीदीनबन्धु झा

सम्पादक

गोविन्द झा

Published with financial assistance from the Government of India, Department of Education, vide sanction No. F. 5- 86/ 92– D. I. (L) Dt. 18.3.93. Copy right vests with Govinda Jha.

प्रकाशक :

गोविन्द झा

9, पूर्वी पटेल नगर

पटना 800 023

प्रथम संस्करण 1946 इ.

द्वितीय संस्करण 1993 इ.

1100 प्रति

मूल्य 250/-

मुद्रक :

शान्ति प्रिंटर्स

नया टोला, पटना

ग्रन्थकार

महावैयाकरण दीनबन्धु झा



जन्म १८७८ निधन १९५५

प्रथम संस्करणक प्रकाशकीय वक्तव्य

अत्यन्त हर्षक विषय थीक जे महावैयाकरण श्रीदीनबन्धुझा-विरचित मिथिलाभाषा-विद्योतन नामक मिथिलाभाषाक ई व्याकरण आइ सम्पूर्ण छपि विद्वन्मण्डलीक समक्ष उपस्थित अछि। एकर प्रकाशन मनीगाछीक अधिवेशनसँ पूर्वहिँ आरम्भ भेल छल परन्तु युद्धकालीन अव्यवस्थाप्रयुक्त अत्यधिक विलम्ब भेल। तदर्थ परिषद् वयोवृद्ध लेखक एवं उत्सुक विद्वत्समाजक ओतए क्षमाप्रार्थी अछि।

एहि व्याकरणक महत्त्वक प्रसङ्ग थोड़मे किछुओ लिखब व्यर्थ होएत परन्तु एतबा तैओ बिनु कहने नहि रहि सकैत छी जे एहिरूपक साङ्गोपाङ्ग अथच प्रामाणिक व्याकरण भारतीय कोनहु आधुनिक भाषामे नहि अछि तथा जाहि रूपेँ अभिनवजयदेव विद्यापति ठाकुरक गीतसब हमरालोकनिक भाषाक एतेक दिन धरि प्राण छल, आब निश्चय ई व्याकरण तहिना मिथिलाभाषाक गौरव बढ़ाओत। श्रीमहावैयाकरणक रचित कोष सेहो यन्त्रस्थ अछि तथा ओकर प्रकाशनसँ भाषाक एक गोट बड़का त्रुटि हँटि जाएत, हमरा लोकनिक भाषा सर्वविध उपकरणसँ संयुक्त भए जाएत।

एहि व्याकरणमे धातुपाठ नहि भए सकल। ओहिना एकर प्रकाशनमे अत्यधिक विलम्ब भेल ओ धातुपाठक हेतु आओर प्रतीक्षा करब असह्य प्रतीत होअए लागल। अतएव अवशिष्ट अंश परिशिष्ट रूपेँ समय सुभ्यस्त भेलासँ शीघ्रहिँ उपस्थित करब।

एहि पुस्तककेँ श्रीमहावैयाकरणजीसँ आनि परिषद्केँ देबाक श्रेय सरसकवि श्रीईशनाथ झाकेँ छैन्हि तथा एकर प्रकाशनक सबटा व्यय मुख्यतः डाक्टर श्रीअमरनाथझा, बाबू श्रीसत्यानन्द कुमर ओ मनीगाछीक परिषद्क अधिवेशनक स्वागत-समिति देलैन्हि अछि। यद्यपि ओलोकनि केओ हमर धन्यवादक हेतु ई दान नहि कएलैन्हि अछि, केवल अपन मातृभाषाक समुन्नत्यर्थक अपन कर्त्तव्य बूझि ई दान कएल तथापि हमर कर्त्तव्य थीक जे हम सबहुकाँ भूरि-भूरि धन्यवाद दिऐन्हि।

वसन्त पञ्चमी,
१३५३।

श्री रमानाथ झा,
प्रकाशन मंत्री
मैथिली-साहित्य-परिषद्

डा. सुनीति कुमार चटर्जीक दृष्टिमे

डा. सुनीति कुमार चटर्जीक दृष्टिमे

(गङ्गानाथ झा रिसर्च इन्स्टिच्यूट, इलाहाबादक जर्नल वर्ष १, पृष्ठ ४७८ सँ साभार)

Mahavaiyākarana Pandit Sri Dinabandhu Jha's *Mithilā bhāsā-Vidyotana* (published by the *Maithilī Sāhitya Pariṣad* Darbhanga, 1946) is a remarkable book in many ways. It is the fullest and most complete grammar of the Maithilī language that has been ever published in Maithilī, and it seeks to marshall all the rather complicated facts of this language, which is current among a population of considerably over ten millions of people. I have found it conceived in a spirit of frank appreciation of the special character of Maithilī as contrasted with Sanskrit, although the author has paid his homage to Sanskrit by compiling his rules in *Sūtra*-form in Maithilī. The author probably did this as a *tour de force*, and this certainly indicates his great scholarship and his critical acumen in the selection of the essentials, but I would have liked him to employ it with greater advantage (as I think) for Maithilī grammar in giving us a larger selections of facts arranged and treated in the ordinary way. The pronoun—incorporating nature of the verb in present-day Maithilī has been analysed carefully, and the various paradigms for both noun declension and verb conjugation are very usefully and conveniently tabulated. I only wish the various tense-forms of the Maithilī verb were given with a little more fullness. But that does not detract from the great value of the book: faults of omission like this do not detract much from its importance and usefulness. The grammar appears to be the work of a scholar of the type who understands (although he, as is only natural, sees through the window of Sanskrit so to say) the mechanism of his mother-tongue, and sets about conscientiously to explain it. I think the ideal grammar of a New Indo-Aryan language

is to be based on the finding of historical comparative linguistics ; but it will be long before really good work in this line will be done. But the works like the present one are also invaluable, and both the author and the learned body which has published it deserve the best thanks of all persons interested in the study of New Indo-Aryan.

डा. आर. एल. टर्नरक दृष्टिमे

SCHOOL OF ORIENTAL AND AFRICAN STUDIES

UNIVERSITY OF LONDON, W.C.I

RLT/MI/1265

Telephone Number: MUSEUM 2023/4
Telegrams: SOASUL, PHONE LONDON

2nd March, 1948.

My dear Panditji,

It was a very great pleasure to me to receive a copy of your 'Mithilā-bhāsā-vidyotana'. My first acquaintance with that beautiful but difficult language was made in the works of my old guru, Sir George Grierson. He did much to unravel the complexity, especially of the conjugation of the verb, but his work nevertheless left much still to do. Fortunately for the Maithili language you came after and have, in this work of yours on which I understand you have spent sixteen years, fill/in many of the gaps left by your distinguished predecessor.

With warm greetings,

Yours sincerely,

R L Turner

द्वितीय संस्करणक प्रसंग

दुइ विश्वविख्यात भाषाशास्त्री डा. सुनीति कुमार चटर्जी आ डा. आर. एल. टर्नरक मन्तव्य जे पूर्व पृष्ठपर यथावत् देल गेल अछि ताहिसँ प्रतीत होएत जे प्रस्तुत ग्रन्थ कतेक गौरवपूर्ण अछि। तथापि आश्चर्य जे पचीस-तीस वर्ष धरि ई अप्रकाशित पड़ल रहल। ततःपर १९४६ ई. मे कोनहु-ना प्रकाशित तँ भेल मुदा पाँचे सए प्रति छपल, तँ शीघ्रे दुर्लभ भए गेल आ करीब चालीस वर्ष दुर्लभ रहल। तकर मुख्य कारण भेलैक एकर प्रकाशक मैथिली-साहित्य-परिषद् (दरभंगा)क म्रियमाणता। एहि परम उपादेय ग्रन्थक अभावक आंशिक पूर्ति किछु दिन **लघु विद्योतन**करैत रहल जे हम **मिथिलाभाषाविद्योतन**क सार लए सुगम आधुनिक शैलीमे लिखने रही। इहो बहुत दिनसँ दुष्प्राप्य अछि। तखन जे एतेक दिनपर प्रस्तुत ग्रन्थरत्नक पुनर्मुद्रण भेल अछि से अवश्यमेव हर्षक विषय–विशेष कए हमरा हेतु, किएक तँ हम लेखकक पुत्र ओ प्रिय शिष्य दूनू थिकहुँ।

परन्तु एहि पुनर्मुद्रणक श्रेय हमरा नहि, सभटा श्रेय छनि लगमाक ज.न.ब्र संस्कृत कालेजक प्रधानाचार्य विद्यावाचस्पति श्री शशिनाथ झा, डी. लिट्. कैँ, किएक तँ ओएह हमरा भारत सरकारसँ एहि हेतु अनुदान प्राप्त करबाक बाट देखओलनि, वा ई कहू जे आँगुर धए बाट धरओलनि। एहि हेतु हम हुनका हृदयसँ आशीर्वाद दैत छिअनि।

भनहि विलम्बसँ छपओ वा चिरकाल धरि बजारमे अनुपलब्ध रहओ, ई **मिथिलाभाषा-विद्योतन**मैथिलीक मानक स्वरूप आ वर्तनीक निर्धारणमे अमूल्य योगदान कएलक अछि। 1940 क आस-पास मिथिलाक दुइ सुपुत्र डा. सुभद्र झा आ प्रो. रमानाथ झा मैथिलीक मानक स्वरूप निर्धारित करबाक हेतु कटिबद्ध भेलाह। ओ दूनू विद्वान् प्रकाशनसँ पूर्वहि एहि **मिथिलाभाषाविद्योतन** अवलोकन कएलनि, एकर महत्त्व बुझलनि आ लेखकसँ पाण्डुलिपि लए दरभंगाक मैथिलीसाहित्यपरिषद्सँ एकर प्रकाशनक व्यवस्था सेहो कएलनि। एहि व्याकरण आ एकरे वर्तनीकेँ मूल आधार बनाए ओ दूनू विद्वान् मैथिलीकेँ एक मानक स्वरूप देलनि जे आइ, नाममात्र मतभेदक संग, समस्त मैथिली जगत्मे प्रचलित अछि।

एक मतभेदक आभास प्रस्तुतो ग्रन्थक प्रथम संस्करणमे भेटत, जकर चर्चा करब एतए आवश्यक। प्रथम खण्ड छपल प्रो. रमानाथ झाक तत्त्वावधानमे, जे संस्कृतेतर शब्दमे **ए** रखबाक पक्षमे छलाह, तँ एहि खण्डमे सर्वत्र **ए** रहल (**य** नहि), जेना **कएल जाए**। द्वितीय खण्ड छपल प्रो. कांचीनाथ झा किरणक तत्त्वावधानमे, जे **य** लिखबाक पक्षमे छलाह, तँ

एहि खण्डमे सर्वत्र **य** छपल, जेना **कयल जाय**। महावैयाकरण दूनू रूपकेँ शुद्ध मानैत छलाह, तेँ दूनू विद्वान्केँ स्वच्छन्दता देलथिन। एहना स्थितिमे महावैयाकरणक लेखकेँ अन्यथा कए देबाक आरोप जे प्रो. रमानाथ झा पर लगाओल गेल अछि (पृ.-१७६) से हमरा निराधार बुझाइत अछि। द्वितीय संस्करणमे एकरूपताक हेतु हम सर्वत्र **ए** राखि एहि विवादक समाधान कएल अछि।

हम कृतज्ञता प्रकट करैत छी भारत सरकारक शिक्षा एवं संस्कृति विभागक प्रति, जकर उदार साहाय्यक बिना एकर पुनर्मुद्रण हमरा हेतु असाध्य छल।

15.8.93 *गोविन्द झा*

INTRODUCTION

[This introduction in English is meant for those who are not conversant with Maithili in which the present work is written.]

With great pleasure I introduce, to the linguists interested in Modern Indo-Aryan Languages, a unique grammar of Maithili namely **Mithila Bhasa Vidyotana** (in short **Vidyotana**) by pandit Dinabandhu Jha. Here my endeavour will be to give in a nutshell an account of the social status and the linguistic characteristics of Maithili, appraisal of the present work, and a resume' of the special features of Maithili as revealed by the author in his present work.

Maithili is the mother tongue of over 20 million people of north Bihar in India and of some adjacent area in Nepal. During 13th to 15th centuries it enjoyed the highest social status throughout its area and even outside it. It was the vehicle of all sorts of social activities. It was the mother tongue of the then royal families in the Karnata and Oinibar dynasties in Mithila, Malla dynasty in Nepal and Sen dynasty in Morang. The most of the kings of these dynasties composed poems and dramas in it and liberally patronized its writers. In its peak period it also served as a *lingua franca* throughout the north-eastern region comprising Nepal, Assam, Bengal, Orissa and south-eastern Bihar. It was the most effective vehicle in the spread of Neo-Vaisnavism in the said region.

With the dawn of the 16th century the dramatic downfall of Maithili started. In proper Mithila it was replaced in official use by Persian under the orders of Moghul rulers. In Nepal and Morang it was superseded by Gorkha/Nepali sequal to the establishment of Gorkha rule there. When the Britishers came Persian was replaced by English along with Urdu or Hindoostani. The local script known as **Tirhuta** was also replaced by Devanagari. Now Hindi is occupying vertually all the spheres of administration, education and mass media under the Government. Recently Urdu has got the status of second official language in the entire Maithili speaking area.

In the teeth of all these adversities it is surprising that Maithili servived and has been struggling hard to regain its lost prestige. Consequantly now it is one of the most popular subjects in almost all colleges and universities in Bihar and Nepal. Thousands of students have got M.A., Ph.D. and D. Litt. degrees in Maithili literature. It is recognised as an optional medium of primary education. It is recognised as a literery language by Sahitya Akademi and P.E.N.. A host of old and young enthusiast writers are devoted to the enrichment of their mother tongue.

The above socio-linguistic survey of Maithili raises a vital question : why the authorities in free India then in the helm of affairs neglected such a well-developed and popular language ? The only answer put forward on their part is that they hold Maithili to be a dialect of Hindi and as such they placed standard Hindi to the status of the regional language in the so-called Maithili speaking area.

Here it would be out of place to enter into the controversy whether Maithili is an indepandent language or a mere dialect of Hindi. But this controversy prompted some pandits of linguistic insight to examine their mother tongue internally and comparatively. One of the precious results of that trend is this *Vidyotana*. The first linguist who introduced Maithili to the world and wrote grammar of this language was Sir George A. Grierson. He was followed by a native scholar namely Pandit Dinabandhu Jha, the author of *Vidyotana*. Thus *Vidyotana* is the first Maithili grammar written in any Indian language. It is unfortunate that due to linguistic barrier and gap of contact Pandit Jha could not derive any benifit from the work of his said predecessor. At the same time it is fortunate that for the same reason he escaped the so powerful influence of the European system of grammar and could invent a new system of his own best suited to the genius of the language to be described and the tradition of Indiaan pandits. This is the unique feature of Vidyotana, because almost all other grammars of modern Indian languages whether in native language or in English blindly follow the European pattern of grammar introduced by the foreign scholars in British India. Although the system adopted in *Vidyotana* did not

gain favour of the modern scholars cut off from the traditional Paninian system, never the less it has now acquired a good historical value due to its uniqueness as well as its role in standardization of Maithili.

As *Vidyotana* indicates, the author planned and executed the complete documentation of his mother tongue in three parts, namely *Vidyotana* (building rules), *Dhatupatha* (roots or base material), and *Mithilabhashakosa* (lexicon). This is why his Vidyotana refers several times to his *Dhatupatha* and his *Kosa* as its supplement. At present it could not be possible to include his *Kosa* in the present edition. I, however, intend to reprint his *Kosa* also in a separate volume.

Written about 80 years ago, *Vidyatona* remained unpublished for 35 years due to the adversity of Maithili as described above. In 1940 or so, when the struggle for revival of Maithili gained momentum, two enthusiast scholars namely Dr. Subhadra Jha and Ramanath Jha, in course of their endeavour to standardize the orthography of present day Maithili, found *Vidyotana* most useful for that purpose and got it published in 1946 (first part) and 1950 (second part). Due to the war time scarcity of paper only 500 copies were produced and went out of stock soon. But inspite of remaining absent from the market for so long, it played the most important role in standardizing the spelling and reducing the diversity of forms. It is gratifying to note that Maithili at last got rid of the vexed problem of orthography and credit for this goes to the author of this pioneer grammar, as the standard set in this grammar has now got acceptance throughout the Maithili speaking area. Here lies the historical importance of this grammar.

Among the modern Indo-Aryan Languages Maithili is perhaps the most complicated one. *Vidyotana* Succeeded in ravelling all the complexities of this language. It reveals that apart from the common elements shared by all or several modern Indo-Aryan languages, Maithili has a number of features of its own indicative of its independent development. Here I summarize such special features along with a few other important points contained in *Vidyotana*.

In his introduction, the author gives the plan of his proposed grammar and justifies the suitability of the Paninian Sutra and Bhasya style for the same on the ground that Maithili has sprung from Sanskrit. At the same time he enumerates ten points on which Maithili differs from Sanskrit : absence of dual and plural number, sandhi, neutre gender, grammatical gender and synonyms; presence of roots and suffixes not related to Sanskrit; agglutination of imphatic particles (as **eva/ api** in Sanskrit and **hi/bhi** in Hindi); and compounding of verbs for denoting different shades of meaning. Lastly he poses and discusses a most important and burning question of his time : out of the numerous allomorphs differing from mouth to mouth, place to place and stratum to stratum which one should be accepted as standard ? He gives his verdict in favour of those current among educated and alite classes.

In orthography the following points are noteworthy :

(a) *ai* stands always for *ai* as in Sanskrit *airavata;* and never for *a* as in English *cat.*

(b) Maithili has special accent pattern. Accent falls on penultimate vowel and all antipenultimate vowels are shortened as *goar* : *goargama.* Consequently all vowels are pronounced short as well as long in order of their unaccented and accented position respectively. *a* when accented is prolonged and rounded as *o* in English *born* or Bengali *apon.* The author suggests to add a dot below as a diacritical mark denoting reverse pronunciation.

(e) Unlike Hindi and Bengali, Maithili disfavours y. For example, Maithili **pia,** but Hindi and Bengali **piya;** Maithili **jae**, Hindi and Bengali **jaya.** As the above examples show, *y* is either omitted in writing or is changed to *e.*

Maithili has five case endings for traditional seven cases : **ke, sa, ka, me** and **e.** The first four are affiliated to Hindi **ko, se, ka / ke / ki** and **me,** while **e** is akin to Bengali **e. e** differs from the rest inasmuch as it agglutinates to its base and modifies the same. As, **hathe** "with hand". **kera, kara** and **ra** are the allomorphs of ka. A class of nouns take oblique forms ending in **a** when followed by a

case ending. As, **dosara** "second", **dosaraka** "of the second".

Pronouns have three cases : nominative, oblique and possessive. They generally denote social grades of thir referends : honorific, non-honorific and inanimate. As **tanika para** "on that gentleman", **takara para** "on that man", and **tahi para** "on that thing". This charaterestic draws Maithili nearer to the eastern group of languages.

The few suffixes forming secondary derivatives current exclusively in Maithili are shown below :

A. Pronoun based derivatives.

°khana — takhana " at that time".
°tae — tatae " at that place".
°tane/tani — tatane/tatani " as less as that".
°taba / teka — tataba / tateka "that much".
°na — tena "in that manner."
°mahara / mhara — temhar "to that direction".
°hana — tehana "like that."
°hia — tahia "on that day."

B. Noun based derivatives.

°aha — jara "fever", Jaraha "feverish."
°i — hariara "green", hariari" greenness."
°iauta / auta — mama " mather's brother", mamiauta "son of mama."
°ka — ujara "white", ujaraka "of white variety".
°gara — bala "might", balagara "mighty".
°ma — chari "four", charima "fourth".
°ha — nika "good", nikaha "of good quality".

Regarding vocabulary the author lays down some restrictions on borrowing. The door of Sanskrit is open to almost all Indian languages, but each has its own preferences and limitations. The author allows to admit only such words from Sanskrit as have gained currency in Maithili. For example, out of the four synonyms **samipa, nikata, antika** and **abhyarna** "near", only the first two are admissible. Borrowing of pronouns, numerals and conjuctions is

forbidden. Words from Sanskrit are adopted generally in their base form, but those ending in **tr, an, In** etc. are taken in their nominative singular form, as **raja** (not **rajan**).

For denoting the sense of "et cetra" colloquial Maithili has some special devices. One such device is to repeat the word concerned substituting or adding **t** in the beginning. As, **pothi-tothi** "book etc.", **ama-tama** "mango etc." Another device is to add a word of the same or similar meaning as the idiom admits. As, **nahaeba-sonaeba** "bathing and such other works".

Maithili has no grammatical gender, but gender based on sex is strictly followed. The author has classified nouns and adjectives in four catagories on the basis of gender : (i) masculine-limited to males only, as **pita** "father", (ii) feminine—limited to females only, as **mata** "mother", (iii) double gender—having two forms, one for males and the other for females, as **beta** "son" and **beti** "daughter;" and (iv) genderless—denoting no gender, as **loka** "people", **santana** "issue".

In conjugational system Maithili stands far apart from all other modern Indo-Aryan languages. A few examples will suffice. In simple past tense, Hindi has only four forms (**gaya, gaye, gayi, gayi** or **dekha, dekhe, dekhi, dekhi),** while Maithili has at least 19 forms. Every form has its own connotation. For every connotation there are separate suffixes, and for several combined connotations several suffixes may be clustered successively. Thus a simple English sentence **he went** will have to be translated in any of the following eight defferent ways as the context demands.

(i) **O gela** "he (of lower grade) went".

(ii) **O gelaik** " he (of lower grade) went (for a third person of lower grade)".

(iii) **O gelahu** "he (of lower grade) went (for you i. e. for a second person of higher grade)".

(iv) **O gelauk** " he (of lower grade) went (for you i. e. second person of lower grade)".

(v) **O gelani** "he (of lower grade) went (for a third person of higher grade.)"

(vi) **O gelaha** "he (of higher grade) went".

(vii) **O gelathinha** "he (of higher grade) went (for a third person either of lower or of higher grade)".

(viii) **O gelathunha** "he (of higher grade) went (for you i. e. second person either of higher or of lower grade)".

The analysis of a verb form **dekalakaika** will show how the verbal suffixes in Maithili cluster : **dekha + l + ka + ika.**

dekh—root, to see.
la—past tense.
ka—subject third person of lower grade.
ika—object or benificiary third person of lower grage.

Such a system is known among linguists as pronominalization. The author is perhaps the first to reveal this system in full. The incorporation of benificiary in verbs is a rare fenomenum in any language.

The author holds that the subdivisions of tenses such as continuous, perfect, imperfect etc. are derived from verbal compounds. For example, the past continuous in Maithili **dekhi rahala chhala** "was seeing" is a combination of **dekh** "to see" + **rah** "to remain" + **chh** "to be". Accordingly the author has excluded such periphrastic constructions in his tables of conjugation and described them in the chapter of verbal compound. It is worth mentioning here that the compounding of verbs is a recent development in the modern Indian languages and is tolally absent in English.

Maithili has some peculiarities in expressing emphasis. Generally restrictive **e/hi** and additive **o/hu** are added to the word concerned, as **Gopale** "gopal alone", **Gopalo** "Gopal too". But in verb they are added after converting the same into verbal noun and supplying the verb **kar** "to act" for serving as a finite verb, as **dekhata** "will see"., **dekhabe karata** "will only see." **dekhabo karata** "will see too." This reminds the construction of negative sentence in English. Another

peculiarity lies in the fact that these particles shift their position in some special situation. For example, in two-word compounds they come at the end either of the first member or of the second optionally, as **bete-beti** or **beta-betie** "only sons and daughters", **beto-beti** or **beta-betio** "sons and daughters also".

The last chapter deals with the poetic license which also gives a glimpse of the past stage of Maithili.

Dhatupatha (collection of roots or formative bases) forms the second part of **Vidyotana.** The roots are classified in order of grammatical exigency. In Maithili there are three types of conjugation as may be clear from the following table :

Root	Likh	Bik	Tak
Present pp.	likhaita	bikaita	takaita
Past pp.	likhala	bikaela	takala
Noun	likhaba	bikaeba	takaba

The first type may by likened to **Bhu** class of Panini and the second to **Chur** class. The third resembles strong verbs in English inasmuch as here the root vowel is lengthened in certain condition.

The lists of roots of similar grametical treatment may be found in any grammar, but there they are only illustrative, while here the author's aim is to make his lists exhaustive. Consequently **Dhatupatha** crossing the boundary of grammar creeps into the domain of lexicography. So following the practice of dictionary, it explains the meaning of every root with apt illustrations signifying the appropriate context of its use.

Why then the author appended it to his grammar instead of incorporating the same in his dictionary ? Perhaps tradition was in his way. In our tradition, sentence (or language) is concieved as a meaningful combination of nama (i. e. nouns, adjectives, adverbs and particles) and akhyata (verbs or roots). Traditional dictionaries cover only the former. Bare roots were rightly taken to be only grammarian's stock-in-trade like **vibhakti** and **pratyaya** . Actually all the roots will be found in the authors **Mithila Bhasa Kosa** in

disguise, i. e. in the form of verbal noun. But here they are grouped in order of grammatical convenience.

Words are set in alphabetical order generally starting from the first letter of the word. But strangely enough, in **Dhatupatha** roots are arranged beginning from the last letter of the root. In other words here sequence is from right to left instead of usual sequence from left to right. For example :

usual sequence—उग, ठेक, देख, पक, लिख।
reverse sequence—पक, ठेक, लिख, देख, उग।

Why did the author prefer this reverse order to the usual one ? Was he influenced by the Paninian **Dhatupatha** ? Whatever may be the merit of this reverse order, it is not in any way convenient to the present world accustomed to the left-to-right order.

15.8.93 ***Govinda Jha***

भूमिका

श्रीवैद्यनाथ-धाम पर किछु दिन हम अध्यापन करैत छलहुँ जकरा लगभग ३५ वर्ष भेल होएत। ओतए एक धनवान मैथिलमहोदय श्रीवैद्यनाथक दर्शनार्थ गेल रहथि। ओ हमरा कहलैन्हि जे अन्यान्य भाषाक व्याकरण बनल अछि, किन्तु मिथिलाभाषाक व्याकरण नहि अछि, से बनि सकैत अछि वा नहि, यदि बनि सकए तँ अपने बनाओल जाए। हम हुनक वाक्यक अङ्गीकार कए सोत्साह बनएबामे प्रवृत्त भेलहुँ। तखन विचारणीय भेल जे कोन रूपेँ बनाबी, जेना हिन्दी भाषा प्रभृतिक व्याकरण अछि ताहि रीतिक अनुसरण कए बनाबी, किंवा संस्कृतव्याकरण-रीतिक अवलम्बन कए। ताहिमे हिन्दी प्रभृतिक व्याकरण-निर्माण-प्रकार हमरा सन्तोषप्रद नहि होएबाक कारणेँ संस्कृत व्याकरणानुसारे बनएबाक निश्चय भेल। ताहिमे अनेक कारण। एक तँ संस्कृत व्याकरण बहुत थोड़ शब्दसँ बनल अछि तथा यच्च यावच्च सकल साधु शब्दक बोधक अछि, अतः तदनुसार यदि मिथिलाभाषहुक व्याकरण निर्मित हो तँ गौरवान्वित होएत। द्वितीय, मिथिलाभाषा संस्कृतहिक आधार पर बनल थीक तँ ओकर व्याकरणो संस्कृतव्याकरणहिक छायापन्न होएबाक चाही। तेसर ई युक्ति जे कोनो देशभाषाक व्याकरण संस्कृत-व्याकरणानुसार संक्षिप्तसूत्ररूपेँ नहि बनल अछि। तखन जँ मिथिलाभाषाक व्याकरण पाणिनीय व्याकरणानुसार सूत्ररूपेँ निर्मित हो तँ प्रशस्त होएत ओ अध्येतृवर्गकेँ ठेकान करबामे तथा अभ्यास करबामे असौकर्य नहि होएत। परन्तु ई गुणसभ रहलहुपर एक विशेष दोष–सूत्ररूपसँ बनल ग्रन्थ नियमतः कठिन होइत अछि, तस्मात् सूत्राकार व्याकरण बनने अर्थक ज्ञानमे तथा उदाहरणादिक अनुसन्धानमे अध्येताकेँ परम असौकर्य होएत। एहि दोषक शान्तिक हेतु सरल व्याख्यान द्वारा यदि सूत्र सबहिक अर्थ सुस्पष्ट कए देल जाइक ओ उदाहरण स्फुटरूपेँ देखाए देल जाइक तँ ओ दोषो नहि रहत, ओ अनुसन्धानमे सौकर्यो होएत। ई विचार स्थिर कए तदनुसार बनबए लगलहुँ। तत्काल बूझि पड़ल जे मिथिलाभाषा हमरा अपन भाषा थीक, तँ एकर व्याकरण बनएबामे परिश्रम नहि पड़त, ओ अल्पकालहिँ सम्पन्न भए जाएत। परन्तु उत्तरोत्तर अधिक भावना लगबाक कारणेँ ओ कार्यान्तरसँ उर्वरित थोड़ समय लगएबाक कारणेँ अति चिरकालेँ सम्पन्न भेल।

ई व्याकरण संस्कृत व्याकरणवत् पदमे प्रकृतिक ओ प्रत्ययक काल्पनिक विभाग मानिकेँ निर्मित भेल अछि, यथा **देखलक, देखत, देखओ** इत्यादि क्रियापदमे **देख्** ई व्यञ्जनान्त प्रकृति, **अलक, अत, अओ** इत्यादि प्रत्यय मानल अछि। यदि एहिठाम **देख** अकारान्त प्रकृति, **लक, त, ओ** इत्यादि प्रत्यय, ई कल्पना करी, तँ सेहो भए सकत, किन्तु **देखत, देखितथि** इत्यादिमे **ऐत, इतथि,** इत्यादि प्रत्ययसँ पूर्व अकारक लोप करक पड़त। यदिच **ऐत, इतथि,** इत्यादिक स्थान **त, तथि** प्रत्यय मानी तथापि **देखु, देखि जाउ** इत्यादिमे

ऊ प्रत्ययसँ पूर्व अकारक लोप करब आवश्यक होइत, तथा **त** प्रत्यय कएने **देखैत** एहिठाम तसँ पूर्व अकारकेँ ऐकार आदेश तथा **देखत** एहिठाम ओकर प्रतिषेध कर्त्तव्य होइत ओ **देखितथि** एहिठाम **तथिसँ** पूर्व अकारकेँ इकार हो, ई वक्तव्य होइत। हमरा व्यञ्जनान्त धातु मानलासँ प्रत्ययक विधान छाड़ि आन कोनो विशेष कार्य कहबाक आवश्यकता नहि होइछ। तेँ लाघवानुरोधसँ **देख्** व्यञ्जनान्ते प्रकृति मानल अछि। क्रियापदमे प्रकृतिभाग धातु कहबैत अछि, से मिथिलाभाषामे हजारसँ अधिक अछि। ताहि सकल धातुक उल्लेख ग्रन्थान्तमे **धातुपाठ** मध्य कएल गेल अछि। तथा नाम सब स्वसंकलित **मिथिलाभाषाकोषक** अनुसार मानि प्रत्यय सब कहल गेल अछि, यथा **बतहिआक** एहि पदमे चारि प्रत्यय–बिगड़ल बातमे लाक्षणिक **बात** शब्दसँ युक्त अर्थमे **आह** प्रत्यय, **बताह**; ओकरासँ स्त्रीमे **इ**, **बताहि**; ताहिसँ अनादरमे **आ**, **बतहिआ**, ताहिसँ सम्बन्ध अर्थमे **क** । एवं क्रियापदहुमे अनेक प्रत्यय, यथा **देखबबितथि** एहि ठाम **अब्**, **अब्**, **इतथि** । एवं प्रकारेँ प्रकृतिप्रत्ययविभाग कए ई व्याकरण बनाओल गेल अछि।

प्राकृत भाषाक व्याकरणवत् केवल संस्कृतहिकेँ मूल मानि मिथिलाभाषाक व्याकरण नहि बनाओल, ताहिमे कारण जे संस्कृतक सकल शब्द तद्भवरूपहुँ एहि भाषामे प्राकृत भाषावत् ग्राह्य नहि होइत अछि, यथा संस्कृतमे गत्यर्थक धातु **या**, **गम**, **व्रज**, **इण्** इत्यादि बहुत अछि, एहि भाषामे केवल **या** एतन्मात्र **ज** रूपेँ गृहीत अछि। तस्मात् गत्यर्थक सकल धातुक स्थान **ज** आदेश करैक पड़ैत, एवम् अन्यान्यहुक स्थान तत्तत् आदेश करबाक होइत ! एहिसँ बृहत् ग्रन्थ भए जाइत। ओ बहुत क्रियापद एहिमे स्वतन्त्रे अछि, जकर मूलभूत संस्कृत शब्द अछिए नहि, यथा **छकब**, **ठकब**, **बौआएब**, **औआएब**, इत्यादिक आधार संस्कृत शब्द नहि अछि, तेँ स्वतन्त्रे धातु मानि नामो मैथिलीकोषानुसार स्वतन्त्रे मानि ई व्याकरण बनाओल गेल अछि।

मिथिलाभाषा संस्कृतमूलक थीक। **ग्राम**, **चक्र**, **पानीय**, **अहम्**, **त्वम्** इत्यादि संस्कृत शब्दसँ **गाम**, **चाक**, **पानि**, **हम**, **तोँ** इत्यादि मिथिला-भाषा भेल। कतोक शब्द प्राकृतभाषा द्वारा संस्कृतसँ मिथिलाभाषामे आएल अछि, यथा–

संस्कृत	*प्राकृत*	*मिथिलाभाषा*	*संस्कृत*	*प्राकृत*	*मिथिलाभाषा*
गृह	घर	घर	चतुर्दश	चउद्दह	चौदह
मातृ	माए	माय/माए	लवण	लोण	लोन/नोन
क्षण	क्खन	खन	कदा	कइआ	कहिआ
एकादश	एआरह	एगारह	यदा	जइआ	जहिआ

एहि रीतिएँ देखलासँ स्पष्ट होइछ जे मैथिलीक आधार संस्कृत थीक। एतबा विशेष जे बहुत शब्द स्वतन्त्रो मानल अछि। प्रत्ययभाग सर्वथा स्वतन्त्रे।

एहि प्रसङ्ग ई अनुमान होइत अछि जे सकलसाधारणकेँ बजबामे सौकर्यार्थ ओ एक प्रकारक अपना देशक उन्नतिक हेतु तत्काल व्यवहृत संस्कृतकेँ आधार मानि तत्तद्देशमे अति

संक्षिप्त रूपक विलक्षण भाषा बनाओल गेल, ततःपर नवीन भाषाक स्नेहवश किंवा राजाक आज्ञासँ एहू भाषामे व्यवहार होअए लागल। क्रमशः संस्कृतक व्यवहार सर्वथा निवृत्त भए गेल; देशभाषहिमे लोकसभ परस्पर बाजए लागल। ई भाषा जेँ संस्कृतमूलक थीक तहिँ संप्रतिओ बहुत संस्कृत पद अनुरूपो बाजल जाइत अछि, यथा **अगत्या करैक पड़ल**, **कारणवशात् गेलहुँ**, **अकस्मात् भेँट भेल**, **येनकेनोपायेन ई कार्य भेल**। एवम् संस्कृतक प्रसिद्ध नाम ओ **कृतकृत्य**, **सकलसंमत** इत्यादि संस्कृतक समस्त पद व्यवहृत होइत अछि। आब मिथिलाभाषामे संस्कृतसँ जे अनेक भेद अछि ताहिमे कतोक देखबैत छी :

१. एकवचन, द्विवचन, बहुवचनक स्थान मैथिलीमे सामान्य वचन एके अछि। यथा प्राकृतमे द्विवचन नहि अछि, दुइओ अर्थमे बहुवचने अबैत अछि, तद्वत् मिथिलाभाषामे एकवचन, द्विवचन, बहुवचन तीनूमे एकेवचन अबैत अछि । ओ जाहि रीति संस्कृतमे चारि, पाँच आदिक बोध संख्याविशेषबोधक **चतुर्**, **पञ्चन्** प्रभृति शब्दक प्रयोगवशात् होइत अछि तद्वत् मैथिलीमे एक, दू, तीनि, चारि, बहुतक बोध कराओल जाइत अछि। यथा **गणेशकेँ एक दाँत**, **दू माय**, **तीनि आँखि**, **चारि बाँहि**, **बहुत अस्त्र** ।

२. मिथिलाभाषामे सन्धिकार्यक अभाव। **सूर्य उगलाह** इत्यादिमे गुणादिरूप सन्धि नहि होइछ। **सूर्योदय भेल** इत्यादि कृतसन्धिकार्यके शब्द गृहीत थीक।

३. मिथिलाभाषामे नपुंसकलिङ्ग-बोधक कोनो शब्द नहि, तल्लिङ्गप्रयुक्त कार्यो कोनो नहि होइत अछि।

४. एहिमे लौकिके स्त्रीत्वादि प्रतीत होइत अछि, संस्कृतवत् लौकिक, शास्त्रीय उभय नहि।

५. मैथिलीमे गत्याद्यर्थक एके एके धातु अछि, संस्कृतमे एकार्थक अनेक धातु अछि, यथा गत्यर्थक **या**, **गम्**, **व्रज्**, **इण्**, इत्यादि बहुत अछि।

६. **छक्**, **ठक्** इत्यादि बहुत धातु संस्कृतानुक्त स्वतन्त्रे मानल अछि।

७. सकल प्रत्ययमे संस्कृतापेक्षया सर्वथा वैरूप्य।

८. **एव / अपिक** अनेकरूपेँ स्थिति, तथा पदक मध्यहुमे ओकर प्रयोग । यथा, **रामहिक पुत्र** ।

९. मिथिलाभाषाक क्रियापदसँ क्वचित् कर्त्तमि, क्वचित् आनमे, अनादरक किंवा आदरक अथवा उभयक बोध होइत अछि, यथा **देखैत अछि** एहि क्रियापदसँ कर्त्ताक अनादर, **देखैत छथि** एहिसँ कर्त्ताक आदर अवगत होइत अछि। **देवदत्तक कार्य भेलैक** एहिठाम कर्त्तासँ आन देवदत्तमे अनादर, **देवदत्तक कार्य भेलैन्हि** एहिठाम देवदत्तमे आदर बुझल जाइत अछि; **देखैत छैक** एहिठाम कर्त्ता, कर्म दुहूमे अनादर, **देखैत छैन्हि** एहिठाम कर्त्ताक अनादर ओ कर्मक आदर प्रतीत होइत अछि, इत्यादि क्रियापदक वैचित्र्य एहि व्याकरणमे सुस्पष्टरूपेँ बुझओल गेल अछि। एतादृश विशेष संस्कृतक क्रियापदमे नहि अछि।

१०. संस्कृतमे कतोक धातुसँ सिद्ध क्रियापदसँ कर्तृगामी, कतोक धातुसँ निष्पन्न क्रियापदसँ परगामी क्रियाफल प्रतीत होइत अछि। मैथिलीमे प्रत्येक धातुसिद्ध क्रियापदसँ कर्तृगामी वा परगामी क्रियाफल प्रतीत होइत अछि। यथा **देखैत अछि** एहि क्रियापदसँ कर्तृगामी, **देखैतछैक** एहिसँ परगामी। एवम् **भवदत्त जयदेवक सङ्ग काशी गेलाह** एहिठाम कर्तृगत क्रियाफल बुझल जाइतअछि, अर्थात् भवदत्तक काशीगमन अपना हेतुक ई प्रतीत होइतअछि; **भवदत्त जयजालक सङ्ग काशी गेल्थीन्ह** एहिसँ भवदत्तक काशीगमन जयलालक उपकारार्थ बुझल जाइत अछि। एवम् **देखि लैत छी** एहिसँ कर्तृगत, **देखि दैत छी** एहिसँ परगत क्रियाफल बुझल जाइत अछि। एहि प्रकारेँ आदर अनादर अर्थभेदेँ तथा क्रियाफलमे कर्तृगामित्व, परगामित्वक भेदसँ एवम् कर्त्ताक भेदसँ वैकल्पिक रूप छोड़ि १२० एक सए बीस रूप प्रत्येक धातुक केवल कर्त्तामे तिङ्प्रत्यय कएलासँ होइत अछि। अतः थोड़ शब्देँ अधिक अर्थक बोध करओनिहार तिङन्तपदविन्यास मैथिलीभाषाकेँ भाषान्तरापेक्षया विशेष गौरवान्वित करबैत अछि।

लङ्कामे हनुमान मानवी भाषामे श्रीसीताजीसँ वार्तालाप कएलैन्हि ई कथा वाल्मीकीय सुन्दरकाण्डमे कहल अछि ताहिसँ सिद्ध होइत अछि जे त्रेतहुमे संस्कृतसँ विलक्षण मानुषी देशभाषा छल। तथा **शिवरहस्य**मे कहल अछि जे–

संस्कृतैः प्राकृतैर्वाक्यैर्यः शिष्यमनुरूपतः ।
देशभाषाद्युपायैश्च बोधयेत्स गुरुः स्मृतः ॥

एहूसँ स्पष्ट होइछ जे संस्कृतप्राकृतादिभाषासँ भिन्न तत्तद्देशभाषा सनातन थीक ।

तस्मात् गौरवान्वित सनातनप्रवृत्त मिथिलाभाषाक साङ्गोपाङ्ग व्याकरण आवश्यक। व्याकरण ओ कहबैत अछि, जाहिसँ रूढ़शब्द **पोथी, पतड़ा** इत्यादि छोड़ि आन सकल शुद्ध शब्दक अवगम अतिस्वल्प यत्नेँ ओ अल्पकालेँ होअए ।

आब वक्तव्य जे मिथिलाभाषामे शुद्धता की थीक जकर आधार शब्द साधु मानल जाए तथा यदनुसार व्याकरणसँ शब्दसभ देखाओल जाए। व्याकरणसँ सिद्धत्वरूप शुद्धता नहि कहि सकैत छी, कारण जे व्याकरणक निर्माणसँ पूर्वहुँ शब्दमे शुद्धत्व रहबाक चाही। ओ जाहिसँ अर्थक बोध हो से शुद्ध थीक, इहो नहि, कारण, **देखैए देखलौँ** इत्यादिअहुसँ अर्थक अवगति होइतअछि किन्तु शुद्ध नहि थीक, **देखैत अछि, देखलहुँ** इत्यादिए शुद्ध थीक। तस्मात् जाहि शब्दक श्रवणोत्तर ककरहु अनौचित्यक भान ओ वक्तृवैगुण्यक भावना नहि हो से शब्द शुद्ध थीक, अर्थात् अनौचित्यप्रयुक्तवक्तृवैगुण्यभावनानुद्भावकत्वे भाषाशब्दमे शुद्धता थीक। **ऐ ठिमा बेरसपतिकेँ चौरचन होइए** एहि वाक्यक श्रवणोत्तर प्रवीण लोकक मनमे एहन भावना होइत अछि जे ई अनुचित शब्द थीक, एकर वक्ता भाषापटु नहि छथि, तस्मात् ओ वाक्य सर्वथा अशुद्ध थीक। अथवा केन्द्रस्थानीयपटुजनव्यवहृतत्वरूप शुद्धत्व कही। एतादृशे शुद्धता आनहु देशभाषामे मन्तव्य थीक।

आब व्याकरणक प्रयोजनक प्रसंग विचार जे व्यवहारहिसँ भाषाक अवगति होइतअछि तखन तदर्थ व्याकरणक की आवश्यकता ? एहि प्रश्नक प्रथम उत्तर ई जे वैदेशिक व्यक्तिकेँ विना मैथिलीव्याकरणक मिथिलाभाषाक शिक्षा असंभव; प्रत्युत देशीयव्यक्तिअहुकेँ यथावत् शुद्ध अशुद्धक निश्चय व्याकरण बिना नहि भए सकैत अछि। तथा **देखलैन्हि, देखलकैक** इत्यादिक अर्थज्ञानार्थो व्याकरण उपयुक्त।

एवम् प्रायः बहुत शब्द उत्तम मध्यम अधम व्यक्तिभेदेँ भिन्न भिन्न रूपेँ व्यवहृत होइतअछि। यथा **एमहर जाइतअछि, एनय जाइअछि, एनी जाइए**एतादृश संकीर्णव्यवहारदशामे सकलसाधारणकेँ, विशेषतः बालककेँ शुद्ध शब्दक परिचय व्यवहारसँ दुष्कर। व्याकरणमे **एमहर जाइतअछि** इत्यादि उत्तमव्यक्तिव्यवहृतक उपदेशसँ ओकर ज्ञान सुकर। आओर कतोक समयसँ फारसीप्रभृतिभाषाक संघर्षप्रयुक्त वासनासँ ओहि भाषासबहिक शब्द मैथिलीमे संकीर्ण भेल जाइत अछि तेँ आबहु जँ व्याकरणसँ तथा कोषसँ नियन्त्रण नहि होएत तँ मिथिलाभाषा अव्यवस्थित भए जाएत। भाषासभ परस्पर परिच्छिन्न रहबाक चाही।

एहि विषयमे ककरो मत अछि जे भाषाक विकाशार्थ अन्यान्यो भाषाक शब्द सब ग्राह्य करबाक चाही। एहन माननिहार **प्राइवेटक टाइम ज्यादा अछि** इत्यादि बाजए लागल छथि। परन्तु विचारशील अधिक व्यक्तिसबहिक मत अछि जे संस्कृतमूलक एहि भाषाकेँ विकशित करबाक हेतु तँ प्रसिद्ध संस्कृतक रूढ़ नाम तथा कृदन्त, तद्धितान्त ओ समास इत्यादि अपन शब्दपुञ्ज अछिए, तखन एहि भाषाकेँ अपन समकक्ष भाषान्तरसँ भिक्षा मँगबाक की प्रयोजन ? प्रत्युत से कएने स्वरूपक हानि। प्रारम्भिक हिन्दीशिक्षा पाबि विद्वानो लोकनि **एकसौ, दूसौ लेब**ई बजैत अपना **सए** शब्दकेँ तिलाञ्जलि दैतछथि। ई हम दिग्मात्र कहल अछि, विज्ञ मैथिलमहोदय लोकनि स्वयम् एकर परामर्श कए सकैतछथि–अस्तु।

व्याकरणक फल स्वल्प यत्नेँ अर्थज्ञानपूर्वक शुद्धशब्दक ज्ञान थीक से निर्विवाद। आओर बजबामे शीघ्रता प्रयुक्त कतोक शब्दक आनंरूपेँ उच्चारण कएलजाइछ, यथा **नै कहलौँ**। एवम् कतोक वर्णक अनुच्चारण, यथा **किए देलै– किएक देलैक**एतादृश वक्तव्यमे **क** क अनुच्चारण। एवं प्रकारेँ शीघ्रताप्रयुक्त व्यवहार देखि बालकगणकेँ ओहिमे शुद्धताक ज्ञान भए जएबाक योग्यता। व्याकरण तथा हमर निर्म्मित *मिथिलाभाषाकोष* देखलासँ एतादृश भ्रमकेँ दूर कए शुद्ध मिथिलाभाषाभिज्ञता भए सकत। ई सभ फल विचारि हम *मिथिलाभाषाविद्योतन* नामक मैथिलीव्याकरण बनाओल।

एहिमे **हसैत, चलैत**इत्यादि शुद्ध मानल अछि, परिशेषात् **हसै, चलै,**इत्यादि अशुद्ध। कारण जे **हसत्** इत्यादि शतृप्रत्ययान्तक अपभ्रंश (अभठ) मिथिलाभाषामे **हसैत, चलैत** थीक। अतएव **हसैतअछि, चलैतअछि** एतादृशे वर्तमानक्रियापद एहिमे साधल गेल अछि, **हसै अछि, चलैअछि**इत्यादिनहि। संस्कृतमे वर्तमानक्रिया द्वेधा कहल जाइत–अछि हसति, हसन्नस्ति, किन्तु मिथिलाभाषामे लाघवक अनुरोधेँ दुहूक स्थानमे **हसैतअछि** एतादृश एके शब्द राखल गेल । अतएव एवकारक योजनामे **हसितहिँ अछि** एतादृश तकारयुक्ते बाजल

जाइतअछि। तस्मात् **हसैअछि, चलैछथि** इत्यादि जे क्वचित् व्यवहृत होइत अछि से शीघ्रतावश **त** क अनुच्चारणवशात्। जेना **किएक देलहीक**एकरा स्थान शीघ्रताप्रयुक्त **क** क अनुच्चारणपूर्वक **किए देलही** बाजल जाइछ।

वर्तमानक्रियाक प्रसङ्ग हिन्दिअहुमे उक्त विषय तुल्ये अछि अर्थात् **हसति, हसन् अस्ति,** दुहूक स्थान **हसता है** एतदृश एकविधे शब्द राखल गेल अछि, अतएव **हसता ही है, हसता भी है** इत्यादि मध्यमे **एव/अपि** क योजना कएल जाइत अछि।

एहिसँ ई सिद्ध भेल जे **हसैतअछि** ई वर्तमानक्रियापद खण्डद्वयात्मक थीक, **हसलाह** इत्यादिवत् अखण्ड नहि। एहि स्थितिमे तकर साधनप्रकारो पृथक्-पृथक् होएबाक चाही। तथापि **हसति** एतत्स्थानापन्नो ओकरहि मानि वर्तमानमे **ऐतअछि** इत्यादि प्रत्यय मानलअछि। तात्पर्य जे कोनहु प्रकारेँ **हसैतअछि** इत्यादिक परिशुद्धता देखाओल जाए। कहलो अछि जे **उपेयप्रतिपत्त्यर्था उपाया अव्यवस्थिताः।**

हमरा अनेक शब्दक विषयमे अधिक भावना अछि तकर विचारपुरस्सर लेख कएने अतिविस्तर भए जाएत। कतोक विचार *मिथिलाभाषाविमर्शमे* हम प्रकाशित कइओ चुकल छी। तस्मात् आब प्रकृतमात्र लिखैत छी।

हम मैथिलीसाहित्यपरिषदक सभ्यमहोदयलोकनिक भूरिप्रशंसनीय परमोन्नतिसंपादक महान् उत्साह देखि उक्त परिषद्सँ यथासाध्य तात्कालिक सत्कार ओ भविष्यत् पुरस्कारक वचन पाबि उक्त परिषद्मध्य एहि *भाषाविद्योतनकेँ* समर्पित कएल।

उक्त सभ्यलोकनिक उत्साह, विशेष ओहि परिषदक सदस्य साहित्यतीर्थ एम्. ए. श्रीरमानाथबाबूक परिश्रमसँ धातुक्रमनिर्देशसहित सोदाहरण धातुपाठ तथा तिङ्सारिणीसहित विस्तृततिङ्चक्र छोड़ि आन सब प्रकरण मुद्रित भए गेल। धातुपाठादि दोसर खण्ड कए मुद्रित होएबाक शीघ्रे संभव। ओकरो आकार एततुल्ये रहत तँ दुहू खण्ड एकत्र बद्ध भए सकत।

एहि मुद्रित भागक संशोध्य मुद्रणालयपत्र यदि संशोधनार्थ हमरा लग पठाओल जाइत तँ छपबामे विलम्ब लागि जएबाक संभव; एहि कारणेँ हमरा समीप नहि पठाए हमर अनुमतिपूर्वक यन्त्रालयनिकटस्थ श्रीरमानाथबाबू संशोधित करैत छलाह। तथापि जे किछु त्रुटि तथा अशुद्धि रहि गेल, तकर अपमार्जनक हेतु त्रुटिपत्रक ओ संशोधनपत्रक संपादन मुद्रित पुस्तक देखि हम कएल अछि। ताहूपर जे अशुद्धि रहि गेल हो तकर पवित्रीकरण मैथिलमहोदयलोकनि स्वयं कए लेथि।

यदि विज्ञ मैथिल महोदय एहि ग्रन्थकेँ आद्योपान्त देखि हमरा साक्षात् कहि देथि वा पत्रद्वारा सूचना देथि जे एहि ग्रन्थमे अमुक विषय परिवर्तनीय, परिवर्द्धनीय वा अपाकरणीय अछि तँ हमरा ई जानि अत्यन्त हर्ष होएत जे हमर बनाओल ग्रन्थ विशिष्ट व्यक्तिक अक्षिपातसँ पवित्रीकृत ओ अनुगृहीत कएल गेल ओ द्वितीय संस्करणमे ओहि विषयपर विचार अवश्य कएल जाएत।

अनेक कारणवश प्रथम संस्करणमे पाँचे सए ५०० प्रति मुद्रित भेल अछि। तँ हमरा आशा जे परिशुद्ध मिथिलाभाषा बुझबाक हेतु अथवा एक नवीन ग्रन्थ देखबाक कुतूहलसँ किंवा मैथिलीग्रन्थक उन्नतिक कारण अथवा चिरकालापेक्षित विस्तृत मैथिलीव्याकरणक निर्माता एक अपन मैथिल विद्वानक उत्साहवर्द्धनार्थे मैथिल महोदयलोकनि सत्वर एहि पुस्तककेँ हस्तगत कए लेताह जाहिसँ हमर श्रम सफल होएत ओ झटेदए एहि ग्रन्थकेँ द्वितीय संस्करणक सौभाग्य संप्राप्त होएत।

श्रीदीनबन्धुः

मिथिलाभाषाविद्योतन

प्रथम खण्ड

व्याकरण

विषय-क्रम

प्रथम खण्ड

द्वितीय खंड

मिथिला-भाषा-विद्योतन

अमरनिकरसिरमालिकालुलित ललित नखचान।
तरणिकिरणविकसितअरुणतरुणसरोजसमान॥
जनकसुतापदपर विनत दीनबन्धु दए ध्यान।
भाषाविद्योतन करथि व्याकरणक निर्माण॥

अथ वर्णप्रकरणम्

सूत्र–मिथिलाभाषामे वर्ण संस्कृतक अनुरूप॥१॥ *अ* आदि *औ* पर्यन्त स्वर, अनुनासिक अननुनासिक॥२॥ *ए ऐ ओ औ*समेत एक दू नीनि मात्राक ह्रस्व दीर्घ प्लुत॥३॥ ह्रस्व लघूच्चारण॥४॥ दीर्घ गुरूच्चारण॥५॥ क्वचित् विपरीतो॥६॥ *क* आदि *ह* पर्यन्त व्यञ्जन॥७॥

व्याख्या–प्रथम वर्णक परिचय कराओल जाइत अछि। मिथिलाभाषामे संस्कृतहिक अनुरूप वर्णसभ अछि। संस्कृत *अ इ उ ऋ ॡ ए ऐ ओ औ-क ख ग घ ङ- च छ ज झ ञ-ट ठ ड ढ ण-त थ द ध न-प फ ब भ म-य र ल व-श ष स ह* ई ब्यालीस वर्ण, एहिसँ भिन्न अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय ओ उपध्मानीय ई चारि वर्ण मिलाए छेआलीस ४६ वर्ण लौकिकवाक्योपयोगी अछि। ओतबए वर्ण मिथिलहुभाषामे जानब। तथा ओहि वर्णसबहिक संस्कृतमे यादृश श्रवण होइत अछि मिथिला-देशीयभाषहुमे तादृशे श्रवण होइत अछि। तस्मात् संस्कृतवत् ऐकारक *अइ* एतत्समानोच्चारणे शुद्ध थीक; *मैदान* इत्यादि हिन्दी-भाषादिवत् *अए* एतत्समनानोच्चारण नहि। एवं *अउ* एहने उच्चारणबाला औकार मिथिलाभाषामे शुद्ध बुझब; *हौद* इत्यादिवत् *अओ* एतादृशउच्चारणबाला नहि। एहिसँ *ऐना, पैर, मेघौन, बहतौन* इत्यादि अशुद्ध बुझल जाइत अछि, हेतुजे ओहि सबहिमे संस्कृतक विरुद्ध ऐकार ओ औकार अछि। ओकरा स्थानमे क्रमशः *अएना, पाएर, मेघओन, बहताओन* इत्यादि शुद्ध थीक। एवं फारसी ओ हिन्दीक संपर्क ओ उच्चारणमे शीघ्रतासँ जाहि २ शब्दमे उक्तरूपक अशुद्ध ऐकार ओ औकारक सम्बन्धक योग्यता अछि ताहिमे कतोक शब्द नीचाँ देखबैत छी। सकल तादृश शब्दक परिचय मिथिलाभाषाकोषसँ होएत।

सारिणी १

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
ऐनमैन	एनमेन	है	हए	सौँ	सँ
खैर	खाएर	रै	रए	और	आओर
जैह	जएह	गै	गए	औ	अओ
सैह	सएह	जौँ	जँ	है	हओ
ऐ	अए	तौँ	तँ	रौ	रओ

एहि छेआलीस वर्णक परस्पर मेलसँ *क का कि क्य क्र क्ष ज्ञ* इत्यादि अक्षर सभ सिद्ध होइत अछि। यथा *क् + अ = क। क् + आ = का । क् + य् = क्य्। क् + ष् = क्ष्। ज् + ञ् = ज्ञ। व् + ऋ + क् + ष् + अ = वृक्ष* इत्यादि। आकार अवर्णे थीक एवं ईकारादि इवर्णादिरूप जानब। *अं, इं, कं* इत्यादि स्थलमे अकारादिसँ पर जे सूनि पड़ैत अछि से अनुस्वार वर्ण थीक। *अः, इः, कः* इत्यादि स्थलमे अवर्णादिसँ पर जे हकारक समान सुनल जाइत अछि से विसर्ग वा विसर्जनीय कहाओल जाइत अछि। ओ आधा विसर्गक सन जे वर्ण सूनि पड़ैत अछि से *क ख* सँ पूर्व जिह्वामूलीय ओ *प फ* सँ पूर्व उपध्मानीय थीक। यद्यपि *ऋ, लृ, यरलक्क* वकार, *श, ष,* जिह्वामूलीय ओ उपध्मानीय ई सात वर्ण मिथिलाभाषामे नहि होइत अछि तथापि गृहीतसंस्कृतशब्द द्वारा ओहो सात वर्ण मिथिलाभाषामे अछिए। "मिथिलाभाषामे" ई ग्रन्थसमाप्तिपर्यन्त अधिकार जानब ॥१॥

अ आदि *औ* पर्यन्त अर्थात् *अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ* ई नओ वर्ण स्वर कहबैत अछि ओ अनुनासिक अननुनासिक भेदसँ दू प्रकारक होइत अछि। *पुराण बँचलहु। चीठी बाँचल। उपद्रवसँ बचलहुँ। वस्तु बाचल।* एहिठाम अर्द्धचन्द्रबाला स्वर अनुनासिक जानब ॥२॥

ए ऐ ओ औ समेत स्वर अर्थात् नबो स्वर एक मात्राक, दू मात्राक, ओ तीनि मात्राक क्रमशः ह्रस्व, दीर्घ ओ प्लुत कहाओल जाइत अछि अर्थात् एकमात्र ह्रस्व, द्विमात्र दीर्घ, त्रिमात्र प्लुत थीक। प्लुत केवल दूरसँ संबोधनमे अबैत अछि से आगाँ कहल जाएत। संस्कृतमे *ए ऐ ओ औ* ई चारि वर्ण ह्रस्व नहि अछि; मिथिलाभाषामे ओहो चारि वर्ण ह्रस्व अछि। ई विशेष बुझएबाक हेतु 'ए ऐ ओ औ समेत' ई सूत्रमे कहल गेल, अन्यथा 'मिथिलाभाषामे वर्ण संस्कृतक अनुरूप' एहिसूत्रबलेँ उक्त चारि वर्ण ह्रस्व अशुद्ध बुझल जाइत। ह्रस्व एकारादि यथा *गेन, गेनबा, ढोल, ढोलिआ, ऐँठल, ऐँठलाह, कोड़ी, कोड़िआ,* इत्यादिमे द्वितीय एकारादि ह्रस्व अछि। एकर परिचयक हेतु ओहि अक्षरसबहिक तरमे विन्दुरूप चेन्ह रहबाक चाही ॥३॥

ह्रस्व लघूच्चारण होइत अछि। यथा *अनदिना, उऋण*। एहि ठाम *अ इ उ ऋ* क उच्चारण

लघु होइत अछि॥४॥ दीर्घवर्ण गुरूच्चारण होइत अछि। *साझी* इत्यादि ॥५॥

क्वचित् विपरीतो अर्थात् ह्रस्व गुरूच्चारण ओ दीर्घ लघूच्चारण सेहो क्वचित् होइत अछि। यथा *मधु नहि अछि* इत्यादिमे अकार, *दिन, आजुक* इत्यादिमे इकार-उकार आदि ह्रस्व गुरूच्चारण अछि तथा *खाएर, पाएर* इत्यादिमे दीर्घ लघूच्चारण अछि। एकर आगाँ सूत्र कहल जाएत ताहिसँ ओ मिथिलाभाषाक कोषसँ बोध होएत। ह्रस्व अकारादि अधिक ठाम लघूच्चारण, थोड़ ठाम गुरूच्चारण अछि तेँ बुझबाक हेतु ह्रस्व गुरूच्चारण वर्णक नीचाँ बिन्दु लिखबाक चाही। *ए ऐ ओ औ* अधिकठाम दीर्घ अछि तेँ ह्रस्व ओहि अक्षरक नीचाँ बिन्दु देबाक थीक। एहि दुहूक अनुसन्धान राखब॥६॥★

प्रसिद्ध वर्णमालामे *क* आदि *ह* पर्यन्त जे वर्ण अछि से व्यञ्जन कहबैत अछि। *क* आदि *म* पर्यन्त पचीस वर्णमे ककारादि पाँच-पाँच वर्णक वर्ग क्रमशः कवर्ग चवर्ग आदि कहाओल जाइत अछि। *य र ल व* संस्कृतमे अन्तस्था, भाषामे अन्तस्थ, कहबैत अछि। *श ष स ह* ऊष्मा कहाओल जाइत अछि॥७॥

इति वर्णप्रकरण

★ ई अधोबिन्दु देब द्वितीय संस्करणमे दुष्कर जानि छाड़ि देल गेल। प्रथमो संस्करणमे एकर निर्वाह आठे पृष्ठ धरि भेल छल.–गोझा।

अथ संकेतप्रकरण

सूत्र–एक वर्णक अनुच्चारण लोप ॥१॥ अनेक वर्णक विलोप ॥२॥ स्थानमे विहित आदेश ॥३॥ आगमशब्दविहित अवयव आगम ॥४॥ उभयभिन्न सँशब्दें विहित प्रत्यय ॥५॥ एकार्थबोधक समानाधिकरण ॥६॥ कृदन्त तद्धितान्त समास नाम ॥७॥ कोषमे उपदिष्ट ओ आधुनिक-संकेतित ॥८॥ पूर्व पर अव्यवहित ॥९॥ *सँ* शब्दें विहित पर ॥१०॥ *कें* शब्दें स्थानमे ॥११॥ आदेश अन्तिम वर्णकें ॥१२॥ अनेकवर्णक सम्पूर्णकें ॥१३॥ एकवर्णक *सँ* शब्दें परक आदिवर्णकें ॥१४॥ सामान्य सूत्रक विशेष सूत्र बाधक ॥१५॥ विलोप सबहिक ॥१६॥ तत्स्थानापन्न तद्वत् ॥१७॥ विलुप्तनिमित्तक कार्य नहि ॥१८॥ *वर्ण*पदक उपादान रहने तज्जातिक ह्स्वदीर्घादि सकल ग्राह्य ॥१९॥ ह्स्वादिआदेश स्थानीक सदृश ॥२०॥ समानकें यथाक्रम सम्बन्ध ॥२१॥

व्याख्या–आब थोड़ शब्दें सूत्रसब बनबाक हेतु संकेतप्रकरण कहल जाइत अछि। एक वर्णक अनुच्चारण लोप थीक अर्थात् एहि व्याकरणमे लोपशब्द एकवर्णक अनुच्चारणक बोधतात्पर्यें उच्चरित अछि॥१॥

अनेकवर्णक अनुच्चारण विलोप थीक अर्थात् विलोपशब्द कहने अनेक वर्णक अनुच्चारण बुझब। एहि प्रकारें आगहुँ सूत्रक तात्पर्य जानब॥२॥

जे शब्द कोनहु शब्दक स्थानमे आबए से आदेश थीक॥३॥

जे शब्द आगमशब्दक उच्चारण कए विहित हो से जकरासँ पर वा पूर्व कहल जाए ओकर अवयव होइत अछि। ओकर नामो आगम जानब॥४॥

आदेश, आगम दुहूसँ भिन्न *सँ* शब्दक उच्चारण कएकें विहित शब्द प्रत्यय कहाओल जाइत अछि ॥५॥

एक अर्थक बोधक समानाधिकरण कहबैत अछि, यथा *उजर फूल* । यदि *उजर*मे फूल ई बाजल जाए तँ फूलसँ भिन्न कोनो वस्तु बुझल जाएत तस्मात् एकार्थबोधक नहि भेलासँ समानाधिकरण नहि कहाओत, किन्तु व्यधिकरण ॥६॥

जाहि शब्दक अन्तभागमे कृत्संज्ञक प्रत्यय वा तद्धित प्रत्यय रहए से नाम कहबैत अछि। कृत् जो तद्धित आगाँ कहल जाएत। कृदन्त यथा *देखनिहार, देखल, देखब, देखनाइ*। तद्धित यथा *उजरा, पागबाला, मटिजाह*। ईसभ नाम कहबैत अछि। तथा जाहि शब्दक समाससंज्ञा कहल जाए सेहो नाम कहबैत अछि। यथा *भलमानुस, सरबेटा, चौबट्टी* इत्यादि। एहिठाम कृदन्त-आदि पदें पाणिनीय व्याकरणानुसार जे कृदन्त, तद्धितान्त ओ समास कहबैत अछि सेहो गृहीत जानब तँ *कर्त्तव्य, वासुदेव, नियमानुसार,* इत्यादिओ नाम थीक॥७॥

मिथिलभाषाक कोषमे ओ संस्कृतक कोषमे जे शब्द उपदिष्ट अछि सेहो नाम कहाओल जाइत अछि तथा आधुनिक संकेतित अर्थात् आइकाल्हुक राखल सेहो नाम कहबैत अछि। मिथिलभाषाकोषमे कहल धैल, घर आदि; संस्कृतकोषोपदिष्ट *द्वार, गृह* इत्यादि, आधुनिकसंकेतित *देबलाल, भगवान्दत्त* इत्यादि। एहि दूहू सूत्रसँ ई सिद्ध भेल जे एहि व्याकरणमें नामशब्दें नओ प्रकारक शब्द कहल जाइत अछि–(१) मिथिलाभाषाव्याकरणक कृदन्त। (२) संस्कृतक कृतन्त। (३) एहिभाषाक तद्धितान्त। (४) संस्कृतक तद्धितान्त। (५) एहि व्याकरणक समास। (६) संस्कृतक समास। (७) मिथिलाभाषाकोषोदिष्ट। (८) संस्कृतकोषोपदिष्ट। (९) आधुनिकसंकेतित॥८॥

एहि व्याकरणमे पूर्व ओ पर शब्दक अव्यवहित पूर्व ओ अव्यवहित पर अर्थ बुझब॥९॥

नामसँ, धातुसँ इत्यादिरूपें *सँ* शब्दक उच्चारण कए जे कार्य कहल जाए से ओकरासँ पर जानब ॥१०॥

कें शब्दक उच्चारणपूर्वक जे कार्य कहल जाए से स्थानमे करब। यथा "तृतीयाकें अनुनासिक एकार वैकल्पिक" एहि सूत्रक ई अर्थ सिद्ध भेल जे तृतीयाक स्थानमे अनुनासिक एकार हो यथा *हाथसँ, हाथें* । एवं अन्यत्रहुँ जानब ॥११॥

सूत्रसँ जाहि शब्दक स्थान आदेश कहल जाए ओहि शब्दक अन्तिम वर्णक स्थानमे ओ आदेश जानब॥१२॥

आदेश अनेक वर्णक हो तँ संपूर्णहिक स्थान आदेश, अन्तिममात्रवर्णक स्थानमे नहि ॥१३॥

सँ शब्दक उच्चारण कए विहित जे एकवर्णक आदेश से परक आदि वर्णक स्थानमे होइत अछि ॥१४॥

विशेष सूत्र सामान्य सूत्रक बाधक होइत अछि। यथा "आदेश अन्तिमवर्णकें" ई सामान्यरूपें कहल अछि तकर "अनेकवर्णक आदेश संपूर्णकें" ई विशेष सूत्र बाधक॥१५॥

विलोपविधि सब सूत्रक बाधक होइत अछि तस्मात् विलोपक संभावनहुमे विलोप भेलहि उत्तर कार्यान्तिर हो ॥१६॥

जे आदेश जकरा स्थानमे होअए से तद्वत् कार्यसंपादक होइत अछि ॥१७॥

विलोपशब्दैं जकरा अनुच्चारणरूप आदेश होअए तन्निमित्तक कार्य नहि होइत अछि ॥१८॥

वर्णबोधक *अ* इत्यादि शब्दसँ आगाँ *वर्ण*शब्दक उपादान रहलासँ तद्वर्णजातिक ह्रस्व-दीर्घ-अनुनासिकप्रभृति सर्वविध वर्ण लेल जाइत अछि, यथा "अवर्णक लोप" ई कहने अकार ओ आकार प्रभृति सभ प्रकारक अवर्णक लोप बुझल जाएत ॥१९॥

ह्रस्वदीर्घादि आदेश स्थानीक सदृशे होइत अछि अर्थात् आकारकैं अकारे (ह्रस्वे) होएत इत्यादि ॥२०॥

उद्देश्य ओ विधेय समसंख्यक रहलासँ यथाक्रम सम्बन्ध जानब ॥२१॥

इति संकेतप्रकरण

अथ सन्धिनिर्णयः

गृहीय संस्कृत-समासमे संस्कृत-व्याकरणानुसार सन्धिकार्य ॥१॥ *कदापि* आदि सर्वथा संस्कृतमे ॥२॥अन्यत्र सन्धिकार्य नहि ॥३॥

संस्कृतक समास जे मिथिलाभाषामे गृहीत होइत अछि ताहिमे पाणिनीय, सारस्वत प्रभृति संस्कृत व्याकरणक अनुसार सन्धिकार्य जानब–*अति + आवश्यक* = अत्यावश्यक इत्यादि ॥१॥

कदापि, येनकेनोपायेन इत्यादि जे सर्वथा संस्कृत शब्द गृहीत अछि ताहूमे संस्कृतव्याकरणानुसार सन्धिकार्य होइत अछि। यथा–*कदा + अपि = कदापि* (सवर्णदीर्घ)। *केन + उपायेन = केनोपायेन* (गुण)। *यत् + गतं + तत् + गतम् = यत्गतंतद्गतम्* (जश्त्व) इत्यादि ॥२॥

अन्यत्र सन्धिकार्य नहि होइत अछि अर्थात् संस्कृतहु शब्दमे समाससँ अन्यत्र *सूर्य उदित भेलाह* इत्यादि ठाम *सूर्योदित भेलाह* एहन सन्धि नहि होएत। असंस्कृत वाक्य *हम अएलहुँ* इत्यादि स्थलमे सुतरां सन्धिकार्य नहि। भाषासमास *एकाध, दिनेक* इत्यादि स्थलमे क्वचित् सन्धि होइत अछि, तकर समासप्रकरणहिमे विशेषरूपैं विधान कएल जाएत ॥३॥

गृहीत संस्कृत समासमे संस्कृतव्याकरणानुसार सन्धिकार्य ई प्रथम कहल अछि तैं जे व्यक्ति संस्कृतक व्याकरण नहि जनैत छथि ताहि व्यक्तिक उपकारार्थ गृहीतसंस्कृतसमासद्वारा मिथिलाभाषोपयोगी कतोक सन्धिकार्य संस्कृतव्याकरणसँ आन प्रकारैं सरल रीतिसँ देखबैत छी। यावतो यथावत् सन्धिकार्यज्ञान संस्कृत-व्याकरणहिसँ करबाक होएत।

पदद्वयक मेल सन्धि कहबैत अछि । से दू प्रकारक अछि। एक स्वरसन्धि, दोसर व्यञ्जनसन्धि। स्वरान्तपदक सङ्ग पदान्तरक मेल स्वरसन्धि ओ व्यञ्जनान्तपदक सङ्ग पदान्तरक मेल व्यञ्जनसन्धि थीक।

अथ स्वरसन्धि

(१) असमान स्वरसँ पूर्व इ उ ऋ क स्थान क्रमशः य् व् र् होइत अछि। *अत्युत्तम, अन्वर्थ, पित्रर्थ।* एहि ठाम इ उ ऋ शब्दैं तथा स्वर शब्दैं ह्रस्व ओ दीर्घ दुहू बुझब। एवं आगहुँ। *काल्यर्थ, अत्याराध्य, देव्यालय।*

(२) समान स्वरसँ पूर्व *अ इ उ ऋ* रहला सन्ताँ दुहूक स्थान क्रमशः *आ ई ऊ ॠ* दीर्घ एकादेश होइत अछि। *पीताम्बर, दयार्णव, भारातुर, दुर्गानन्द, कवीन्द्र, रघूत्तम, पितॄण॥*

(३) अवर्णसँ आगाँ इ उ ऋ रहने दुहूक स्थान *ए ओ अर्* आदेश होइत अछि। *सुरेन्द्र, महेन्द्र, सुरेश, महेश, परमोदार, देवर्षि।*

(४) *अ इ उ ऋ* सँ पर ह्रस्व ऋकार रहने उक्त आदेशसभ नहिओ होइत अछि। *देवर्षि, देवऋषि। पितृण, पितृऋण।*

(५) अवर्णसँ आगाँ *ए* तथा *ऐ* रहने दुहूक स्थान ऐकार, ओ तथा औ रहने औकार होइत अछि। *सर्वैकत्व, धनैश्वर्य। वनौषधि। परमौदार्य।*

(६) स्वरसँ पूर्व *ओ औ* क स्थान यथाक्रम *अव्, आव्* आदेश होइत अछि। *गो + ईश = गवीश। नौ + ईश्वर = नावीश्वर। अय्* ओ *आय्* दुहू आदेश द्विर्वचनप्रकृतिभावादिवत् भाषामे उपकारक नहि, हेतु जे पदद्वयमेलमे एकर उदाहरण नहि अछि।

(७) ह्रस्वसँ पर छकार रहने छकारसँ पूर्व चकारक आगम होइत अछि। *पदच्छेद, प्रच्छन्न, तरुच्छाया।*

(८) दीर्घान्त पदसँ पर छकारकेँ उक्त कार्य वैकल्पिक होइत अछि। *शाखाछाया, शाखाच्छाया।*

(९) *आ* उपसर्गसँ पर उक्त कार्य नित्य होइत अछि। *आच्छन्न, आच्छदित।*

इति स्वरसन्धि

अथ व्यञ्जनसन्धि

(१०) वर्णक तृतीय, चतुर्थ, अन्तस्था ओ स्वरसँ पूर्व वर्गक प्रथम वर्णकेँ तद्वर्गक तृतीय आदेश होइत अछि। *षड्दर्शन। सहद्भाव। बृहद्यत्न। पृथगर्थ।*

(११) वर्गक पञ्चमसँ पूर्व वर्गीय वर्णकेँ स्ववर्गक पञ्चम होइत अछि वैकल्पिक। *पृथङ्नमन, पृथग्नमन।*

(१२) तकारकेँ *च* छसँ पूर्व चकार, *ज* झसँ पूर्व जकार, *ट* ठसँ पूर्व टकार, *ड* ढसँ पूर्व डकार, ओ लकारसँ पूर्व लकार होइत अछि। बृहच्चय, बृहच्छाया, सुहृज्जन्म, बृहज्झंकार, बृहट्टीका, सट्ठक्कुर, बृहड्डमरु, बृहड्ढक्का, उल्लसित।

(१३) *क ट त*सँ पर हकारकेँ तद्वर्गीय चतुर्थ वैकल्पिक होइत अछि। *प्राक् + हानि = प्राग्घानि, प्रागृहानि। बृहत् + हर्ष = बृहद्धर्ष, बृहद्हर्ष।*

(१४) व्यञ्जनसँ पूर्व पदान्त मकारकेँ अनुस्वार होइत अछि। *अहम् + कार = अहंकार।*

(१५) पदान्त अनुस्वारकेँ *य व ल* पर रहलासँ क्रमशः *यँ वँ लँ* जो वर्गीय वर्ण पर रहलासँ तद्वर्गीय पञ्चम वैकल्पिक होइत अछि। *सय्यँम, संयम, सव्वँत्, संवत्। सल्लँप, संलाप। अहङ्कार, अहंकार। सञ्छिन्न, संछिन्न। सञ्जय, संजय। सम्भार, संभार।*

(१६) आगाँ वर्ण नहि रहलासँ वा प्रथम, द्वितीय तथा ऊष्मावर्ण आगाँ रहने रेफकेँ विसर्ग होइत अछि। ई अवधान राखब जे विसर्गान्त पुनः यशः इत्यादि जतेक शब्द अछि से सभ प्रथम रेफान्ते थीक, पश्चात् विसर्गान्त बनओल जाइतअछि एवं अनुस्वारान्त प्राथमिक मकारान्त थीक। *अन्तःकम्प। मनःखेद।*

(१७) विसर्गक स्थान *त थ* सँ पूर्व सकार, *च छ* सँ पूर्व शकार, *ट ठ*सँ पूर्व षकार होइत अछि। *मनस्ताप।* पुनस्थकार। यशश्चय। निश्छल। निष्टङ्क। निष्ठुर।

(१८) विसर्गकेँ *क ख*सँ पूर्व जिह्वामूलीय ओ *प फ*सँ पूर्व उपध्मानीय वैकल्पिक होइत अछि। *प्रातःकाल, प्रातः काल। वय खिन्न, वयः खिन्न। पय पान, पयःपान। यश फल, यशःफल।*

(१९) क्षसँ पूर्व जिह्वामूलीय नहि होइत अछि। यशःक्षय, अन्तःक्षीण।

(२०) इकार-उकारसँ पर विसर्गगेँ षकार होइत अछि, *क ख प फ*सँ पूर्व। *आविष्कार, दुष्पाप।*

(२१) *श स*सँ पूर्व विसर्गकेँ क्रमशः *श स* वैकल्पिक। *दुश्शील, दुःशील। अन्तस्सुख, अन्तःसुख।*

(२२) ह्रस्व-अकारद्वय-मध्यमे पदान्त रेफ रहलासँ तीनूक स्थान ओकार होइत अछि। *यशोम्बुधि।*

(२३) वर्गक प्रथमद्वितीयभिन्न अन्तस्था ओ हकारसँ पूर्व ह्रस्व अकारसँ पर पदान्त रेफ रहलासँ अकार ओ रेफ दुहूक स्थान ओकार एकादेश होइत अछि। *यशोगान, अम्भोरुह, यशोहानि।*

(२४) अन्तर्, प्रातर्, पुनर्, स्वर् इत्यादि रेफान्त अव्ययसम्बन्धी रेफकेँ उक्त कार्य नहि होइत अछि। *अन्तर्गर्भ, प्रातर्जन्म, पुनर्भू, स्वर्गमन।*

(२५) ओकारक अप्राप्तिस्थलमे रेफसँ पूर्व रेफक लोप ओ पूर्व स्वरकेँ दीर्घ होइत अछि। *नीरस।* ओकारक प्राप्तिमे *मनोरथ।*

(२६) ह्रस्वअवर्णभिन्न स्वर आगाँ रहलासँ अवर्णसँ पर रेफक लोप होइत अछि। *तमउद्गम। आविः* इत्यादि शब्द प्राथमिक रेफान्त थीक से कहि आएल छी तेँ जाहिठाम विसर्गक प्राप्ति नहि हो ताहिठाम रेफान्ते रहत। *आविर्भाव, दुर्गति, निर्णय* इत्यादि।

इति व्यञ्जनसन्धि

इति सन्धिनिर्णय

अथ विभक्तिप्रकरणम्

सुबन्त

सु प्रथमा, कें द्वितीया, सँ तृतीया, कें चतुर्थी, सँ पञ्चमी, क षष्ठी, मे सप्तमी विभक्ति ॥१॥ नामसँ विभक्ति ॥२॥ सुक विलोप ॥३॥ संपूर्ण तृतीयाकेँ अनुनासिक एकार बैकल्पिक ॥४॥ अहाँ आदिसँ नहि ॥५॥ स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व अवर्णक लोप ॥६॥ ई ऊ केँ ह्रस्व ॥७॥

सु प्रथमा विभक्ति कहबैत अछि। एवं *कें* द्वितीया विभक्ति, *सँ* तृतीया विभक्ति, *कें* चतुर्थी विभक्ति, *सँ* पञ्चमी विभक्ति, *क* षष्ठी विभक्ति, *मे* सप्तमी विभक्ति कहाओल जाइत अछि। संस्कृतमे प्रथमा आदि प्रत्येक तीन प्रकार अछि किन्तु मिथिलाभाषामे से नहि। आओर संस्कृतमे *औ* विभक्ति प्रथमा द्वितीया दुहू थीक, तद्वत् एहिभाषामे *सँ* विभक्ति तृतीया ओ पञ्चमी दुहू जानब। एवं *कें* विभक्ति द्वितीया ओ चतुर्थी दुहू थीक॥१॥

नामसँ अर्थात् *देखनिहार, ममिऔत, पनिबह, गाम, हरिलाल* आदि पूर्वोक्त नामसंज्ञक शब्दसँ अव्यवहित आगाँ *सु* आदि सात विभक्ति अबैत अछि। जे विभक्ति जाहि अर्थमे अबैत अछि से आगाँ कारकप्रकरणमे कहल जाएत॥२॥

प्रथमा विभक्तिक विलोप अर्थात् संपूर्णक अनुच्चारण कएल जाइत अछि, अतएव प्रथमा विभक्तिक कतहु श्रवण नहि होएत। उदाहरण; *गाम अछि, गाम देखल जाइत अछि।* द्वितीयाक उदाहरण *रामकें देखू* ॥३॥

संपूर्ण तृतीया विभक्तिक स्थानमे अनुनासिक एकार अर्थात् *एँ* आदेश कएल जाइत अछि। से वैकल्पिक हो। ई व्यवस्थित विभाषा थीक तेँ विनाक योगमे विहितकेँ नित्य। *बिना पोथिएँ कोना पढ़ब?* कर्त्तामे विहितकेँ नहि। *देवदत्तसँ कार्य करबैत छी।* करणमे विहितकेँ कोनो धातुक योगमे हो, कोनोमे नहि। *पाएरेँ गेलाह। पैएरसँ मारलैन्हि।* क्वचित् वैकल्पिक। *एक हाथेँ वा हाथसँ कोना कार्य करब?* ॥४॥

अहाँ आदिसँ पर तृतीयाकेँ *एँ* आदेश नहि हो। *अहाँसँ, ककरासँ, कथीसँ* ॥५॥

जाहि प्रत्ययक प्रथम वर्ण स्वर हो ताहि प्रत्ययसँ पूर्व अवर्णक अर्थात् ह्रस्वदीर्घ उभयविध अकारक लोप होइत अछि। तृतीयाक उदाहरण–*एक गामसँ वा एक गामेँ की? पाएरेँ गेलाह। मालासँ जप करू; बिना मालेँ नहि।* *एँ* आदेश भेलाक उत्तर पूर्वोक्त तत्स्थानापन्नन्यायसँ प्रत्यय मानि अकारक ओ आकारक लोप भेल। चतुर्थीक उदाहरण- *गामकेँ अवलम्ब देल। मालिकेँ इनाम देल।* पंचमी - *गामसँ हटू।* षष्ठी-*गामक रक्षा करू।*

सप्तमी- *गाममे लोक अछि।*

बहुत ठाम द्वितीयाक अनुच्चारण कएल जाइत अछि, यथा *गाम जाउ, नाच देखू।* सप्तमीक स्थानमे प्रायः *पर* सेहो बाजल जाइत अछि। यथा, *ओ गामपर छथि।* एहि प्रसङ्गक सूत्रसभ कारकप्रकरणमे कहल जाएत।

रूप बुझबामे सौकर्यक हेतु आगाँ विभक्तिचक्र देखबैत छी॥६॥

सारिणी २ : विभक्तिचक्र (१)

विभक्ति	गाम	माला	मालि
प्रथमा	गाम	माला	मालि
द्वितीया	गामकेँ	मालाकेँ	मालिकेँ
तृतीया	गामसँ/गामेँ	मालासँ/मालेँ	मालिसँ/मालिएँ
चतुर्थी	गामकेँ	मालाकेँ	मालिकेँ
पञ्चमी	गामसँ	मालासँ	मालिसँ
षष्ठी	गामक	मालाक	मालिक
सप्तमी	गाममे / गामपर	मालामे/मालापर	मालिमे/मालिपर

जाहि प्रत्ययक प्रथम वर्ण स्वर हो से स्वरादि थीक। ओहिसँ पूर्वस्थित ईकारक स्थान ह्रस्व इकार, ऊकारक स्थान ह्रस्व उकार होइत अछि। *बिना कालिएँ कल्याण नहि। बिना टहलुएँ कार्य कोना?* आदरमे द्वितीया चतुर्थीक स्थान *काँ* आदेश होइत अछि। यथा, *कालीकाँ देखू। कालीकाँ प्रणामी दिअ।* एकर सूत्र कारकप्रकरणमे कहल जाएत॥७॥

की (किम्) शब्द

मनुष्यदिमे *की* शब्दकेँ प्रथमासँ पूर्व *के* ॥८॥ आन विभक्तिसँ पूर्व *ककरा* ॥९॥ आदरमे *कनिका* ॥१०॥ मनुष्यादिभिन्नमे विभक्तिसँ पूर्व *कथी* ॥११॥ समानाधिकरणसँ पूर्व *कोन* सर्वत्र ॥१२॥ मनुष्यादिमे प्रथमासँ पूर्व नहि ॥१३॥ *ककरा* आदिसँ द्वितीया चतुर्थी षष्ठीक विलोप ॥१४॥ अव्ययभिन्न प्रथमान्तक योगमे षष्ठीक लोप नित्य, अन्यविभक्त्यन्तक योगमे वैकल्पिक ॥१५॥ *कनिका* आदिसँ षष्ठीकेँ *अर* वैकल्पिक ॥१६॥

प्रथमासँ पूर्व विद्यमान मनुष्यादिमे प्रयुक्त *की* शब्दक स्थान *के* शब्द बाजल जाइत अछि। *ई पाहुन के थिकाह?* मनुष्यादिभिन्नतात्पर्यें, *हाथमे की थीक?* आदिशब्दें मनुष्यभाषाज्ञानयोग्य देवदानवभूतप्रेतादि विवक्षित। तेँ *देवतामे के नहि दयालु? भूतप्रेतमे के नहि क्रूर?* इत्यादि स्थलहुमे *के* आदेश भेल। यद्यपि विलोप सभसँ बली थीक तेँ *के*

आदेशसँ पूर्वहिँ सुक विलोप भेल ओ विलुप्त-प्रत्यय-निमित्तक कार्य नहि होइत अछि तथापि सूत्रसामर्थ्यात् विलुप्त-प्रथमा-निमित्तक के आदेश जानब ॥८॥

मनुष्यादिमे प्रयुक्त *की* शब्दक स्थान प्रथमा-भिन्न विभक्तिसँ पूर्व *ककरा* ई आदेश कएल जाइत अछि। द्वितीया–*ककरा देखब*। ककरा आदेश कएलाक उत्तर "ककरा आदि" इत्यादि अग्रिम सूत्रसँ द्वितीयाक विलोप भेल। तृतीया- *ककरासँ कार्य अछि ?* चतुर्थी–*ककरा पुस्तक देब ?* अग्रिम सूत्रसँ चतुर्थीक विलोप। पञ्चमी–*ककरासँ हटल रही ?* षष्ठी–*ककरा हेतु, ककरा लग* । अग्रिम सूत्रसँ षष्ठीक विलोप। सप्तमी- *ककरामे सभ गुण* ॥९॥

आदरणीय मनुष्यादिमे *की* शब्दक स्थान *कनिका* आदेश होइत अछि, प्रथमाभिन्न विभक्तिसँ पूर्व। *पण्डितलोकनिमे (२) कनिका अनाबी, (३) कनिकासँ कार्य चलत, (४) कनिका बिदाइ देल जाइन्हि, (५) कनिकासँ फूट रही, (६) कनिका लग रही, (७) कनिकामे सभ गुण ?*

केओ केओ कनिकाक स्थान *किनका* बजैत अछि। वस्तुतः *कनिका* एकरो प्रयोग नीक व्यक्तिमे अल्पे अछि। अधिकांश नीकहु लोकमे *ककरा* इएह शब्द व्यवहृत जानब। यथा, *ब्राह्मणलोकनि उपस्थित छथि; पहिने ककरा खोअएबैन्हि ? अहाँ ककरासँ पढ़ल ? तनिक की नाम ?* इत्यादि ॥१०॥

मनुष्यादिभिन्नमे प्रयुक्त विभक्तिसँ पूर्व की शब्दक स्थान *कथी* बाजल जाइत अछि। *जारन नहि अछि, कथीसँ भानस होएत ? कथीक हेतु ? कथीमे वस्तु रहत ?* कारक प्रकरणमे द्वितीयाक बहुल प्रकारेँ विलोप कहल जाएत। ओहिसँ मनुष्यादिभिन्नमे की शब्दसँ पर द्वितीयाक विलोप होइत अछि ओ विलुप्तनिमित्तक कार्य नहि हो से उक्त अछि। अतएव *की देखलहुँ* इत्यादिस्थलमे *कथी* आदेश नहि भेल ॥११॥

समानाधिकारणसँ पूर्व की शब्दक स्थान *कोन* ई आदेश कएल जाइत अछि सर्वत्र अर्थात् मनुष्यादि ओ मनुष्यादि-भिन्न दुहू ठाम एवं प्रथमाद्वितीयादि सकल विभक्तिमे। मनुष्यादिमे- *कोन ब्राह्मणकेँ देखब ?* मनुष्यादिभिन्नमे - *कोन वस्तु आनब ?* यद्यपि *कोनमे लाभ, कोनमे हानि* इत्यादिक अनुरोधेँ कोन शब्द स्वतन्त्रो अछि जकर व्युत्पादन तद्धितप्रकरणमे कएल जाएत, ओहीसँ *कोन ब्राह्मणकेँ देखब* इत्यादिक निर्वाह भए सकत तथापि *कोन ब्राह्मणकेँ देखब*, एकरा स्थान कदाचित् *ककरा ब्राह्मणकेँ देखब*, एहनो प्रयोग शुद्ध बुझल जाइत, से जनु बुझल जाए, एहि हेतु *कोन* आदेश आवश्यक ॥१२॥

मनुष्यादिमे समानाधिकारणसँ पूर्व की शब्दक स्थान *कोन* ई आदेश नहि हो प्रथमासँ पूर्व। *के लोकनि छथि ?* "कतर" एतदर्थक कोन शब्द तद्धितान्त अछि। तकर प्रयोग, *कोन ब्राह्मण अओताह ?* ॥१३॥

ककरा, तकरा, जकरा, एकरा, ओकरा, हमरा, तोरा, तोहरा, अपना, कनिका, तनिका, जनिका, हिनका, हुनका, अनका, एहि पन्द्रह शब्दसँ पर द्वितीया, चतुर्थी ओ

षष्ठीक विलोप होइत अछि। द्वितीया–*ककरा देखब ?* चतुर्थी– *ककरा पुस्तक देब ?* षष्ठी– *ककरा बालकक विवाह भेलैन्हि ?* ॥१४॥

अव्यय *लए, दए,* इत्यादिसँ भिन्न जे प्रथमान्त तकरा योगमे *ककरा* आदिसँ पर षष्ठीक आदिवर्णक लोप होइत अछि। *ई पुस्तक ककर थीक ?* एहिठाम षष्ठीक ककारक लोप भेलाक उत्तर अवशिष्ट अकार तत्स्थानापन्नन्यायसँ प्रत्यय कहबैत अछि; तन्निमित्तक आकार रूप अवर्णक लोप भेल। अव्ययभेदनिवेशेँ *ककरा लए, ककरा दए, ककरा मादए,* इत्यादि स्थलमे उक्त कार्यक अभाव भेल। प्रथमासँ भिन्न जे विभक्ति तदन्तक योगमे उक्त कार्य वैकल्पिक हो। *ककरा हाथेँ* वा *ककर हाथेँ कार्य होएत ? हमर पुस्तक के लेत ? हमरा पुस्तकमे काठक गत्ता अछि* ॥१५॥

अव्ययभिन्न प्रथमान्तक योगमे कनिका आदिसँ पर षष्ठीक स्थान *अर* आदेश वैकल्पिक होइत अछि। *ई कनिकर पुत्र थिकाह* वा *कनिक पुत्र थिकाह ?* कनिका आदि ककरा आदि गणक अन्तमे अछि- कनिका, तनिका, जनिका, हिनका, हुनका, अनका ई छओशब्द। तकर उदाहरणसभ आगाँ भेटत ॥१६॥

सारिणी ३ : विभक्तिचक्र (२)

	मनुष्यादिमे	*आदरमे*	*मनुष्यादिभिन्नमे*
प्रथमा	के	के	की
द्वितीया	ककरा	कनिका	की
तृतीया	ककरासँ	कनिकासँ	कथीसँ
चतुर्थी	ककरा	कनिका	कथीकेँ
पञ्चमी	ककरासँ	कनिकासँ	कथीसँ
षष्ठी	ककरा/ककर	कनिका/कनिक/कनिकर	कथीक
सप्तमी	ककरामे/ककारपर	कनिकामे/कनिकापर	कथीमे/कथीपर

ते जे ए ओ (तद् यद् एतद् अदस्) शब्द।

प्रथमासँ पूर्व *ते ए केँ से ई* ॥१७॥ विलुप्तद्वितीयाक समानाधिकरणसँ पूर्व ॥१८॥ ज धातुक योगमे नहि ॥१९॥ *ते जे ए ओकेँ* द्वितीयादिसँ पूर्व आदरमे *तनिका जनिका हिनका हुनका* ॥२०॥ आदराभावमे *तकरा जकरा एकरा ओकरा* ॥२१॥ मनुष्यादिभिन्नमे तृतीया पञ्चमी सप्तमीसँ पूर्व *ताहि जाहि एहि ओहि* ॥२२॥ अप्रथमासमानाधिकरणसँ पूर्व सर्वत्र ॥२३॥ लुप्तद्वितीयान्त समानाधिकरणसँ पूर्व नहि ॥२४॥

प्रथमासँ पूर्व *ते* शब्दक स्थान *से* , *ए* शब्दक स्थान *ई* आदेश होइत अछि। *से देखलैन्हि, से देखल गेलाह। ई अछि, ई देखल जाएत ॥१७॥*

जाहिसँ पर द्वितीयाक विलोप भेल हो तादृश समानाधिकरणसँ पूर्वहुँ *ते* कँ *से, ए,* कँ *ई* आदेश होइत अछि। *से कार्य कएलहुँ। ई वस्तु कीनब।* द्वितीयाक श्रवण रहला सन्ताँ- *ताहि कार्यकँ संपन्न कएल। एहि ब्राह्मणकँ चीन्हल।* एहिठाम उक्त आदेश नहि, किन्तु अग्रिम सूत्रसँ *ताहि* ओ *एहि* आदेश भेल। एवं द्वितीयासँ आन विभक्तिक विलोपहुमे, *ताहि गाम रहि की भेल ? एहि ठाम कोन कार्य करब ?* उक्त प्रयोगसभमे द्वितीया वा सप्तमीक विलोपक सूत्र कारकप्रकरणमे कहल जाएत ॥१८॥

विलुप्तद्वितीयान्त समानाधिकरणसँ पूर्व उक्त आदेश नहि हो, यदि *ज* धातुक प्रयोग रहए। यथा, *ताहि गाम जाएब ॥१९॥*

द्वितीया आदि विभक्तिसँ पूर्व *ते, जे, ए,* ओक स्थान आदरमे क्रमशः *तनिका, जनिका, हिनका, हुनका* आदेश होइत अछि। द्वितीया- *तनिका लए आउ जनिका देखलैन्हि। हिनका देखि हुनका देखबैन्हि।* 'ककरा इत्यादि' पूर्वोक्त सूत्रसँ द्वितीयाक विलोप जानब एवं चतुर्थी ओ षष्ठीक। तृतीया- *तनिकासँ कार्य होएत जनिकासँ भेँट भेल छल। हिनकासँ कार्य कराए हुनकासँ कराएब। बिना हिनकेँ कार्य नहि होएत* इत्यादि। चतुर्थी- *तनिका गाए दिऔन्हि जनिका पुस्तक देलैन्हि। हिनका धोती देबैन्हि हुनका तौनी।* पंचमी- *तनिकासँ हटल रहू जनिकासँ भिन्न भेलहुँ। हिनकासँ सीखल। हुनकासँ पढ़लहुँ।* षष्ठी- *तनिका सङ्ग चलू जनिका पुत्रकँ देखलैन्हि। हिनका हेतु हुनका ओतए गेलहुँ। ई तनिक बालक थिकाह जनिक घर थिकैन्हि। हिनक पुस्तक हमरा ओहिठाम छैन्हि। हुनक बालक पढ़ैत छथि। जनिकर भाग्य ननिकर पुत्र पण्डित। हिनकर स्वभाव नीक छैन्हि, हुनकर अधलाह।* ककरा, कनिक, जनिकर एकरा जकाँ *तनिका, तनिक, तनिकर,* इत्यादिक साधन जानब। सप्तमीमे- *तनिकामे बहुत गुण छैन्हि जनिकामे प्रभाव देखल। हिनकामे वा हुनकामे कोनो भेद नहि। तनिका पर सभ प्रसन्न जनिका पर ईश्वर। हिनका पर विश्वास अछि, हुनका पर नहि ॥२०॥*

आदराभावमे द्वितीया आदि विभक्तिसँ पूर्व *ते, जे, ए, ओ* क स्थान क्रमशः *तकरा, जकरा, एकरा, ओकरा* आदेश होइत अछि। द्वितीया- *शूद्र ओहिठाम अछि तकरा अनाउ।* तृतीया- *तकरासँ कार्य चलत।* चतुर्थी- *तकरा मासिक देबैक।* पंचमी-*तकरासँ फराक रहने निर्वाह नहि।* षष्ठी- *जकरा हेतु हम कहैत छी तकर स्वभावो नीक छैक।* सप्तमी- *जकरामे सभ गुण छैक तकरा पर कृपा रखबैक।* ककरा-इत्यादि सूत्रसँ द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठीक विलोप। षष्ठीमे प्रथमान्तक योग सन्ताँ *अर* आदेश एवं जे, ए, ओ क रूपक अनुसन्धान कए लेब। आगाँ विभक्तिचक्रमे सभ रूप स्पष्ट लिखल भेटत ॥२१॥

मनुष्यादिभिन्न पशु, पक्षी, वृक्ष आदिमे प्रयुक्त *ते, जे, ए, ओ* क स्थान तृतीया, पंचमी, सप्तमीसँ पूर्व क्रमशः *ताहि, जाहि, एहि, ओहि* आदेश होइत अछि। *जारन मोल लाउ,*

ताहिसँ भानस करब। ताहिसँ हटी जनु; ताहिमे स्थिर रहू। एवं जे, ए,ओ क रूप। आन विभक्तिमे आदराभावोक्त *तकरा* इत्यादि आदेश जानब ॥२२॥

सर्वत्र अर्थात् आदर-आदराभाव ओ मनुष्य-अमनुष्य सभ ठाम अप्रथमान्त समानाधिकरणसँ पूर्व *ते, जे, ए, ओ* कँ क्रमशः *ताहि, जाहि, एहि, ओहि* आदेश हो। *ताहि दिनसँ, ताहि व्यक्तिकँ, ताहि महाराजसँ, ताहि कार्यक, ताहि ठाम।* एवं जे, ए, ओ एकरो रूप जानब ॥२३॥

जाहिसँ पर द्वितीयाक विलोप भेल हो तादृश समानाधिकरणसँ पूर्व *ते* आदिक स्थान *ताहि* आदि आदेश नहि होइत अछि- *से कार्य सम्पन्न करू।* द्वितीयाक श्रवण सन्ताँ– *ताहि कार्यकँ संपन्न करू।* एवं जे आदिक रूप जानब ॥२४॥

सारिणी ४ : विभक्तिचक्र (३)

ते शब्द

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिभिन्नमे
प्रथमा	से	से	से
द्वितीया	तनिका	तकरा	तकरा
तृतीया	तनिकासँ/तनिकेँ	तकरासँ/तकरेँ	ताहिसँ
चतुर्थी	तनिका	तकरा	तकरा
पंचमी	तनिकासँ	तकरासँ	ताहिसँ
षष्ठी	तनिका/तनिक तनिकर	तकरा/तकर	तकरा/तकर
सप्तमी	तनिकामे/तनिकापर	तकरामे/तकरापर	ताहिमे/ताहिपर

जे शब्द

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिभिन्नमे
प्रथमा	जे	जे	जे
द्वितीया	जनिका	जकरा	जकरा
तृतीया	जनिकासँ/जनिकेँ	जकरासँ/जकरेँ	जाहिसँ
चतुर्थी	जनिका	जकरा	जकरा
पञ्चमी	जनिकासँ	जकरासँ	जाहिसँ
षष्ठी	जनिका/जनिक जनिकर	जकरा/जकर	जकरा/जकर

सप्तमी	जनिकामे/जनिकापर	जकरामे/जकरापर	जाहिमे/जाहिपर

ए शब्द

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिभिन्नमे
प्रथमा	ई	ई	ई
द्वितीया	हिनका	एकरा	एकरा/ई
तृतीया	हिनकासँ/हिनकेँ	एकरासँ/एकरेँ	एहिसँ
चतुर्थी	हिनका	एकरा	एकरा
पञ्चमी	हिनकासँ	एकरासँ	एहिसँ
षष्ठी	हिनका/हिनक हिनकर	एकरा/एकर	एकरा/एकर
सप्तमी	हिनकामे/हिनकापर	एकरामे/एकरापर	एहिमे/एहिपर

ओ शब्द

	आदरमे	आदराभावमे	मनुष्यादिभिन्नमे
प्रथमा	ओ	ओ	ओ
द्वितीया	हुनका	ओकरा	ओकरा/ओ
तृतीया	हुनकासँ/हुनकेँ	ओकरासँ/ओकरेँ	ओहिसँ
चतुर्थी	हुनका	ओकरा	ओकरा
पञ्चमी	हुनकासँ	ओकरासँ	ओहिसँ
षष्ठी	हुनका/हुनक हुनकर	ओकरा/ओकर	ओकरा/ओकर
सप्तमी	हुनकामे/हुनकापर	ओकरामे/ओकरापर	ओहिमे/ओहिपर

हम, तोँ, आन शब्द

विभक्तिसँ पूर्व हमकेँ *हमरा* ॥२५॥ तोँ केँ *तोहरा* ॥२६॥ अधिक नीचमे *तोरा* ॥२७॥ दुहूक तुल्य विषय ई ककरो मत ॥२८॥ समानाधिकरण सब, सभ लोकनिसँ पूर्व तीनू वैकल्पिक ॥२९॥ द्वितीयादिसँ पूर्व मनुष्यादिमे

आनकेँ *अनका* ॥३०॥ अकारात्मक षष्ठीसँ पूर्व अनकाकेँ *आनक* ॥३१॥

विभक्तिसँ पूर्व हम शब्दक स्थान *हमरा* आदेश होइत अछि। प्रथमामे विभक्तिक विलोप, तस्मात् आदेश नहि। *हम अएलहुँ, हम देखल गेलहुँ।* द्वितीयामे *हमरा देखू*। आदेश कएलाक उत्तर ''ककरा इत्यादि'' सँ द्वितीयाक विलोप। एवं चतुर्थी ओ षष्ठीक। तृतीयामे- *हमरासँ देखाउ; विना हमरेँ कार्य नहि चलत।* चतुर्थी–*हमरा रुपैआ पैँच देब।* पंचमी- *हमरासँ पढ़ब।* षष्ठी- *हमरा संग चलब; हमर पुस्तक थीक।* प्रथमान्तक योगमे षष्ठीसम्बन्धी ककारक लोपोत्तर प्रकृतिक अकारलोप। सप्तमी-*हमरामे की गुण अछि? हमरापर सभ प्रसन्न रहैत अछि ॥२५॥*

हिन्दी भाषामे *तुम जाओगे, तू जायगा* एहि ठाम *तुम* आओर *तू* यादृश अर्थमे बाजल जाइत अछि मिथिलाभाषामे ओहि दुहू अर्थमे *तोँ* ई एके शब्द अबैत अछि। *तोँ जएबह; तोँ जएबेँ।* किन्तु द्वितीयादि विभक्तिमे प्रथम अर्थमे *तोँ* क स्थान *तोहरा* आदेश होइत अछि ॥२६॥

द्वितीय; अधिक नीचमे तोँ शब्दक स्थान *तोरा* आदेश होइत अछि ॥२७॥

एहिठाम केओ कहैत छथि जे तोहरा, तोरा एहि दुहूक तुल्य विषय थीक अर्थात् दुहू अर्थमे दुहूक प्रयोग संकीर्ण अछि। उदाहरण, प्रथमामे- *तोँ जएबह वा जएबेँ।* प्रथमा विभक्तिक विलोप होएबाक कारण उक्त आदेश नहि भेल। द्वितीयामे-*हम तोहरा देखलहुँ। तोरा देखलिऔक।* आदेशोत्तर ''ककरा इत्यादिसँ'' द्वितीयाक विलोप। तृतीया- *तोहरासँ कार्य करएबहु, तोरासँ कार्य करएबौक।* चतुर्थी–*तोहरा टाका देलहु, तोरा टाका देलौक।* पंचमी- *तोहरासँ* वा *तोरासँ फूट छी।* षष्ठी- *ई तोहरा संग चलतहु; हम तोरा संग चलबौक; ई तोहर बालक थिकहु; ई तोर नेना थिकौक।* सप्तमीमे-*तोहरामे की गुण छहु? तोरामे दोष नहि छौक।* दोसरा मतमे, *तोहरा* वा *तोरा देखलहु* इत्यादि॥२८॥

समानाधिकरण जे सभ शब्द ओ सब शब्द तथा लोकनि शब्द ताहिसँ पूर्व तीनू आदेश वैकल्पिक होइत अछि अर्थात् हमकेँ हमरा; तोँ केँ तोहरा, वा तोरा वैकल्पिक हो। उदाहरण, *हमरासभ* वा *हमसभ, हमरासब* वा *हमसब। हमरासबहिँ* वा *हमसबहिँ। हमरालोकनि* वा *हमलोकनि।* एवं, *तोहरासभ, तोरासभ; तोँसभ,* इत्यादि *॥२९॥*

द्वितीयाआदि विभक्तिसँ पूर्व आन शब्दक स्थान *अनका* आदेश वैकल्पिक होइत अछि, मनुष्यादितात्पर्यें यदि बाजल जाए। प्रथमा–*एहिठाम विद्वानसँ आन के अछि?* द्वितीया–*एहिठाम अनका जनु बजाबी। विद्वानसँ आनकेँ पठाउ।* तृतीया- *चैत्र रहथु, अनकासँ,* वा *आनसँ कार्य कराउ।* चतुर्थी- *चैत्रकेँ मासिक देल गेलैन्हि, अनका* वा *आनकेँ देल जाओ।* पंचमी–*अनकासँ* वा *आनसँ हटल रहू।* षष्ठी-*अनका लग जनु बैसू; आनक संग जनु करी, ई अनकर बालक थिकाह।* सप्तमी–*अनकामे, अनकापर; आनमे, आनपर* ॥३०॥

षष्ठीसम्बन्धी ककारक लोप कएलाक उत्तर अकाररूप षष्ठी रहैत अछि, ओहिसँ पूर्व अनका शब्दक स्थान *आनक* आदेश होइत अछि। आन क, अनका क, अनका अ, आनक अ, आनक। *अनक* एहन रूप शुद्ध जनु बुझल जाए एतदर्थ ई सूत्र जानब ॥३१॥

सारिणी ५ : विभक्तिचक्र (५)

	हमशब्द	*तोँ शब्द* (नीचार्थक)	*तोँ शब्द* (अतिनीचार्थक)	*आनशब्द* (मनुष्यादिमे)	*आनशब्द* (तद्भिन्नमे)
प्रथमा	हम	तोँ	तोँ	आन	आन
द्वितीया	हमरा	तोहरा	तोरा	अनका	आनकेँ
				आनकेँ	आन
तृतीया	हमरासँ	तोहरासँ	तोरासँ	अनकासँ	आनसँ
	हमरेँ	तोहरेँ	तोरेँ	अनकेँ	आनेँ
				आनसँ	
				आनेँ	
चतुर्थी	हमरा	तोहरा	तोरा	अनका	आनकेँ
				आनकेँ	
पंचमी	हमरासँ	तोहरासँ	तोरासँ	अनकासँ	आनसँ
				आनसँ	
षष्ठी	हमरा	तोहरा	तोरा	अनका	आनक
	हमर	तोहर	तोर	आनक	
				अनकर	
सप्तमी	हमरामे	तोहरामे	तोरामे	अनकामे	आनमे
	हमरापर	तोहरापर	तोरापर	अनकापर	आनपर
				आनमे/आनपर	

देखब आदि शब्द

विभक्तिसँ पूर्व भावार्थक *अबसँ आ* वैकल्पिक ॥३२॥ षष्ठीसँ पूर्व नित्य ॥३३॥ तृतीयाक विषयमे *अबकेँ अने* बहुल ॥३४॥ तृतीया पञ्चमी षष्ठी सप्तमीक विषयमे *अल* ॥३५॥ एहि *अलसँ आ* नित्य ॥३६॥ *अनेसँ* पर तृतीयाक विलोप ॥३७॥

विभक्तिसँ पूर्व विद्यमान भावार्थक *अब*-प्रत्ययान्त देखब, होएब, नहाएब, जाएब, आदिसँ पर *आ* प्रत्यय अबैत अछि वैकल्पिक। *पोथी देखबासँ* वा *देखबसँ सन्तुष्ट भेलहुँ। देखबामे* वा *देखबमे की गुण*। स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व अवर्णक लोप उक्त अछि तेँ *आ* प्रत्ययसँ पूर्व अकारक लोप भेल ॥३२॥

षष्ठीसँ पूर्व भावार्थक *अब*-प्रत्ययान्तसँ पर मध्यमे *आ* प्रत्यय नित्य अबैत अछि। *देखबाक प्रयोजन* ॥३३॥

तृतीयाक विषयमे भावार्थक *अब* क स्थान *अने* आदेश वैकल्पिक होइत अछि। *अनेसँ* पर तृतीयाक विलोप आगाँ कहल अछि। *देखने की फल* ॥३४॥

तृतीया, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमीक विषयमे *अब* केँ वैकल्पिक *अल* आदेश हो ॥३५॥

एहि *अलसँ* पर विभक्तिसँ पूर्व *आ* प्रत्यय नित्य होइत अछि। *देखलासँ वा देखलेँ की फल?* पूर्वोक्त रूपसभ मिलाए तृतीयामे पाँच रूप, यथा- *देखबासँ, देखबसँ, देखलासँ, देखने*, वा *देखलेँ की फल?* पंचमीमे- *देखबासँ, देखबसँ, देखलासँ*। षष्ठीमे-*देखबाक, देखलाक*। सप्तमीमे–*देखबामे, देखबमे, देखलामे* ॥३६॥

अने सँ पर तृतीयाक विलोप होइत अछि। *देखने की फल?* प्रकरणवशात् *अब*-स्थानिक *अने* लेल जाइत अछि, अतएव *अपनेसँ हुनका कहबएबैन्हि* एहिठाम तृतीयाक विलोप नहि भेल। *होएब* शब्दक रूप प्रथमामे–*अहाकेँ विद्वान होएब सफल भेल*। द्वितीयामे–*उत्सव होएब निवृत्त कएल*। वक्ष्यमाण द्वितीयाक विलोप, अतएव तन्निमित्तक मध्यमे *आ* प्रत्यय नहि। द्वितीयाक श्रवण सन्ताँ *आ* प्रत्यय होएबे करत-*उत्सव होएबाकेँ* वा *होएबकेँ निवृत्त कएल*। तृतीयामे–*होएबासँ, होएबसँ*। *अब* क स्थान वैकल्पिक *अने* आदेश कएलाक उत्तर–*पण्डित होएने* वा *भेने की फल?* तृतीयाक विषयमे तृतीयाक उत्पत्तिसँ पूर्वहिँ *अने* आदेश, वक्ष्यमाण सूत्रसँ *अने* क अकारकेँ एकार; हो धातुकेँ *भ* आदेश विकल्प। *अब* क स्थान वैकल्पिक *अल* आदेश कएने तन्निमित्तक *हो* केँ *भ* आदेश, *अल* क अकारकेँ *ए*। *भेलासँ की फल?* तृतीयाकेँ एँ आदेश कएने- *पण्डित भेलेँ की भेल?* सभ मिलाए पाँच रूप। एवं चतुर्थी आदि विभक्तिमे सूत्र लगएबाक अनुसन्धान कए लेब। *नहाएब* शब्दक तृतीयामे- *नहएबासँ, नहाएबसँ, नहएलासँ, नहएने, नहएलेँ* ई पाँच रूप। मध्यमे आ प्रत्यय सन्ताँ पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्वता, तेँ एकारो एहिठाम ह्रस्व

होएत। एवं *पाएब* शब्दक *पओलाक* उत्तर इत्यादि रूपहुमे ओकार ह्रस्व जानब। *बौँसबाक की प्रयोजन?* इत्यादि स्थलमे औकरादिओ ह्रस्व जानब। बाजब शब्दक तृतीयामे *बजबासँ, बाजबसँ, बजने, बजलासँ, बजलैँ, ई पाँच रूप जानब। एवं पठाएबशब्दक तृतीयामे पठएबासँ, पठाएबसँ, पठओलासँ, पठओने, पठओलैँ*, ई पाँच रूप। विभक्तिचक्रमे कतोक *अब* प्रत्ययान्तक रूप स्पष्ट देखाओल जाइत अछि।

सारिणी ६ : विभक्तिचक्र (६)

	देखबशब्द	*नहाएबशब्द*	*जाएबशब्द*
प्रथमा	देखब	नहाएब	जाएब
द्वितीया	देखबाकैँ, देखबकैँ	नहएबाकैँ, नहाएबकैँ	जएबाकैँ, जाएबकैँ
तृतीया	देखबासँ, देखबसँ	नहएबासँ, नहाएबसँ	जएबासँ, जाएबसँ
	देखलासँ, देखलैँ	नहएलासँ, नहएलैँ	गेलासँ, गेलैँ
	देखने	नहएने	गेने
चतुर्थी	देखबाकैँ, देखबकैँ	नहएबाकैँ, नहाएबकैँ	जएबाकैँ, जाएबकैँ
पंचमी	देखबासँ, देखबसँ	नहएबासँ, नहाएबसँ	जएबासँ, जाएबसँ
	देखलासँ	नहएलासँ	गेलासँ
षष्ठी	देखबाक, देखलाक	नहएबाक, नहएलाक	जएबाक, गेलाक
सप्तमी	देखबामे, देखबापर	नहएबामे, नहएबापर	जएबामे, जएबापर
	देखबमे, देखबपर	नहाएबमे, नहाएबपर	जाएबमे, जाएबपर
	देखलामे, देखलापर	नहएलामे, नहएलापर	गेलामे, गेलापर

ई बुझबाक थीक जे *पाएर* शब्दक तृतीयामे *पाएरसँ, पाएरैँ* ई दू रूप होइत अछि। ताहिमे कतहु कोनो रूप बजबाक चालि अछि, सर्वत्र सभ नहि, यथा गमनागमनादिबोधक धातुक समभिव्याहारमे *पाएरैँ* इएह रूप बाजल जाइत अछि, यथा *पाएरैँ गेलाह, पाएरैँ अएलाह*, इत्यादि। मारब, दबब आदिक योगमे *पाएरसँ* इएह रूप व्यवहृत अछि, *शत्रुकैँ पाएरसँ मारब; कर्ण भूमिकैँ पाएरसँ दबओने छलाह* इत्यादि। ई विषय आनहु वैकल्पिक बहुत रूपमे अछि। व्याकरणकार एहि प्रसङ्ग निषेध-विधि नहि कए सकैत छथि हेतु जे *पाएरसँ गेलाह* इत्यादिओ अशुद्ध नहि कहाए सकैत अछि किन्तु ओ बजनिहार संयोगप्रसिद्ध शब्द छोड़ि आन शब्द बजबाक कारण केवल अलौकिक बुझल जएताह। यथा *महादेवक दर्शन करबाक ओ गङ्गाजल चढ़एबाक अछि* ई नहि बाजि *महादेवकैँ* देखबाक *ओ गङ्गाक पानि* चढ़एबाक *अछि,* ई बजने अलौकिक बुझल जाइत छथि तद्वत्। द्वितीय ई विषय जे वैकल्पिक रूपसभ भिन्नभिन्न व्यक्तिसँ व्यवहृत भेटत। यथा, बहुत लोक *देखने की फल*

ई प्रयोग बजैत छथि। प्राचीन संप्रदायमे वा एहुखन कतोक लोकमे देखलैँ *की फल* ई प्रयोग दृष्ट अछि तैँ ओ दुहू ग्राह्य थीक। *देखबैँ की फल* ई प्रयोग कतहु यदि नहि भेटैत अछि तैँ व्याकरणसँ सामान्यरूपैँ साधु कएलो अप्रयुक्त मानि व्यवहारमे ग्राह्य नहि कएल जाए। संस्कृतहुमे सामान्यतः व्याकरणसिद्धो *वचन्ति* आदिक उक्त युक्तिसँ प्रयोग नहि कएल जाइछ ॥३७॥

ईकारभिन्न स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व सकल स्वरकैँ ह्रस्व ॥३८॥ अन्त्य वर्णसँ पूर्व उपधा ॥३९॥ अनुनासिक ए सँ पूर्व अबप्रत्ययान्तभिन्नक सब स्वरकैँ ह्रस्व नहि ॥४०॥ दीर्घोपध पठित धातुक ॥४१॥ आसँ पूर्व ताम आदिक ॥४२॥

जाहि प्रत्ययक पहिल वर्ण स्वर हो ओहि ईकारभिन्न प्रत्ययसँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वरक स्थान ह्रस्व आदेश होइत अछि। 'सकल' शब्दक उपादानसँ अव्यवहित परिभाषा नहि लगैत अछि, तैँ व्यवहिताव्यवहितसाधारण स्वरकैँ ह्रस्वता होएत। *हुनक बाजब नीक होइत छैन्हि; अहाँकैँ बजबाक की हेतु? नहएबाक की फल?* मध्यमे *आ* प्रत्यय। कारी, चितकाबर- *करिआ, चितकबरा,*; वक्ष्यमाणं तद्धित *आ* प्रत्यय। ईकारभिन्न कहलासँ *भगवानी खबास, बुधिआरी करब*, एहिठाम ह्रस्वता नहि भेल। *ताकब, ताकू* इत्यादिस्थलमे दीर्घविधि-सामर्थ्यात् ह्रस्वताक अभाव जानब ॥३८॥

अन्तिम वर्णसँ अव्यवहित पूर्व वर्ण उपधासंज्ञक हो। एकर उपयोग अगिला एक सूत्र छोड़ि दोसरामे होएत ॥३९॥

अनुनासिक एकारस्वरूप विभक्तिसँ पूर्व *अब* प्रत्ययान्त (*बाजब, नहाएब* आदि) सँ आन शब्दक सकल स्वरक स्थान ह्रस्वादेश नहि हो- *अपना हाथैँ लीखल, पाएरैँ अएलहुँ।* अबप्रत्ययान्तक स्वरकैँ ह्रस्वता होएबे करत-*अहाँक बजबैँ बुझना गेल* ॥४०॥

दीर्घ अछि उपधा अर्थात् अन्तिम वर्णसँ अव्यवहित पूर्व जाहिमे से दीर्घोपध भेल। तादृश धातुपाठमे पठित धातुक स्वरकैँ ह्रस्वता नहि हो। मानब–*मानबाक की हेतु? हारने छी, हारनिहार।* 'धातुपाठमे पठित' एहिशब्दक उपादानसँ *बजबाक हेतु, रन्हबामे* इत्यादि स्थलमे ह्रस्वता होएबे कएल ॥४१॥

*आ*प्रत्ययसँ पूर्व ताम आदिक स्वरकैँ ह्रस्वादेश नहि हो। *तामाक पूड़ी; रूपाक गहना; काँसाक बाटी। आ* विकरण आगाँ कहल जाएत ॥४२॥

आँगन आदि, पूरण-प्रत्ययान्त, ताम आदि

विभक्तिसँ पूर्व आँगन आदिसँ *आ* वैकल्पिक ॥४३॥ पूरणप्रत्ययान्तसँ समानाधिकरणहुसँ पूर्व ॥४४॥ षष्ठीसँ पूर्व ताम आदिसँ ओ डाँड़ आदिसँ ॥४५॥

विभक्तिसँ पूर्व आँगन आदिसँ पर मध्यमे *आ* प्रत्यय होइत अछि। प्रथमाक विलोप, अतएव आदेश नहि, *आँगन पैघ अछि।* अचेतनमे प्रायशः द्वितीयहुक विलोप; *आँगन देखब।* तृतीयामे –*अँगनासँ की फल?* चतुर्थी –*अँगनाकेँ दीप दिऔक।* पंचमी-*अँगनासँ हटल अछि।* षष्ठी-*आँगनाक लोक गेल।* सप्तमी-*आँगनामे के अछि? आ* क अभाव-पक्षमे *आँगनसँ* इत्यादि।

एहिठाम ई बुझबाक थीक जे एक संस्कृतशब्दमूलक दू शब्दमे एक शब्दक उपादान रहला सन्ताँ दुहू शब्दक ग्रहण। एकर सूत्र आगाँ कहल जाएत। तैँ *आङ्न* शब्दहुसँ पर *आ* प्रत्यय होएत, हेतु जे *आङ्गण* शब्दसँ *आँगन, आङ्न* दुहू शब्द सिद्ध भेल अछि। णकारकेँ प्रायशः मिथिलाभाषामे नकार होइतहिँ अछि। से भेला सन्ताँ यदि आदिकेँ शुद्ध दीर्घ ओ गकारक लोप कएल जाए तैँ *आङ्न*, यदि अनुनासिकवर्णसँ अनुरक्तताक कारण आदिवर्णक स्थान अनुनासिक *आँ* दीर्घ, ओ ङकारक लोप कएल जाए तैँ *आँगन* शब्द होएत। एहि सभक विचार विस्तररूपेँ *मिथिला-भाषाकोष*मे कएल अछि। ओहि कोषक अनुसार शब्द मानि ई व्याकरण बनओल गेल अछि, हेतु जे नामसबहिक साधन देखओने अतिविस्तर ग्रन्थ भए जाइत। तैँ *आँगन* शब्दसँ जे *आ* प्रत्यय उक्त कएल अछि से *आङ्न* शब्दहुसँ जानब। *अङ्नामे, आङ्नमे* इत्यादि। एवम् *अहाँ* शब्दकेँ जे कार्य से *जहाँ* वा *जेहाँ* शब्दहुमे बुझब। एवम् आनहु शब्दक प्रसङ्ग ई अनुसन्धान राखब।

आँगन, कोबर, माँड़ब, कोर, भानस, पहिल, माझिल, हनप्रत्ययान्त ई आकृतिगण थीक। *कोबरासँ* वा *कोबरसँ, कोबरामे* वा *कोबरमे। माँड़बमे, कोरासँ* वा *कोरसँ खसल, भनसाक* वा *भानसक घर। पहिलामे* वा *पहिलमे, मझिलामे* वा *माझिलमे।* हनप्रत्ययान्त सेहो आँगन-आदि थीक। *केहनाक* वा *केहनक संग भेल?* हनप्रत्यय तद्धितप्रकरणमे भेटत। तदन्तशब्द केहन, तेहन, जेहन, एहन, ओहन। आँगन-आदि आकृतिगण थीक अर्थात् शिष्टप्रयोगसँ बुझी जे आँगन आदिमे पठित थीक, तैँ *गरासँ माला खसल, गरामे छल* इत्यादि॥ ४३॥

सारिणी ७ : विभक्तिचक्र (७)

	आँगनशब्द	*कोरशब्द*	*माझिलशब्द*	*केहनशब्द*
प्रथमा	आँगन	कोर	माझिल	केहन
द्वितीया	अँगनाकेँ, आँगनकेँ आँगन	कोराकेँ, कोरकेँ	मझिलाकेँ, माझिलकेँ	केहनाकेँ, केहनकेँ केहन
तृतीया	अँगनासँ, आँगनसँ अँगने, आँगने	कोरासँ, कोरसँ कोरेँ	मझिलासँ, माझिलसँ मझिलेँ, माझिलेँ	केहनासँ, केहनसँ
चतुर्थी	अँगनाकेँ, आँगनकेँ	कोराकेँ, कोरकेँ	मझिलाकेँ, माझिलकेँ	केहनाकेँ, केहनकेँ
पञ्चमी	अँगनासँ, आँगनसँ	कोरासँ, कोरसँ	मझिलासँ, माझिलसँ	केहनासँ, केहनसँ
षष्ठी	अँगनाक, आँगनक	कोराक, कोरक	मझिलाक, माझिलक	केहनाक, केहनक

सप्तमी	अँगनामे, आँगनमे अँगनापर, आँगनपर	कोरामे, कोरमे कोरापर, कोरपर	मझिलामे, माझिलमे मझिलापर, माझिलपर	केहनामे, केहनमे केहनापर, केहनपर

विभक्तिसँ पूर्व ओ समानाधिकारणसँ पूर्व पूरणप्रत्ययान्तसँ पर मध्यमे *आ* प्रत्यय अबैत अछि। पूरणार्थक प्रत्यय तद्धितप्रकरणमे कहल जाएत। तदन्त शब्द *दोसर, तेसर, चारिम, पाँचम* आदि। प्रथमाक विलोप, तैँ आ नहि-*दोसर थीक।* द्वितीया-*दोसराकेँ।* तृतीया-*दोसरासँ।* चतुर्थी–*दोसरकेँ।* पंचमी–*दोसरासँ।* षष्ठी–*दोसराक।* सप्तमी-*दोसरामे। आ* प्रत्ययक अभाव पक्षमे *दोसरकेँ, दोसरसँ* इत्यादि। एवं *तेसर* आदिक रूप। समानाधिकरणसँ पूर्व-*दोसरा दिन तेसरा मास चरिमा वर्ष। आ* क अभाव सन्ताँ-*दोसर दिन तेसर बात, चारिम व्यक्तिकेँ कहलैन्हि इत्यादि॥४४॥*

सारिणी ८ : विभक्तिचक्र (८)

	दोसर शब्द	*चारिम शब्द*	*एगारहम शब्द*
प्रथमा	दोसर	चारिम	एगारहम
द्वितीया	दोसराकेँ, दोसरकेँ	चरिमाकेँ, चारिमकेँ	एगरहमाकेँ, एगारहमकेँ
तृतीया	दोसरासँ, दोसरसँ दोसरेँ	चरिमासँ, चारिमसँ चरिमेँ, चारिमेँ	एगरहमासँ, एगारहमसँ एगरहमेँ, एगारहमेँ
चतुर्थी	दोसराकेँ, दोसरकेँ	चरिमाकेँ, चारिमकेँ	एगरहमाकेँ, एगारहमकेँ
पञ्चमी	दोसरासँ, दोसरसँ	चरिमासँ, चारिमसँ	एगरहमासँ, एगारहमसँ
षष्ठी	दोसराक, दोसरक	चरिमाक, चारिमक	एगरहमाक, एगारहमक
सप्तमी	दोसरामे, दोसरापर दोसरमे, दोसरपर	चरिमामे, चरिमापर चारिममे, चारिमपर	एगरहमामे, एगरहमापर एगारहममे, एगारहमपर

षष्ठीसँ पूर्व ताम आदिसँ पर मध्यमे *आ* प्रत्यय अबैत अछि वैकल्पिक। ताम आदिक स्वरकेँ ह्रस्वताप्रतिषेध उक्त अछि। *तामाक* वा *तामक सराइ। रूपाक* वा *रूपक गहना। सोनाक* वा *सोनक माला। तिलकोड़ाक* वा *तिलकोड़क पात। घैलाक* वा *घैलक जल। काँसाक* वा *काँसक थारी। कतराक* वा *कातरक सीर वा झार।*

ताम, सोन, रूप, काँस, तिलकोड़, घैल, रौद, ताम आदि आकृतिगण।

घैलासँ पानि लाउ, रौदामे जनु रही इत्यादि अशुद्ध जानब। षष्ठीसँ पूर्व डाँड़ आदिसँ पर मध्यमे *आ* प्रत्यय अबैत अछि। पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वता। *डँड़ाक डोरि। ससुराक लोक।* डाँड़, सासुर, नैहर, पाँजर, डाँड़ आदि आकृतिगण ॥४५॥

अहाँकेँ अधिक आदरमे *अपने* ॥४६॥ विभक्तिसँ पूर्व *अपनुकाँ* वैकल्पिक ॥४७॥ अपनेसँ तृतीयाक विलोप ॥४८॥ विभक्तिसँ पूर्व आत्माकेँ *अपना* ॥४९॥ अपनासँ द्वितीया चतुर्थीक विलोप ॥५०॥

*अहाँ*शब्दक आदरमे प्रयोग होइत अछि। अधिक आदरमे ओकरा स्थान *अपने* शब्द बाजल जाइत अछि। *अपने अएलहुँ; अपने की देखलैक? हम अपनेकेँ देखल। अपनेसँ सभ सम्पादित भेल। हम अपनेकेँ की दए सकब? अपनेसँ सभ सीखल अछि। अपनेक*

गुण कदापि नहि बिसरत। अपनेमे सभ योग्यता। अपनेपर ककरा श्रद्धा नहि? ॥४६॥

विभक्तिसँ पूर्व अपने शब्दक स्थान *अपनुकाँ* आदेश वैकल्पिक होइत अछि। हम *अपनुकाँकेँ देखल। अपनुकाँसँ कार्य अछि* इत्यादि। आदरमे *केँ* क स्थान *काँ* आदेश वैकल्पिक कारक प्रकरणमे कहल जाएत *अपनेकाँ* वा *अपनुकाँकाँ देखल। काँक* अभाव मे–*अपनेकेँ* वा अपनुकाँकेँ देखल। चारि रूप ॥४७॥

अपनेसँ पर तृतीयाक वैकल्पिक विलोप होअए–*अपने की कहल गेल। अपने एहिठाम बैसल जाएत।* विलोपाभावमे-*अपनेसँ कोन बात कहल गेल? अपनेसँ कोन विषय प्रकाशित भेल?* प्रयोज्यकर्तृपदसँ विलोपक अभावपक्षे होइत अछि। *ओ अपनेसँ की कहओलैन्हि?* हम *अपनेसँ पुस्तक लिखबाएब।* अहाँ आदिसँ पर तृतीयाक स्थान अनुनासिक एकारक प्रतिषेध कहल अछि तेँ *एक अहेँ की?* एहन प्रयोग नहि, किन्तु *एक अहाँसँ की?* एहने प्रयोग होएत। अहाँ, ताहि, जाहि, एहि, ओहि, कथी, अपने, की, सब, दू प्रभृति अहाँ-आदि जानब। *की* सँ कथी, ककरा, कनिका एहि तीनूक ग्रहण; *अहाँसँ* अहाँ, जहाँ, जेहाँक, *सब्सँ* सब, सभक ॥४८॥

विभक्तिसँ पूर्व *आत्मा*शब्दक स्थान *अपना* शब्द बाजल जाइत अछि वैकल्पिक। प्रथमा–*हमर आत्मा पवित्र अछि।* द्वितीया–*हम अपनाकेँ जनैत छी।* तृतीया–*हम अपनेँ गेलहुँ, अपनहिसँ अएलहुँ।* चतुर्थी–*अपनाकेँ भरोस देल।* पञ्चमी–*अपनासँ हिनका पृथक् कएल।* षष्ठी–*चैत्र अपना पुत्रकेँ अनओलैन्हि। ई हमरा अपन पुत्र थिकाह।* सप्तमी–*अपनामे* वा *अपनापर विश्वास नहि।* अपना आदेशक अभावपक्षमे *हम आत्माकेँ जनैत छी,* इत्यादि ॥४९॥

अपना शब्दसँ पर द्वितीया ओ चतुर्थीक विलोप जे नित्य प्राप्त अछि से वैकल्पिक हो। *अपना लगाए तीन व्यक्ति छी; अपनाकेँ जनैत छी; हम अपनाकेँ भार देल ॥५०॥*

सारिणी ९ : विभक्तिचक्र (९)

	अहाँशब्द आदरमे	*अहाँशब्द अधिक आदरमे*	*आत्माशब्द*
प्रथमा	अहाँ	अपने	आत्मा
द्वितीया	अहाँकेँ, अहाँकाँ	अपनेकेँ, अपनुकाँकेँ	अपनाकेँ, आत्माकेँ
तृतीया	अहाँसँ	अपनेसँ, अपनेँ अपनुकाँसँ	अपन्नासँ, अपनेँ आत्मासँ
चतुर्थी	अहाँकेँ, अहाँकाँ	अपनेकेँ, अपनेकाँ अपनुकाँकेँ	अपनाकेँ, आत्माकेँ
पञ्चमी	अहाँसँ	अपनेसँ, अपनुकाँसँ	अपनासँ, आत्मासँ
षष्ठी	अहाँक	अपनेक, अपनुकाँक	अपना, अपन, आत्माक
सप्तमी	अहाँमे, अहाँपर	अपनेमे, अपनेपर अपनुकाँमे, अपनुकाँपर	अपनापर आत्मामे, आत्मापर

इति विभक्तिप्रकरणम्

अथ अव्यय-प्रकरणम्

मना आदि अव्यय ॥१॥ जकर अन्त अधिकरणार्थक तद्धित ॥२॥ *ना* ॥३॥ कृत् *ऐत इ अय* ॥४॥ अव्ययसँ विभक्तिक विलोप ॥५॥ अधिकरणार्थकसँ बहुल ॥६॥

मना आदि अव्यय कहबैत अछि। अव्ययसँ पर विभक्तिक विलोप होइत अछि से लगले कहल जाएत। *मना कएल। बिदा भेलहुँ।*

मना, बिदा, किछु, दन, लय, दय, ए, ओ, चुप, नहूँ-नहूँ, देने, सोर, काल्हि, परसू, परुकाँ, तेसरुकाँ, पछाति, पहिने, सदिखन, जनु, किएक, जँ, तँ, सँ, जैओ, तैओ, अए, रए, गए, हए, अओ, रओ, हओ, आह, ओह, बाह, इस, बस, लगाइति, धरि, परि, भरि, दूरि, गुम्म, सुनहटि, जेँ, तेँ, हा, कीदन, कहाँदन, आइकाल्हि, हे, रे, सन्ताँ, उच्चेँ, नीचेँ, सन। मना-आदि आकृतिगण थीक। सकल अव्ययक परिचय मिथिलाभाषाक कोषसँ होएत ॥१॥

जाहि शब्दक अन्तमे अधिकरणार्थक तद्धित प्रत्यय हो सेहो अव्यय कहबैत अछि। *तय, महर, हिआ, हाँ,* तद्धित अधिकरणार्थक कहल जाएत। क्रमशः उदाहरण-कतए, ततए, एतए, ओतए। *यक* स्थान वैकल्पिक *ए* आदेश वक्ष्यमाण अछि, तकर अभाव पक्षमे *कतय, ततय, जतय, एतय, ओतय* जानब। एवम् अन्यत्रहुँ। *कोमहर, तेमहर, जेमहर, एमहर, ओमहर, कहिआ, तहिआ, जहिआ, कहाँ, तहाँ, जहाँ ॥२॥*

जकर अन्त ना प्रत्यय अछि सेहो अव्यय कहबैत अछि। *कोना, तेना, जेना, एना, ओना* ॥३॥

जकरा अन्तमे कृत्संज्ञक *ऐत, इ, अय* प्रत्यय हो ओहो सभ अव्यय थीक। *हुनका खसैत देखलहुँ। औ मँगैत् सन्ताँ देलैन्हि। देखि लिखू। देखि जाउ। नहाय गेलाह। इ* प्रत्ययक स्थानमे *आय। देखय गेलाह। नहाय गेलाह अछि। कहय दिऔन्हि। य* केँ *ए* आदेश कएने, *नहाए, देखए* इत्यादि ॥४॥

अव्ययसँ पर विभक्तिक विलोप होइत अछि। *स्वप्न हम कीदन-कहाँदन देखल।* द्वितीयाक विलोप। *जँ हुनका विद्या तँ विचार।* हेतु तृतीयाक विलोप। *काल्हि जाएब।* साप्तमीक विलोप। यद्यपि बहुतसँ प्रथमे टा अबैत अछि, ओहि सबहिकेँ अव्यय संज्ञा करबाक प्रयोजन नहि तथापि अव्ययसँ प्रायः कोनहु विभक्तिक श्रवण नहि होइत अछि ई बुझबामे सौकर्यक हेतु संज्ञा जानब ॥५॥

अधिकरणार्थक अव्ययसँ पर विभक्तिक बहुल प्रकारेँ विलोप होइत अछि। चैत्र *आइकाल्हि वा आइकाल्हिमे कतए छथि?* 'बहुल' शब्दक उपादान अछि तेँ क्वचित् नहि। *ओ कहाँक पण्डित थिकाह? ओतएक कुशलादि लीखब।* आइसँ पाठ करब। एवम् अधिकारणार्थकसँ षष्ठीक ओ पञ्चमीक विलोप नहि। क्वचित् नित्य। *काल्हि अएलहुँ।* क्वचित् वैकल्पिक। एकर पूर्वोक्त उदाहरण॥६॥

इति अव्ययप्रकरणम्

अथ तद्धितप्रकरणम्

हन प्रत्ययसँ पूर्व कीक स्थान के **॥१॥ अनुनासिकादिसँ पूर्व *को* ॥२॥ प्रत्ययक तकार, *हि, हा* सँ पूर्व *की, ते, जे* केँ अकार ॥३॥ *गर, पन, पना, पनी, का, बा, हा, मा, गिरी, हर*सँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वरकेँ ह्रस्व ॥४॥ उक, इल, इवर्णप्रत्ययसँ पूर्व नहि ॥५॥ विभक्तिभिन्न प्रत्ययसँ पूर्वस्थित प्रकृतिमे वर्गीय व्यञ्जनसँ पूर्व तद्वर्गीय अपञ्चमक लोप ॥६॥ उकसँ पूर्व स्वरक ॥७॥ युक्तार्थमे बाध्यबाधक भाव नहि ॥८॥**

तद्धितप्रकरण आरम्भ कएल गेल। ताहिमे प्रथम तद्धितप्रत्यय-निमित्तक कार्यसभ कहल जाइत अछि। *हन* प्रत्ययसँ पूर्व *की* शब्दक स्थान *के* आदेश होइत अछि। *ककर सदृश कहेन* ॥१॥

अनुनासिकादि प्रत्ययसँ पूर्व *की* शब्दक स्थान *को* आदेश होइत अछि। *कोना, कोमहर, कोन* ॥२॥

प्रत्ययसम्बन्धी जे तकार ओ *हि* शब्द तथा *हा* शब्द ताहिसँ पूर्व *की, ते, जे,* शब्दक अन्तिम वर्णक स्थान अकार आदेश हो। *कतबा, कतेक, कतोक, कतए, ततबा, ततेक, ततने, ततनी, ततए, जतबा, जतेक, जतने, जतनी, जतए। कहिआ, तहिआ, जहिआ, कहाँ, तहाँ, जहाँ, । हि हा* छोड़ि हकार कहने *तेहन, जेहन* एहूठाम भए जाइत॥३॥

गर, पन, पना, पनी, का, बा, हा, मा, गिरी, हर प्रत्ययसँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वरकेँ ह्रस्वता होइत अछि। *पनिगर, नेनपन, नेनपना, नेनपनी, ललका, बुढ़बा, पकलहा, पनमा, सिपहिगिरी, धनहर ॥४॥*

स्वरादि प्रत्ययसँ पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्वता हो से पूर्व कहि आएल छी। से *उक, इल* ओ इवर्णप्रत्ययसँ पूर्व नहि होइत अछि। *आजुक, माझिल, रखबारि, बुधिआरी ।* वर्णशब्दक उपादानसँ ह्रस्व-दीर्घ-साधारण इवर्ण लेल गेल ॥५॥

विभक्तिसँ आन जे प्रत्यय ओहिसँ पूर्व प्रकृतिमे स्थित वर्गक व्यञ्जनसँ पूर्व ओहि वर्गक पञ्चमभिन्न वर्णक लोप होइत अछि। *पक्की, पकिआ, कच्ची, कचिआ, दच्छिन, दछिनहा, खुद्दो, खुदिआह, उत्थर, उथरका।* पञ्चम वर्णक लोप नहि। *पञ्चैती*॥६॥

उक प्रत्ययसँ पूर्व स्वरक लोप होइत अछि– *काल्हुक, रातुक* ॥७॥

युक्त अर्थमे तद्धित प्रत्यय कहल जाएत। ओहिमे ककरो कोनो बाधक नहि होइत अछि। बुद्धिबाला, बुधिआर ॥८॥

नामसँ तद्धित वैकल्पिक ॥९॥ ते, जे, ए, ओ, कीसँ सदृशमे हन ॥१०॥ प्रकारमे *ना* ॥११॥ परिमाणमे *तबा, तेक*॥१२॥ अल्पपरिमाणमे *तने* ॥१३॥ स्त्रीमे *तनी टाक* योगमे॥१४॥ दिश अधिकरणमे *महर* ॥१५॥ देश अधिकरणमे *तय*॥१६॥ ते, जे, कीसँ *तय, हाँ* ॥१७॥ असमीप कालमे *हिआ*॥१८॥ अनेक मध्य एकक निर्द्धारणमे *कीसँ न* ॥१९॥ अल्प संख्यामे *तोक* ॥२०॥

"नामसँ तद्धित वैकल्पिक" एकर अधिकार जानब। तैँ आगाँ जे प्रत्ययसभ कहल जाएत से नामसँ पर ओ वैकल्पिक होएत। ओकर नाम तद्धित पड़त॥९॥

ते, जे, ए, ओ, की, एहि नामसभसँ अव्यवहित पर सदृश अर्थमे तद्धितसंज्ञक *हन* प्रत्यय अबैत अछि। तकर सदृश *तेहन।* जकर सदृश *जेहन।* एकर सदृश *एहन* । ओकर सदृश *ओहन।* ककर वा कथीक सदृश *केहन* । *हन* प्रत्ययसँ पूर्व *की* क स्थान *के* आदेश पूर्व कहल गेल अछि॥१०॥

ते, जे, ए, ओ, की सँ पर प्रकार अर्थमे *ना* अबैत अछि। ताहि प्रकारसँ *तेना,* जाहि प्रकारसँ *जेना,* एहि प्रकारसँ *एना,* ओहि प्रकारसँ *ओना,* कोन प्रकारेँ *कोना*। अनुनासिकादि प्रत्ययसँ पूर्व *की* कैँ *को* आदेश पूर्व कहल अछि। *हम तेना कार्य करब जेना देवदत्त करैत छलाह* इत्यादि॥११॥

ते, जे, ए, ओ, कीसँ परिमाण अर्थमे *तबा* ओ *तेक* अबैत अछि। ताहि परिमाणक *ततबा, ततेक।* प्रत्ययसम्बन्धी तकारसँ पूर्व *ते, जे, की* कैँ अकार अन्तादेश पूर्व उक्त अछि। समुदायार्थ परिमाणविशिष्ट जानब। यत्परिमाणक *जतबा, जतेक। एवं एतबा, एतेक, ओतबा, ओतेक, कतबा, कतेक ॥१२॥*

उक्त पाँच नामसँ अल्प परिमाणमे *तने* अबैत अछि। ताहि अल्प परिमाणक *ततने, जतने, एतने, ओतने, कतने* ॥१३॥

ते, जे, ए, ओ, कीसँ पर अल्प परिमाणमे *तनी* अबैत अछि यदि समुदायार्थक स्त्री व्यक्ति हो ओ *टा* शब्दक प्रयोग रहए। *चैत्रक कन्या ततनीटा छैक जतनीटा देवदत्तक। एतनीटा, ओतनीटा, कतनीटा, । टा* शब्द ह्रस्व दीर्घ परिमाणद्योतक अव्यय थीक, यथा, *डोरी कतबाटा अछि?* एहिसँ "कतबा लाम" अछि सएह बुझल जाइत अछि। ओ *टा* नहि लगओने "कतबा ओजनक" एहने प्रतीत होइत अछि॥१४॥

दिश अधिकरणमे *ते, जे, ए, ओ, की* शब्दसँ *महर* अबैत अछि। ताहि दिशमे *तेमहर, जेमहर, एमहर, ओमहर।* कोन दिशमे *कोमहर। की कैँ को* आदेश पूर्व सूत्रसँ। ककरो एहन मत अछि जे *म्हर* प्रत्यय आबए। एहि मतक अनुसार *तेम्हर, जेम्हर, एम्हर, ओम्हर, कोम्हर* एहन रूप जानब ॥१५॥

ते, जे, ए, ओ, की सँ देश अधिकरणमे तय तद्धित अबैत अछि। ताहि देशमे *ततय, जतय, एतय, ओतय, कतय। यकैँ ए* आदेश कएने *ततए, जतए, एतए, कतए* ॥१६॥

जे, ते, की सँ देश अधिकरणामे *तय* तथा *हाँ* दुहू अबैत अछि। *तहाँ, ततय, ततए, जहाँ, जतय, जतए, कहाँ, कतय, कतए ॥१७॥*

ते, जे, की सँ पर असमीप कालमे *हिआ* अबैत अछि। वर्तमान अहोरात्रसँ पर वा पूर्व काल असमीप भेल। वर्तमान अहोरात्रसँ पूर्व वा पर कोन कालमे *कहिआ, तहिआ, जहिआ* । यद्यपि संस्कृत *तदा, यदा, कदाक* प्राकृत भाषा *तइआ, जइआ, कइआ* थीक; तकर अपभ्रंश मिथिलाभाषा *तहिआ* आदि भेल अछि, तैँ *कहिआ* एकर "कोन कालमे" एतबे अर्थ होएबाक चाही, किन्तु मिथिलाभाषामे विशेषार्थबोधक भए गेल अछि, तैँ तदनुसारे ओकर अर्थ मानबाक होएत। जेना *मात्सर्य* शब्दक अर्थ संस्कृतमे "द्वेष" थीक किन्तु मिथिलाभाषामे "स्नेह" अर्थ बुझल जाइत अछि। ओ जङ्घा शब्दसँ संस्कृतमे "ठेहुनसँ नीचाँ पाएरसँ ऊपर भाग" क बोध होइत अछि। ओहि शब्दक अपभ्रंश *जाँघ* शब्दसँ ओकर बोध नहि होइत अछि, किन्तु ठेहुनसँ उपर भाग बुझल जाइत अछि, तद्वत् ॥१८॥

अनेक मध्य एक वस्तुक विशेषरूपेँ निर्द्धारणमे *की* शब्दसँ *न* अबैत अछि। *एहि सबहि मध्य कोन वस्तु चाही? मनुष्यमे कोन जाति उत्कृष्ठ थीक?* तद्धित वैकल्पिक होइत अछि, तैँ *एहि दुहूमे ब्राह्मण के थिकाह?* एहनो भेल ॥१९॥

की शब्दसँ अल्प संख्यायुक्त अर्थमे *तोक* अबैत अछि। *कतोक विषय कहबाक अछि। की* शब्द एहि ठाम प्रश्नार्थक नहि, किन्तु यत्किञ्चिदर्थक, तैँ *कतोक* शब्दक "यत्किञ्चित् अल्पसंख्यक" ई अर्थ जानब ॥२०॥

सारिणी १० : तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*रूप*	*अर्थ*
ते	*हन*	तेहन	तकर सन
जे	,,	जेहन	जकर सन
ए	,,	एहन	एकर सन
ओ	,,	ओहन	ओकर सन
की	*हन*	केहन	ककर सन
ते	*ना*	तेना	ताहि प्रकारेँ
जे	,,	जेना	जाहि प्रकारेँ
ए	,,	एना	एहि प्रकारेँ

ओ	,,	ओना	ओहि प्रकारेँ
की	,,	कोना	कोन प्रकारेँ
ते	*तबा*	ततबा	तत्परिमाणक
जे	,,	जतबा	यत्परिमाणक
ए	,,	एतबा	एतत्परिमाणक
ओ	,,	ओतबा	ओहि परिमाणक
की	,,	कतबा	कोन परिमाणक
ते	*तेक*	ततेक	तत्परिमाणक
जे	,,	जतेक	यत्परिमाणक
ए	,,	एतेक	एतत्परिमाणक
ओ	,,	ओतेक	ओहि परिमाणक
की	,,	कतेक	कोन परिमाणक
ते	*तने*	ततने	ताहि अल्प परिमाणक
जे	,,	जतने	जाहि अल्प परिमाणक
ए	,,	एतने	एहि अल्प परिमाणक
ओ	,,	ओतने	ओहि अल्प परिमाणक
की	,,	कतने	कोन अल्प परिमाणक
ते	*तनी*	ततनीटा	ततबा छोटि
जे	,,	जतनीटा	जतबा छोटी
ए	,,	एतनीटा	एतबा छोटि
ओ	,,	ओतनीटा	ओतबा छोटि
की	,,	कतनीटा	कतबा छौटि
ते	*मह(म्ह)र*	तेमह(म्ह)र	ताहि दिश
जे	,,	जेमह(म्ह)र	जाहि दिशा
ए	,,	एमह(म्ह)र	एहि दिश
ओ	,,	ओमह(म्ह)र	ओहि दिश
की	,,	कोमह(म्ह)र	कोन दिश

ते	*तय*	ततय(ए)	ताहि स्थानमे
जे	,,	जतय(ए)	जाहि स्थानमे
ए	,,	एतय(ए)	एहि स्थानमे
ओ	,,	ओतय(ए)	ओहि स्थानमे
की	,,	कतय(ए)	कोन स्थानमे
ते	*हाँ*	तहाँ	ताहि स्थानमे
जे	,,	जहाँ	जाहि स्थानमे
की	,,	कहाँ	कोन स्थानमे
ते	*हिआ*	तहिआ	ताहि असंनिकृष्ट कालमे
जे	,,	जहिआ	जाहि असंनिकृष्ट कालमे
की	,,	कहिआ	कोन असंनिकृष्ट कालमे
की	*न*	कोन	कतर वा कतम
की	*तोक*	कतोक	कतिपय

अथ पूरणार्थक तद्धित

संख्यासँ पूरणमे *म* ॥२१॥ दुइ, तीनिसँ *सर* ॥२२॥ *कीसँ यम* ॥२३॥ संख्येयमे *य* ॥२४॥ पूरणार्थकसँ पूर्व दुइ, तीनि, छओ, नओकेँ *दो, ते, छठ, नब* ॥२५॥ व्यञ्जनक लोप नहि ॥२६॥

पूर्व सर्वनामप्रकृतिक तद्धित कहल गेल। आब संख्याप्रकृतिक पूरणार्थक कहल जाइत अछि। चारि, पाँच, छओ, इत्यादि, संख्यावाचक नामसँ पर पूरण अर्थात् पूर्त्तिकारक अर्थमे *म* प्रत्यय होइत अछि। चारि संख्याक पूरण अर्थात् पूर्त्ति कएनिहार *चारिम*। पाँच संख्याक *पाँचम*। यद्यपि सूत्रमे सामान्य संख्या कहल अछि किन्तु एक संख्या पूरणीय अर्थात् पुरएबाक योग्य नहि। दुइ तीनिसँ प्रत्यय विशेषरूपेँ विहित अछि। तेँ चारि आदिसँ *म* प्रत्यय होएत तदनुसार सूत्रार्थ लीखल ॥२१॥

दुइ, दू, तीनिसँ पूरणमे *सर* अबैत अछि। *दोसर, तेसर*। अग्रिम सूत्रसँ दुइ ओ दूकेँ *दो*, तीनिकेँ *ते*। *यद्यपि सूत्रमे दू शब्दक कथन नहि अछि तथापि एकमूलताक कारण* दुइ, दू दूहूक ग्रहण जानब। एकर सूत्र आगाँ कहल जाएत ॥२२॥

की शब्दसँ संख्या-पूरणमे यम अबैत अछि। प्रत्ययसम्बन्धी यकारसँ पूर्व की केँ अकारान्तादेश पूर्व उक्त अछि। कोन संख्याक पूरण *कयम* वा *कएम* ॥२३॥

की शब्दसँ संख्येय अर्थात् संख्यायुक्त अर्थमे *य* अबैत अछि। कोन संख्यासँ युक्त *कय* वा *कए*। *अहाँकेँ कय वा कए सए रुपैआ अछि? कय वा कएटा पुस्तक लेब ? कय वा कएगोट कलम चाही ? अहाँ कय वा कए गोटए छी ? ॥२४॥*

पूरणार्थक तद्धितसँ पूर्व दुइ, वूकेँ *दो*, तीनिकेँ *ते*, छओकेँ *छठ*, नओकेँ *नब* आदेश कएल जाइत अछि। *दोसर, तेसर, छठम, नबम ॥२५॥*

पूरणार्थक प्रत्ययसँ पूर्व जे व्यञ्जनक क्वचित् लोप प्राप्त अछि से नहि हो। सत्ताइसम, *अट्ठाइसम* / एहि ठाम तकार ओ ठकारक लोप नहि भेल। वर्गीय वर्णसँ पूर्व तद्वर्गीय अपञ्चम व्यञ्जनक लोप प्रत्ययसँ पूर्व कहल अछि तकर निषेध एहि सूत्रसँ जानब ॥२६॥

सारिणी ११ : पूरणप्रत्ययान्त रूपसंग्रह

	दोसर	तेसर	चारिम	पाँचम
छठम	सातम	आठम	नबम	दसम
एगारहम	बारहम	तेरहम	चौदहम	पनर(न्द्र)हम
सोड़(ल)हम	सतर(त्र)हम	अठारहम	उनैसम	बीसम
एकैसम	बाइसम	तैसम	चौबीसम	पचीसम
छब्बीसम	सत्ताइसम	अट्ठाइसम	उनतीसम	तीसम
एकतीसम	बत्तीसम	तैँतीसम	चैँओतीसम	पैँतीसम
छत्तीसम	सैँतीसम	अठतीसम	उनचालिसम	चालिसम
एकतालिसम	बेआलिसम	तैँतालिसम	चौआलिसम	पैँतालिसम
छेआलिसम	सैँतालिसम	अठतालिसम	उनचासम	पचासम
एकाबनम	बाबनम	तिरपनम	चौबनम	पचपनम
छप्पनम	सताबनम	अठाबनम	उनसट्ठिम	साठिम
एकसट्ठिम	बासट्ठिम	तिरसट्ठिम	चैँओसट्ठिम	पैँसट्ठिम
छेआसट्ठिम	सतसट्ठिम	अठसट्ठिम	उनहत्तरिम	सत्तरिम
एकहत्तरिम	बहत्तरिम	तेहत्तरिम	चौहत्तरिम	पचहत्तरिम
छेहत्तरिम	सतहत्तरिम	अठहत्तरिम	उनासीम	अस्सीम
एकासीम	बेआ(रा)सीम	तेरासीम	चौरासीम	पचासीम
छेआसीम	सतासीम	अठासीम	नबासीम	नब्बेम
अकान्नब्बे(बे)म	बेरान्नब्बे(बे)म	तेरान्नब्बे(बे)म	चौरान्नब्बे(बे)म	पंचान्नब्बे(बे)म
छेआन्नब्बे(बे)म	सन्तान्नब्बे(बे)म	अण्ठान्नब्बे(बे)म	नीनान्नब्बे(बे)म	सयम वा सएम

स्वार्थिक

स्वार्थमे भाभटसँ *पन, पना, पनी* ॥२७॥ गील आदिसँ आधिक्यमे *गर* ॥२८॥ पानिसँ *आरी* ॥२९॥ अल्पमे गुणवाचकसँ *आह* ॥३०॥ मधुरसँ *आह, आँठ* ॥३१॥ पूब, दच्छिन, पच्छिम, उत्तरसँ *आहुत* ॥३२॥ छोटमे थार आदिसँ *ई* ॥३३॥ लोटासँ *अकी* ॥३४॥ कूड़ासँ *अनी* ।३५॥ करछुसँ *ली* ॥३६॥ कोठीसँ *उली, ईक* लोप ॥३७॥ कठौतसँ, *औतक* बिलोप ॥३८॥

आब स्वार्थिक तद्धित कहल जाइत अछि। भाभटरूप नामसँ पर स्वार्थमे *पन, पना, पनी* तीनि प्रकारक तद्धित अबैत अछि। *भाभट, भभटपन, भभटपना, भभटपनी*। प्रकृतिक स्वरकेँ ह्रस्वताविधायक सूत्र पूर्व कहल गेल अछि। भाभट आग्रहविशेष थीक। भाभट शब्दक स्थान *भाभठ* सेहो जानब, भभठपन ॥२७॥

गील आदिसँ आधिक्य अर्थमे *गर* अबैत अछि। पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्वता कहल गेल अछि। अधिक गील *गिरगर,* अधिक मोट *मोटगर*। *प्रियगर। ललितगर। उँचगर। भोरगर। आइ लोकगर अछि। जनगर अछि।* विशेष्यभूत अर्थ ओएह रहल तैँ *गर* सेहो स्वार्थिक भेल। एवम् आगहुँ जानब। वक्ष्यमाण मत्वर्थीय *गर* प्रत्यय कएने *हम लोकगर छी,* इत्यादि जानब। गील आदि आकृतिगण थीक ॥२८॥

पानिसँ अधिक अर्थमे *आरी* अबैत अछि। अधिक पानि *पनिआरी* ॥२९॥

अल्प अर्थमे गुणवाचक अमत इत्यादिसँ *आह* अबैत अछि। अल्प अमत *अमताह, बुड़िआह, बौकाह ॥३०॥*

मधुरसँ अल्प अर्थमे *आह, आँठ* दू तद्धित अबैत अछि। अल्प मधुर *मधुराह* वा *मधुराँठ ॥३१॥*

पूब, दच्छिन, पच्छिम, उत्तरसँ अल्प अर्थमे *आहुत* अबैत अछि। अल्प पूब *पुबाहुत, दछिनाहुत, पछिमाहुत, उतराहुत*। व्यञ्जनक लोप पूर्वोक्त सूत्रसँ। *पुबाहुत भए बैसू। खाम्हीक कान्ह पुबाहुत भेल* अर्थात् किञ्चिद् पूर्वदिक्स्थित भेल ॥३२॥

थार आदिसँ छोट अर्थमे *ई* प्रत्यय अबैत अछि। छोट थार *थारी,* छोट डाला *डाली*। थार, तसला, अपखोरा, सोबर्ना, हथहड़, पनबट्टा, बाटा, घण्टा, कराह, आसन, खाम्ह, डाला, चङेरा, धामा, मटकुड़, कोहा, छाँछ, थार आदि आकृतिगण ॥३३॥

छोट अर्थमे लोटासँ *अकी* अबैत अछि। छोट लोटा *लोटकी* ॥३४॥

कूड़ासँ छोट अर्थमे *अनी* अबैत अछि। छोट कूड़ा *कुड़नी*। आलोप, ऊकेँ ह्रस्वता ॥३५॥

करछुसँ छोट अर्थमे *ली* अबैत अछि। छोट करछु *करछुली* ॥३६॥

कोठीसँ उक्त अर्थमे *उली* अबैत अछि ओ कोठीक ईकारक लोप होइत अछि। छोट कोठी *कोठुली* ॥३७॥

कठौतसँ छोट अर्थमे *उली* अबैत अछि ओ औतक विलोप होइत अछि। छोट कठौत *कठुली* ॥३८॥

सारिणी १२ : स्वार्थिक तद्धितचक्र

प्रकृति		*प्रत्यय*		*सिद्धरूप*	*अर्थ*
भाभट	+	पन	=	भभटन	भाभट
,,		पना		भभटपना	,,
,,		पनी		भभटपनी	,,
गील	+	गर	=	गिलगर	अधिक गील
मोट		,,		मोटगर	अधिक मोट
प्रिय		,,		प्रियगर	अधिक प्रिय
ललित		,,		ललितगर	अधिक चमत्कृत
ऊँच		,,		उँचगर	अधिक ऊँच
भोर		,,		भोरगर	अधिक भोर
जन		,,		जनगर	अधिक जन
लोक		,,		लोकगर	अधिक लोक
अमत	+	आह	=	अमताह	अल्प अमत
बौक		,,		बौकाह	किञ्चित् बौक
बूड़ि		,,		बुड़िआह	किछु बूड़ि
मधुर		,,		मधुराह	अल्प मधुर
,,	+	आँठ	=	मधुराँठ	,,
पूब	+	आहुत	=	पुबाहुत	किञ्चित् पूर्वस्थितं
दच्छिन		,,		दछिनाहुत	किञ्चित् दक्षिणस्थित
उत्तर		,,		उतराहुत	किछु उत्तरस्थित
थार	+	ई	=	थारी	छोट थार
तसला		,,		तसली	छोट तसला

अपखोरा		,,		अपखोरी	छोट अपखोरा
सोबर्ना		,,		सोबर्नी	छोट सोबर्ना
हथहड़		,,		हथहड़ी	छोट हथहड़
पनबट्टा		,,		पनबट्टी	छोट पनबट्टा
बाटा		,,		बाटी	छोट बाटा
घंटा		,,		घंटी	छोट घंटा
कराह		,,		कराही	छोट कराह
आसन		,,		आसनी	छोट आसन
खाम्ह		,,		खाम्ही	छोट खाम्ह
डाला		,,		डाली	छोट डाला
चँगेरा		,,		चँगेरी	छोट चँगेरा
धामा		,,		धामी	छोट धामा
मटकुड़		,,		मटकुड़ी	छोट मटकुड़
कोहा		,,		कोही	छोट कोहा
छाँछ		,,		छाँछी	छोट छाँछ
लोटा	+	अकी	=	लोटकी	छोट लोटा
कूड़ा	+	अनी	=	कुड़नी	छोट कूड़ा
करछु	+	ल्ली	=	करछुल्ली	छोट करछु
कोठी	+	उली	=	कोठुली	छोट कोठी
कठौत	+	उली	=	कठुली	छोट कठौत

भवार्थक तद्धित

भवमे आज, काल्हि, परसू, भिनसर, भोर, बेर, साँझ, दिन, राति तथा खनशब्दान्तसँ उक ॥३९॥ माँझ, साँझसँ *इल* ॥४०॥ देश, आगाँ, पाछाँसँ *इला* ॥४१॥ बीचसँ *अला* ॥४२॥ कोनसँ *ऐला* ॥४३॥ कात, तर, उपरसँ *अका* ॥४४॥ गाम, घर, समय, बनसँ *ऐया*, यक विलोप ॥४५॥ परदेश, विदेश, जङ्गल, परोससँ *इया*, ई ॥४६॥ देहात, देश, स्वदेशसँ ई ॥४७॥ वायुमे पूबसँ *आ*, पूबकेँ *पुरिब*, *पूर्ब* ॥४८॥ दच्छिनसँ *आही* ॥४९॥ पच्छिमसँ

बा, प्रकृतिकेँ पछ ॥५०॥ उत्तरसँ अङ्ग ॥५१॥ चारूसँ क्षेत्रगृहादिमे बारि, पूब पच्छिमकेँ पू पछ ॥५२॥ मनुष्यमे पूबसँ आ, ह्रस्वाभाव ॥५३॥ दछिनसँ आहा ॥५४॥ पच्छिमसँ दुहू ॥५५॥ संख्यापूर्वक मास, बर्षसँ इया ॥५६॥ ऊ, सकारकेँ द्विर्वचन ॥५७॥ अप्राणीमे दिन, सालसँ आ, ह्रस्वाभाव ॥५८॥ लोकमे गामसँ औआँ, आमक विलोप ॥५९॥

आब भवार्थक तद्धित कहल जाइत अछि। उत्पन्न होअनिहार ओ रहनिहार दुनू भव कहबैत अछि। आज, काल्हि, परसू, भोर, बेर, साँझ, दिन, राति, तथा खन शब्दान्त नामसँ भव अर्थमे अर्थात् होअनिहार अर्थमे *उक* अबैत अछि। आज होअनिहार *आजुक विषय बुझल, काल्हुक बुझब। परसुका वर्षा बृहत् भेल। उकसँ* पूर्वक लोप कहल गेल अछि तथा उकसँ पूर्वक प्रकृतिक स्वरकेँ ह्रस्वताक प्रतिषेधो उक्त अछि। परसुक, आजुक आदिसँ प्रभेदमे आ प्रत्यय कएलासँ *परसुका, अजुका* इत्यादि होएत। *दिनुक, एकदिनुक, रातुक, एकरातुक, एखनुक, तखनुक* इत्यादि ॥३९॥

माँझ ओ साँझसँ भवमे *इल* अबैत अछि। *माझिल, साझिल। मझिला, सझिला* पूर्ववत् ॥४०॥

देश, आगाँ, पाछाँसँ भव अर्थमे *इला* अबैत अछि। देशमे होअनिहार *देशिला*, आगाँ होअनिहार वा रहिनहार *अगिला । अगिला कार्य बुझल, सभसँ अगिला लोक सावधान रहए* । एवं *पछिला ॥४१॥*

बीचसँ भव अर्थमे *अला* तद्धित अबैत अछि। बीचमे होअनिहार वा रहनिहार *बिचला कार्य । बिचला खेत ॥४२॥*

कोनसँ भव अर्थमे *ऐला* अबैत अछि । कोनमे होअनिहार वा रहनिहार *कोनैला। पोखरिक कोनैला जङ्गल* ॥४३॥

कात, तर, उपरसँ भव अर्थमे *अका* तद्धित अबैत अछि । कातमे होअनिहार वा रहनिहार *कतका । पोखरिक कतका खढ़ साफ करबाउ। कतका जल स्वच्छ नहि रहैछ।* एवं *तरका, उपरका ॥४४॥*

गाम, घर, समय, बनसँ भवमे *ऐया* अबैत अछि, ओ *यंक* लोप । गाममे होनिहार वा रहनिहार *गमैया लोक* । एवं *घरैया व्यवहार, बनैया सूगर, समैया फल । प्रत्ययान्त* आकारसँ पूर्व प्रत्ययसम्बन्धी यकारक लोप वैकल्पिक कहल जाएत तेँ *गमैआ, घरैआ, समैआ,* एहनो रूप शुद्ध जानब ॥४५॥

परदेश, विदेश, जङ्गल, परोससँ भव अर्थमे *इया* तथा ईकार अबैछ। परदेशमे रहनिहार *परदेशिया* वा *परदेशी*, एवं *बिदेशिया, बिदेशी* । जङ्गलमे होअनिहार *जङ्गलिया, जङ्गली, परोसिया, परोसी ॥४६॥*

देहात, देश, स्वदेशसँ भवमे ई अबैत अछि। देहातमे होअनिहार *देहाती ।* एवं *देशी, स्वदेशी* ॥४७॥

पूबसँ उत्पन्न होअनिहार बसातमे *आ* अबैत अछि ओ पूबकेँ *पुरिब* वा *पूर्ब* आदेश होइत अछि। पूबमे होअनिहार बसात *पुरिबा* वा *पूर्बा* ॥४८॥

दछिनसँ उत्पन्न होअनिहार बसातमे *आही* अबैत अछि। दच्छिन दिश उत्पन्न बरसात *दछिनाही ।* चलोप ॥४९॥

पच्छिमसँ उत्पन्न होनिहार बसातमे *बा* अबैत अछि। पच्छिमकेँ *पछ* आदेश होइत अछि। पच्छिम दिश उत्पन्न बसात *पछबा* ॥५०॥

उत्तरसँ होअनिहार बसातमे *अङ्ग* अबैत अछि। उत्तरमे उत्पन्न होअनिहार बसात *उतरङ्ग*। तलोप ॥५१॥

पूब, दच्छिन, पच्छिम, उत्तरसँ पर खेत, घर आदिमे भवार्थक *बारि* अबैत अछि ओ पूबकेँ *पु*, पच्छिमकेँ *पछ* आदेश । पूब दिश रहनिहार *पुबारि खेत, पुबारि बाध, पुबारि कोठामे, दछिनबारि ओसारा पर, पछबारि भागमे, उत्तरबारि अलमारीमे* पुस्तक अछि। चकार तकारक लोप। प्रभेदमे *आ* प्रत्यय कएने *पुबरिआ, दछिनबरिआ, पछबरिआ, उतरबरिआ ॥५२॥*

पूबसँ भव मनुष्यमे *आ* अबैत अछि। प्रकृतिकेँ ह्रस्वाभाव । पूबमे होनिहार लोक *पूबा* ॥५३॥

दच्छिनसँ भव मनुष्यमे आहा अबैत अछि। दच्छिन दिश होअनिहार *दछिनाहा* ॥५४॥

पच्छिमसँ पर होअनिहार लोकमे *आ* तथा *आहा* अबैत अछि। पच्छिम दिश उत्पन्न *पछिमा* वा *पछिमाहा* ॥५५॥

एक दू तीनि आदि संख्यार्थक, तत्पूर्वक मास ओ वर्षसँ भव अर्थमे *इया* अबैत अछि। एक मासमे उत्पन्न *एकमसिया, दोमसिया ।* दूकेँ *दो*, तीनिकेँ *ते*, चारिकेँ *चौ* आदेश उक्त अछि। *तेमसिया, चौमसिया,* एवं *एकवर्षिया* इत्यादि । यलोप पक्षमे *एकमसिआ* इत्यादि ॥५६॥

संख्यापूर्वक मास ओ वर्षसँ ऊ सेहो उक्त अर्थमेअबैत अछि। ऊ प्रत्यय कएला पर मासक सकारकेँ द्विर्वचन होइत अछि। एक मासमे उत्पन्न भेनिहार *एकमस्सू नेना, दोमस्सू, एकवर्षू, दोवर्षू* इत्यादि ॥५७॥

संख्यापूर्वक दिन ओ सालसँ प्राणीसँ भिन्न होअनिहारमे *आ* अबैत अछि। एहि आ प्रकृतिक स्वरकेँ ह्रस्व आदेश नहि। *एकदिना भोज, दोदिना उत्सव, एकसाला* वा *दोसाला घर* ॥५८॥

गामसँ रहनिहार लोकमे *औआँ* अबैत अछि ओ गाममे आम *शब्दक* विलोप होइत

अछि। गाममे रहनिहार *गौआँ* । गाममे प्राय: सभ रहइत अछि तेँ जकरा गाममे जे रहइत अछि तकर से गौआँ कहबैत अछि । *विष्णुलाल हमर गौआँ थिकाह* ॥५९॥

भावार्थक तद्धित

भावमे गुणवाचकसँ *आइ* ॥६०॥ हरिअर आदिसँ *ई* ॥६१॥ बूढ़, नव सँ *आरी* ॥६२॥

आब भावार्थक तद्धित कहल जाइत अछि। प्रकृतिसँ स्वार्थमे विशेषणरूपेँ बोधित पदार्थ भाव कहबैत अछि। अमत मधुर आदि शब्द अम्लत्व माधुर्यादि युत वस्तुबोधक थीक। ताहिमे अम्लत्वमाधुर्यादि विशेषण ओ ओकर अश्रय वस्तु विशेष्य रहैत अछि। तस्मात् अमत शब्दसँ भावमे प्रत्यय कएने अम्लत्वक ओ मधुर शब्दसँ भावमे प्रत्यय कएलासँ माधुर्यक बोध होएत । एहि रीतिएँ आनहु शब्दक प्रसङ्ग ज्ञात करब।

गुणवाचक अर्थात् अमत, मधुर सोझ, टेढ़, मोट, पण्डित इत्यादि शब्दसँ भावमे आइ अबैत अछि। *दहीमे अमताइ आबि गेलैक, मधुराइ कम रहलैक। सोझाइ, टेढ़ाइ, मोटाइ, गोराइ, उँचाइ, गहिँइाइ, चिकनाइ।* पूर्वोक्त सूत्रसँ कलोप। *चकराइ, समर्थाइ, छोटाइ, जेठाइ, कडुआइ, सोन्हाइ, गोलाइ, करिआइ।* एतदतिरिक्त जाहि गुणवाचकसँ *आइ* शिष्टजनप्रयुक्त देखी ताहीसँ पर शुद्ध मानब। अतएव *सरिआइ, कोमलाइ* इत्यादि नहि होइत अछि॥६०॥

हरिअर आदिसँ भावमे *ई* प्रत्यय अबैत अछि। *वर्षा भेलासँ दूबिमे हरिअरी आबि गेल अछि। दु:खसँ देहमे उजरी धबैत अछि। अहाँक देहमे लाली आबि गेल अछि।* (पीअरमे अलोप) ई गणसूत्र जानब। एवम् अन्यत्रहु। *पीरी। टेढ़ी, तैआरी, इआरी, उदासी* इत्यादि। उजर आदि आकृतिगण॥६१॥

बूढ़ ओ नव शब्दसँ भावमे *आरी* अबैत अछि । *बुढ़ारी*, वार्द्धक्य, *नवारी* तारुण्य ॥६२॥

सारिणी १३ : भावार्थक तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*सिद्धरूप*	*प्रकृति*	*प्रत्यय*	*सिद्धरूप*
अमत +	आइ =	अमताइ	कडू	,,	कडुआइ
मधुर	,,	मधुराइ	सोन्ह	,,	सोन्हाइ
सोझ	,,	सोझाइ	गोल	,,	गोलाइ
टेढ़	,,	टेढ़ाइ	कारी	,,	करिआइ
मोट	,,	मोटाइ	हरिअर +	ई =	हरिअरी
गोर	,,	गोराइ	उजर	,,	उजरी
ऊँच	,,	उँचाइ	लाल	,,	लाली

गहीँइ	आइ	गहिँइाइ	पीअर	,,	पीरी
चिक्कन	,,	चिकनाइ	टेढ़	,,	टेढ़ी
चाकर	,,	चकराइ	तैआर	,,	तैआरी
समर्थ	,,	समर्थाइ	इयार	,,	इयारी
छोट	,,	छोटाइ	बूढ़ +	आरी	बुढ़ारी
जेठ	,,	जेठाइ	नब	,,	नबारी

कर्मार्थक तद्धित

कर्ममे चरबाह आदिसँ इकार ॥६३॥ चोरसँ ईकारो ॥६४॥ कहार आदिसँ *ई* ॥६५॥ धूर्त्तसँ *आ*, ह्रस्वाभाव ॥६६॥ गौआँसँ रय ॥६७॥ डाकूसँ *ऐती*, ऊलोप ॥६८॥ *अ, आ* ह्रस्वाभाव ॥६९॥ बैद, सिपाही, ओझासँ *गिरी*, पूर्व आकेँ *ऐ* ॥७०॥ बाभनसँ *अओज* निन्दामे ॥७१॥ सभा, घटक, पञ्चसँ *ऐती* ॥७२॥ कुटुमसँ विवाह क्रियामे ॥७३॥

आब कर्मार्थक तद्धित कहल जाइत अछि। कर्म क्रिया थीक, यथा 'हुनक कोनो कर्म दुसबाक योग्य नहि ।' चरबाह आदिसँ कर्म अर्थात् क्रियामे ह्रस्व इकार अबैत अछि। चरबाहक क्रिया *चरबाहि* । इवर्ण प्रत्ययसँ पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वताक प्रतिषेध उक्त अछि। *गँजबाहि, जलबाहि, हरबाहि, कोदरबाहि, ओगरबाहि, घसबाहि, कोरबाहि* । रखबारक क्रिया *रखबारि, बटबारि, बगबारि, गैबारि, महिसिबारि,* इत्यादि। *बाह* प्रत्ययान्त तथा *बार* प्रत्ययान्त सभ चरबाह-आदि थीक । ओ दुनू प्रत्यय कहल जाएत॥६३॥

चोरसँ कर्ममे ईकारो अर्थात् ह्रस्व इकार तथा दीर्घ ईकार दुहू अबैत अछि। चोरक क्रिया *चोरि* वा *चोरी* ॥६४॥

कहार आदिसँ कर्ममे इकार अबैत अछि। कहारक कर्म *कहारी* । *कहार छोड़ि कहारी के करत ? बेगारी, लोहारी, कमारी, सोनारी, दुसाधी, महाराजी, गृहन्थी, महाजनी, खबासी, चाकरी, नोकरी, गोआही।* गोड़ाइतक क्रिया *गोड़ाइती* । आइक स्थानमे *ऐ* सेहो बाजल जाइत अछि तेँ *गोड़ैती* एहनो शुद्ध थीक (काएथमे *आएकेँ ऐ*) *कैथी । पँजिआड़ी।* कहार आदि आकृतिगण । *चुगिली* ॥६५॥

धूर्त्तसँ कर्ममे *आ* अबैत अछि। पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वाभाव। धूर्तक क्रिया *धूर्त्ता* ॥६६॥

कर्ममे गौआँ शब्दसँ *रए* अबैत अछि। गौआँक व्यवहार *गौआँरए* ॥६७॥

डाकू शब्दसँ कर्ममे *ऐती* अबैत अछि। पूर्व ऊकारक लोप। डाकूक क्रिया *डकैती*॥६८॥

तथा डाकू शब्दसँ कर्ममे *अ* प्रत्यय ओ *आ* प्रत्यय सेहो अबैत अछि। पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वाभाव। डाकूक कर्म *डाक* वा *डाका । चैत्र डकैती करैत छथि। रातिमे डाका पड़ल वा डाक पड़ल* ॥६९॥

बैद, सिपाही, ओझासँ पर कर्ममे *गिरी* अबैत अछि। *गिरीसँ* पूर्व ओझाक आकारकेँ ऐकार होइत अछि ओ *गिरीसँ* पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्वता कहि आएल छी। बैदक कर्म *बैदगिरी, सिपहिगिरी ओझैगिरी ॥७०॥*

बाभनसँ कर्ममे *अओज* अबैत अछि निन्दामे। *चैत्र बभनओज करैत छथि ॥७१॥*

सभा, घटक ओ पञ्चसँ कर्ममे *ऐती* अबैत अछि। सभाक कर्म *सभैती;* घटकक कर्म *घटकैती;* पञ्चक क्रिया *पञ्चैती* ॥७२॥

कुटुमसँ विवाह क्रियामे *ऐती* अबैत अछि। *कुटुमैती* कुटुमसम्बन्धी विवाह क्रिया। *हमरा देवदत्तशर्माक ओहिठाम कुटुमैती करबाक अछि ॥७३॥*

भावकर्मार्थक

दुहूमे मनुष्यमात्रबोधक गुणवाचकसँ *पन, पना, पनी* ॥७४॥ बुधिआर आदिसँ ई ॥७५॥ चतुरसँ *आइ, अइ* ॥७६॥ पण्डितसँ *आइ, आरय* ॥७७॥ व्यक्तिसँ *तारय* ॥७८॥

भाव ओ कर्म दुहू अर्थमे *पन, पना* ओ *पनी* अबैत अछि जे गुणवाचक केवल मनुष्यमे प्रयुक्त हो ताहिसँ पर। *नेनपन* शिशुता वा शिशुक क्रिया। *नेनपन व्यतीत भेलाक पर समर्थाइ होइत छैक। अहाँ नेनपन करैत छी ।* एवं *नेनपना, नेनपनी।* पन प्रभृतिसँ पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्वता उक्त अछि तेँ नेनाक आकारकेँ तथा एकारकेँ ह्रस्व आदेश भेल। ऊँच, नीच इत्यादि गुणवाचक थीक किन्तु मनुष्यहिटामे प्रयुक्त नहि होइत अछि अपितु मनुष्यभिन्नहुमे, तस्मात् ऊँच, नीच इत्यादि शब्दसँ *पन* आदि नहि भेल ॥७४॥

भाव ओ कर्म दुहूमे बुधिआर आदिसँ ई प्रत्यय अबैत अछि। *बुधिआरी* बुद्धिमत्ता वा बुद्धिमानक क्रिया। *भवदेवमे अधिक बुधिआरी छैन्हि। देवदत्त जे ओतए गेलाह से बुधिआरी नहि भेलैन्हि। अहाँ जे अएलहुँ से बुधिआरी कएल। ई* प्रत्ययसँ पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वताक प्रतिषेध कहल अछि तेँ सामान्य सूत्रप्राप्त ह्रस्वादेश नहि भेल। एवं *बुड़िबकी* इत्यादि ॥७५॥

उक्त दुहू अर्थमे चतुर शब्दसँ आइ तथा *अइ*, पण्डितसँ *आइ, आरय* ओ व्यक्ति शब्दसँ *तारय* प्रत्यय अबैत अछि। *चतुराइ, चतुरइ, पण्डिताइ, पण्डितारय, व्यक्तितारय* ॥७६–७८॥

सारिणी १४ : भावकर्मार्थक तद्धित-चक्र

प्रकृति		*प्रत्यय*		*सिद्धरूप*
नेना	+	पन (ना/नी)	=	नेनपन (ना/नी)
बूड़ि		,,		बुड़िपन (ना/नी)
चुगिला		,,		चुगिलपन (ना/नी)
दुष्ट		,,		दुष्टपन (ना/नी)
मोचण्ड		,,		मोचण्डपन (ना/नी)
गमार		,,		गमरपन (ना/नी)
बुधिआर	+	ई	=	बुधिआरी
बुड़िबक		,,		बुड़िबकी
चतुर	+	आइ	=	चतुराइ
,,	+	अइ	=	चतुरइ
पण्डित	+	आइ	=	पण्डिताइ
,,	+	आरय	=	पण्डितारय(ए)
व्यक्ति	+	तारय	=	व्यक्तितारय(ए)

प्रभेदार्थक

प्रभेदमे उजर आदिसँ *आ* ॥७९॥ लाल आदिसँ *का* ॥८०॥ अबल आदिसँ *हा* ॥८१॥ मधुरसँ *हाँ* वा *औआ* ॥८२॥ अमतसँ *हा, औआ* ॥८३॥

उजर आदिसँ पर प्रभेद अर्थमे *आ* अबैत अछि। उजर प्रभेदक उजरा फूल, कारी प्रभेदक *करिआ मेघ।* स्वरादि प्रत्ययसँ पूर्व सकल स्वरक स्थान ह्रस्वता कहल अछि तकरा स्मरण राखब। *चितकबरा कुकूर ।* फूल उजर, कारी, लाल इत्यादि अनेक प्रकारक होइत अछि तेँ उक्त वाक्यमे *आ* प्रत्यय प्रभेदार्थक आएल। कर्पूर उजरे रंग होइत अछि अतएव *उजरा कर्पूर लाउ* इत्यादि प्रयोग नहि भेल। यद्यपि

संभवव्यभिचाराभ्यां स्याद्विशेषणमर्थवत्।
न शीतेन न चोष्णेन वह्निः क्वापि विशिष्यते ॥

अर्थात् रहब, नहि रहब दुहूक योग्यता रहला सन्ताँ विशेषण सार्थक होइत अछि, अन्यथा नहि। यथा, आगिमे शीतलता नहि रहैत अछि तेँ 'ठंढा आगि' एहन नहि बाजल जाइत अछि तथा ओहिमे उष्णता अछिओ तथापि ओकरा नहि रहबाक योग्यता नहि तेँ

'गरम आगि अछि' एहनो नहि बाजल जाइत अछि। तेँ 'उजरा कर्पूर लाउ' एहन प्रयोगक अभाव-कहि सकी; किन्तु "कर्पूर उजर होइत अछि", एकर स्थानमे "कर्पूर उजरा होइत अछि" एतादृश प्रयोग नहि होइछ, तस्मात् उजर-उजरा कारी-करिआ इत्यादिमे पूर्वोक्त अर्थभेद अवश्य मन्तव्य होएत। उजर, कारी चितकाबर, कैल, कुइर, गुलाबी, सबरङ्ग, पँचरङ्ग, पुरान, मेही, अधलाह, आह-उक प्रत्ययान्त (*आह* कहल जाएत; *उक* प्रत्यय पूर्व कहल गेल, ओ दुहू जकरा अन्तमे हो सेहो सभ) उजर आदि जानब। पानिसँ युक्त *पनिआह, पनिअहा मेघ,* बातसँ युक्त *बताह, बतहा, आजुक, अजुका, कल्हुका* इत्यादि। उजर आदि आकृतिगण थीक ॥७९॥

लाल आदिसँ पर प्रभेद अर्थमे *का* अबैत अछि। *का*सँ पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वता उक्त अछि। *ललका*–लाल प्रभेदक फूल, *हरिअरका, गोरका* इत्यादि। लाल, हरिअर, गोर, पैघ, छोट, बड़, मोट, लाम, पातर, चाकर, सोझ, टेढ़, गील, उथर, गहीँड़, ठाढ़, चिक्कन, नव। उजरसँ स्त्रीमे, *उजरकी घोड़ी* । ईकार स्त्रीप्रत्यय कहल जाएत। अन्यत्र *उजरका* वा *उजरा* भैँड़ा। (मेही आदिसँ पर ककारकेँ द्वित्व) *मेहिक्का, मेहिआ, करिक्का, करिआ* इत्यादि ॥८०॥

उक्त अर्थमे अबल आदिसँ *हा* अबैत अछि। *अबलहा, निकहा, हलुकहा,* (ललोप)। (उत्तममे तलोपाभाव) उत्तमहा। दुबरहा, गरिबहा, खरखरहा। (कर्ममे विहित अल) *पकलहा, सड़लहा* इत्यादि ॥८१॥

मधुरसँ प्रभेद अर्थमे *हा, बा, औआ* तीनि प्रत्यय अबैत अछि। *मधुरहा, मधुरबा, मधुरौआ ॥८२॥*

उक्त अर्थमे अमत शब्दसँ *हा, औआ* दू प्रत्यय अबैत अछि। *अमताहा, अमतौआ ॥८३॥*

सारिणी १५ : प्रभेदार्थक तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*सिद्धरूप*
उजर +	आ =	उजरा
उजर	का	उजरका
कारी	आ	करिआ
,,	का	करिक्का
चितकाबर	आ	चितकबरा
कैल	आ	कैला
कुइर	,,	कुइरा
लाम	का	लमका
पातर	,,	पतरका
चाकर	,,	चकरका
सोझ	,,	सोझका
टेढ़	,,	टेढ़का
उथर	,,	उथरका
गहीँड़	,,	गहिँड़का
ठाढ़	,,	ठढ़का
गुलाबी	आ	गुलबिआ
सबरंग	,,	सबरंगा
पँचरङ्ग	,,	पँचरङ्गा
पुरान	,,	पुरना
,,	का	पुरनका
मेही	आ	मेहिआ
,,	का	मेहिक्का
अधलाह	आ	अधलहा
बताह	,,	बतहा
पनिआह	,,	पनिअहा
आजुक	,,	अजुका
काल्हुक	,,	कल्हुका
रातुक	,,	रतुका
लाल	का	ललका
हरिअर	,,	हरिअरका
पीअर	,,	पिअरका
,,	आ	पीरा
छोट	का	छोटका
मोट	,,	मोटका
बड़	,,	बड़का
चिक्कन	,,	चिकनका
नव	,,	नवका
अबल	हा	अबलहा
नीक	,,	निकहा
हलुक	,,	हलुकहा
उत्तम	,,	उत्तमहा
दुबर	,,	दुबरहा
गरीब	,,	गरिबहा
खरखर	,,	खरखरहा
पाकल	,,	पकलहा
,,	का	पकलका
सड़ल	हा	सड़लहा
,,	का	सड़लका
जोतल	हा	जोतलहा
,,	का	जोतलका
मधुर	हा	मधुरहा
,,	बा	मधुरबा
,,	औआ	मधुरौआ
अमत	हा	अमतहा
,,	औआ	अमतौआ

युक्तार्थक (मत्वर्थीय)

युक्तमे *बाला* ॥८३॥ (क) ॥ गुण आदिसँ *मन्त* ॥८४॥ पानि आदिसँ *गर* ॥८५॥ मात्सर्य आदिसँ *ई* ॥८६॥ तामस आदिसँ *आह* ॥८७॥ मेघ अन्हारसँ *अओन* ॥८८॥ वयस झगड़ासँ*अह्ु* ॥८९॥ गाछसँ *ई, इअन* ॥९०॥ अभाग, धोधिसँ *ल* ॥९१॥ गाए, बुद्धिसँ *आर*, गाएकेँ *गो* ॥९२॥ पाँजिसँ *आड़* ॥९३॥ इजोत, अन्हारसँ *इया*, तक्केँ *र ॥९४॥*

नामसँ पर युक्त अर्थमे *बाला* अबैत अछि। पागसँ युक्त *पागबाला, उजर पागबाला*। तद्धितक विषयमे विशेषण समास वक्ष्यमाण अछि तेँ पूर्व समास, पश्चात् *बाला* प्रत्यय। युक्तमे योग सम्बन्ध, से अनेक प्रकारक; क्वचित् संयोग यथा *पागबाला, छड़ीबाला*। क्वचित्

स्वस्वामिभाव यथा *गाएबाला, घरबाला*। क्वचित् सामानाधिकरण्य यथा *भाएबाली कन्यासँ विवाह करी।* आकारान्ततसँ स्त्रीलिङ्गमे ईकार कहल जाएत। क्वचित् विषय-विषयिभाव; यथा *व्यवस्थाबाला विषय सुनू।* एहि प्रकरणमे ई विषय ज्ञात करब जे युक्त अर्थमे जे *बाला, मन्त, गर,* इत्यादि विहित अछि से प्राशस्त्य, आधिक्य, अल्पत्व, अतिशय इत्याद्यर्थमे प्रायशः होइत अछि। क्रमशः उदाहरण *ज्ञानबाला, धनबाला, मेघओन, अँखिगर।* बहुत ठाम उक्त अर्थ बिनहु अबैत अछि। यथा *पागबाला, धोधिल* इत्यादि। संस्कृतव्याकरणमे एहन प्रत्यय मत्वर्थीय शब्दैँ व्यवहृत अछि॥८३ (क) ॥

गुण आदिसँ युक्त अर्थमे *मन्त* अबैत अछि। प्रशस्त गुणसँ युक्त *गुणमन्त, धनमन्त।* स्त्रीमे इ प्रत्यय वक्ष्यमाण अछि, *धनमन्ति।* युक्तार्थकमे बाध्यबाधकभाव नहि हो से उक्त अछि, तैँ *बाला* सेहो होएत, *विद्याबाला, धनबाला* इत्यादि। *गुणवान्, धनवान्* इत्यादि शब्द संस्कृते गृहीत जानब॥८४॥

पानि आदिसँ युक्त अर्थमे *गर* प्रत्यय अबैत अछि। ई *गर* अधिकठाम आधिक्यमे अबैत अछि। अधिक पानिसँ युक्त *पनिगर*। अत्यन्त आधिक्य बुझएबाक हेतु अधिकादि शब्दो लगाओल जाइत अछि-*अधिक वा बहुत पनिगर पोखरि अछि। गर* प्रत्ययसँ पूर्व स्वरकेँ ह्रस्वादेश उक्त जानब। शुद्ध माटिसँ युक्त *मटिगर*।

पानि पाटि खढ़ देह फल तेल नोन धन धान।
दूध माछ आमिल हरदि थाल हाल बल फान॥१॥
यथा बोध जन जूति मन प्राणि-अङ्ग सक जोर।
दाम रुपैआ झोर जल पात लोक भर पोर॥२॥

आनन्दित मनसँ युक्त *मनगर।* प्राणीक अङ्ग मूह आदि। प्रौढ़ बजबामे समर्थ मुहबाला *मुहगर।* अधिक सुनबामे समर्थ कानसँ युक्त *कनगर।* अधिक बुझबामे समर्थ आँखिसँ युक्त अँखिगर। वादसमर्थ गालसँ युक्त *गलगर।* अधिक देनिहार हाथसँ युक्त *हथगर।* सहनशील कलेजासँ युक्त *कलेजगर।* प्रौढ़ कौँढ़सँ युक्त *कौँढ़गर*। चलाक पाएरसँ युक्त *पएरगर*। (टाँगकेँ *टं*) पैघ टाँगसँ युक्त *टंगर*। विशाल देहबाला *देहगर*। पैघ करबाला *करगर*। आओर गणोक्त नामसँ आधिक्यमे–अधिक बलबाला *बलगर* इत्यादि। (रुपैआमे आलोप) *रुपैगर* । पानिआदि आकृति-गण थीक तैँ *ठेकनगर* इत्यादि ॥८५॥

मात्सर्य आदिसँ पर युक्त अर्थमे *ई* अबैत अछि। मात्सर्य अर्थात् स्नेहसँ युक्त *मात्सर्यी*। संस्कृतमे मात्सर्य शब्दक द्वेष अर्थ थीक किन्तु मिथिलाभाषामे स्नेह अर्थ जानब । भारसँ युक्त *भारी; ज्ञानी, क्रोधी, रोगी* इत्यादि । प्रसिद्ध संस्कृतशब्द मिथिलाभाषामे ग्राह्य थीक से नामसंग्रहप्रकरणमे कहल जाएत, तस्मात् पाणिनीय इन् प्रत्ययान्त शब्दक ग्रहणसँ यदि सिद्धि मानल जाए तैँ एहि सूत्रक आवश्यकता नहि॥८६॥

तामस आदिसँ युक्त अर्थमे *आह* अबैत अछि। तामससँ युक्त *तमसाह; उकठाह, लेराह।* पानिसँ युक्त *पनिआह* । अल्प तेलसँ युक्त *तेलाह।* खुद्दीसँ युक्त *खुदिआह।* तामस, उकठ, धुमस, लेर, नोर, तेल, आमिल, हरदि, अमत, मधुर, सोन्ह, सन, बन, जङ्गल, माटि, धूरा, भूसा, गूड़ा, धान, घून, दिबाड़, गोबर, तमाकूल, खुद्दी, काँट, थाल, रोग। (जिद्दकेँ *जिदि) जिदिआह*। तामसआदि आकृतिगण ॥८७॥

मेघ जो अन्हारसँ युक्तमे *अओन* अबैत अछि। अल्प मेघसँ युक्त समय *मेघओन। सन्ध्या बीतल, आब अन्हरओन भेल॥८८॥*

वयस ओ झगड़ासँ युक्तमे *आहु* अबैत अछि। अधिक वयससँ युक्त *वयसाहु,* बहुत काल झगड़ासँ युक्त *झगड़ाहु ॥८९॥*

गाछसँ युक्त अर्थमे *ई, इअन* दू प्रत्यय अबैत अछि। बहुत गाछसँ युक्त *गाछी* । बहुत अधिक गाछसँ युक्त *गछिअन* ॥९०॥

अभाग ओ धोधिसँ पर युक्त अर्थमे *ल* अबैत अछि। अभाग ओ धोधिसँ युक्त *अभागल* ओ *धोधिल* ॥९१॥

गाए तथा बुद्धिसँ पर युक्त अर्थमे *आर* अबैत अछि। गाएकेँ *गो* आदेश। गाएबाला जातिविशेष *गोआर।* बुद्धिबाला *बुधिआर,* दलोप ॥९२॥

पाँजिसँ *आड़* अबैत अछि। पाँजिबाला *पँजिआड़।* एहिठाम ज्ञेयज्ञातृभावसम्बन्ध जानब ॥९३॥

इजोत, अन्हारसँ युक्त अर्थमे *इया* अबैत अछि। इजोतक तकारकेँ रेफ आदेश। चन्द्रमाक इजोतसँ युक्त *इजोरिया* वा *इजोरिआ* राति। यलोप विकल्प। अन्हारसँ युक्त *अन्हरिया(आ)* राति ॥९४॥

सारिणी १६ : युक्तार्थक तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*सिद्धरूप*	फल	,,	फलगर
पाग +	बाला =	पागबाला	तेल	,,	तेलगर
उजरपाग	,,	उजर पागबाला	नोन	,,	नोनगर
गुण	मन्त	गुणमन्त	धन	,,	धनगर
,,	ई	गुणी	धान	,,	धनगर
पानि	गर	पनिगर	दूध	,,	दुधगर
माटि	,,	मटिगर	माछ	,,	मछगर
खढ़	,,	खढ़गर	आमिल	,,	अमिलगर
देह	,,	देहगर	हरदि	,,	हरदिगर

थाल	गर	थलगर	भर	गर	भरगर
हाल	,,	हलगर	पोर	,,	पोरगर
बल	,,	बलगर	ठेकान	,,	ठेकनगर
फान	,,	फनगर	मात्सर्य +	ई	मात्सर्यी
यथा	,,	यथगर	भार	,,	भारी
बोध	,,	बोधगर	ज्ञान	,,	ज्ञानी
जन	,,	जनगर	क्रोध	,,	क्रोधी
जूति	,,	जुतिगर	रोग	,,	रोगी
मन	,,	मनगर	तामस +	आह	तमसाह
जाँघ	,,	जँघगर	उकठ	,,	उकठाह
मूह	,,	मुहगर	धुमस	,,	धुमसाह
कान	,,	कनगर	नोर	,,	नोराह
आँखि	,,	अँखिगर	तेल	,,	तेलाह
गाल	,,	गलगर	आमिल	,,	अमिलाह
हाथ	,,	हथगर	हरदि	,,	हरदिआह
कलेजा	,,	कलेजगर	अमत	,,	अमताह
कोँढ़	,,	कोँढ़गर	मधुर	,,	मधुराह
पाएर	,,	पएरगर	सोन्ह	,,	सोन्हाह
टाँग	,,	टंगर	सन	,,	सनाह
सक	,,	सकगर	बन	,,	बनाह
जोर	,,	जोरगर	जङ्गल	,,	जङ्गलाह
दाम	,,	दमगर	माटि	,,	मटिआह
रुपैआ	,,	रुपैगर	धूरा	,,	धुराह
झोर	,,	झोरगर	भूसा	,,	भुसाह
जल	,,	जलगर	गूड़ा	,,	गुड़ाह
पात	,,	पतगर	धान	,,	धनाह
लोक	,,	लोकगर	घून	,,	घुनाह

दिबाड़	आह	दिबड़ाह	वयस	आहु	वयसाहु
गोबर	,,	गोबराह	झगड़ा	,,	झगड़ाहु
तमाकूल	,,	तमकुलाह	गाछ	ई	गाछी
खुद्दी	,,	खुदिआह	गाछ	इयन	गछियन
काँट	,,	कँटाह	अभाग	ल	अभागल
थाल	,,	थलाह	धोधि	,,	धोधिल
रोग	,,	रोगाह	गाए	आर	गोआर
जिद्द	,,	जिदिआह	बुद्धि	,,	बुधिआर
मेघ	अओन	मेघओन	पाँजि	आइ	पँजिआइ
अन्हार	,,	अन्हरओन	इजोत	इया	इजेरिया (आ)
			अन्हार	,,	अन्हरिया

अपत्यार्थक

मामसँ साक्षात् अपत्यमे *इऔत* ॥९५॥ माउसि, पिउसि, पित्तीसँ *औत;* उलोप ॥९६॥ स्त्रीक सम्बन्धमे बहिनि, समधि, सौतिनिसँ, पुमपत्यमे पूर्वक लोप, सौतिनिकेँ *सत* ॥९७॥ पुरुषसम्बन्धमे बहिनिसँ *इन,* प्रकृतिकेँ *भाग* ॥९८॥

माम शब्दसँ पर साक्षात् अपत्य अर्थात् बालक ओ कन्यामे *इऔत* अबैत अछि। मामक पुत्र *ममिऔत* । अकारक लोप, ह्रस्वता। मामक पुत्री *ममिऔति* । इकार स्त्रीप्रत्यय वक्ष्यमाण जानब ॥९५॥

माउसि, पिउसि ओ पित्तीसँ पर साक्षात् अपत्यमे *औत* अबैत अछि ओ माउसि-पिउसिमे उकार हटाओल जाइत अछि। माउसिक साक्षात् पुमपत्य *मसिऔत* । कन्या *मसिऔति* । एवं *पिसिऔत, पिसिऔति* । पित्तीक बालक *पितिऔत* । पित्तीक कन्या *पितिऔति* । सामान्य सूत्रसँ तकारक लोप ॥९६॥

स्त्रीक सम्बन्धबोधक बहिनि, समधि, सौतिनिसँ *औत* अबैत अछि पुमपत्यमे। *औत*सँ पूर्व इकारक लोप तथा सौतिनिकेँ *सत* आदेश। *उर्मिलाक बहिनौत लवकुश, कौशल्याक सतौत भरत* ॥९७॥

पुरुषसम्बन्धक बोध सन्ताँ अपत्यमे बहिनिसँ *इन,* बहिनिकेँ *भाग* आदेश। जयलालक बहिनिक पुमपत्य *भागिन,* स्त्र्यपत्य *भगिनी* । पुरुषसम्बन्धक उपादानसँ 'उर्मिलाक भागिन कुश-लव' ई प्रयोग नहि भेल ॥९८॥

सारिणी १७ : अपत्यार्थक तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*सिद्धरूप*
माम +	इऔत =	ममिऔत
माउसि	औत	मसिऔत
पिउसि	,,	पिसिऔत
पित्ती	,,	पितिऔत
बहिनि	,,	बहिनौत
,,	इन	भागिन
समधि	औत	समधौत
सौतिनि	,,	सतौत

स्थानार्थक

स्थानमे पूब आदिमें *भर;* बविलोप; व्यञ्जनक अलोप ॥९९॥ धानसँ उपजबाक स्थानमे *हर* ॥१००॥ खढ़सँ *होरि*॥१०१॥ भाँड़सँ रखबाक स्थानमे *हर* ॥१०२॥ केरासँ गाछक स्थानमे *अजान; एकेँ अ* ॥१०३॥ तेलि, गोँढ़िसँ बसबाक स्थानमे *आरी* ॥१०४॥ कोरिसँ *आनी* ॥१०५। मुसहरसँ *ई* ॥१०६॥ माटिसँ प्रशंसामे *आरी* ॥१०७॥ काठसँ *आल,* इन्धनक विषयमे ॥१०८॥

पूब, दच्छिन, पच्छिम, उत्तरसँ स्थानमे *भर*, पूबमे *ब*क विलोप, ओ दच्छिन आदिमे व्यञ्जनक लोपाभाव होइत अछि। पूब स्थान पूभर, दच्छिन स्थान दच्छिनभर, एवं *पच्छिमभर, उत्तरभर। पूभर पानि भेल अछि, दच्छिनभर नहि। खाटक पच्छिमभर बैसू, उत्तरभर नहि ॥९९॥*

धानसँ उपजबाक स्थानमे *हर* अबैत अछि। धानक ऊपजबाक स्थान *धनहर* खेत ॥१००॥

खढ़सँ उपजबाक स्थानमे *होरि* अबैत अछि। खढ़ उपजबाक स्थान खढ़होरि ॥१०१॥

भाँड़सँ पर रखबाक स्थानमे *हर* अबैत अछि। *भँड़हर घर* ॥१०२॥

केरासँ गाछक स्थानमे *अजान* अबैत अछि। केरामे एकारकेँ अकार हो। केराक गाछक स्थान *करजान* ॥१०३॥

तेलि, गोँढ़िसँ बसबाक स्थानमे *आरी* अबैत अछि। तेलिक बसबाक स्थान *तेलिआरी।* गोँढिक *गोँढ़िआरी ॥१०४॥*

कोरिसँ बसबाक स्थानमे *आनी* अबैत अछि। कोरिक बसबाक स्थान *कोरिआनी* ॥१०५॥

मुसहरसँ बसबाक स्थानमे ई अबैत अछि। मुसहरक वासस्थान *मुसहरी* ॥१०६॥

माटिसँ प्रशस्त माटिक स्थानमे *आरी* अबैत अछि। प्रशस्त माटिक स्थान मटिआरी ॥१०७॥

काठसँ स्थानमे *आल* अबैत अछि, जारन हेतु रहने। जारन हेतुक जे काठ तकर स्थान *कठाल* ॥१०८॥

सारिणी १८ : स्थानार्थक तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*सिद्धरूप*
पूब +	भर	पूभर
दच्छिन	,,	दच्छिनभर
पच्छिम	,,	पच्छिमभर
उत्तर	,,	उत्तरभर
धान	हर	धनहर
खढ़	होरि	खढ़होरि
भाँड़	हर	भँड़हर
केरा	अजान	करजान
तेलि	आरी	तेलिआरी
गोँढ़ि	,,	गोँढ़िआरी
कोरि	आनी	कोरिआनी
मुसहर	ई	मुसहरी
माटि	आरी	मटिआरी
काठ	आल	कठाल

अनादराद्यर्थक

संज्ञासँ अनादरमे *आ* ॥१०९॥ स्त्रीमे वैकल्पिक ।११०॥ सार्थक खण्डद्वय-समेत अरशब्दान्तसँ *बा* ॥१११॥ गेना आदिसँ ॥११२॥ नान्तसँ *मा* प्रायशः ॥११३॥ आदरमे आकारान्त अधम जातिक पुरुषसंज्ञासँ *आइ* ॥११४॥ बौक आदिसँ ऊ ॥११५॥ स्त्रीक संज्ञासँ आदरमे प्रायशः

ओ ॥११६॥ ओक अभाव स्थलमे ईकारान्तकेँ ओ ॥११७॥ संज्ञामे यथादृष्ट कार्य ॥११८॥

अनादरमे संज्ञासँ *आ* अबैत अछि। *रबिआ, सोमना, मंगला, बुधना, बृहस्पतिआ, शुकना, शनिआ* । "संज्ञामे यथादृष्ट कार्य" ई सूत्र आगाँ कहल जाएत ताहिसँ *सोमना* आदिमे *न* शब्दक आगम जानब ॥१०९॥

स्त्रीक संज्ञासँ अनादरमे *आ* प्रत्यय बहुल प्रकारेँ अबैत अछि। क्वचित् वैकल्पिक, यथा *बतहिआ* वा *बतही आइलि* / क्वचित् नित्य, यथा *जनिआ* / क्वचित् नहि, यथा *खजनी* ॥११०॥

सार्थक दू भागसँ युक्त जे *अर* शब्दान्त संज्ञा ताहिसँ अनादरमे *ब* अबैत अछि। *हरिहरबा मधुकरबा, सङ्करबा, मुसहरबा* । एक खण्डमे–*लतरा, तेतरा* ॥१११॥

गेना आदिसँ अनादरमे *बा* अबैत अछि। *गेनबा, भोलबा* । लाल शब्दान्त सेहो गेना आदि थीक। *हितललबा, हरिलबा, रुपललबा* / *हितबा, गंगबा,* इत्यादि ॥११२॥

बहुत ठाम नान्त संज्ञासँ अनादरमे *मा* अबैत अछि। *पञ्चनमा, मुनमा, निर्द्धनमा, पनमा, किसुनमा* इत्यादि। क्वचित् नहि, *भगमना* ॥११३॥

आकारान्त अधम जातिक पुरुषक संज्ञासँ आदरमे *आइ* अबैत अछि। भोलाइ, गंगाइ, गेनाइ ॥११४॥

बौक आदि संज्ञासँ आदरमे ऊ अबैत अछि। *बौकू अएलाह, बौका आएल* । *मुसहरू, सोनू, बतहू, चेथरू, नंगड़ू, बगड़ू* । बौक आदि आकृतिगण ॥११५॥

अधम जातिक स्त्रीसंज्ञासँ बहुत ठाम आदरमे *ओ* अबैत अछि। *बतहिओ, जनिओ* ॥११६॥

जाहि इकारान्त स्त्रीसंज्ञासँ पूर्व सूत्रसँ *ओ* नहि अबैत अछि ताहि शब्दक अन्तिम ईकारहिकेँ आदरमे ओकार होइत अछि। *खजनो, दुखनो* इत्यादि ॥११७॥

संज्ञामे यथादृष्ट अर्थात् जेहन कार्य देखल जाए से शुद्ध थीक। सोम आदिकेँ *न* अन्तावयव, *सोमन, बुधन, शुकन, देवन, मूसन* इत्यादि। शुक्रमे रलोप, *शुकन*। प्रत्ययपरक समान वर्णसँ पूर्व वर्णक लोप सामान्यसूत्रेँ–*रब्बी, रबिआ, भब्बी, भबिआ,* इत्यादि। रब्बी आदिमे दीर्घ बकाराद्यागम। भगमान, हनुमानसँ आदरमे *ई* वैकल्पिक, *भगमानी* वा *भगमान, हनुमानी* वा *हनुमान,* इत्यादि प्रयोगानुसार अनुमान कए लेबाक थीक ॥११८॥

सारिणी १९ : संज्ञाप्रकृतिक तद्धितचक्र

प्रकृति	*प्रत्यय*	*अनादरमे रूप*	*आदरमे*
रवि +	आ =	रबिआ	रब्बी
सोम	,,	सोमना	सोमन
मंगल	,,	मंगला	मंगल
बुध	,,	बुधना	बुधन
बृहस्पति	,,	बृहस्पतिआ	बृहस्पति
शुक्र	,,	शुकना	शुकन
शनि	,,	शनिआ	शनी
हरिहर	बा	हरिहरबा	हरिहर
मधुकर	,,	मधकरबा	मधुकर
संकर	,,	संकरबा	संकर
मुसहर	बा/ऊ	मुसहरबा	मुसहरू
गेना	बा/आइ	गेनबा	गेनाइ
भोला	,,	भोलबा	भोलाइ
गंगा	,,	गंगबा	गंगाइ
हरिलाल	बा	हरिलबा	हरिलाल
हितलाल	,,	हितललबा	हितलाल
हित	बा/ऊ	हितबा	हितू
बित	आ /ऊ	बितुआ	बित्तू
पंचन	मा	पंचनमा	पंचन
पान	,,	पनमा	पान
बताह	आ/ऊ	बतहा	बतहू
बौक	,,	बौका	बौकू
सोन	मा/ऊ	सोनमा	सोनू
नंगड़	आ/ऊ	नंगड़ा	नंगड़ू
भगमान	आ/ई	भगमना	भगमानी (न)
हनुमान	,,	हनुमना	हनुमानी (न)
बतही	आ/ओ	बतहिआ (ही)	बतहिओ
कनही	आ/ओ	कनहिआ (ही)	कनहिओ
जनी	,,	जनिआ	जनिआ
खजनी	/ओ	खजनी	खजनो

परिशिष्ट

सदृशमे *आइनि;* पूर्वक लोप ॥११९॥ निन्दामे *बा;* क्वचित् *आ* ॥१२०॥ तिलआदिसँ मिश्रित भक्ष्यमे *औरी* ॥१२१॥ रुचिसँ विषयमे *गर* ॥१२२॥ कुम्हारसँ माटिविशषमे *औट* ॥१२३॥ काठसँ निर्मित पात्र-विशेषमे ॥१२४॥ शिलासँ पिसबाक आधारमे ॥१२५॥ काजर, चूनमँ रखबाक पात्रविशेषमे *औटी* ॥१२६॥ पण्डित, इंसखी, कायथसँ धार्यमे *आम* ॥१२७॥ बाभन, राड़, तेलिसँ तुल्यक्रिया कएनिहारमे *आह* ॥१२८॥

नामसँ सदृशमे *आइनि* अबैत अछि, *आइनिसँ* पूर्व स्वरक लोप होइत अछि। छुछुन्नरिक सदृश *छुछुन्नराइनि गन्ध। गोबराइनि। धुमनाइनि। अमताइनि स्वाद। दही अमताइनि भए गेल।* "छुछुन्नराइनि गन्ध" इत्यादि स्थलमे छुछुन्नरि प्रभृति स्वार्थ सदृश गन्धादिमे लाक्षणिक जानब ॥११९॥

नामसँ निन्दामे *बा* अबैत अछि; क्वचित् *आ* सेहो। *बतहबा गेल, एक बुढ़बा आयल अछि। पेटबा टा भरल ताकए। ई नेना उकठिआ अछि। ।१२०॥*

तिल आदिसँ मिलाए बनाओल खाद्यपदार्थविशेषमे *औरी* अबैत अछि। तिलसँ मिलाए बनाओल *तिलौरी, कुम्हड़ौरी।* (सजमनिकेँ *सज)* सजमनिक भुजबी मिलाए बनाओल *सजौरी*। कुम्हड़क बीआ मिलाए बनाओल *बिऔरी;* दानासँ मिश्रित भक्ष्य *दनौरी*। *मुरौरी* ॥१२१॥

रुचिसँ विषयमे *गर* अबैत अछि। रुचिक विषय *रुचिगर* ॥१२२॥

कुम्हारसँ संपादित माटिविशेषमे *औट* अबैत अछि। कुम्हारसँ सम्पादित माटिविशेष *कुम्हरौट* ॥१२३॥

काठसँ निर्मित पात्रविशेषमे *औट* अबैत अछि। काठसँ निर्मित पात्रविशेष *कठौत* ॥१२४॥

शिलासँ निर्मित पिसबाक आधारमे *औट* अबैत अछि। पिसबाक आधारशिला *सिलौट ॥१२५॥*

काजर तथा चून शब्दसँ रखबाक पात्रविशेषमे *औटी* अबैत अछि। काजर रखबाक पात्रविशेष *कजरौटी;* चून रखबाक *चुनौटी* ॥१२६॥

पण्डित, इसखी ओ काएथसँ धरबाक योग्यमे *आम* अबैत अछि। पण्डितसँ धारणीय *पण्डिताम पाग* । इसखीसँ रखबाक योग्य *इसखिआम छड़ी। कएथाम पाग* ॥१२७॥

बाभन, राड़ ओ तेलिसँ तुल्य क्रिया कएनिहारमे *आह* अबैत अछि। बाभनक तुल्य क्रिया कएनिहार *बभनाह। जयलाल बभनाह छथि।* ('बभनाह जल' एहिठाम सम्बन्धीमे *आह* थिकैक से जानब)। राड़क समान क्रिया कएनिहार रड़ाह। तेलिआह ॥१२८॥

हर आदिसँ वहन कएनिहारमे *बाह;* पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्व ।१२९॥ घाट आदिसँ रक्षकमे *बार* ॥१३०॥ भेड़ी, मूससँ तद्व्यवसायी जातिमे *हर* ॥१३१॥ लोह आदिसँ *आर* ॥१३२॥ जिरात, भानस, उपरसहाक, भारसँ नियुक्तमे *इया* ॥१३३॥ टहलसँ *ऊ* ॥१३४॥ स्त्रीमे *अनी* ॥१३५॥ रक्षासँ *बार,* प्रकृतिकेँ *रख* ॥१३६॥ बदरीसँ सदृशमे *ओन* ॥१३७॥ नेना, बूढ़, अन्हारसँ *अओन* ॥१३८॥

हर आदिसँ वहन कएनिहार अर्थमे *बाह* अबैत अछि, ओहिसँ पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्व होइत अछि। हरक वहन कएनिंहार *हरबाह*। जाल-वहन-कर्त्ता *जलबाह*। गाँजक वहन कएनिहार *गँजबाह*। कोरामे वहन कएनिहार *नेनाक कोरबाह* ॥१२९॥

घाट आदिसँ रक्षा कएनिहारमे *बार* अबैत अछि; पूर्व सफल स्वरकेँ ह्रस्वता। घाटक रक्षा कएनिहार *घटबार, बाटक रक्षक बटबार,* (महिसिकेँ महिस) महिसिक रक्षक *महिसबार* (गाएकेँ गै) गायक रक्षक *गैबार,* डीहक रक्षक *डिहबार,* बागक *बगबार* ॥१३०॥

भेड़ी ओ मूससँ ओकर व्यवसाय कएनिहार जातिमे *हर* अबैत अछि। भैँड़ीक व्यवसायी जाति *भैँड़िहर*। मूसपदेँ मूसकेँ कोड़निहार कोदारिक व्यापार उपलक्षित थीक। कोदारि पारबाक व्यवसायी जाति *मुसहर* ॥१३१॥

लोह आदिसँ व्यवसायी जातिमे *आर* अबैत अछि। लोहक व्यवसाय कएनिहार जाति *लोहार*। चामक व्यवसायी जाति *चमार। सोनार।* (कुम्भकेँ *कुम्ह)* कुम्भ अर्थात् घैलक व्यवसायी जाति *कुम्हार*। कुम्भ शब्द माटिक बासनमात्रक उपलक्षक जानब। (कर्मंमे रलोप) काष्ठक कर्म अर्थात् केबाड़ चौकठि आदि बनाएबरूप व्यवसायबाला *कमार* ॥१३२॥

जिरात, भानस, उपरसहाक ओ भारसँ नियुक्तमे *इया* अबैत अछि। प्रत्ययसम्बन्धी आकारसँ पूर्व यकारक वैकल्पिक लोप कहल जाएत। जिरातमे नियुक्त *जिरतिया* वा *जिरतिआ,* भानसमे *भनसिया*। उपरसाहक ओ भारमे नियुक्त *उपरसहकिया* ओ *भरिया*। यलोप पक्षमे *भनसिआ* इत्यादि ॥१३३।

टहलसँ पर नियुक्तमे *ऊ* अबैत अछि, स्त्रीमे *अनी*। टहलमे नियुक्त पुरुष *टहलू,* स्त्री *टहलनी* ॥१३४-३५॥

रक्षासँ नियुक्तमे *बार* अबैत अछि, रक्षाकेँ *रख* आदेश। गाछी आदिक रक्षामे नियुक्त *रखबार* ॥१३६॥

बदरी ओ रातिसँ सदृशमे *ओन* अबैत अछि। बदरीक सदृश *बदरिओन* ॥१३७॥

नेना, बूढ़ ओ अन्हारसँ सदृशमे *अओन* अबैत अछि। *नेनओन लगैत छथि; बुढ़ओन, अन्हरओन* ॥१३८॥

अब प्रत्ययान्तसँ त्याजितमे *आओन;* पूर्व *अक्क* विलोप, दीर्घ ॥१३९॥ बाजब आदिसँ पारितोषिकमे ॥१४०॥ पोसबसँ देयमे ॥१४१॥ देहसँ उपभोगसम्बन्धमे ई॥१४२॥ पित्तड़िसँ निर्मितमे *इया*॥१४३॥ लोहसँ व्यञ्जन रन्हबाक पात्र ओ कैञ्चामे ॥१४४॥ काँससँ *हा* ॥१४५॥ पुर शब्दान्तसँ ई ॥१४६॥ मुंगेरसँ *इया* ॥१४७॥ काशीसँ *बाल* ॥१४८॥ चरसँ उत्पन्न धानमे *हा* ॥१४९॥

अब प्रत्यय भावार्थक कृत्प्रकरणमे कहल जाएत। तदन्तसँ त्याजितमे *आओन* अबैत अछि तथा *अक्क* विलोप ओ बकारक लोप तथा दीर्घ आदेश होइत अछि। निछाएबसँ त्याजित *निछाओन। निछब* धातुसँ भावमे *अब* प्रत्यय कएने *निछाएब* रूप होइत अछि, किन्तु विलोपविधि सभक बाधक होइत अछि तेँ पूर्व *अब*निमित्तक कार्य नहि किन्तु 'निछब अब' एहि स्थितिमे *आओन* प्रत्यय अएलाक उत्तर *अक्क* विलोप, तदन्तर तन्निमित्तक कार्य नहि होएत जेँ हेतु विलुप्तनिमित्तक कार्यक अभाव उक्त अछि। धातुक अन्तिम बकारक लोप ओ ततःपूर्व स्वरकेँ दीर्घ। एवं निकाएबसँ त्याजित *निकाओन। ओसाओन, सुखाओन, छँटाओन। एक मन चाउरसे एक सेर छँटाओन भेलैक* ॥१३९॥

बज आदि प्रकृतिक *अब*प्रत्ययान्त *बाजब* आदिसँ पारितोषिकमे *आओन* अबैत अछि ओ *अक्क* विलोप ओ यथासम्भव पूर्व लोप, दीर्घ। बजबाक पारितोषिक *बजाओन, मुहबजाओन*। मुह देखएबाक पारितोषिक *मुहदेखाओन। हथन्योताओन। द्वारिछेकाओन* इत्यादि ॥१४०॥

पोसबसँ देयमे *आओन* अबैत अछि ओ *अक्क* विलोप होइत अछि। पोसबाक दातव्य *पोसाओन* ॥१४१॥

देहसँ उपयोगसम्बन्धी वस्तुमे ई अबैत अछि। देहोपभोगसम्बन्धी *देही* ॥१४२॥

पित्तड़िसँ निर्मितमे *इया* अबैत अछि। पित्तड़िसँ निर्मित *पितड़िया सराइ।* पक्षमे पितड़िआ ॥१४३॥

लोहसँ व्यञ्जन रन्हबाक पात्रमे तथा कैञ्चामे *इया* अबैत अछि। लोहसँ निर्मित कराही वा कैञ्चा *लोहिया* वा *लोहिआ* ॥१४४॥

काँससँ निर्मितमे *हा* अबैत अछि। काँससँ निर्मित *कँसहा थारी* ॥१४५॥

पुर-शब्दान्त लाबापुर आदिसँ निर्मितमे ई अबैत अछि। लाबापुरमे निर्मित *लाबापुरी* चक्कू। *दानापुरी* इत्यादि ॥१४६॥

मुंगेरसँ निर्मितमे *इया* अबैत अछि। मुंगेरमे निर्मित *मुंगेरिया(आ)* लोटा ॥१४७॥

काशीसँ निर्मितमे *बाल* अबैत अछि। काशीमे निर्मित *काशीबाल* लोटा ॥१४८॥

चरसँ उत्पन्न धानमे *हा* अबैत अछि। चरमे उपजल धान *चरहा* ॥१४९॥

लाठी आदिसँ परस्पर मारब आदिमे *औबलि,* नामकेँ द्विर्वचन, मध्यमे *आ,* उत्तर खण्डमे ह्रस्वता, *औबलि*सँ पूर्व स्वरक लोप ॥१५०॥ ई, ह्रस्वाभाव, आ ईसँ पूर्व स्वरक लोप ॥१५१॥

लाठी आदिसँ पर परस्पर मारब आदि अर्थमे *औबलि* अबैत अछि। *औबलि*सँ पूर्व लाठी आदिकेँ द्विर्वचन तथा मध्यमे *आक* आगम। द्वितीय खण्डमे सकल स्वरकेँ ह्रस्व आदेश ओ *आ औबलि* दुहूसँ अव्यवहित पूर्व स्वरक लोप होइत अछि। लाठीसँ परस्पर मारब *लाठा-लठौबलि*। मूकासँ परस्पर मारब *मूका-मुकौबलि,* परस्पर टीक पकड़ब *टीका-टिकौबलि,* जूतासँ परस्पर मारब *जूता-जुतौबलि* ॥१५०॥

एवं लाठी आदिसँ पर परस्पर मारब आदि अर्थमे ई प्रत्यय अबैत अछि तथा मध्यमे *आक* आगम, कोनो खण्डमे ह्रस्व आदेश नहि, तथा *आ ई* दुहूसँ अव्यवहित पूर्व स्थित स्वरक लोप होइत अछि। लाठीसँ परस्पर मारब *लाठालाठी, मूकामूकी* ॥१५१॥

इति तद्धितप्रकरणम्

अथ पदद्विर्वचनप्रकरणम्

विभक्त्यन्त तिङन्त पद ॥१॥ द्विरुक्तक पूर्व भागमे विभक्तिक विलोप ॥२॥ वीप्सामे पदकें द्विर्वचन ॥३॥ क्रोध, भय, स्नेहादि प्रयुक्त सम्भ्रमोक्तिमे ॥४॥ खेद, सन्तोषमे ॥५॥ ऐत- प्रत्ययान्तकें पौनःपुन्यमे ॥६॥

एक पदक जे दू बेर उच्चारण कएल जाइत अछि तकर प्रकरण आब कहल जाइत अछि। ताहिमे प्रथम पद की थीक तकर सूत्र लिखल अछि। जकर अन्तमे विभक्ति वा तिङ् हो से पद कहबैत अछि। *सु* आदिक नाम विभक्ति थीक से पूर्व कहल अछि। तिङ् संज्ञक प्रकरणमे तिङ् कहल जाएत। 'रामकें देखैत छी' एहि ठाम प्रथम विभक्त्यन्त भेल, द्वितीय तिङन्त। दुहू पद थीक। लिखबामे जे पदक विभाग कएल जाइतअछि से एकरे। यद्यपि 'राम छथि, नाच देखल' इत्यादि स्थलमे विभक्तिक विलोप भेल अछि तथापि तत्स्थानापन्न तद्वत्। तस्मात् 'रामसु नाचकें' इत्यादिक स्थान *राम* ओ *नाच* इत्यादि रहि गेल अछि से तद्वत् विभक्त्यन्त कहबैत अछि। अथवा एकदेशविकृतमनन्यवत् एहिन्यायसँ उक्तस्थलमे केवल रामादिकें पदत्व जानब। विभक्त्यन्त तिङन्त पदें जकरासँ विभक्ति ओ तिङ् विहित हो तदादि तदन्त लेल जाइत अछि तेँ 'हम गेलहुँ' इत्यादि समुदाय पद नहि भेल ॥१॥

पदकें द्विर्वचन कएलाक उत्तर पूर्व खण्डमे विभक्तिक विलोप होइत अछि। *गाम गामक लोक आएल* ॥२॥

वीप्सा अर्थात् सकल सम्बन्ध, ताहिमे पदकें द्विर्वचन होइत अछि। *गाम गामक लोक आएल* अर्थात् सभगामक। *बात-बातमे सन्देह* ॥३॥

क्रोध, भय, स्नेह, इत्यादि मनक विकारप्रयुक्त संभ्रमपूर्वक उक्तिमे पदकें द्विर्वचन कएल जाइत अछि। क्रोधमे–*मारू मारू*। भयमे–*चोर चोर*। स्नेहमे–*मित्र, आउ आउ*। आदि शब्दें विस्मयादिक परिग्रह ॥४॥

खेद तथा सन्तोष विषयमे पदकें द्विर्वचन होइत अछि। खेदमे–*हाहा*! सन्तोषमे–बाह-बाह ॥५॥

ऐत प्रत्यय कृत्प्रकरणमे कहल जाएत, तदन्त देखैत इत्यादिकें पौनःपुन्य अर्थात् बारंबार क्रियामे द्विर्वचन होइत अछि। *नाच देखैत-देखैत तृप्त भेलहुँ* ॥६॥

इति पदद्विर्वचनप्रकरणम्

अथ नामसंग्रह

संस्कृतक प्रसिद्ध नाम ग्राह्य ॥१॥ गाए आदिक मूलशब्द गोप्रभृति अग्राह्य ॥२॥ शतृप्रत्ययान्त ॥३॥ मिथिलाभाषाकोषमे अप्रदर्शित अव्यय ॥४॥

मिथिलाभाषामे संस्कृतक नाम गृहीत हो, भाषान्तरक नहि। संस्कृतहुमे जे प्रसिद्ध अछि सएह ग्राह्य, अप्रसिद्ध नहि। *हमरा कर्त्तव्य अछि; विद्वानक कथा ग्राह्य थीक*। "जलक समीप" एहि तात्पर्यें *जलक अभ्यर्ण* इत्यादि नहि बाजल जाए। संस्कृतहिक नाम ग्राह्य एहि नियमानुसार हजूर, अर्जी, अर्ज, उजुर, इत्यादि फारसीशब्द, लेट, टाइम, पावर इत्यादि अंग्रेजीशब्द, झूठ, ईंटा, जरना, लकड़ी इत्यादि हिन्दीशब्द अग्राह्य जानब ॥१॥

संस्कृतक नाम ग्राह्य भेलें *गो आनल, नौपर चढ़लहुँ* इत्यादि प्रयोग प्राप्त भेल, तकर निषेधार्थ निर्मित द्वितीय सूत्रक अर्थ ई जे गाए, नाओ आदिशब्दक मूलशब्द गो नौ इत्यादि गृहीत नहि हो। ई निषेध केवल ग्रहणमे, तद्विशिष्टसमस्त नामक ग्रहणमे नहि, अतः *गोदान कएल* इत्यादि प्रयोग शुद्ध भेल ॥२॥

संस्कृत शतृप्रत्ययान्त *राजत् लसत्* इत्यादि मिथिलाभाषामे ग्राह्य नहि ॥३॥

मिथिलाभाषाकोषमे अप्रदर्शित संस्कृत अव्यय *उच्चैः नीचैः* इत्यादि अग्राह्य थीक। एहू ठाम केवलहिक अग्रहण, तेँ *उच्चैःपतन, दिवाकर* इत्यादिक समासघटकतया ग्रहण भेल। *पृथक्, युगपत्* इत्यादि कोषमे प्रदर्शित अछि, तेँ ओकर ग्रहण होएते ॥४॥

तद्, यद्, युष्मद्, अस्मद्, भवत्, किम् कें *ते, जे, तों, हम, अहाँ, की* ॥५॥ एतद्, इदम् कें *ए*, अदस्कें *ओ* सवदिश ॥६॥ द्विकें *दुइ, दू* ॥७॥ त्रिकें *तीनि, तीन* ॥८॥

तद्, यत्, युष्मद्, अस्मद्, भवत्, किम्–एहि सबहिक स्थान क्रमशः *ते, जे, तों, हम, अहाँ, की* आदेश हो ॥५॥

एतद् तथा इदम् शब्दक स्थानमे *ए*, अदस् शब्दक स्थान *ओ* सवदिश हो। एहि सबहिक रूप विभक्ति-प्रक्रियामे कहल गेल अछि ॥६॥

द्वि शब्दक स्थान दुइ, दू ई दुहू पर्यायेण आदेश होइत अछि। *दुइटा, दूटा*। आदेश शुद्ध थीक, स्थानी नहि। अतः *द्विटा* इत्यादि अशुद्ध बुझब ॥७॥

त्रि शब्दक स्थान *तीनि, तीन* दुहू पर्यायसँ आदेश हो। *तिनिएटा, तीनटा* ॥८॥

चतुर् प्रभृतिकें *चारि* आदि ॥९॥ न्नन्तकें *आ* ॥१०॥ अन्नन्त, इन्नन्तक लोप, दीर्घ ॥११॥

चतुर् प्रभृति एकोनशतपर्यन्त जे संस्कृत संख्यावाचक शब्द अछि, तकरा स्थानमे *चारि* आदि आदेश होइत अछि। चारि, पाँच, छओ, सात, आठ, नओ, दश, एगारह, इत्यादि *मिथिलाभाषाकोष*सँ अवगत करब। एहि सूत्रक प्रयोजन *चतुर् गोटए* इत्यादि प्रयोगक अभाव। घट आदिक अपभ्रंश घैल प्रभृति जे मिथिलाभाषाकोषमे प्रदर्शित अछि ताहि सबहिक मूलभूत घटप्रभृति स्वतन्त्र रूपहुँ व्यवहृत होइत अछि, तद्वत् चतुर्, पञ्चन् इत्यादिओ ग्राह्य होइत ॥९॥

तृप्रत्ययान्त पितृ, मातृ इत्यादिकेँ आकार अन्तादेश हो। *पिताक ओ माताक सेवा करी। दुहिताक पालन करी।* एवं *दाता, विधाता* इत्यादि। एहिसँ *पितृक सेवा* इत्यादि अशुद्ध बुझल गेल। एवं आगँहु ॥१०॥

अन्नन्त राजन् प्रभृति, इन्नन्त यशस्विन् प्रभृति, तकर अन्तिम नकारक लोप, तथा स्वरकेँ दीर्घ हो। *राजाक पुत्र दानीक ओ यशस्वीक शिरोमणि छथि ॥११॥*

मत्वन्त वस्वन्तकेँ उभयपूर्वक नपरत्व ॥१२॥ व्यञ्जनान्तकेँ अपरत्व ॥१३॥ अन्नन्त नपुंसकक लोपमात्र ॥१४॥ पदादिव्यञ्जनसँ पर आकारसँ पूर्व वकारकेँ ओकार वैकल्पिक ॥१५॥ यकेँ ए ॥१६॥ रेफपूर्वक व्यञ्जनसँ पूर्व अकारागम वैकल्पिक ॥१७॥

मत्वन्त ओ वस्वन्त जे धनवत्, विद्वस्, प्रभृति, तकर अन्तिम व्यञ्जनक लोप, ओ स्वरकेँ दीर्घ हो, तथा *न* शब्द अन्तिमावयव हो। *धनवानक पुत्र विद्वानक सङ्ग करथि ॥१२॥*

व्यञ्जनान्त जे जगत् आदि तकर अन्तावयव अकार लगाओल जाए। *जगत, वयस* ॥१३॥

अन्नन्त नपुंसक कर्मन्, ब्रह्मन् इत्यादि शब्दक अन्तिम नकारक लोपमात्र हो, दीर्घ नहि। *कर्म करू, ब्रह्म जानू* ॥१४॥

पदादिव्यञ्जनसँ पर आकारसँ पूर्व जे वकार तकरा ओकार हो वैकल्पिक। *स्वाद, सोआद। सोआसिनि, स्वासिनि। स्वास, सोआस* ॥१५॥

पदादिव्यञ्जनसँ पर आकारपूर्ववर्ती यकारकेँ एकार हो वैकल्पिक। *न्यार, नेआर। धेआन, ध्यान* ॥१६॥

रेफ जकरासँ पूर्व रहए ताहि व्यञ्जनसँ पूर्व अकार आबए वैकल्पिक। *अरघल, अर्घल। अरजब, अर्जब। गर्दा, गरदा* ॥१७॥

ङ्गमे क्वचित् गकारक लोपमात्र, क्वचित् पूर्व अकारकेँ आकारो, क्वचित् ङकारक लोप, पूर्व *अ*केँ अनुनासिक वा अनुनासिक आकार ॥१८॥ ऐकेँ *अइ* ॥१९॥ औकेँ *अउ* ॥२०॥ रेफसँ पूर्व स्थित पकारसँ आगाँ अकारागम ॥२१॥ इवर्णपरक रेफसँ इकारागम ॥२२॥ मूर्धन्य षकार कवर्ग-द्वितीयवत् ॥२३॥

नाममे, क्वचित् धातुअहुमे *ङ्ग* शब्दक *ग* शब्दक लोप हो। *अङरखा*। क्वचित् पूर्व अकारकेँ आकरो–*आङ्न*। क्वचित् ङकारक लोप ओ पूर्व अकारकेँ अनुनासिक–*अँगोरा*। क्वचित् अनुनासिक दीर्घ–*आँगन* ॥१८॥

ऐकारकेँ *अइ* आदेश वैकल्पिक हो। *ऐला, अइला। देखैत, देखइत* ॥१९॥

औकारकेँ *अउ* आदेश वैकल्पिक हो। *कौआ, कउआ* ॥२०॥

रेफसँ पूर्वस्थित जे पकार ताहिसँ आगाँ अकार आगम हो वैकल्पिक। *प्रहेज, परहेज; प्रमाद, परमाद; प्राण, परान; प्रात, परात; प्रेम, परेम* ॥२१॥

जाहिसँ पर इवर्ण हो ताहि रेफसँ पूर्वस्थित पकारसँ आगाँ इवर्ण आगम वैकल्पिक हो। *प्रिय, पिरिय; प्रीति, पिरीति* ॥२२॥

मूर्धन्य षकार कवर्गद्वितीयवर्णवत् उच्चरित होइछ। *वर्ष = बर्ख; हर्ष = हर्ख* ॥२३॥

णकारेँ नकार ॥२४॥ *व्य*केँ *बे* ॥२५॥ *ज्ञा*केँ *गेआ* ॥२६॥ एक शब्दक ग्रहण सन्ताँ तन्मूलक शब्दान्तरो गृहीत हो ॥२७॥

णकारकेँ नकार वैकल्पिक होइत अछि। *पुरान, पुराण। अर्हणा, अरहना। परान, प्राण। गुनी, गुणी* ॥२४॥

व्य शब्दकेँ वैकल्पिक *बे* आदेश होइछ। *बेबहार, व्यवहार। बेगरता, व्यग्रता* ॥२५॥

ज्ञाकेँ क्वचित् *गेआ* आदेश हो। *गेआति, ज्ञाति; गेआन, ज्ञान* ॥२६॥

एक शब्दक ग्रहण रहने तन्मूलभूत संस्कृतमूलक शब्दान्तरहुक ग्रहण हो। तद्धितमे तीनिकेँ, *ते* आदेश उक्त अछि, से *तीन* शब्दहुकेँ *भेल–तेसर* ॥२७॥

प्रभृतिक तात्पर्य रहने नामकेँ द्विर्वचन, व्यञ्जनादि उत्तरखण्डक आदिकेँ तकार, स्वरादि उत्तरखण्डसँ पूर्व तकारागम ॥२८॥ भारदोर, टहलटिकोरा इत्यादिक साधुता लोकानुसार ॥२९॥ पूर्वधातुक तुल्याकार तत्सजातीय क्रियासामान्यवाची तुल्यप्रत्ययान्त धातुक अनुप्रयोग; उपधास्वरकेँ आकार ॥३०॥ अवर्णकेँ उवर्ण ॥३१॥ अनेकस्वरक प्रथम आकारकेँ ॥३२॥ राज्ञीकेँ *रानी* ॥३३॥ पूर्वपद महत्केँ *महा* ॥३४॥

प्रभृति बोध करएबाक हो तँ नामक द्विरुच्चारण कएल जाए ओ व्यञ्जनादि उत्तर खण्डक पहिल व्यञ्जनक स्थान तकार आदेश हो। यदि उत्तरखण्ड स्वरादि हो तँ ततःपूर्व तकार आगम करी। *भात-तात, आम-ताम खाएल* ॥२८॥

भारदोर, टहलटिकोरा, ऐहबसूहब, फलफलहरी, गपसप, टोनाटापर, ऐँठकूठ, अनेरधुनेर, न्योतपिहान, कबुलापाती, नहाएबसोनाएब, इत्यादिक साधुता लौकिक प्रयोगानुसार ॥२९॥

पूर्वधातुसमानाकार ओ पूर्वधात्वर्थक्रियासामान्यवाची तुल्यप्रत्ययान्त जे धातु तकर उपधास्वरक स्थान आकार होइत अछि। *छीटल-छाटल, ठीकठाक, मूड़िमाड़ि, छेक-छाक, टोकटाक, तोड़ब-ताड़ब, झौँसल-झासल* ॥३०॥

उक्त विषयमे उपधा अवर्णकेँ उकार होइत अछि–*ठकब-ठुकब, साधल-सुधल*॥३१॥

उक्त विषयमे अनेकस्वर धातुक प्रथम अकारकेँ उकार होइत अछि, उपधाकेँ, नहि। *पचकल-पुचकल* इत्यादि ॥३२॥

राज्ञीक स्थान *रानी* बाजल जाइत अछि। *मिथिलाक रानी* ॥३३॥

पूर्वपद जे महत् शब्द तकरा स्थान *महा* शब्द बाजल जाइत अछि। *महाभारी। महारानी।*

संस्कृतक नाम कोना लेल जाए तकर दिङ्मात्र देखाओल गेल अछि, हेतु जे भरवशकेँ भरोस, प्रोष्ठीकेँ पोठी, एवम् बड्र, पूर्व, पश्चिम, इत्यादिक स्थान बड़, पूब, पच्छिम, इत्यादि बहुत आदेश कएल जाइत अछि, से सभ देखओलासँ अतिविस्तृत भए जाएत तैँ नहि देखाओल। ओहिसबहिक प्रचलित स्वरूप कोषसँ बुझबाक योग्य होएत तथा व्यवहारसँ ॥३४॥

इति नामसंग्रह

अथ लिङ्गनिर्णयः

लौकिक लिङ्ग नामार्थ ॥१॥

लिङ्ग अर्थात् पुंस्त्व-स्त्रीत्व लौकिके मिथिलाभाषामे नामक अर्थ होइत अछि, संस्कृतवत् अथवा हिन्दी प्रभृतिभाषावत् शास्त्रीय नहि। स्तनवत्त्वादि लौकिक लिङ्ग थीक, जाहिसँ प्राणीमे स्त्रीक ओ पुरुषक व्यवहार होइत अछि। अतएव *छोट सभा भेल, छोट व्यक्तिक मोट बुद्धि* एहने बाजल जाए, किन्तु *छोटि सभा भेलि, छोटि व्यक्तिक मोटि बुद्धि* एहन नहि।

संस्कृतमे ओ हिन्दीप्रभृति भाषामे शास्त्रसंकेतित लौकिकसँ विलक्षण स्त्रीत्वादिक स्वीकार अछि, तैँ, *लघ्वी सभा अभूत्; छोटी सभा हुई* इत्यादि बाजल जाइत अछि, किन्तु मिथिलाभाषामे प्रसिद्धे स्त्रीत्वादि नामक अर्थ जानब। गङ्गा, तुलसी प्रभृति जड़ वस्तुमे यथार्थ स्त्रीरूप देवताक आरोप कए *ई गङ्गा, ई तुलसी पवित्र कएनिहारि थिकीह* इत्यादि प्रयोग कएल जाइत अछि ॥१॥

पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, उभयलिङ्ग, अलिङ्ग चतुर्विध नाम ॥२॥ भाए प्रभृति पुँल्लिङ्ग ॥३॥ माए प्रभृति स्त्रीलिङ्ग ॥४॥ बाभन प्रभृति उभयलिङ्ग ॥५॥

लिङ्गक अवाचक-वाचक भेदसँ नाम दू प्रकारक होइत अछि, ताहिमे लिङ्गवाचक तीनि प्रकारक अछि–एक पुँल्लिङ्ग अर्थात् केवल पुँल्लिङ्गवाचक, द्वितीय केवल स्त्रीलिङ्गवाचक, तृतीय उभयलिङ्गवाचक। प्रथमोक्त अलिङ्ग शब्द मिलाए नाम चारि प्रकारक मिथिलाभाषामे होइत अछि। नपुंसकत्वप्रयुक्त किछुओ विशेष मिथिलाभाषामे नहि अछि, तैँ नपुंसकलिङ्ग शब्दक एहि भाषामे स्वीकार नहि ॥२॥

भाए, जमाए, बड़द, खस्सी, छागर इत्यादि शब्द केवल पुंल्लिङ्गक बोधक थीक ॥३॥

माए, धी, सासु, बहिनि प्रभृति केवल स्त्रीलिङ्ग थीक ॥४॥

बाभन, राड़, गिदर, हाथी, घोड़ा प्रभृति उभयलिङ्ग थीक। ताहिसँ जखन स्त्रीलिङ्गक बोध करएबाक हो तखन वक्ष्यमाण स्त्रीप्रत्यय होएत, यथा बाभनि, राड़िनि, गिदरनी, हथिनी, घोड़ी ॥५॥

लोकप्रभृति अलिङ्ग ॥६॥ प्राणीमे अदृष्ट धर्मबोधक ॥७॥

लोकप्रभृति शब्द अलिङ्ग थीक, अर्थात् कोनो लिङ्गक बोधक नहि थीक। अतएव स्त्री-पुरुष दुहूमे एकाकारे रहैत अछि। लोक प्रभृति–लोक, नेना, बच्चा, ऊँच, नीच, बहुत, हल्लुक, भारी, उत्तम, अधिक, कोमल, कठोर। (गाशब्दान्तभिन्न प्रायः पक्षिवाची) यथा गडुर, कौआ, बटेर, तितीर इत्यादि। गाशब्दान्त सुगा, मुरगा ई अलिङ्ग नहि। 'प्रायः' शब्दक

उपादानसँ बगड़ा इत्यादि अलिङ्ग नहि बुझल गेल, किन्तु उभयलिङ्ग। (क्षुद्रजन्तुवाची) यथा सपनौर, साप, उड़ीस, मोस इत्यादि। लोकप्रभृति आकृतिगण ॥६॥

प्राणीमे अदृष्ट जे धर्म तद्‌बोधको शब्द अलिङ्ग थीक। यथा–घर, घैल, खाट, बाट इत्यादि। हेतु जे गृहत्व-घटत्वादि रूप धर्मक बोधक घर, घैल इत्यादि थीक, से गृहत्व-घटत्वादि धर्म प्राणीमे रहनिहार नहि थीक, किन्तु घर, घैल इत्यादि निर्जीवहिमे रहैत अछि। तैँ ओ धर्म प्राणीमे अदृष्ट थीक ॥७॥

जकर अन्त उक आदि प्रत्यय ॥८॥ अलिङ्ग विशेषणवाचक उभयलिङ्ग लिङ्गबोधक नहि ॥९॥

जाहि शब्दक अन्त उक इत्यादि प्रत्यय हो सेहो शब्द अलिङ्ग थीक। *आजुक स्त्री* एहि ठाम स्त्रीप्रत्यय नहि आएल। उक-आदि *उक, अका, ऐया, इया, आ, आहा, औआँ, न,* पूरणार्थक, *तबा, तेक, तोक, ऐत।* क्रमशः उदाहरण, आजुक, उपरका, बनैया, परोसिआ, पूबा, दक्षिनाहा, गौआँ, कोन, दोसर, कतबा, कतेक, कतोक, देखैत ॥८॥

अलिङ्गशब्दक विशेषणबोधक जे उभयलिङ्ग शब्द से लिङ्गबोधक नहि होइत अछि। सुकुमार शब्द उभयलिङ्ग थीक। सुकुमारि स्त्री, सुकुमार पुरुष। से शब्द फूल आदिक विशेषणावस्थामे लिङ्गबोधक नहि होइत अछि, अतएव *ई फूल सुकुमार अछि* इत्यादि प्रयोग उपपन्न भेल, अन्यथा फूलमे लौकिक स्त्रीत्व वा पुंस्त्वक असम्भवसँ उक्त प्रयोग असङ्गत होइत। तथा *चैत्रक स्त्री अधलाह लोक छथि* एहिठाम *अधलाह* शब्दसँ स्त्री-प्रत्यय नहि भेल, कारण जे अधलाह शब्द लोक शब्दक विशेषण अछि ओ लोक शब्द अलिङ्ग थीक ॥९॥

इति लिङ्गनिर्णय

अथ स्त्रीप्रत्यय

***नी, आइनि, होजि*सँ पूर्वमे ह्रस्व ॥१॥ प्रत्ययसँ पूर्व विहित कार्य प्रकृतिकेँ ॥२॥ आकारान्त उभयलिङ्ग नामसँ स्त्रीमे ईकार ॥३॥ जन आदिसँ ॥४॥ अकारान्तसँ इकार ॥५॥ बाभन गोआरसँ ॥६॥ जातिसँ *इनि* ॥७॥ दास, खबाससँ ॥८॥ बहिसँ *किरनी* ॥९॥ केओट आदिसँ *इनी* वैकल्पिक ॥१०॥ इवर्णान्त उकारान्तसँ *नि* ॥११॥ महिसासँ *इ* ॥१२॥ बानरादिसँ *नी* ॥१३॥ कुम्हार, चमार, कमारसँ *ऐनि; आर*क विलोप ॥१४॥ वृद्ध आदिसँ *आ* ॥१५॥ धनिक आदिसँ *आइनि* ॥१६॥**

स्त्रीप्रत्ययसब आगाँ कहल जाएत, ताहिमे *नी, आइनि* तथा *होजि* एहि तीनि प्रत्ययक प्रकृतिमे स्वरकेँ ह्रस्व हो। *बनरनी, धनुकाइनि, सरहोजि*। यद्यपि *आइनि* स्वरादि थीक तस्मात् ओहिसँ पूर्व सामान्य सूत्रहिसँ ह्रस्वता सिद्ध अछि तथापि *आइनि* ग्रहण नियमार्थक जानब। स्वरादि स्त्रीप्रत्ययसँ पूर्व जँ ह्रस्वादेश हो तँ *आइनि* मात्रसँ पूर्व, तैँ *सुकुमारि, अमातिनि,* इत्यादि स्थलमे ह्रस्वादेश नहि भेल ॥१॥

प्रत्ययसँ पूर्व जे कार्य विहित अछि से ओकरा प्रकृतिकेँ, अर्थात् जाहिसँ पर ओ प्रत्यय विहित हो तकरहि हो, अतएव *गामक बनरनी* एहिठाम गाममे ह्रस्वता नहि भेल। एवं अन्यत्रहु जानब ॥२॥

आकारान्त जे उभयलिङ्गक नाम घोड़ा, धनबाला, इत्यादि तकरासँ स्त्रीत्व विवक्षामे ईकार अबैत अछि। *घोड़ी, धनबाली*। उभयलिङ्गक उपादान *बेबा* इत्यादि केवल स्त्रीलिङ्गसँ जनु हो एतदर्थ। लौक्रिके स्त्रीत्वादि नामार्थ थीक तैँ *अहाँक वासभूमि उन्नतिबाला अछि* एहिठाम ई प्रत्यय नहि भेल। *डाली, चँगेरी, छाँछी* इत्यादि स्थलमे अल्पार्थक तद्धित ईप्रत्यय कहल गेल अछि ॥३॥

जन-आदि शब्दसँ स्त्रीमे ई प्रत्यय अबैत अछि। दुहू *जनी आस्थाबाली छथि*। (भागिनमे ह्रस्वता) बहिनीक अपत्य पुरुष *भागिन,* कन्या *भगिनी, हरिनी* ॥४॥

अकारान्त उभयलिङ्ग नामसँ स्त्रीमे इकार अबैत अछि। *सुकुमारि, कुमारि, छोटि, मोटि।* राँड़ि, माय इत्यादि केवल स्त्रीलिङ्ग थीक, तस्मात् ओहिसँ नहि ॥५॥

बाभन ओ गोआरसँ स्त्रीमे इकार अबैत अछि। *बाभनि, गोआरि*। जातिलक्षण *इनि* प्रत्ययक बाधनार्थ ई सूत्र जानब ॥६॥

अकारान्त जातिवाचकसँ स्त्रीमे *इनि* प्रत्यय होइछ। *राड़िनि, केओटिनि, अमातिनि, बाधिनि, सापिनि* ॥७॥

दास ओ खबास ताहूसँ *इनि* अबैत अछि । *दासिनि, खबासिनि* ॥८॥

बहि शब्दसँ स्त्रीमे *किरनी* अबैत अछि । *बहिकिरनी* । दासबोधक बहि शब्द थीक, यथा *बहिखत लिखलक* । पूर्वमे *हमर ई बहि थीक* एवंरूप बजबाक चालि छल ॥९॥

केओट आदिसँ *इनी* वैकल्पिक अबैत अछि । *केओटिनी, केओटिनि* । इनीक प्रथम इकार लघूच्चारण, ओ ह्रस्वान्त इनिक गुरूच्चारण थीक से अनुसन्धान राखब । *अमातिनी, अमातिनि । गोआरिनी, गोआरि । सोनारिनी, सोनारिनि* । केओट आदि आकृतिगण जानब ॥१०॥

इवर्णान्त तथा उकारान्त नामसँ *नि* प्रत्यय होइत अछि । *तेलिनि, धोबिनि, मालिनि, तमोलिनि, लहेरिनि, ठठेरिनि, हलुआइनि, नाउनि, समधिनि, नातिनि, मोदीनि, पासीनि* ॥११॥

महिसा शब्दसँ स्त्रीलिङ्गे इकार आबए । ई सूत्र आकारान्तलक्षण ईकारक बाधक । *महिसि* ॥१२॥

बानर आदिसँ स्त्रीमे *नी* अबैत अछि । *बनरनी, मुसहरनी, चोरनी, गौँढ़िनी, गरीबनी, उटनी, गिदरनी, हथिनी, कुजरनी* ॥१३॥

कुम्हार, चमार ओ कमारसँ स्त्रीमे *ऐनि* आबए ओ *आर*क विलोप हो । *कुम्हैनि, चमैनि, कमैनि* ॥१४॥

वृद्ध आदिसँ स्त्रीमे *आ* आबए । *वृद्धा, चतुरा, पण्डिता, कुलीना*, इत्यादि ॥१५॥

धनिक आदिसँ स्त्रीमे *आइनि* अबैत अछि । *धनिकाइनि, सोतिआइनि, धनुकाइनि, महतमाइनि, गुरुआइनि, बनिआइनि, नौआइनि* (आलोप) ॥१६॥

पुरुषसम्बन्धेँ स्त्रीमे प्रवृत्त पुंवाचक पण्डित आदिसँ ॥१७॥ ठाकुर प्रभृति उपाधिसँ ॥१८॥ सारसँ *होजि* ॥१९॥ भायसँ *औजी; आयक* विलोप ॥२०॥ असंबोधनमे *आउजि* वैकल्पिक ॥२१॥ मामसँ इकार ॥२२॥ काका आदिसँ ई ॥२३॥

पुरुषसम्बन्धेँ स्त्रीमे प्रयुक्त जे पुंवाचक पण्डित प्रभृति, तकरासँ *आइनि* अबैत अछि । पण्डितक स्त्री *पण्डिताइनि*, पित्तीक स्त्री *पितिआइनि* । सामान्य सूत्रसँ तकारलोप ॥१७॥

पुरुषसम्बन्धहेतुक स्त्रीमे प्रवृत्त ठाकुर आदि उपाधिशब्दसँ *आइनि* होइत अछि । ठाकुरक स्त्री *ठकुराइनि, ओझाइनि, मिसराइनि*, (चौधरिमे इलोप) *चौधराइनि* ॥१८॥

सारसँ *होजि* अबैत अछि । सारक स्त्री *सरहोजि* । पुरुषसम्बन्ध बिना *सारि* ॥१९॥

भायक सम्बन्धेँ स्त्रीमे प्रवृत्त भायसँ *औजी* अबैत अछि ओ *आय*क विलोप । भायक स्त्री *भौजी* ॥२०॥

पुरुषसम्बन्धसँ स्त्रीमे प्रवृत्त भाय शब्दसँ असम्बोधनमे *आउजि* वैकल्पिक अबैत अछि ओ *आय*क विलोप हो । भायक स्त्री *भाउजि* वा *भौजी* । असबोधनमे *भाउजि; भौजी* सर्वत्र ॥२१॥

पुरुषसम्बन्धहेतुक स्त्रीमे प्रवृत्त माम शब्दसँ इकार अबैत अछि, सम्बोधनमे नहि । *हमरा ओ मामि होइतीह* । सम्बोधनमे मामा शब्दसँ ई प्रत्ययक प्रयोग, *मामी* ॥२२॥

पुरुषसम्बन्धेँ स्त्रीमे प्रवृत्त काका आदिसँ ई प्रत्यय अबैत अछि । काकाक स्त्री *काकी । मामी । बाबी* ॥२३॥

इति स्त्रीप्रत्ययः समाप्तः

सारिणी २० : स्त्रीप्रत्ययचक्र

प्रकृति	*स्त्रीप्रत्यय*	*सिद्धरूप*	*प्रकृति*	*स्त्रीप्रत्यय*	*सिद्धरूप*
कुमार	+ इ	= कुमारि	चोर	+ नी	= चोरनी
सुकुमार	,,	सुकुमारि	मेहतर	,,	मेहतरनी
छोट	,,	छोटि	कुजरा	,,	कुजरनी
मोट	,,	मोटि	गरीब	,,	गरिबनी
बाभन	,,	बाभनि	ऊँट	,,	उँटनी
गोआर	,,	गोआरि	गिदर	,,	गिदरनी
सार	,,	सारि	हाथी	,,	हथिनी
महिसा	,,	महिसि	कुम्हार	+ ऐनि	= कुम्हैनि
जन	+ ई	= जनी	चमार	,,	चमैनि
घोड़ा	,,	घोड़ी	कमार	,,	कमैनि
धनबाला	,,	धनबाली	राड़	+ इनि	= राड़िनि
भागिन	,,	भगिनी	केओट	,,	केओटिनि
हरिन	,,	हरिनी	अमात	,,	अमातिनि
धोबि	+ नि	= धोबिनि	खबास	,,	खबासिनि
तेलि	,,	तेलिनि	दास	,,	दासिनि
मालि	,,	मालिनि	धनिक	+ आइनि	= धनिकाइनि
लहेरि	,,	लहेरिनि	सोति	,,	सोतिआइनि

धानुक	,,		धनुकाइनि	मोदी	,,		मोदीनि
गुरु	,,		गुरुआइनि	पासी	,,		पासीनि
बनिआ	,,		बनिआइनि	बानर	+ नी	=	बनरनी
नौआ	,,		नौआइनि	मुसहर	,,		मुसहरनी
केओट	+ इनी	=	केआटिनी	अमात	+ इनी	=	अमातिनी
,,	+ इनि	=	केओटिनि	,,	+ इनि	=	अमातिनि
तमोलि	नि		तमोलिनि	सोनार	+ इनी	=	सोनारिनी
नाउ	,,		नाउनि	,,	+ इनि	=	सोनारिनि
				बहि	+ किरनी	=	बहिकिरनी
			(पुंयोगमे)				
पण्डित	+ आइनि	=	पण्डिताइनि	भाय	+ औजी	=	भौजी
गुरु	,,		गुरुआइनि	,,	+ आउजि	=	भाउजि
पित्ती	,,		पितिआइनि	सार	+ होजि	=	सरहोजि
ठाकुर	+ आइनि	=	ठकुराइनि	माम	+ इ	=	मामि
ओझा	,,		ओझाइनि	,,	+ ई	=	मामी
मिसर	,,		मिसराइनि	काका	+ ई	=	काकी

अथ विभक्त्यर्थप्रकरणम्

क्रियान्वयी कारक; छओ प्रकारक—कर्म, कर्त्ता, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण ॥१॥

क्रियामे अन्वयी अर्थात् क्रियामे साक्षात् विशेषण कारक कहबैत अछि। *देवदत्त देखैत छथि* एहि ठाम देवदत्त दर्शनक्रियामे साक्षात् विशेषण छथि से कारक भेलाह। एवम् *देवदत्तकेँ देखैत छथि* इत्यादि स्थलहुमे देवदत्तादि कारक भेलाह। *देवदत्तक पिताकेँ देखैत छथि; जयदेवक पुत्रकेँ पढ़बैत छथि* इत्यादि स्थलमे देवदत्त पिताक विशेषण, जयदेव पुत्रक विशेषण छथि, क्रियाक नहि। तेँ ओ कारक नहि कहओतः। कारक संज्ञाक फल आगाँ कहल जाएत।

से कारक कर्म, कर्ता, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण भेदसँ छओ प्रकारक होइत अछि। कर्मादिसंज्ञा आगाँ कहल जाएत। कारकसंज्ञा अन्वर्थ थीक, कारक अर्थात् क्रियाक उत्पादक। कर्मादि रूप कारक क्रियाक उत्पादक (कारण) होइत अछि। तण्डुलादि पाक्य वस्तु बिना पाकक्रिया नहि भए सकैत अछि, तेँ तण्डुलादिरूप कर्म पाकक्रियाक कारक। तथा पाक कएनिहाररूप कर्ताक बिना ओ इन्धनादिरूप करण बेत्रेक पाकक्रियाक असंभव। अतः कर्ता ओ करण सेहो कारक भेल। एवं दानादिक्रियाक उद्देश्य देवदत्तादिरूप सम्प्रदानक बिना दानादिक्रियाक, ओ विभागावधिरूप अपादान बिना विभागोत्पादक क्रियाक असंभव,तेँ संप्रदान ओ अपादान सेहो तत्तत्क्रियाक संपादकरूप कारक थीक। एवम् आधारस्वरूप अधिकरणो क्रियोत्पत्तिमे आवश्यक, तेँ ओहो कारक भेल ॥१॥

उक्त कर्मादिमे प्रथमा ॥२॥ सम्बोधनमे ॥३॥

उक्त कर्मादिमे नामसँ पर प्रथमा अबैत अछि, अर्थात् कर्म, कर्ता,करण, अधिकरण यदि धातुविहित प्रत्ययसँ बोधित हो तँ तादृश कर्मादिबोधक नामसँ पर प्रथमा विभक्ति आबए। *जयदेव देखल जाइत छथि* एहिठाम कर्ममे तिङ्प्रत्यय भेल अछि, तेँ कर्म उक्त भेल। ताहि कर्मबोधक जयदेव शब्दसँ प्रथमा आएल। *जयदेवकेँ भवदेव देखैत छथि* एहि ठाम कर्तामे प्रत्यय भेल अछि, अतः उक्त कर्तृबोधक भवदेव शब्दसँ प्रथमा। उक्त करणमे—*अँगपोछा नूआ*। उक्त अधिकरणमे—*पएरधोआ अढ़िआ*। एहि भाषामे सम्प्रदान ओ अपादानमे विभक्तिभिन्न प्रत्यय नहि अबैत अछि, तेँ उक्त सम्प्रदान तथा उक्त अपादानक उदाहरण नहि देल ॥२॥

सम्बोधनमे नामसँ पर प्रथमा अबैत अछि। *हे राम ! हमर रक्षा करू* ॥३॥

क्रियाक समानाधिकरण विशेषणसँ ॥४॥ अव्ययसँ ॥५॥ अनादरणीयक

सम्बोधनमे कोपोक्ति सन्ताँ प्रथमाक स्थान वैकल्पिक एकार सवदिश ॥६॥

क्रियाक समानाधिकरण विशेषणबोधक नामसँ प्रथमा हो। *ओ नेना बड़ सुन्दर पढ़ैत अछि*। अधलाह रन्हैत अछि। संस्कृतरीत्या क्रियाविशेषणकेँ कर्मसंज्ञाक अनुशासन कएने द्वितीयाक विलोप वक्तव्य होइत ॥४॥

अव्ययसँ पर प्रथमा अबैत अछि। *भरि दिन, मना करू* इत्यादि स्थलमे परत्वात् द्वितीयादि, किन्तु अव्ययसँ पर विभक्तिक विलोप सामान्यतः कहल अछि। *मना करू*, द्वितीयाक विलोप। *किएक*, पञ्चमीक विलोप ॥५॥

अनादरणीयक सम्बोधनमे कोपोक्ति सन्ताँ प्रथमाक स्थान वैकल्पिक *ए* सवदिश होइत अछि। एकर विधानसामर्थ्यात् विलोप नहि। *हे बुधने, लग आबह तँ!* ॥६॥

इति प्रथमा

धात्वर्थव्यापारजन्य फलसँ सम्बध्यमान कर्म ॥७॥

धात्वर्थ व्यापारसँ जायमान जे फल ताहिसँ सम्बध्यमान अर्थात् ओकर आधार कारक कर्मसंज्ञक हो। *जयलाल गाम गेलाह*। संयोग ओ तज्जनक व्यापार *ज* धातुक अर्थ थीक, तस्मात् धात्वर्थव्यापारजन्य जे संयोग ताहिसँ सम्बध्यमान गाम भेल, अर्थात् जयलालक क्रमिक चरणन्यासरूप व्यापारसँ जायमान संयोग गाममे अछि, तेँ तादृश फलसम्बन्धी गामकेँ कर्मसंज्ञा भेल। एवं *देवदत्तकेँ जयलाल देखैत छथि* एहि ठाम जयलालक व्यापारसँ जायमान ज्ञान रूप फलसँ विषयतासम्बन्धेँ सम्बध्यमान देवदत्तकेँ कर्मसंज्ञा भेल। कर्ममे द्वितीया आगाँ कहल जाएत। पहिल उदाहरणमे द्वितीयाक विलोप भेल, एकरो सूत्र आगाँ कहल जाएत।

यद्यपि *जयदेव काशी जाइत छथि, काल्हि पहुँचताह* इत्यादि स्थलमे संयोगरूप फलसँ युक्त काशी नहि भेल, हेतु जे एखन ओ फल उत्पन्न नहि भेल अछि, तथापि 'धात्वर्थ फलमे अन्वयित्वेन विवक्षित अर्थ कर्मसंज्ञक हो' एहि अर्थक पर्यवसानसँ उक्त स्थलहुमे कर्मसंज्ञा सिद्ध भेल। अतएव *काशी जएताह, काशी नहि जाइत छथि* इत्यादि स्थलहुमे कर्मसंज्ञा उपपन्न भेल। एहिसँ अर्थनिमित्तक कार्यमात्रक ई स्थिति जानब ॥७॥

अब्प्रत्ययक योगमे अकर्मक ओ सुन धातुक व्यापाराश्रय ॥८॥ ज्ञानार्थक ओ *लिख* आदिक वैकल्पिक ॥९॥

*णिच*क स्थानापन्न *अब्* प्रत्यय वक्ष्यमाण अछि, ओहि प्रत्ययक योगमे तत्प्रकृतिभूत अकर्मक धात्वर्थ व्यापारक आश्रय ओ *सुन*धात्वर्थ व्यापारक आश्रय कर्मसंज्ञक हो। *राम जयलालकेँ हँसबैत छथि। रामकेँ पुराण सुनबैत छथि। बज, ज* आदि कतोक धातुकेँ अकर्मकत्वक अतिदेश कहल जाएत, तेँ अकर्मक-ग्रहणसँ ओहू सबहिक ग्रहण। *देवदत्तकेँ बजाओल। देवदत्तकेँ पठाओल। जकेँ पठ* आदेश कहल जाएत, तेँ *पठ* धातु

तत्स्थानापन्नन्यायसँ *ज* धातु कहओलक। ई कर्मसंज्ञा निरवकाशत्वात् कर्तृसंज्ञाक बाधक। अन्यत्र परत्वात् कर्तृसंज्ञे, *देवदत्तसँ रन्हबैत छी*।

विवेचना ई जे *देवदत्तकेँ हँसबैत छी* एहिठाम *हँस*धात्वर्थव्यापाराश्रयतासँ कर्तृसंज्ञा प्राप्त अछि तथा *हँसब्* धात्वर्थ व्यापारजन्य हसनरूपफलाश्रयतासँ कर्मसंज्ञा सेहो प्राप्त भेल, ताहि कर्तृसंज्ञाक निरवकाशत्वात् कर्मसंज्ञा बाध कएलक अर्थात् कर्तृसंज्ञाक अप्राप्ति स्थलमे एहि कर्मसंज्ञाक चारितार्थ्य नहि छैक तेँ अकर्मक धातुक योगमे प्रयोज्यकेँ कर्मसंज्ञे भेल। यद्यपि पर शास्त्रकेँ बलवत्ता कहल अछि किन्तु निरवकाशत्व सर्वतोबलवत्तर प्रयोजक थीक। *देवदत्तसँ कार्य करबैत छी* इत्यादि स्थलमे वचनतः अगिला शास्त्रकेँ बलवत्ताक विधानसँ सामान्यसूत्रप्राप्त कर्मसंज्ञाकेँ बाधि कर्तृसंज्ञे भेल, हेतु जे कर्मसंज्ञा *देवदत्त गाम जाइत छथि* इत्यादि स्थलमे चरितार्थ अछि ॥८॥

ज्ञानार्थक अर्थात् ज्ञानसामान्यार्थक ओ ज्ञानविशेषार्थक एवं *लिख* आदि जे धातु तदर्थव्यापाराश्रयकेँ *अब्* प्रत्ययक योगमे कर्मसंज्ञा विकल्पेँ हो। *रामकेँ* वा *रामसँ बुझाओल, रामकेँ वा रामसँ देखबैत छी, रामकेँ वा रामसँ अतर सुँघाओल। लिख* आदि–*लिख, पढ़, ख* इत्यादि। *रामकेँ वा रामसँ पढ़बैत छी। रामकेँ वा रामसँ खोअबैत छी* इत्यादि।

एहि ठाम सूक्ष्म दृष्टिसँ ई बुझबाक चाही जे प्रयोज्यकर्तृगामी क्रियाफलक विवक्षामे कर्मसंज्ञा ओ प्रयोजककर्तृगामी क्रियाफलक विवक्षामे कर्तृसंज्ञा हो। तस्मात् ई व्यवस्थित विभाषा भेल। एकर स्पष्ट उदाहरण–*छात्रकेँ शास्त्र पढ़बैत छी। रामसँ चीठी पढ़बैत छी।* प्रथम वाक्यमे पढ़एबाक फल छात्ररूप प्रयोज्यकर्तृगत, तेँ कर्मसंज्ञे। द्वितीयमे प्रयोजकगत, तेँ कर्तृसंज्ञे भेल ॥९॥

अनुक्त कर्ममे द्वितीया ॥१०॥

अनुक्त कर्ममे–अर्थात् धातुविहित प्रत्ययसँ अबोधित कर्ममे–तद्बोधक नामसँ पर द्वितीया अबैत अछि। *जयदेवकेँ देखैत छी* एहिठाम *देख* धातुसँ कर्तामे तिङ् आएल अछि, कर्ममे नहि, तेँ कर्म अनुक्त भेल। युगपत् अनेक लक्ष्यमे प्राप्ति रहला सन्ताँ 'खलेकपोत' न्यायसँ युगपत् सूत्र प्रवृत्त होइत अछि, अतः *कारी कमल लाउ* एहिठाम कारी ओ कमल दुहूसँ एके काल द्वितीया आएल, क्रमशः नहि। एहिसँ विशेषणपदोत्तर आगत द्वितीयासँ उक्त कर्ममे विशेष्यपदसँ द्वितीया कोना ई शङ्का निरस्त भेल। उक्त उदाहरणमे वक्ष्यमाण सूत्रसँ द्वितीयाक विलोप जानब ॥१०॥

अत्यन्तयोगमे संख्यान्वित काल मार्गसँ ॥११॥ *भरि* आदिक योगमे ॥१२॥

संख्याविशेषसँ अन्वित जे काल वा मार्ग तद्बोधक नामसँ पर द्वितीया हो, यदि काल वा मार्गमे क्रियाक वा गुणक अथवा द्रव्यक अत्यन्तयोग–अर्थात् अविच्छिन्न सम्बन्ध हो।

एक मास पढ़ल । ई लोटा दू दिन साफ रहत । तीनि मास अन्न रहल । एक कोस भोतिअएलहुँ । ई धार दू कोस टेढ़ अछि । तीनि कोस काँकड़ भेटत । अविच्छिन्न सम्बन्ध नहि रहने उक्त प्रयोगक अभाव 'अत्यन्त' पदक फल जानब । *मास पढ़ल* इत्यादि प्रयोगक अभाव संख्यान्वित कहबाक प्रयोजन बुझब ॥११॥

धरि, भरि, पर्यन्त शब्दक योगमे द्वितीया हो । *मास धरि संयम करब । रुपैआ भरि । वर्ष पर्यन्त ।* पूर्व सूत्रक ओ एहि सूत्रक उदाहरणमे अग्रिम सूत्रसँ द्वितीयाक विलोप जानब ॥१२॥

द्वितीयाक बहुल विलोप ॥१३॥

द्वितीयाक बहुल प्रकारेँ विलोप होइत अछि। *विद्यार्थी वा विद्यार्थीकेँ पढ़ाउ ।* क्वचित् नित्य–*गाम जाउ ।* क्वचित् नहि–*जयलालकेँ देखू ।*

(कर्तृत्वक अयोग्यतामे प्रायः नित्य) *नाच दैखैत अछि । पोथी पढ़ैत अछि । काज करैत अछि । बात मानू, बातकेँ मानू,* इत्यादि कतोक स्थलमे वैकल्पिक होइत अछि, तेँ 'प्रायः' ई कहल गेल। (कर्तृताक योग्यतामे प्रायः नहि) *जयलालकेँ देखू वा पठाउ । रावणकेँ मारलैन्हि । बटेर कीड़ा खइत अछि* इत्यादि स्थलमे कर्तृत्वक योग्यता रहलहु पर विलोप देखल जाइत अछि, तेँ, एहूमे 'प्रायः' ई कहल गेल ।

"अप्राणिवाचकसँ सर्वत्र द्वितीयाक विलोप" ई ककरो मत, किन्तु *एहि घरकेँ उठाए आन ठाम लए जाएब* एहन बाजल जाइत अछि, तेँ एहूमे "प्रायः" कहबैक होएत। अतएव सर्वथा अनुगमक अयोग्यता देखि सूत्रमे 'बहुल' पदक उपादान कएल गेल अछि। एतदर्थ लोकव्यवहार देखब आवश्यक होएत ॥१३॥

कारकभिन्नक प्राधान्येन विधेय सम्बन्धमे द्वितीया ॥१४॥

कारक कर्मादि, तद्भिन्नक सम्बन्धमे वक्ष्यमाण षष्ठीक बाधक द्वितीया अबैत अछि, यदि ओ सम्बन्ध प्रधानरूपेँ विधेय हो । *जयलालकेँ पुस्तक छैन्हि* एहि ठाम पुस्तकमे जयलालक स्वत्वरूप सम्बन्ध प्रधानरूपेँ विधेय अछि । *जयलालक पुस्तक हमरा ओहिठाम छैन्हि* एहिठाम पुस्तकमे जयलालक सम्बन्ध विधेय नहि अछि, तेँ जयलालसँ द्वितीया नहि भेल । *जयलालक पुस्तक अछि* एहि स्थलमे जयलालसम्बन्धी पुस्तकमे सत्ता विधेय अछि, तेँ एहू ठाम जयलालसँ द्वितीया नहि भेल । *ई जयलालक पुस्तक थीक* एहि ठाम जयलालसम्बन्धी पुस्तक विधेय अछि, तेँ तद्विशेषणरूपेँ यद्यपि सम्बन्ध विधेय भेल किन्तु प्रधान रूपेँ नहि, तेँ एहि स्थलमे द्वितीया नहि आएल ।

अप्रथमान्तार्थ अनुयोगी रहलासन्ताँ सम्बन्धमे विधेयताक सम्भव नहि, तेँ *जयलालक पुस्तक देखू, देवदत्तक पुत्रमे बहुत गुण* इत्यादि स्थलमे द्वितीया नहि, किन्तु वक्ष्यमाण सूत्रसँ षष्ठिए । *हमरा जएबाक अछि* एहि ठाम इच्छाशब्दक अध्याहार, *हमरा जएबाक इच्छा अछि* ई पूर्ण वाक्य, तेँ सम्बन्ध विधेय भेल, अतः द्वितीयाक सिद्धि भेल । *हाथसँ खाइत छथि*

एहि ठाम हाथ शब्दसँ द्वितीयाक अभाव 'कारकभिन्नक' एहिपदक फल जानब ॥१४॥

संस्कृत कृत्य प्रत्ययान्तक योगमे कर्त्तासँ ॥१५॥ आठ पहरसँ अनधिक कालबोधकसँ अधिकरणमे वैकल्पिक ॥१६॥

संस्कृत कृत्य प्रत्ययान्त, कर्तव्य देय इत्यादि, तकरा योगमे कर्तृपदसँ द्वितीया हो यदि कर्ता-क्रियाक सम्बन्ध विधेय रहए । *विष्णुमित्रकेँ कर्तव्य छैन्हि; चैत्रकेँ देय छैन्हि; भवदत्तकेँ गन्तव्य । पिताक दातव्य पुत्र देथि* इत्यादि स्थलमे द्वितीया नहि भेल से पूर्ववत् जानब ॥१५॥

जे काल आठ पहरसँ अधिक नहि तादृशकालबोधक नामसँ अधिकरणमे द्वितीया वैकल्पिक हो । अधिकरणसंज्ञा आगाँ कहल जाएत । अधिकरणमे सप्तमी प्राप्त छल, ई द्वितीया तकर बाधक थीक । *रविकेँ अएलहुँ । दिनकेँ गेलाह । रातिकेँ नहि चली । द्वितीयाकेँ विवाह होएत ।* ई व्यवस्थित विभाषा थीक, तेँ रवि आदिसँ नित्य, आनसँ विभाषा । तेँ *रविमे अएलहुँ* ई प्रयोग नहि, *रातिमे* वा *रातिकेँ* अएलहुँ इत्यादि प्रयोग भेल ॥१६॥

आदरमे द्वितीयाक स्थान काँ ॥१७॥

आदरणीयबोधक शब्दसँ पर द्वितीयाक स्थान *काँ* आदेश वैकल्पिक हो । *अपनेकाँ,* वा *अपनेकेँ बजाएब* ॥१७॥

इति द्वितीया

धात्वर्थव्यापाराश्रय कर्त्ता ॥१८॥ क्रियाक साक्षात् साधक करण ॥१९॥ अनुक्त कर्त्ता ओ करणमे तृतीया ॥२०॥

धात्वर्थव्यापारक आधार कर्त्ता कहबैत अछि। *देवदत्तसँ पुस्तक देखल गेल ।* अनुक्त कर्त्तामे तृतीयाक सूत्र आगाँ अछि। एहि ठाम कर्ममे तिङ् प्रत्यय भेलासँ कर्त्ता अनुक्त जानब ॥१८॥

क्रियाक सिद्धिमे साक्षात्–अर्थात् क्रियान्तरक अव्यवधानेँ–क्रियाक साधक करण कहबैत अछि। करणमे तृतीया कहल जाएत। *रामक शरसँ रावण हत भेल ।*

यद्यपि कर्त्ता क्रियाक साधक थीक, किन्तु करणव्यापार द्वारा, तेँ कर्त्ताकेँ करण संज्ञा नहि। कर्म क्रियाक साधक थीक, किन्तु फलाश्रयत्वेन ओकर विवक्षा होइछ, साधकत्वेन नहि। एवम् अधिकरणक आधारत्वेन विवक्षा होइत अछि, साधकत्वेन नहि। क्वचित् तादृश विवाक्षामे होएते–*रुख स्थानेँ भानस कएल गेल* ॥१९॥

अनुक्त कर्त्ता तथा अनुक्त करणमे नामसँ पर तृतीया हो। *रामसँ बाणेँ रावण मारल गेल। ई पोथी देवदत्तसँ अपना हाथेँ लिखल गेल अछि।* उक्त कर्तामे नहि–*भवदत्त देखताह।* उक्त करणमे नहि–*झपना डाला* ॥२०॥

स्वभावादिसँ ॥२१॥ निमित्तपर्यायसँ ॥२२॥ हेतुमे ॥२३॥ बेत्रेक, विनाक योगमे तृतीया षष्ठी ॥२४॥ जाहि विकृत अङ्गसँ अङ्गीक विकार प्रतीत हो ताहिसँ ॥२५॥

स्वभाव इत्यादि शब्दसँ पर तृतीया अबैत अछि। *ओ स्वभावेँ नीक छथि। शरीरेँ कुशल। धानसँ धनिक।* पदार्थैकदेशमे अभेदान्वय बोधमे प्रायः एहि सूत्रक प्रवृत्ति होइत अछि। *तैँ देवदत्तक स्वभाव नीक छैन्हि* एतए नहि भेल। क्वचित् अन्यत्रहुँ–*देवताक दहिनेँ जाइ, बामेँ नहि।* स्वभावादि आकृतिगण जानब ॥२१॥ निमित्तवाचकसँ तृतीया हो। *कोन निमित्तेँ वा कारणेँ अएलह* ॥२२॥

हेतु अर्थमे तृतीया होइत अछि। *भाग्येँ अहाँ अएलहुँ। हम किछु कार्यें आएल छी* ॥२३॥

बेत्रेक तथा बिना एहि दूहू शब्दक योगमे तृतीया ओ षष्ठी हो। *बेत्रक वा विना हमरेँ कार्य नहि होएत। अहाँक बेत्रक वा बिना हमर मन उदास रहैत अछि* ॥२४॥

जाहि विकारबाला अवयवसँ अङ्गीक विकार बुझल जाए ताहि अवयववाचकसँ षष्ठी तृतीया दुहू अबैत अछि। *पाएरसँ वा पाएरक नाँगड़ छथि। आँखिएँ वा आँखिक कनाह* ॥२५॥

सपूर्वक हेतु शब्दसँ ॥२६। तृतीयाक बहुल विलोप ॥२७॥

पूर्वपदयुक्त हेतु शब्दसँ पर तृतीया ओ षष्ठी हो। *एहि हेतुएँ वा हेतुक अएलाह,* एहि ठाम पूर्वपद लुप्तविभक्तिके विवक्षित, तैँ *रुपैआक हेतु अएलाह* एहि ठाम ई सूत्र नहि लागल, किन्तु पूर्वसूत्रसँ तृतीया, तकर विलोप ॥२६॥

तृतीयाक विलोप बहुल प्रकारेँ होइछ। क्वचित् विभाषा, *एहि हेतु वा एहि हेतुएँ कहल। बिना पानि वा विना पानिएँ भानस कोना? लाठी मारल वा लाठीसँ मारल। अपने वा अपनेसँ कहल गेल।* अधिक ठाम नहि–*हाथसँ कएल, पाएरेँ गेलहुँ* इत्यादि ॥२७॥

इति तृतीया

कर्मसम्बन्धी होएबामे कर्त्ताक इष्ट सम्प्रदान ॥२८॥ रुच प्रभृतिक योगमे कर्त्तादिभिन्न ॥२९॥ सम्प्रदानमे चतुर्थी ॥३०॥

कर्मक सम्बन्धी होएबामे कर्ताक इष्ट सम्प्रदानसंज्ञक होइत अछि। सम्प्रदानमे चतुर्थी आगाँ कहल अछि। *महाराज ब्राह्मणकेँ भूमि दैत छथि,* एहि ठाम दानक्रियाक कर्म भूमि; "ब्राह्मण भूमि-सम्बन्धी होथु" एहन दानकर्त्ताक इच्छा; तद्विषयत्वात् ब्राह्मण सम्प्रदान भेलाह। *धोबिकेँ वस्त्र देल,* एहि ठाम द धातुक अधीनीकरण अर्थ, तकर कर्म वस्त्र, "पाल्यपालकभाव सम्बन्धेँ वस्त्र-सम्बन्धी रजक हो" एहन वस्त्रदाताक इच्छा; तद्विषयत्वात्

रजककेँ सम्प्रदानता। *देवदत्तकेँ दुःख दैत छथि।* द धातुक उत्पादन अर्थ; तकर कर्म दुःख; "देवदत्त दुःखी होथु" ई इच्छा; तद्विषयीभूत देवदत्तकेँ सम्प्रदानता। *देवदत्तकेँ पुराण कहैत छथि,* एहि स्थलमे "श्रवणकर्तृत्वसम्बन्धेँ पुराण-सम्बन्धी देवदत्त होथु" ई कर्त्ताक इच्छा; तैँ देवदत्तकेँ सम्प्रदानता ॥२८॥

रुच-प्रभृति जे धातु तकरा योगमे कर्तृकर्मादिभिन्न कारक सम्प्रदानसंज्ञक हो। *देवदत्तकेँ अन्न रुचैत अंछि। देवदत्तकेँ शास्त्र अबैत छैन्हि।* रुच धातुक अर्थ प्रिय लागब। *अब* धातुक ज्ञान। संस्कृतहुमे गत्यर्थक धातुक ज्ञान अर्थ होइत अछि ॥२९॥

सम्प्रदानमे नामसँ पर चतुर्थी हो। उदाहरण पूर्वोक्त जानब ॥३०॥

इति चतुर्थी

विभागोत्पादक क्रियाशून्य विभागक आधार अपादान ॥३१॥

विभागजनक जे क्रिया तद्रहित विभागक आधार कारक अपादानसंज्ञक हो। संयोगनाशक गुणविशेष विभाग थीक। 'अपादानमे पञ्चमी' आगाँ उक्त अछि। *गाछसँ पात खसल* एहि ठाम *खस* धातुक अधःसंयोगजनक क्रिया अर्थ थीक। जे क्रिया संयोगजनक हो से विभागोत्पादको होइत अछि। तादृश क्रिया पातमे अछि, गाछमे नहि; अतः गाछ विभागोत्पादक पतनरूपक्रियाशून्य भेल, ओ तज्जन्य विभागक आधारो भेल। अतः गाछकेँ अपादानत्व। पातकेँ अपादानत्ववारणार्थ प्रथम विशेषण। एवम् *गामसँ आएल, गामसँ गेल* इत्यादि उदाहरण।

यद्यपि *सड़कसँ खसैत घोड़ासँ खसल* एहिठाम घोड़ा विभागोत्पादकक्रियाशून्य नहि भेल, तथापि एहि ठाम मार्गावधिक ओ अश्वावधिक दू विभाग प्रतीत अछि, ताहिमे द्वितीय विभागोत्पादक क्रियाशून्य अश्व भेल, तैँ ओकरा अपादानत्व भेल। तस्मात् "तद्विभागोत्पादकक्रियाशून्य तद्विभागाधार कारक अपादान" ई सूत्रार्थ पर्यवसन्न भेल।

कारक एकर कारकत्वेन अर्थात् क्रियान्वयित्वेन विवक्षित ई अर्थ, तैँ *गाछक पात खसल* एहि ठाम गाछकेँ अपादानत्व नहि भेल। हेतु जे गाछकेँ पातमे अन्वय अछि, पतनक्रियामे नहि। क्रियान्वयतात्पर्येँ पूर्वोक्त *गाछसँ पात खसल* मे अपादानत्व होएबे कएल ॥३१॥

***सिख* आदिक योगमे कर्मादिभिन्न ॥३२॥ अपादानसे पञ्चमी ॥३३॥ यदीयधमपिक्षया उत्कृष्टधर्मवत्ता प्रतीत हो तकरासँ ॥३४॥**

सिख आदिक योगमे कर्मादिभिन्न कारक अपादान-संज्ञक हो। *गुरुसँ सिखल वा पढ़ल। देवदत्तसँ छकलहुँ।* सिख आदि सिख, पढ़, छक, बच, बुझ, पट, लड़, हार, बन, सुन, दब, खेल, डर। सिखआदि आकृतिगण ॥३२॥

अपादानमे नामसँ पर पञ्चमी होइत अछि। *गामसँ अएलाह* इत्यादि पूर्वोक्त उदाहरण जानब ॥३३॥

यद्गतधर्मापेक्षया सजातीयोत्कृष्टधर्मक बोध हो तद्बोधक नामसँ पञ्चमी अबैत अछि। *देवदत्तसँ भवदत्त बलमन्त छथि। जयदेवसँ जयलाल धनिक।३४॥*

पृथगर्थक दूरार्थक भिन्नार्थकक योगमे॥३५॥ अर्थतः प्रयोक्तव्य इप्रत्ययान्तक अप्रयोग रहने कर्म ओ अधिकरणमे। ॥३६॥ समीपार्थकक योगमे षष्ठिओ ॥३७॥

जकर अर्थ पृथक्, दूर वा भिन्न हो, ताहि शब्दक योगमे पञ्चमी होइत अछि। *देवदत्त भवदत्तसँ फूट वा पृथक् छथि। पटनासँ काशी दूर वा विप्रकृष्ट अछि। देवदत्तसँ आन* वा *अन्य अथवा भिन्न आबथु। देवदत्त भवदत्तसँ भिन्न भेलाह,* एहि ठाम भिन्नक विभक्त अर्थ थीक॥३५॥

जे इप्रत्ययान्त देखिं, बैसि इत्यादि कृदन्त प्रकरणमे वक्ष्यमाण अछि, ओकर अर्थवशात् प्रयोग प्राप्त रहए, किन्तु तकर यदि प्रयोग नहि कएल जाए तँ कर्म ओ अधिकरणमे पञ्चमी हो। *ससुरसँ लजाइत छथि* अर्थात् ससुरकेँ देखि। *आसनसँ देखैत छथि* अर्थात् आसन पर बैसि॥३६॥

जकर अर्थ समीप हो ताहि शब्दक योगमे पञ्चमी-षष्ठी दुहू अबैत अछि। *गामसँ* वा *गामक समीप* वा *लग* ॥३७॥

इति पञ्चमी

कारकभिन्नक सम्बन्धमे षष्ठी ॥३८॥ *ताक* योगमे ॥३९॥ कृदन्तक योगमे कर्ता ओ कर्ममे ॥४०॥ अव्यय कृदन्तक योगमे नहि॥४१॥ जाहि कृदन्तक योगमे कर्ता कर्म दुहूमे प्राप्ति हो तकर योगमे केवल कर्ममे॥४२॥

कारक कर्मादि, तद्भिन्नक सम्बन्धमे षष्ठी हो। *राजाक प्रजा। देवदत्तक बालक। घरक धैल।* कारक-भिन्नक उपादानेँ *रामकेँ देखू* इत्यादि स्थलमे नहि भेल ॥३८॥

ता शब्दक योगमे षष्ठी अबैत अछि *ता परीक्षाक हम रहब* ॥३९॥

कृत्प्रत्यय कहल जाएत, तदन्तक योगमे कर्म तथा कर्तामे षष्ठी अबैत अछि। ई सूत्र परत्वात् वा अनवकाशत्वात् द्वितीयाक ओ तृतीयाक बाधक। *पुराणक बाँचब आवश्यक, जगतक प्रतिपाल, विद्यार्थीक पढ़ब।* एहि सूत्रमे कृदन्तपदेँ पाणिनीय-व्याकरणसिद्धो कृदन्त जानब। *देवदत्तक नमन, संसारक पालन॥४०॥*

अव्ययस्वरूप जे कृदन्त देखि, देखए, देखैत इत्यादि तकरा योगमे कर्ता कर्ममे षष्ठी नहि हो। *जयदेवकेँ देखि अएलहुँ; माधवकेँ देखए आएल छी; रामकेँ बुझबैत छलहुँ॥४१॥*

जाहि कृदन्तक योगमे कर्ता कर्म दुहूमे षष्ठीक प्राप्ति होअए तकरा योगमे केवल कर्महिमे षष्ठी हो, कर्तामे नहि। *राजासँ प्रजाक प्रतिपाल; जयदेवसँ ग्रन्थक आलोचन। नाच देखनाइ* इत्यादि स्थलमे वक्ष्यमाण सूत्रसँ षष्ठीक विलोप ॥४२॥

अलप्रत्ययान्तक योगमे वैकल्पिक ॥४३॥ पाणिनीय-कृदन्तक योगमे पाणिनीय-व्याकरणाऽनुसार विभक्ति ॥४४॥ *चाहीक* योगमे *अब*-प्रत्ययान्तसँ कर्ममे षष्ठी॥४५॥ अप्रथमान्त कारण-पर्यायक समानाधिकरणसँ ॥४६॥

अल प्रत्ययान्त देखल इत्यादि कृदन्त, तकरा योगमे कर्तामे षष्ठी वैकल्पिक हो। *देवदत्तक वा देवदत्तसँ देखल अछि॥४३॥*

पाणिनीयव्याकरणसिद्ध कृदन्तक योगमे पाणिनीयव्याकरणाऽनुसार विभक्ति अबैत अछि। *अन्नक दाता, देवदत्तसँ आदृत, हमर इष्ट।* तृजादिरूप जे कृत् तकरा योगमे षष्ठी। *क्तक* योगमे षष्ठीक निषेध। वर्तमानार्थक *क्तक* योगगमे षष्ठी पाणिनीयमे होइछ, तँ मिथिलाभाषहुमे भेल। एवं *विष्णु हमर* वा *हमरासँ सेव्य थिकाह।* कृत्यप्रत्ययक योगमे षष्ठी तृतीया दुहू पाणिनीयमे उक्त अछि, तँ एहूमे भेल॥४४॥

चाहीक योगमे *अब*-प्रत्ययान्त देखब आदिसँ कर्ममे षष्ठी हो। *देखबाक चाही, देबाक चाही। चाही* शब्द तिङन्त थीक, कृदन्त नहि, तँ एकरा योगमे षष्ठी अप्राप्त छल॥४५॥

अप्रथमान्त जे कारणपर्याय कारण, निमित्त, हेतु इत्यादि तकर समानाधिकरण विशेषणवाचकसँ षष्ठी अबैत अछि। *पढ़बाक कारणेँ अएलहुँ। देखबाक हेतु गेलाह'।* एहि ठाम उत्तर वाक्यमे तृतीयाक विलोप जानब। *हमरा अएबामे अध्ययन हेतु अछि,* एहिठाम प्रथमान्त समानाधिकरणसँ षष्ठी नहि भेल॥४६॥

द्रव्यपरत्व सन्ताँ अधिकरण-प्रधानकसँ सम्बन्धमे षष्ठी, अपादानमे पञ्चमी ॥४७॥ दृष्टान्त आदिक योगमे षष्ठी सप्तमी ॥४८॥ षष्ठीक बहुल विलोप ॥४९॥

अधिकरणार्थक कहाँ इत्यादि यदि अधिकरण अर्थकेँ त्यागि प्रकृत्यर्थमात्र तात्पर्यें प्रयुक्त हो तँ ओकरासँ सम्बन्धमे षष्ठी हो। *ई पण्डित कहाँक थिकाह ? जहाँक, तहाँक। ओतएक कुशल अपेक्षित* । विधानसामर्थ्यात् षष्ठीक विलोप नहि भेल। अधिकरणार्थक द्रव्यपरक अव्ययसँ पर अपादानमे पञ्चमी हो। *कहाँसँ आएल छी? जतएसँ अहाँ ततएसँ।* एहूठाम विधान-सामर्थ्यात् अव्ययप्रयुक्त विभक्तिक विलोपक अभाव ॥४७॥

दृष्टान्त आदिक योगमे षष्ठी ओ सप्तमी दुहू विभक्ति आबए। *एकर* वा *एहिमे दृष्टान्त।* दृष्टान्त, साक्षी, (कारणपर्याय) उपाय, उद्योग, रुचि, यत्न। दृष्टान्त-आदि आकृतिगण॥४८॥

षष्ठीक बहुल विलोप होइत अछि। (अव्ययक योगमे प्रायः नित्य) *देवदत्त लए कहैत छी, जयदेव दए नहि। पटना देने काशी गेलहुँ।* क्वचित् अव्ययक योगहुमे नहि। ऋनक मादेँ। अतएव 'प्रायः' कहल। (अनिहारक योगमे विभाषा) *नाच देखनिहार, नाचक देखनिहार।* (*अब* ओ *अनाइक* योगमे विभाषा) *नाच* वा *नाचक देखब आनन्द-कारक;*

ब्राह्मण वा *ब्राह्मणक खोअओनाइ* । अन्यत्रहु –*नुआ सिआइ* वा *नुआक सिआइ* । *खेत कमैनी* वा *खेतक कमैनी* इत्यादि। (स्वस्वामिभाव, जन्यजनकभावादि सम्बन्धमे नहि) *राजाक प्रजा, जयदेवक पुत्र, भवदेवक स्त्री* ॥४९॥

इति षष्ठी

कर्मकर्ताक आधार अधिकरण ॥५०॥ सविषयकक वैकल्पिक ॥५१॥ अधिकरणमे सप्तमी ॥५२॥ एकदेशमे असाधारणधर्मक बोध सन्तौं समुदायबोधकसँ ॥५३॥

कर्म ओ कर्ताक आधार कारक अधिकरण कहबैत अछि। *देवदत्त बरतनमे भात रन्हैत छथि। पोथी घरमे अछि* ॥५०॥

सविषयक जे कर्म वा कर्ता तकर विषयतासम्बन्धेँ आधार अधिकरणसंज्ञक विकल्पेँ हो। *शास्त्रमे* वा *शास्त्रक विचार करू। धनमे* वा *धनक इच्छा होअओ।* यद्यपि अधिकरण साक्षात् क्रियान्वयी नहि भेल, परम्परया क्रियान्वयीक ग्रहण कएने *गाछक पात खसल* इत्यादि स्थलमे पञ्चम्यादिक आपत्ति, तथापि अधिकरण-संज्ञा विधान-सामर्थ्यसँ कर्तृकर्मद्वारा क्रियान्वयहुमे लागल। इच्छा, द्वेष, यत्न, ज्ञान इत्यादि सविषयक थीक, तेँ विषयतासम्बन्धेन ओकर आधार शास्त्रादि जानब ॥५१॥

अधिकरणमे सप्तमी विभक्ति अबैत अछि। उदाहरण पूर्वोक्त ॥५२॥

समुदायबोधकसँ सप्तमी हो यदि ओहि समुदायक एकदेशमे असाधारण अर्थात् अन्यमे अवर्तमान धर्मक प्रतीति होइत रहए। *मनुष्यसबहिमे विद्वान श्रेष्ठ।* एहि विषयमे संस्कृतमे षष्ठी सप्तमी दुहू अबैत अछि। मिथिलाभाषामे केवल सप्तमी ॥५३॥

सप्तमीक बहुल विलोप ॥५४॥ आइ-काल्हिसँ वैकल्पिक ॥५५॥ सप्तमीकेँ पर ॥५६॥

सप्तमीक बहुल प्रकारेँ विलोप होइत अछि। अर्थात् क्वचित् विभाषा; *ओ गाम* वा *गाममे छथि। बाटहि* वा *बाटहिमे रहलाह।* क्वचित् नित्य; *एहिठाम लोक बसत।* अधिक स्थलमे नहि; *घरमे लोक अछि, तिलमे तेल रहैछ* ॥५४॥

आइ-काल्हि समुदायात्मक अव्ययसँ पर सप्तमीक वैकल्पिक विलोप हो। *आइकाल्हि* वा *आइकाल्हिमे*। विलोपविधिसामर्थ्यात् सप्तमी आएल ॥५५॥

सप्तमीक स्थान बहुल प्रकारेँ पर आदेश होइत अछि अर्थात् क्वचित् विभाषा, क्वचित् नहि। (ज्ञान-भिन्नक विषयतया आधारमे वैकल्पिक) *मोक्षपर* वा *मोक्षमे इच्छा अछि। पढ़बापर वा पढ़बामे यत्न, शत्रुमे द्वेष, अन्नमे रुचि।* ज्ञानक आधारमे नहि; *शास्त्रमे बोध*; अतः ज्ञानभिन्नक उपादान कएल। (उपरिदेशीय आधारमे नित्य) *हाथीपर बैसल छथि। पटिआपर वा ठठरीपर पोथी अछि। चौकीपर बैसू।* (मध्य-भागावच्छिन्न आधारमे नहि)

आलमारीमे पुस्तक, कन्तोड़मे रुपैआ, सिन्धुकमे मोटा राखू। सिन्धुकक उपरमे जँ मोटा रहत तँ *सिन्धुकपर मोटा,* यदि भीतरमे रहत तँ *सिन्धुकमे मोटा* एवं प्रकारेँ व्यवस्था। (उभयथा आधारमे वैकल्पिक) *कोठापर छथि* वा *कोठामे, गामपर* वा *गापमे,* खेतमे वा *खेतपर छथि।* (अवसर आदिसँ वैकल्पिक) *अवसरपर* वा*अवसरमे अएलहुँ। बेरपर* वा *बेरमे।* (ग्रामविशेष, नगर, तद्विशेषसँ नहि) *हम विष्णुपुरमे रहैतछी। अहाँ कोन नगरमे ? विश्वनाथ काशीमे छथि।* (निर्धारणमे नहि) *मनुष्यसबमे राम श्रेष्ठ।* (अभिव्यापक आधारमे नहि) *तिलमे तेल, जलमे शैत्य, फुलमे सौरभ।* सर्वावयवावच्छदेँ जे आधार से अभिव्यापक आधार कहबैत अछि, उपरिदेशावच्छेदेँ जे आधार से उपरिदेशीय आधार भेल, एवम् अभ्यन्तरावच्छेदेँ अथवा अचल वस्तुक मध्यभागावच्छेदेँ जे आधार से मध्यभागावच्छिन्न आधार भेल। रथ, पटिआ इत्यादि अचल नहि थीक, तेँ ओ उभयथा आधार नहि भेल, अतः *रथमे जाइत छथि, पटिआमे बैसल छथि* इत्यादि प्रयोग नहि। किन्तु *रथपर, पटिआरपर* इत्यदिए बाजल जाएत ॥५६॥

इति सप्तमी

विभक्त्यर्थप्रकरणं सम्पूर्णम्

अथ समासप्रकरणम्

उत्तरपदार्थप्रधान समास तत्पुरुष ॥१॥ उभयपदार्थप्रधान द्वन्द्व ॥२॥ अन्यपदार्थप्रधान बहुव्रीहि ॥३॥

जाहि समासमे उत्तरपदक अर्थ पूर्वपदार्थापिक्षया प्रधान हो से समास तत्पुरुष कहाओल जाइछ। यथा *अनदिना, पनिबट, फुलबाड़ी।* संस्कृतमे समानाधिकरण तत्पुरुष कर्मधारय कहबैत अछि ओ सङ्ख्यापूर्वक कर्मधारय द्विगु कहबैत अछि। यथा *नीलोत्पल, त्रिलोकी* इत्यादि। एहि दुहूक प्रकृतमे अप्रयोजनसँ उल्लेख नहि कएल गेल॥१॥

जाहि समासमे दुहू पदक अर्थ प्रधान हो अर्थात् परस्पर ककरो कोनो विशेषण नहि हो से समास द्वन्द्व थीक। यथा *सीतारामक महिमा; बाधवनमे नहि जाइ ॥२॥*

जाहि समासमे समस्यमान पदक अर्थसँ भिन्न अर्थ प्रधान हो से समास बहुव्रीहि कहबैत अछि। यथा *एकमुहा, ठढ़कन्हा* इत्यादि।

एहि तीनूसँ अतिरिक्त अव्ययीभाव समास पाणिनीयमे होइत अछि। ई समास प्रायः पूर्वपदार्थप्रधान होइत अछि। यथा *अनुरूप, यथासम्भव* इत्यादि। किन्तु शुद्ध मिथिलाभाषामे एकर स्वतन्त्र उदाहरण नहि अछि, अतएव प्रयोजनाभावात् ओ समास नहि कहल गेल ॥३॥

समासमे विभक्तिक विलोप ॥४॥ जकरा सङ्ग समास तकर पूर्व प्रयोग ॥५॥ पूर्वपदमे ह्रस्व ॥६॥ द्वन्द्वमे नहि ॥७॥ अषष्ठीतत्पुरुषमे *आ* समासान्त ॥८॥ बहुव्रीहिमे ॥९॥

समासमे जे विभक्ति हो तकर विलोप होइत अछि। विलोपोत्तर समाससँ आएल विभक्तिक श्रवण होएत॥४॥

जाहि पदक सङ्ग समास संज्ञा कहल जाए ओहि पदक पूर्व निपात करब॥५॥

समासमे जे पूर्वपद हो तकर स्वरसबहिकँ ह्रस्वता होइछ। यथा, आन दिन *अनदिना,* पानिक शाला *पनिशाला॥६॥*

द्वन्द्व समासमे पूर्वपदक स्वरकँ ह्रस्वता नहि हो। यथा *सीताराम,* बाधवन ॥७॥

षष्ठीतत्पुरुषभिन्न तत्पुरुषमे समासान्त अर्थात् समासक अन्तावयव *आ* प्रत्यय होइत अछि। यथा *अनदिना, सतगमा।* षष्ठीतत्पुरुषमे, *हथजौड़, तमघैल, फुलबाड़ी* इत्यादि। *रड़गमा* इत्यादिमे विशेष विधान होएत॥८॥

बहुव्रीहि कहल जाएत, ताहूमे समासान्त *आ* प्रत्यय होइछ। यथा *एकमतिआ,* दोमुहा, *गलफुल्ला ॥९॥*

पूर्वपद दू, तीनि, चारिकँ *दो, ते चौ* ॥१०॥ गाएकँ *गै* ॥११॥ सौतिनिकँ *सत* ॥१२॥ भायकँ *भै* ॥१३॥ आप्रत्ययसँ पूर्व ॥१४॥ विभक्त्यन्त समानाधिकरण विशेषण आन आदिक सङ्ग विभक्त्यन्त धान आदि समास वैकल्पिक ॥१५॥

समासमे पूर्वपदभूत दू, तीनि, चारिकँ क्रमशः *दो, ते, चौ* आदेश होइत अछि। यथा *दोबट्टी, तेबट्टी, चौबट्टी, दोमसिआ, तेमसिया, चौमसिआ॥१०॥*

समासमे पूर्वपद गाएकँ *गै* आदेश हो। *गैघरा, गैसिंही* ॥११॥

समासमे पूर्वपद सौतिनिकँ *सत* आदेश हो। माएक सौतिनि *सतमाए, सतसासु* ॥१२॥

पूर्वपद भाएकँ *भै* आदेश हो। यथा *भैसुर ॥१३॥*

आ प्रत्ययसँ पूर्व भाएकँ *भै* आदेश। यथा *भैआ, सतभैआ॥१४॥*

समानाधिकरण विशेषणवाचक जे विभक्त्यन्त आन आदि तकरा सङ्ग विभक्यन्त धान आदि समाससंज्ञक होइत अछि। आन धान *अनधना।* स्वरादि प्रत्ययसँ पूर्व सकल स्वरकँ ह्रस्वादेश उक्त अछि। आठम सूत्रसँ *आ* समासान्त, पाँचमसँ आन शब्दहिक पूर्व निपात। समुदायसँ आगत विभक्तिक श्रवण। यथा *बीआमे अनधनाक सम्बन्ध नहि राखी।* ई समास उत्तरपदार्थप्रधान अछि, तँ प्रथम सूत्रसँ तत्पुरुषसंज्ञक जानब। जेना *यवक सङ्ग तीसी बाओग भेल* एहि ठाम समुदायक युगपत् बाओगक प्रतीति होइछ तद्वत् समाससंज्ञा समुदायक जानब। *अनदिना, सबधना, मोटधना, पतरधना, बहरधना, भलमनुसाक समय नहि।* (गुह्यमे यलोप) *गुहचोरा। (एकँ ई नहि) एखन।* (*ते* आदिकँ अकार) *तखन, जखन, कखन* (खनसँ *आ* नहि)। समासाभावमे *एहि खन जाएब* इत्यादि। (ससुरमे *सक* विलोप) स्वामीक भाए रूप स्त्रीक ससुर *भैसुर॥१५॥*

सङ्ख्याक सङ्ग घर आदि ॥१६॥ तद्धितक विषयमे मास आदि ॥१७॥ सङ्ख्याक सङ्ग बाट आदि, ई समासान्त, टकँ द्वित्व ॥१८॥

समानाधिकरण सङ्ख्याक सङ्ग घर आदि सुबन्त समस्त हो। यद्यपि "विभक्त्यन्त" एकर अनुवृत्ति आएल अछि, ओ सुप्संज्ञाक विधानो एहि व्याकरणमे नहि कएल अछि तथापि संस्कृतमूलकत्वात् *राम, रामकँ, रामसँ,* इत्यादि सुबन्त कहाओल जाइछ। तस्मात् सुबन्त ई व्याख्यान कएल गेल। एवं आगहुँ जानब। *एकघरा, दोघरा,* (दूकँ *दो,* चारिकँ *चौ*) *एकगोला, दोगोला, सत्तभैआ, चौयुगी॥१६॥*

तद्धितक विषयमे समानाधिकरण सङ्ख्याक सङ्ग मास आदि समस्त हो। *एकमसिआ, दोमसिआ, तेमसिआ, चौमसिआ, छओमसिआ नेना॥१७॥*

समानाधिकरण सङ्ख्यावाचकक सङ्ग सुबन्त बाट आदि शब्द समाससंज्ञक हो, ओ

ईकार समासान्त प्रत्यय होअए, तथा उपान्त्य टकारकेँ द्विरुच्चारण हो। चारि बाट *चौबट्टी, तेबट्टी, एकबट्टी, चौहद्दी, चौयुगी ॥१८॥*

बालाक विषयमे विशेष्यमात्र ॥१९॥ षष्ठ्यन्त ताम आदिक सङ्ग घैल आदि ॥२०॥ जातिक सङ्ग गाम, *आ* समासान्त ॥२१॥

बालारूप तद्धितक विषयमे विशेषणक सङ्ग विशेष्यमात्र अर्थात् सभ विशेष्यबोधक शब्द समस्त हो। (पूर्व पदकेँ ह्रस्वता नहि) *ललपागबाला, बहुतधनबाला ॥१९॥*

षष्ठ्यन्त ताम आदिक सङ्ग घैल आदि सुबन्त समास-संज्ञक हो। तामाक घैल *तमघैल,* पानिक शाला *पनिशाला,* एवं *फुलबाड़ी, हथजौड़, हथकड़ी, पेटबद्धी, सरबेटा, बटखर्चा, मोटबन्हना, खोड़सङ्ग* इत्यादि ॥२०॥

जातिवाचकक सङ्ग गाम समस्त हो तथा *आ* समासान्त आबए, उत्तरपदमे ह्रस्वता वैकल्पिक। राइक गाम *रड़गमा, रड़गामा, बभनगामा, केओटगामा ॥२१॥*

पनिबट आदि ॥२२॥ यत्पूर्वकसँ कृत् तकरा सङ्ग कृदन्त ॥२३॥

षष्ठ्यन्त पानिआदिक सङ्ग बाट आदि समस्त होइछ ओ प्रत्येकमे किञ्चित्कार्यक निपातन। पानिक बाट वा बाहा *पनिबट* वा *पनिबह,* (उत्तरपदमे ह्रस्वता)। *बहरघरा* (*आ* समासान्त)। *कनैठी, अँगैठी* (पूर्व पदान्तक लोप)। गायक सिंह सदृश *गैसिंही,* (*ई* समासान्त ओ गायकेँ *गै*)। *हथिसार, घोड़सार,* (शालाकेँ *सार*)। माएक सौतिनि *सतमाए* (षष्ठ्यन्तक परनिपात)। सौतिनिक धी *सतधी* (सौतिनिकेँ *सत*)। *दलिहन, घठिहन, तेलहन, बिअहन,* (अन्नकेँ *हन*)। पनिबट आदि आकृतिगण जानब। (साझीकेँ सज्झी) *दोसज्झा, तेसज्झा, चौसज्झा* ॥२२॥

यत्पूर्वक धातुसँ जे कृत्प्रत्यय विहित अछि, तत्पूर्वक सुबन्तक सङ्ग तादृश कृत्प्रत्ययान्त समस्त हो। अधिकरणपूर्वक ओ कर्मपूर्वक धातुसँ *आ* प्रत्यय कृत्प्रकरणमे विहित अछि तैँ *घरपैसा, बलिकट्टा* इत्यादि समास भेल। एवं *पनिभर, पएरधोआ* इत्यादि ॥२३॥

इति तत्पुरुषः

इतरेतरयोगमे प्रसिद्धसाहचर्यक अनेक प्रथमान्त समास् ॥२४॥

जकर सहोच्चारण लोकमे प्रसिद्ध अछि, तादृश अनेक प्रथमान्त इतरेतरयोगमे समस्त होइत अछि। अनेक पदार्थक एक रूपेँ समानमे अन्वय इतरेतरयोग थीक। *सीतारामक महिमा, लोकवेदक कल्याण। शुम्भनिशुम्भकेँ* भगवती मारलैन्हि। *शास्त्रपुराण, बाधवन, पोथीपतड़ा, अन्नपानि* इत्यादि। अप्रसिद्ध साहचर्यकेँ समाससंज्ञा नहि। अतएव *पोथी चाउरमे दिबाड़ लागल,* एहन प्रयोग नहि होएत किन्तु *पोथी ओ चाउरमे* वा *पोथीमे* ओ *चाउरमे* एहन बाजल जाएत। चार्थ ओकारक अप्रयोगावस्थहुमे पूर्वपदोत्तर द्वितीयादिक अश्रवण समाससंज्ञाक फल जानब ॥२४॥

इति द्वन्द्वसमासः

सामर्थ्यसन्ताँ अन्यपदार्थमे प्रथमान्तक सङ्ग प्रथमान्त ॥२५॥ संख्याक सङ्ग मति आदि ॥२६॥ प्राण्यङ्गक संग काटल आदि ॥२७॥ अदृष्ट आदिक सङ्ग घटल ॥२८॥ भूतादिक सङ्ग लागल ॥२९॥ पित्त पानिक सङ्ग मुइल ॥३०॥ पेटक सङ्ग जरल ॥३१॥ कौटँग आदि ॥३२॥ गुणक सङ्ग प्राण्यङ्ग ॥३३॥

आब बहुव्रीहि समास कहल जाइत अछि। अन्यपदार्थमे अर्थात् समस्यमान पदक अर्थसँ भिन्न अर्थमे विद्यमान दू प्रथमान्त समस्त हो। *मुहटेढ़ा, टेढ़मुहा* ॥२५॥

अन्यपदार्थमे वर्त्तमान प्रथमान्त संख्यावाचीक सङ्ग प्रथमान्त मति आदि समाससंज्ञक हो। एक मति छैक जकर से *एकमतिआ, एकजुतिया।* आकाररूप समासान्त, प्रत्ययक परताँ ह्रस्वता। *एकदिना, दोदिना उत्सव ॥२६॥*

प्राण्यङ्गक सङ्ग काटल आदि *अल्*प्रत्ययान्त समस्त हो अन्यपदार्थमे। काटल छैक कान जकर से *कनकट्टा।* वक्ष्यमाण सूत्रसँ *अलक* विलोप, धात्वन्त द्विर्वचन। एवं आगहुँ। *नकपिच्चा, गलफुल्ला, पैँजरसट्टा, घड़खस्सा ॥२७॥*

"अन्यपदार्थमे" एकर सम्बन्ध "गुणक सङ्ग" एहि पर्यन्त जानब। अदृष्ट आदिक सङ्ग घटल समस्त हो। अदृष्टघट्टू, करमघट्टू। वक्ष्यमाण ऊ समासान्त ओ व्यञ्जनद्विर्वचन ॥२८॥

भूतादिक सङ्ग लागल समस्त हो। भूत लागल छैक जकरा से *भुतलग्गू। जरलग्गू।* हाथ लागल रहए जाहिमे से *हथलग्गू ॥२९॥*

पित्त ओ पानिक सङ्ग मुइल समस्त हो। *पितमरू, पनिमरू।* जकर विलोप संभावित हो तन्निमित्तक कार्यक अभाव, अतः मरकेँ *मु* आदेश नहि ॥३०॥

पेटक सङ्ग जरल समस्त होइछ। *पेटजरू* ॥३१॥

कौटँग आदि बहुव्रीहि निपातन जानब। यथा कौआक टाँग सदृश टाँग छैक जकर से *कौटँग। कौ* आदेश, उत्तरपदमे ह्रस्वता, सामान्यसूत्रप्राप्त समासान्ताभाव। *कुकुरटँग, चौमुख दीप, अमरकन्द, चिकनकर, समगर, कुगर, कुचालि, कुटँग,* इत्यादिमे समासान्त प्रत्ययाभाव। *सूआगर,* पूर्वपदमे ह्रस्वताक ओ समासान्त प्रत्ययक अभाल ॥३२॥

अन्यपदार्थमे वर्त्तमान प्रथमान्त गुणवाचकक सङ्ग प्रथमान्त प्राण्यङ्गवाची समस्त होइत अछि। यथा *ललमुहा, झौसलमुहा, चकरमुहा, ठढ़कन्हा* ॥३३॥

बहुव्रीहिमे अन्त्य अलक विलोप ॥३४॥ विलुप्त अलसँ पूर्व अरेफान्त असंयुक्त स्वरोपधक व्यञ्जनकेँ द्विर्वचन ॥३५॥ रेफान्तसँ ऊ समासान्त ॥३६॥ लग आदिसँ ॥३७॥ प्राण्यङ्गादि बहुव्रीहिसँ आदरमे ॥३८॥

बहुव्रीहिमे अन्त्य जे *अल* प्रत्यय तकर विलोप होइत अछि। *पनिमरू*। विलोपक सम्भावनामे प्रथम *अलक* विलोप। *कनकट्टा* इत्यादि पूर्वोक्त उदाहरण जानब ॥३४॥

बहुव्रीहिमे विलुप्त *अलसँ* पूर्व व्यञ्जनकेँ द्विर्वचन हो, रेफान्त ओ संयुक्त स्वरोपधक व्यञ्जनकेँ नहि। *कनकट्टा, नकपिच्चा, पितमरू, मुहझौँसा* ॥३५॥

विलुप्त *अलसँ* पूर्व रेफान्तसँ पर ऊ समासान्त अबैत अछि। *पितमरू, पनिमरू* ॥३६॥

बहुव्रीहिमे *अलक* विलोप सन्ताँ लग आदिसँ पर ऊ समासान्त हो। *जरलग्गू, हथलग्गू, करमघट्टू, अदृष्टघट्टू, अखरकट्टू* ॥३७॥

प्राण्यङ्गादि बहुव्रीहिमे *अलक* विलोप सन्ताँ आदरमे ऊ समासान्त होइत अछि। *ओ कनकट्टू छथि। कनकट्टा कुकुर। नकपिच्चा खबास। गलफुल्लू, गलफुल्ला* इत्यादि॥३८॥

इति बहुव्रीहिः

इतिसमासप्रकरणम्

इति मिथिलाभाषाविद्योतने सुबन्तप्रकरणं नाम पूर्वार्द्धं सम्पूर्णम्

अथ तिङन्तप्रकरणम्

सङ्केतप्रकरणम्

छकप्रभृति क्रियाबोधक धातु ॥१॥ ऐतअछिप्रभृति इहौक पर्यन्त तिङ् ॥२॥ जे तिङ्‌ जाहि पदक वा जाहि अर्थक रहने से ताहि पदक वा ओहि अर्थक अध्याहारहुमे ॥३॥

आब तिङन्तक अर्थात् क्रियापदक प्रकरण आरम्भ कएल जाइत अछि। ताहिमे प्रथमतः तदुपयोगी संज्ञा-परिभाषा कहल जाइछ। क्रियाक बोधक जे *छक* प्रभृति, अर्थात् ग्रन्थान्तमे वक्ष्माण छक आदि शब्द से धातुसंज्ञक हो। *छक* इत्यादिमे अकार उच्चारणार्थक थीक, तेँ *छक्* इत्यादि व्यञ्जनान्ते धातु जानब ॥१॥

ऐतअछि इत्यादि *इहौक* पर्यन्त आगाँ प्रत्यय सब कहल जाएत से तिङ्संज्ञक हो ॥२॥

जे तिङ्प्रत्यय जाहि पदक रहने, वा जाहि अर्थक शब्दतः बोध भेलासँ आबए से तिङ् ताहि पदक अध्याहारदशहुमे, एवम् ओहि अर्थक अध्याहारहुमे अबैत अछि। यथा, *तोँ* पद रहलासँ *अबह अबैछ, तोँ देखबह,* से तिङ् *तोँ* एकर अध्याहारहुमें; *हओ जयदेव, पोथी कखन देखबह ? ॥३॥*

लोकनि प्रभृतिमे अनादरविवक्षा नहि ॥४॥ लोक प्रभृतिमे नित्य अनादरविवक्षा ॥५॥ युगपत् प्राप्तमे उत्तर कार्य ॥६॥ अन्यगत पदेँ कर्ता, *हम, अहाँ, अपने, तोँ* एहिसँ अन्यगत ग्राह्य ॥७॥ *बज* आदि सकर्मक पदेँ अग्राह्य, अकर्मकपदेँ ग्राह्य ॥८॥

लोकनि इत्यादि शब्दार्थमे अनादर विवक्षा नहि हो। तस्मात् कृषक*लोकनि देखैत अछि* इत्यादि प्रयोग नहि, किन्तु कृषक*लोकनि देखैत छथि, ओझा कहैत छथि* इत्यादिके प्रयोग हो। प्रभृतिपदेँ उपाधिबोधक *ओझा, मिसर,* इत्यादि। तथा आदरार्थक तद्धितान्त *मुसहरू, गेनाइ* इत्यादि। एवम् *हम* , *अपने* ॥४॥

लोकप्रभृति शब्दार्थमे अनादरक विवक्षा अवश्यमेव हो। प्रभृतिपदेँ *नेना,* ओ अनादरार्थक तद्धितान्त *रबिआ, सोमना* इत्यादि, तथा अचेतनबोधक एवम् आदरक अयोग्य प्राणिवाचक। उदाहरण, *लोक देखैत अछि।* एहिठाम *लोक देखैत छथि,* एहन प्रयोग नहि हो।

एहि दुहू सूत्रक तात्पर्य ई जे कतोक शब्द आदरविषयत्वविशिष्ट स्वार्थक बोधक अछि। तदर्थमे अनादरविवक्षाक असंभव। तथा बहुत शब्द आदरविषयत्वाभावविशिष्ट स्वार्थकेँ

बुझबैत अछि, तदर्थमे आदरविवक्षहिक असंभव। बहुत शब्द एहनो अछि जकरा अर्थमे आदर वा अनादर विवक्षित भए सकए, यथा *किसान* । अतः *कसानसब नाच देखैत छथि* वा *देखैत अछि* ई दुहू प्रकारक प्रयोग भए सकैत अछि॥५॥

एक लक्ष्यमे युगपत् अर्थात् एकबेर अनेक कार्यक प्राप्ति सन्ताँ उत्तरसूत्रबिहिते कार्य हो। *हम तोँ दुहू गोटे देखब,* एहिठाम पूर्वसूत्रानुसार *देखबैँ* वा *देखबह* ई प्रयोग नहि भेल, किन्तु उत्तरसूत्रानुसार *देखब* इएह भेल ॥६॥

'अन्यगत' ई कहलासँ कर्ता, *हम, अहाँ, अपने, तोँ* एहिसँ अन्यगत ई अर्थ बुझब ॥७॥

बज आदि धातु सकर्मकपदैँ नहि लेल जाए किन्तु अकर्मकपदे, तैँ *बजलाह* ई प्रयोग सिद्ध भेल, हेतु जे भूतमे अकर्मकसँ *अलाह* ओ सकर्मकसँ *अलैन्हि* तिङ् कहल जाएत। कर्ममे प्रत्यय होएबे करत। यथा *बाजल बात फेर बाजल जाए। बज, चल, ज, अब, लब, ढुक, पैस,* बज अदि जानब॥८॥

इति तिङन्तोपयोगी संकेतप्रकरण समाप्त

अथ वर्तमानाधिकार

धातुसँ कर्तामे तिङ्॥१॥ वर्तमानमे कर्तृगत अनादरमे *ऐतअछि* वा *ऐछ*॥२॥ प्राचीनक मतेँ *ऐतअछ॥३॥*

धातुसँ पर कर्तामे तिङ् अबैत अछि। *लोक महाराजकैँ देखैत अछि।* एहिठाम कर्तामे तिङ् भेलासँ लोकरूप कर्ता उक्त भेल, महाराजरूप कर्म अनुक्त भेल, तैँ उक्त कर्तामे *लोक* शब्दसँ प्रथमा, ओ अनुक्त कर्ममे *महाराज* शब्दसँ द्वितीया आएल। 'धातुसँ' एहि पदक संबन्ध इहौक-प्रत्ययविधि पर्यन्त जानब ॥१॥

सभ तिङ् प्रत्यय कर्तामे विहित भेल। आब तिङ्विशेष तत्सहित अर्थातन्तरमे कहल जाइत अछि। वर्तमानकाल ओ कर्तृगत अनादर एहि अर्थद्वयमे धातुसँ पर *ऐतअछि* वा *ऐछ* अबैत अछि। एहिठाम तिङक तीन अर्थ; कर्ता, तद्गत अनादर, ओ वर्तमानकाल। तैँ "आदरविषयत्वरहितलोककर्तृक वर्तमानकालिक दर्शन" एतादृश बोध भेल। एहिठाम ई बुझबाक चाही जे आदरणीयो अनादरणीयत्वेन विवक्षित भए सकैछ, तैँ वक्ता यदि क्रोधादिवश महाराजमे अनादर बुझबए चाहए, तैँ *महाराज देखैत अछि,* इहो प्रयोग हो। एकर अर्थ होएत "अनाद्रियमाणमहाराजकर्तृक वर्तमानकालिक दर्शन"। 'वर्तमानमे' एकर अधिकार 'भूतमे' एहिसँ पूर्व सूत्र पर्यन्त जानब ॥२॥

प्राचीन मतेँ उक्त विषयमे *ऐतअछ* आबए; *लोक देखैतअछ ॥३॥*

क्रियाफल अन्यगत रहने तद्गत अनादरमे *ऐतछैक* ॥४॥

वर्तमान कालमे, कर्तृगत अनादरमे, क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ, तद्गत अनादरमे, धातुसँ

पर *ऐतछैक* तिङ् प्रत्यय अबैत अछि। दोसर सूत्रसँ 'वर्तमानमे कर्तृगत अनादरमे' एतबाक अनुवृत्ति एहि सूत्रमे जानब। उदाहरण, *सेवक नेनाकैँ देखैतछैक।* एहिठाम तिङ्प्रत्ययक कर्ता मिलाए पाँच अर्थ, १. कर्ता। २. तद्गत अनादर। ३. अन्यगत क्रियाफल। ४. तद्गत अनादर ५. वर्तमान काल।

अतः उक्त वाक्यसँ "अनादरणीयसेवककर्तृक अनादरणीय शिशुकर्मक तादृशशिशुगतरक्षाफलसंपादक वर्तमानकालिक दर्शन" एतादृश बोध होइत अछि । एहि रीतिएँ *नेनाक सङ्ग नोकर जाइतछैक* एहि वाक्यसँ "अनाद्रियमाण बालकक सङ्ग तदीयपरिचर्यादिफलसंपादक अनाद्रियमाणदासकर्तृक वर्तमानकालिक गमन" एतादृश बोध जानब।

एहिठाम यदि नेनामे क्रियाफल नहि बुझएबाक हो तैँ सामान्यसूत्रानुसार *नेनाक सङ्ग सेवक जाइतअछि* एहनो वाक्य होएत। *नोकर मालिकलोकनिकैँ देखैत छैक* एहन वाक्य नहि होएत, कारण जे लोकनिप्रभृतिमे अनादरविवक्षा नहि हो से कहल अछि ॥४॥

आदरमे *ऐतछैन्हि* ॥५॥ हओपदैँ संबोध्य तोँ शब्दार्थगामी क्रियाफल सन्ताँ *ऐतछहु* ॥६॥

वर्तमानकालमे कर्तृगत अनादरमे, क्रियाफल कर्तृभिन्नगत रहने, तद्गत आदरमे, धातुसँ पर *ऐतछैन्हि प्रत्यय अबैत अछि* । जयदेवकैँ चाकर देखैतछैन्हि । *जयदेवक लग चोर बसैत छैन्हि।* एहूठाम तिङक पाँच अर्थ – १. कर्त्ता। २ तद्गत आदरविषयत्वाभाव। ३. जयदेवगत क्रियाफल। ४. तद्गत आदरविषयत्व ५. वर्तमान काल। क्रियाफलक अविवक्षामे *जयदेवकैँ चाकर देखैत अछि* एतादृश सामान्य प्रयोग जानब।

ऐतछैक, ऐतछैन्हि उभयक प्राप्तिमे परत्वात् *ऐतछैन्हि* प्रत्यय आबए, *ऐतछैक* नहि। अतः *लोक ओकरा ओ हुनका दुहू गोटाकैँ देखैत छैन्हि,* एतादृश प्रयोग होएत, किन्तु *देखैत छैक* एतादृश नहि॥५॥

वर्तमानकालमे, कर्तृगत अनादरमे, कर्तृभिन्न हओपदसँ संबोधनयोग्य तोँ शब्दार्थगामी क्रियाफल सन्ताँ धातुसँ पर *ऐतछहु* अबैत अछि। *हओ जयदेव, लोक तोरा देखैतछहु, तोरा लग बसैतछहु।*

एहू ठाम क्रियाफलक अविवक्षामे, *लोक तोरा देखैत अछि, तोरा लग बसैत अछि,* ई सामान्य प्रयोग पूर्ववत् जानब॥६॥

रओपदैँ ऐतछौक॥७॥

वर्तमान कालमे, कर्तृगत अनादरमे, रओपदसँ संबोध्य तोँ शब्दार्थगत क्रियाफल विवक्षित रहने धातुसँ पर *ऐतछौक* प्रत्यय अबैत अछि। *रओ सोमना, तोरा लोकसभ देखैत छौक, तोरा लग लोकसभ बसैतछौक।*

एहू ठाम पूर्ववत् साधारणो प्रत्यय होएत। *तोरा लोकसभ देखैतअछि, तोरा लग बसैत अछि* ॥७॥

वर्तमानाधिकारमे अनाद्रियमाणकर्तृपदक तिङ् समाप्त

कर्तृगत आदरमे *ऐतछथि* ॥८॥ क्रियाफल अन्यगत रहने *ऐतछथीन्ह* ॥९॥ तोराशब्दार्थगत रहने *ऐतछथून्ह* ॥१०॥

आब वक्ताक आदरणीय कर्तृपद रहलासैं जे तिङ् वर्तमान कालमे अबैत अछि से तीनि सूत्रसैं कहल जाइछ। कर्तृगत आदरमे ओ वर्तमानकालमे धातुसैं पर *ऐतछथि* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। *महाराज देखैतछथि*। "कर्तृगत आदरमे" एकर सम्बन्ध अग्रिमसूत्र-द्वयमे जानब। एक कर्तामे अनादर दोसर कर्तामे आदर, उभयक युगपत् विवक्षामे परत्वात् *ऐतछथि* इएह आओत, *ऐतअछि* नहि, तैं *नेना ओ पण्डितजी दुहूगोटए देखैतछथि* इएह प्रयोग। *नेना ओ पण्डितजी दुहूगोटए देखैत अछि* ई प्रयोग नहि ॥ ८ ॥

कर्तृगत आदरमे क्रियाफल अन्यगत रहने धातुसैं पर वर्तमानकालमे *ऐतछथीन्ह* अबैत अछि। *महाराज ओकरा वा हुनका देखैतछथीन्ह*। तादृश क्रियाफलक अविवक्षामे *महाराज ओकरा वा हुनका देखैतछथि*, ई सामान्यशास्त्रानुसारो प्रयोग जानब ॥ ९ ॥

कर्तृगत आदरमे तोराशब्दार्थगत क्रियाफलसन्ताँ धातुसैं पर वर्तमान कालमे *ऐतछथून्ह* अबैतअछि। *हंओ राम, महाराज तोरा देखैतछथून्ह*। *रओ हरिहरबा, महाराज तोरापर प्रसन्न रहैतछथून्ह*। यदि एहूठाम तोरा शब्दार्थमे क्रियाफलक विवक्षा नहि कड़ी तैं *देखैतछथि, रहैतछथि* ई सामान्यो प्रयोग जानब। *ऐतछथीन्ह, ऐतछथून्ह* दुहूक प्राप्तिमे परत्वात् *ऐतछथून्ह* इएह आओत, *ऐतछथीन्ह* नहि। तैं *महाराज तोरा हुनका दुहूगोटाकैं देखैतछथून्ह* इएह प्रयोग होएत किन्तु *तोरा हुनका दुहूगोटाकैं देखैतछथीन्ह* एतादृश नहि ॥ १० ॥

वर्तमानाधिकारमे आद्रियमाणकर्तृपदक तिङ् समाप्त

हओपदैं संबोध्य अर्थक बोधक *तोँ* शब्द कर्तृपद रहने *ऐतछह* ॥११॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *ऐतछहक* ॥१२॥ आदरमे *ऐतछहून्ह* ॥१३॥

तोँ शब्द दू प्रकारक अछि, एक हओ पदसैं संबोध्यक बोधक, दोसर रओ पदसैं संबोधनीय अर्थक बोधक, ताहिमे प्रथम *तोँ* शब्द कर्तृपद रहलासैं धातुसैं पर *ऐतछह* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। *हओ सङ्गी, तोँ देखैतछह*।

ई प्रत्यय परत्वात् ओ अनवकाशत्वात् *ऐतअछि* प्रत्ययक बाधक, तैं *हओ, तोँ देखैत अछि* एतादृश प्रयोग नहि ॥ ११ ॥

पूवोक्त तोँ शब्द कर्तृपद रहलासैं यदि क्रियाफल अन्यगत विवक्षित हो तैं तद्गत

अनादरमे *ऐतछहक*, आदरमे *ऐतछहून्ह*, तिङ्प्रत्यय धातुसैं पर आबए। *हओ, तोँ नेनाकैं देखैत छहक, तोँ बाबूजीकैं देखैतछहून्ह। तोँ ओकरा लग रहैतछहक, तोँ हुनका लग रहैतछहून्ह*।

अन्यगत फलक अविवक्षामे पूर्वोक्त सामान्य *ऐतछह* प्रत्यय आओत। *तोँ नेनाकैं देखैतछह, बाबूजीकैं देखैतछह*। अन्यगत क्रियाफल सन्ताँ उभय प्रत्ययक प्राप्तिमे परत्वात् *ऐतछहून्ह* इएह आओत। *हओ, तोँ ओकरा ओ हुनका दूहूकैं देखैतछहून्ह*। एहिठाम *देखैत छहक* नहि भेल ॥ १२-१३ ॥

रओपदैं संबोध्यार्थक *तोँ* शब्द कर्तृपद रहने *ऐतछैं* ॥१४॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *ऐतछहीक* ॥१५॥ आदरमे *ऐतछहून्ह* ॥१६॥

रओ पदसैं जे संबोध्य तद्बोधक तोँ शब्द यदि कर्तृपद रहए तैं धातुसैं पर *ऐतछैं* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। *रओ सोमना, तोँ देखैतछैं*। इहो प्रत्यय परत्वात् *ऐतअछि* प्रत्ययक ओ *ऐतछह* प्रत्ययक बाधक, तैं *रओ, तोँ देखैत अछि* वा *देखैत छह*, एतदृश प्रयोग नहि भेल ॥ १४ ॥

उक्त विषयमे अर्थात् रओ पदसैं संबोधनीयार्थबोधक तोँ शब्द कर्तृपद रहला सन्ताँ क्रियाफल यदि अन्यगत विवक्षित हो तैं तद्गत अनादरमे *ऐतछहीक* ओ तद्गत आदरमे *ऐतछहून्ह* तिङ्प्रत्यय अबैतअछि। *रओ, तोँ हरिहरबाकैं देखैतछहीक, बाबूजीकैं देखैतछहून्ह*। तिङ्प्रत्ययसैं अनादरक ओ आदरक अविवक्षामे सामान्य प्रत्यय। यथा, *रओ, तोँ हरिहरबाकैं तथा बाबूजीकैं देखैतछैं*। यद्यपि हरिहरबा शब्दमे अनादरार्थक *बा* तद्धित आएल अछि, तैं तदर्थमे अनादरविवक्षा नियत, एवम् बाबूजी शब्दार्थमे सेहो आदर-विवक्षा नियते, तथापि तिङन्तसैं अविवक्षा भए सकैछ। तकर फल *जयलालकैं देखैतछहीक, जयलालकैं देखैतछहून्ह* एहि वाक्य-द्वयक प्रथम वाक्यमे जयलालगत अनादर ओ द्वितीय वाक्यमे तद्गत आदरक बोध जानब ॥ १५-१६ ॥

वर्तमानाधिकारमे तोँ कर्तृपदक तिङ्प्रत्यय समाप्त

हम अहाँ कर्तृपद रहलासैं *ऐतछी* ॥१७॥ प्राचीनक मतैं *ऐतछीअ* ॥१८॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *ऐतछिऐक* ॥१९॥ आदरमे *ऐतछिऐन्हि* ॥२०॥

हम वा अहाँ कर्तृपद रहलासैं धातुसैं पर वर्तमानमे *ऐतछी* तिङ् अबैत अछि। *हम वा अहाँ देखैतछी*। ई प्रत्यय परत्वात् ओ निरवकाशत्वात् *ऐतछथि* क बाधक। *हम ओ पण्डितजी दुहू गोटए भगवानकैं देखैतछी*। एवम् *ऐतअछि, ऐतछह, ऐतछैं* एहू सभक बाधक, *नोकर ओ अहाँ दुहू गोटे देखैतछी*। *हम-तोँ देखैतछी* ॥ १७ ॥

उक्त स्थलमे प्राचीन कालक मतैं *ऐतछीअ* अबैतअछि। *हम वा अहाँ देखैतछीअ* ॥ १८ ॥

हम वा अहाँ कर्तृपद रहने क्रियाफल यदि अन्यगत हो तँ तद्गत अनादरमे *ऐतछिऐक* आबए, ओ आदरमे *ऐतछिऐन्हि* आबए। *हम वा अहाँ हरिहरबाकेँ देखैतछिऐक, मालिककेँ देखैत छिऐन्हि*। एहूठाम *ऐतछिऐक, ऐतछिऐन्हि*, एहि दुहूक प्राप्ति सन्ताँ परत्वात् व्यवस्था। *हम हरिहरबा ओ मालिक दुहू गोटाकेँ देखैतछिऐन्हि* ॥ १९-२० ॥

क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *ऐतछिअहु*॥२१॥ अत्यधम तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *ऐतछिऔक* ॥२२॥

हम कर्तृपद रहलासँ क्रियाफल जँ तोराशब्दार्थगत हो तँ धातुसँ पर वर्तमानमे *ऐतछिअहु* अबैतअछि। *हम तोरा देखैत छिअहु*। *हम मधुकरबा, तोरा ओ मालिक तीनू गोटाकेँ देखैतछिअहु*। एहिठाम परत्वात् *ऐतछिऐक, ऐतछिऐन्हि*, दुहूक बाध जानब ॥ २१ ॥

हम कर्तृपद रहलासँ क्रियाफल यदि अत्यधमबोधक तोरा-शब्दार्थगामी हो तँ धातुसँ पर वर्तमान कालमे ऐतछिऔक अबैत अछि। *रओ मधुकरबा, हम तोरा देखैतछिऔक*। तद्गत फलक अविवक्षामे *हम तोरा देखैतछी* इहो होएते ॥ २२ ॥

वर्तमानाधिकारमे हमअहाँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

वर्तमानाधिकारश्च समाप्तः

सारिणी २१ : वर्तमानतिङ्चक्र

संकेत

अनादर ···	···*अना.*	विवक्षित क्रिया फल···	*विव.*
आदर ···	···*आद*	हओपदेँ संबोध्य···	*हसं.*
अविवक्षित क्रियाफल ···	*अवि.*	रओपदेँ संबोध्य···	*रसं.*

१	अना.	लोक	—	—	*अवि.*	देखैतअछि, देखैछ, देखैतअछ
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखैतछैक
३		,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	देखैतछैन्हि
४		,,	*हसं*	तोरा	*विव.*	देखैतछहु
५		,,	*रसं.*	तोरा	*विव.*	देखैतछौक
१	आद.	महाराज	—	—	*अवि.*	देखैतछथि
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखैतछथीन्ह
३		,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	,,

४		,,	हसं/रसं	तोरा	*विव.*	देखैतछथून्ह
१	हसं.	हओ तौँ	—	—	*अवि.*	देखैतछह
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखैतछहक
३		,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	देखैतछहुन्ह
१	रसं.	रओ तौँ	—	—	*अवि.*	देखैतछैँ
२		,,	*अना*	ओकरा	*विव.*	देखैतछहीक
३		,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	देखैतछहून्ह
१		हम वा अहाँ	—	—	*अवि.*	देखैतछी, देखैतछीअ
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखैतछिऐक
३		,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	देखैतछिऐन्हि
४		हम	*हसं.*	तोरा	*विव.*	देखैतछिअहु
५		,,	*रसं.*	तोरा	*विव.*	देखैतछिऔक

अथ भूताधिकार

भूतमे कर्तृगत अनादरमे सकर्मकसँ *अलक*, अकर्मकसँ *अल* ॥१॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे सकर्मकसँ *अलकैक*, अकर्मकसँ *अलैक* ॥२॥ आदरमे सकर्मकसँ *अलकैन्हि*, अकर्मकसँ *अलैन्हि* ॥३॥ क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ सकर्मकसँ अलकहु, अकर्मकसँ अलहु ॥४॥ अत्यधम तोरापदार्थगत सन्ताँ सकर्मकसँ *अलकौक*, अकर्मकसँ *अलौक* ॥५॥

वर्तमानार्थक तिङ् कहि भूतार्थक तिङ् कहल जाइछ। भूतकालमे ओ कर्तृगत आदरमे सकर्मक धातुसँ पर *अलक*, अकर्मक धातुसँ पर *अल* अबैतअछि। *लोक नाच देखलक*। लोक बसल। कोन धातु सकर्मक थीक, कोन अकर्मक, तकर परिचय ग्रन्थान्त-पठित धातुपाठहिसँ होएत। *बज, चल, ज* इत्यादि धातु यद्यपि सकर्मक थिक, तथापि एकर अकर्मकपदेँ ग्रहण हो से कहल गेल अछि, तेँ एहि सबहिसँ *अल* सएह आओत। *लोक बात बाजल*। *हरिहरबा गाम चलल*। *गाम गेल* ॥ १ ॥

भूतकालमे कर्तृगत अनादरमे यदि क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, तौँ एतद्भिन्नगत हो तँ तद्गत अनादरमे सकर्मक धातुसँ पर *अलकैक*, ओ अकर्मक धातुसँ पर *अलैक* अबैतअछि। *मधुकरबा नेनाकेँ देखलकैक, ओकरा लग रहलैक* ॥ २ ॥

भूतकालमे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, तौँ एतद्भिन्नगत रहने तद्गत आदरमे सकर्मक धातुसँ पर *अलकैन्हि*, ओ अकर्मक धातुसँ पर

अलैन्हि तिङ् अबैतअछि । *लोक हुनका देखलकैन्हि । हुनका लग बसलैन्हि* । अन्यगामी क्रियाफलक अविवक्षामे, *लोक हुनका देखलक, हुनका लग बसल* ई सामान्यो प्रयोग जानब ॥ ३ ॥

भूतकालमे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल हओ पदसँ संबोधनीयार्थबोधक तोरा शब्दार्थगत सन्ताँ सकर्मकसँ *अलकहु*, अकर्मकसँ *अलहु* अबैतअछि । ई परत्वात् किंवा अनवकाशत्वात् *अलक, अल, अलकैक, अलैक*, एहि सबहिक बाधक । उदाहरण– *हरिहरबा तोरा देखलकहु; तोरा हेतु रहलहु* । अन्यगत क्रियाफलक अविवक्षामे *हरिहरबा तोरा देखलक, तोरा हेतु रहल* ॥ ४ ॥

भूतकालमे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल अत्यधम तोरा-शब्दार्थगत· सन्ताँ सकर्मक धातुसँ पर *अलकौक*, अकर्मक धातुसँ पर अलौक अबैतअछि । *रओ मधुकरबा, करिआ तोरा देखलकौक, तोरा हेतु रहलौक* ॥ ५ ॥

भूताधिकारमे अनादरणीयकर्तृपदक तिङ् समाप्त

कर्तृगत आदरमे सकर्मकसँ *अलैन्हि* वा *अलन्हि*, अकर्मकसँ *अलाह* ॥६॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ *अलथीन्ह* ॥७॥ तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अलथून्ह* ॥८॥

भूतकालमे कर्तृगत आदरमे सकर्मकसँ *अलैन्हि* वा *अलन्हि* आबए, अकर्मकसँ *अलाह*। *महाराज देखलैन्हि* वा *देखलन्हि* । *महाराज बसलाह* ॥ ६ ॥

भूतकालमे कर्तृगत आदरमे क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता हम अहाँ ताँ एतद्भिन्नगत रहलासँ धातुसँ पर *अलथीन्ह* अबैत अछि । *महाराज ओकरा वा हुनका कृपासँ देखलथीन्ह, ओकरा पर वा हुनका पर प्रसन्न रहलथीन्ह* ॥ ७ ॥

भूतकालमे कर्तृगत आदरमे क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *अलथून्ह* अबैतअछि । *हओ राम* वा *रओ रामा, महाराज तोरा देखलथून्ह, कृपा वचन बजलथून्ह* ॥ ८ ॥

भूताधिकारमे आदरणीयकर्तृपदक तिङ् समाप्त

ताँ कर्तृपद रहने सकर्मकसँ *अलह*, अकर्मकसँ *अलाह* ॥९॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अलहक* ॥१०॥ आदरमे *अलहून्ह* ॥११॥ अतिनीच ताँ कर्तृपद रहने *अलैं* ॥१२॥ क्रियाफल अन्यगामी सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अलहीक* ॥१३॥

भूतकालमे ताँ कर्तृपद रहने सकर्मक धातुसँ पर *अलह*, ओ अकर्मक धातुसँ पर *अलाह* अबैतअछि । *हओ सखी, ताँ नाच देखलह* । *ताँ थोड़काल रहलाह* । *नोकर, मालिक, ताँ सभहि गोटे नाच देखलह* । एहिठाम *अलक* इत्यादिक बाध जानब ॥ ९ ॥

भूतकालमे ताँ कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँसँ अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अलहक*, ओ तद्गत आदरमे *अलहून्ह* अबैत अछि । *ताँ नेनाकँ देखलहक; महाराजकँ देखलहून्ह* ॥ १०-११ ॥

अतिनीचार्थक *ताँ* कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अलैं* अबैतअछि । रओ दुखबा, ताँ देखलैं । ताँ कहिआ बसलैं ? ॥ १२ ॥

अतिनीचार्थक ताँ कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँसँ अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अलहीक* अबैत अछि । *रओ दुखबा, ताँ ओकरा देखलहीक* । ओकरा लग *बसलहीक* । तद्गत आदरमे पूर्वसूत्रसँ *अलहून्ह* । *रओ दुखबा, ताँ हुनका देखलहून्ह; लगमे बसलहून्ह* । अन्यगत क्रियाफलक अविवक्षामे *देखलैं, बसलैं* इहो होएत । अनेकविध कर्ता रहने पर कार्यक उदाहरणक ऊह कए लेब ॥ १३ ॥

भूताधिकारमे ताँ कर्तृपदक तिङ् समाप्त

हम अहाँ कर्तृपद रहने सकर्मकसँ *अलहुँ* वा *अल*, अकर्मकसँ केवल *अलहुँ* ॥१४॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अलिऐक* ॥१५॥ आदरमे *अलिऐन्हि* ॥१६॥ क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अलिअहु* ॥१७॥ अतिनीच तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अलिऔक* ॥१८॥

भूतकालमे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने सकर्मक धातुसँ पर *अलहुँ* वा *अल* आबए, ओ अकर्मकधातुसँ पर *अलहुँ* मात्र आबए । *हम वा अहाँ देखलहुँ* वा *देखल* । *हम वा अहाँ बसलहुँ* ।

महाराज आज्ञा देल इत्यादि पूर्वकालमे व्यवहृत छल । आइओ-कल्हि पश्चिम मिथिलामे बाजल जाइतअछि । ताहिठाम वक्ष्यमाण कृत्संज्ञक कर्मबोधक *अल*प्रत्यय, ओ तृतीयाक विलोप जानब । जेना *लाठी मारल* इत्यादिस्थलमे तृतीयाक विलोप होइछ । तावता कर्मबोधके *अल* मानी से नहि, हेतु जे कर्मार्थके मानलासँ *हम नेनाकँ देखल* एहिठाम उक्त कर्ममे द्वितीया अनुपपन्न होएत । आओर *हम देखल* एहिठाम दर्शनक्रियाक प्राधान्येन बोध अनुभव-सिद्ध अछि, जेना *हम देखलहुँ* एहिठाम, तस्मात् कर्तृबोधको *अल* मन्तव्य । एहि आशयसँ सूत्रमे 'अलहुँ वा अल' ई कहल अछि ॥ १४ ॥

भूतकालमे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने यदि क्रियाफल अन्य अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, ताँ एतद्भिन्नमे विवक्षित हो तँ तद्गत अनादरमे *अलिऐक*, ओ तद्गत आदरमे *अलिऐन्हि* अबैत अछि । हम वा अहाँ नेनाकँ देखलिऐक, हम *वा अहाँ हुनका सङ्ग काशी गेलिऐन्हि* ॥ १५-१६ ॥

भूतकालमे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *अलिअहु* आबए । *हम तोरा लग बसलिअहु* ॥ १७ ॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अतिनीच तोराशब्दार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *अलिऔक* आबए। *रओ भगबना, हम तोरा लग बसलिऔक; तोर घर देखलिऔक* ॥ १८ ॥

भूताधिकारमे हमअहाँकर्तृपदक तिङ् समास

भूताधिकारश्च समाप्तः

सारिणी २२ : सकर्मक धातुक भूततिङ्चक्र

संकेत

अनादर ···· अना.	विवक्षितक्रियाफल··· विव.
आदर ···· ···· आद.	हओपदेँ संबोध्य ··· हसं.
अविवक्षित क्रियाफल····अवि.	रओपदेँ संबोध्य ··· रसं.

१. *अना.*	लोक	—	—	*अवि.*	देखलक
२	,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखलकैक
३	,,	*आद.*	हुनका	,,	देखलकैन्हि
४	,,	*हसं.*	तोरा	,,	देखलकहु
५	,,	*रसं*	तोरा	,,	देखलकौक
१ *आद.*	बाबूजी	—	—	*अवि.*	देखलैन्हि
२	,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखलथीन्ह
३	,,	*आद.*	हुनका	,,	,,
४	,,	*हसं./रसं.*	तोरा	,,	देखलथून्ह
१ *हसं.*	हओ तोँ	—	—	*अवि.*	देखलह
२	,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखलहक
३	,,	*आद.*	हुनका	,,	देखलहून्ह
१ *रसं.*	रओ तोँ	—	—	*अवि.*	देखलेँ
२	,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखलहीक
३	,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	देखलहून्ह
१ —	हम वा अहाँ	—	—	*अवि.*	देखल वा देखलहुँ
२	,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखलिऐक
३	,,	*आद.*	हुनका	,,	देखलिऐन्हि
४	हम	*हसं.*	तोरा	,,	देखलिअहु
५	,,	*रसं.*	तोरा	,,	देखलिऔक

सारिणी २३ : अकर्मक धातुक भूततिङ्चक्र

१ *अना.*	लोक	—	—	*अवि.*	बसल
२	,,	*अना.*	ओकरा लग	*विव.*	बसलैक
३	,,	*आद.*	हुनका लग	,,	बसलैन्हि
४	,,	*हसं.*	तोरा लग	,,	बसलहु
५	,,	*रसं.*	तोरा लग	,,	बसलौक
१ *आद.*	महाराज	—	—	*अवि.*	बसलाह
२	,,	*अना.*	ओकरा लग	*विव.*	बसलथीन्ह
३	,,	*आद.*	हुनका लग	,,	,,
४	,,	रसं/हसं.	तोरा लग	,,	बसलथून्ह
१ *हसं.*	हओ तोँ	—	—	*अवि.*	बसलाह
२	,,	*अना.*	ओकरा लग	*विव.*	बसलहक
३	,,	*आद.*	हुनका लग	,,	बसलहून्ह
१ *रसं.*	रओ तोँ	—	—	*अवि.*	बसलेँ
२	,,	*अना.*	ओकरा लग	*विव.*	बसलहीक
३	,,	*आद.*	हुनका लग	,,	बसलहून्ह
१	हम वा अहाँ	—	—	*अवि.*	बसलहुँ
२	,,	*अना.*	ओकरा लग	*विव.*	बसलिऐक
३	,,	*आद.*	हुनका लग	,,	बसलिऐन्हि
४	हम	*हसं.*	तोरा लग	,,	बसलिअहु
५	,,	*रसं.*	तोरा लग	,,	बसलिऔक

अथ भविष्याधिकार

भविष्यमे कर्तृगत अनादरमे *अत* ॥१॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अतैक*॥२॥ आदरमे *अतैन्हि*॥३॥ क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अतहु* ॥४॥ अत्यधम तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अतौक* ॥५॥

आब भविष्यदर्थक तिङ् कहल जाइछ। भविष्यकालमे कर्तृगत अनादरमे धातुसँ पर *अत* तिङ् अबैत अछि। *नोकर खेत देखत। लगमे बसत* ॥ १ ॥

भविष्यकालमे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल जँ अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, तोँ एहिसँ अन्यगामी प्रतीत रहए तँ तद्गत अनादरमे *अतैक*, ओ तद्गत आदरमे *अतैन्हि* आबए *हरिहरबा नेनाकेँ देखतैक। नोकर महाराजक लग रहतैन्हि* ॥ २-३ ॥

भविष्यकालमे कर्तृगत अनादरमे क्रियाक फल जँ तोराशब्दार्थगामी हो तँ धातुसँ पर *अतहु* अबैतअछि। *हरिहरबा तोहर कार्य देखतहु* ॥ ४ ॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अत्यधम तोराशब्दार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *अतौक* अबैछ। *रओ गेनबा, तोर कार्य हरिहरबा देखतौक* ॥ ५ ॥

भविष्य अधिकारमे अनाद्रियमाणकर्तृबोधक तिङ् समाप्त

कर्तृगत आदरमे *अताह* ॥६॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ *अथीन्ह* ॥७॥ तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अथून्ह* ॥८॥

भविष्यकालमे कर्तृगत आदरमे धातुसँ पर *अताह* अबैतअछि। *काल्हि महाराज देखताह वा बसताह* ॥ ६ ॥

भविष्यकालमे कर्तृगत आदरमे क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, ताँ सँ भिन्नगत सन्ताँ धातुसँ पर *अथीन्ह* अबैतअछि। *महाराज नेनाकेँ देखथीन्ह; ओकरापर कृपायुक्त रहथीन्ह* ॥ ७ ॥

भविष्यकालमे कर्तृगत आदरमे क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *अथून्ह* आबए। *हओ संगी, महाराज तोरा देखथून्ह; तोरापर सानुग्रह रहथून्ह* ॥ ८ ॥

भविष्य अधिकारमे आद्रियमाणकर्तृपदक तिङ् समाप्त

ताँ कर्तृपद रहने *अबह* ॥९॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अबहक* ॥१०॥

भविष्यकालमे अधमार्थक ताँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अबह* अबैतअछि। *हओ संगी, ताँ देखबह वा बसबह* ॥ ९ ॥

भविष्यकालमे पूर्वोक्त ताँ शब्द कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अबहक* अबैत अछि। *हओ संगी, ताँ नेनाकेँ देखबहक; लगमे रहबहक* ॥ १० ॥

अत्यधमार्थक ताँ कर्तृपद रहने *अबेँ* ॥११॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अबहीक* ॥१२॥ ताँ कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत आदरमे *अबहून्ह* ॥१३॥

भविष्यकालमे अत्यधमार्थक ताँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अबेँ* अबैतअछि। *रओ हरिहरबा, ताँ नाच देखबेँ; राति भरि जगबेँ* ॥ ११ ॥

भविष्यकालमे अत्यधमार्थक ताँ शब्द कर्तृपद रहने क्रियाफल कर्ता, हम, अहाँ, ताँ एतद्भिन्नगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अबहीक* अबैत अछि। *रओ हरिहरबा, ताँ नेनाकेँ देखबहीक* ॥ १२ ॥

भविष्यकालमे अधमार्थक वा अत्यधमार्थक ताँ शब्द कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत आदरमे *अबहून्ह* अबैतअछि। *हओ संगी, वा रओ हरिहरबा, ताँ हुनका देखबहून्ह* ॥ १३ ॥

भविष्य अधिकारमे ताँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

हम अहाँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अब* ॥१४॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अबैक* ॥ १५ ॥ आदरमे *अबैन्हि* ॥१६॥ क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अबहु* ॥१७॥ अत्यधम तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अबौक* ॥१८॥

भविष्यकालमे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अब* अबैतअछि। *हम वा अहाँ दश दिनक पछाति पुस्तक देखब* ॥१४॥

भविष्यकालमे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने क्रियाफल यदि अन्यगत हो तँ तद्गत अनादरमे *अबैक* अबैतअछि, ओ तद्गत आदरमे *अबैन्हि* अबैतअछि। *हम वा अहाँ ओकरा देखबैक; ओकरा लग रहबैक*। आदरमे, *हम वा अहाँ हुनका देखबैन्हि; हुनका लगमे रहबैन्हि* ॥१५-१६॥

भविष्यकालमे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल यदि तोराशब्दार्थगत बुझल जाए तँ धातुसँ पर *अबहु* आबए। *हओ, हम तोरा बालककेँ देखबहु* ॥ १७ ॥

भविष्यकालमे हम कर्तृपद रहने क्रियाक फल यदि अत्यधम तोराशब्दार्थगत हो तँ धातुसँ पर *अबौक* तिङ् आबए। *रओ, हम तोरा घरक वस्तु देखबौक* ॥ १८ ॥

भविष्य अधिकारमे हमअहाँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

भविष्य अधिकारो समाप्त

सारिणी २४ : भविष्यतिङ्चक्र

संकेत

अनादर .... *अना.*
आदर .... *आद.*
अविवक्षित क्रियाफल ...*अवि.*
विवक्षित क्रियाफल ... विव.
हओपदेँ संबोध्य ... हसं.
रओपदेँ संबोध्य ... रसं.

१	*अना.*	लोक	–	–	*अवि.*	देखत
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखतैक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखतैन्हि

४		,,	हसं.	तोरा	,,	देखतहु
५		,,	रसं.	तोरा	,,	देखतौक
१	आद.	महाराज	–	–	अवि.	देखताह
२		,,	अना.	ओकरा	विव.	देखथीन्ह
३		,,	आद.	हुनका	,,	,,
४		,,	हसं/रसं.	तोरा	,,	देखथून्ह
१	हसं.	हओ तोँ	–	–	अवि.	देखबह
२		,,	अना.	ओकरा	विव.	देखबहक
३		,,	आद.	हुनका	,,	देखबहून्ह
१	रसं.	रओ तोँ	–	–	अवि.	देखबैं
२		,,	अना.	ओकरा	विव.	देखबहीक
३		,,	आद.	हुनका	,,	देखबहून्ह
१		हम वा अहाँ	–	–	अवि.	देखब
२		,,	अना.	ओकरा	विव.	देखबैक
३		,,	आद.	हुनका	,,	देखबैन्हि
४		हम	हसं.	तोरा	,,	देखबहु
५		,,	रसं.	तोरा	,,	देखबौक

अथ प्रेरणाधिकार

प्रेरणामे कर्तृगत अनादरमे *अओ* ॥१॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे *औक* ॥२॥ आदरमे *औन्हि* ॥३॥ क्रियाफल तोरा-शब्दार्थगत सन्ताँ *अहु* ॥४॥ अतिनीच तोरा-शब्दार्थगत सन्ताँ *औक* ॥५॥

कालबोधक तिङ् कहि प्रेरणा अर्थात् विधि, तद्बोधक तिङ् कहल जाइछ ।

प्रेरणामे कर्तृगत अनादरमे धातुसँ पर *अओ* अबैतअछि । *लोक देखओ; बसओ* ॥ १ ॥

प्रेरणामे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे धातुसँ पर *औक* आबए । *नोकर नेनाक लग रहौक; ओकर कार्य देखौक* ॥ २ ॥

प्रेरणामे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत आदरमे धातुसँ पर *औन्हि* आबए । *सोनमा हुनका देखौन्हि; लगमे रहौन्हि* ॥ ३ ॥

उक्त विषयमे क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अहु* अबैतअछि । *लोक तोरा देखहु; लगमे बसहु* ॥ ४ ॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अतिनीच तोराशब्दार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *औक* अबैत अछि। *लोक ओकरा देखौक; ओकर कार्य कए दौक; लगमे बसौक* ॥ ५ ॥

प्रेरणाधिकारमे अनाद्रियमाणकर्तृपदक तिङ् समाप्त

कर्तृगत आदरमे *अथु* ॥६॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ *अथून्ह* ॥७॥

प्रेरणामे कर्तृगत आदरमे धातुसँ पर *अथु* अबैतअछि । *महाराज प्रजाकेँ देखथु* ॥ ६ ॥

प्रेरणामे कर्तृगत आदरमे यदि क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, तोँ एतद्भिन्नगत हो तँ धातुसँ पर *अथून्ह* आबए । *महाराज प्रजाकेँ देखथून्ह; विद्वानक आदर करथून्ह* ॥ ७ ॥

प्रेरणाधिकारमे आदरणीयकर्तृबोधक तिङ् समाप्त

तोँ कर्तृपद रहने *अह* ॥८॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे *अहक* ॥९॥ आदरमे *अहून्ह* ॥१०॥ अतिनीच तोँ कर्तृपद रहने *अ* ॥११॥

प्रेरणामे तोँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अह* अबैतअछि । *हओ, तोँ देखह* ॥ ८ ॥

प्रेरणामे तोँ कर्तृ पद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे धातुसँ पर *अहक* अबैत अछि । *हओ, तोँ नेनाकेँ देखहक* ॥ ९ ॥

प्रेरणामे तोँ कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत आदरमे धातुसँ पर *अहून्ह* आबए । *हओ, तोँ हुनका देखहून्ह* ॥ १० ॥

प्रेरणामे अतिनीचार्थक तोँ शब्द कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अ* अबैतअछि । *रओ, तोँ देख; बस* ॥ ११ ॥

क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे *अहीक* ॥१२॥ आदरमे *अहून्ह* ॥१३॥

प्रेरणामे अतिनीचार्थक तोँ शब्द कर्तृपद रहने, क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ, तद्गत अनादरमे *अहीक* अबैत अछि । *रओ, तोँ ओकरा देखहीक* ॥ १२ ॥

प्रेरणामे अतिनीच तोँ कर्तृपद रहने, क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ, तद्गत आदरमे धातुसँ पर *अहून्ह* हो । *रओ, तोँ हुनका देखहून्ह* ॥ १३ ॥

प्रेरणाधिकारमे तोँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

हम अहाँ कर्तृपद सन्ताँ ऊ ॥१४॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे इऔक ॥१५॥ आदरमे इऔन्हि ॥१६॥ क्रियाफल तोरा शब्दार्थगत सन्ताँ इअहु ॥१७॥ अतिनीच तोरा शब्दार्थगत सन्ताँ इऔक ॥१८॥

प्रेरणामे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर ऊ तिङ् अबैछ। *हम नाच देखू। अहाँ कार्य करू* ॥ १४ ॥

प्रेरणामे हम अहाँ कर्तृपद रहने क्रियाफल यदि अन्यगत हो तँ तद्गत अनादरमे इऔक आबए। *हम ओकरा देखिऔक। अहाँ ओकरा लग बसिऔक* ॥ १५ ॥

प्रेरणामे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल यदि अन्यगत हो तँ तद्गत आदरमे धातुसँ पर इऔन्हि आबए। *हम वा अहाँ हुनका देखिऔन्हि* ॥ १६ ॥

प्रेरणामे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल तोरा-शब्दार्थगत रहलासँ धातुसँ पर इअहु अबैतअछि। *हओ, हम तोहर घर देखिअहु* ॥ १७ ॥

प्रेरणामे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल अतिनीच तोरा-शब्दार्थगत रहलासँ धातुसँ पर इऔक अबैत अछि। *रओ, हम तोहर घर देखिऔक ?* ॥ १८ ॥

प्रेरणाधिकारमे हमअहाँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

प्रेरणाधिकारश्च समाप्तः

सारिणी २५ : प्रेरणातिङ्चक्र

संकेत

अनादर ···· *अना.* — विवक्षित क्रियाफल···· *विव.*

आदर ···· ····*आद.* — हओपदेँ संबोध्य··· *हसं.*

अविवक्षित क्रियाफल ····*अवि.* — रओपदेँ संबोध्य ····*रसं.*

१	*अना.*	लोक	–	–	*अवि.*	देखओ
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखौक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखौन्हि
४		,,	*हसं.*	तोरा	,,	देखहु
५		,,	*रसं.*	तोरा	,,	देखौक
१	*आद.*	महाराज	–	–	*अवि.*	देखथु
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखथून्ह
३		,,	*आद.*	हुनका	*विव.*	देखथून्ह
४		,,	*रसं.*	तोरा	,,	देखथून्ह
			हसं	,,	,,	,,
१	*हसं.*	हओ तोँ	–	–	*अवि.*	देखह
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखहक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखहून्ह
१	*रसं.*	रओ तोँ	–	–	*अवि.*	देख
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखहीक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखहून्ह
१	–	हम वा अहाँ	–	–	*अवि.*	देखू
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखिऔक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखिऔन्हि
४		हम	*हसं.*	तोरा	,,	देखिअहु
५		,,	*रसं.*	तोरा	,,	देखिऔक

अथ इच्छाधिकार

इच्छामे कर्तृगत अनादरमे *अय* ॥१॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *ऐक* ॥२॥ आदरमे *ऐन्हि* ॥३॥ क्रियाफल तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अहु* ॥४॥ अतिनीच तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *औक* ॥५॥

इच्छामे कर्तृगत अनादरमे धातुसँ पर *अय* अबैतअछि। *हमरा इच्छा जे लोक नाच देखय। आनन्द होअय।* एहिठाम इच्छा प्रयोग कएनिहारक जानब ॥ १ ॥

इच्छामे कर्तृगत अनादरमे क्रियाफल अन्यगत अर्थात् कर्ता, हम, अहाँ, तोँ एतद्भिन्नगत रहलासँ तद्गत अनादरमे *ऐक*, ओ तद्गत आदरमे *ऐन्हि* आबए। *हमरा इच्छा जे लोक नेनाकेँ देखैक; पाहुनकेँ देखैन्हि* ॥ २-३ ॥

इच्छामे कर्तृगत अनादरमे यदि क्रियाफल तोराशब्दार्थगत हो तँ धातुसँ पर *अहु* आबए। *हओ, तोरा लोक देखहु* ॥ ४ ॥

इच्छामे कर्तृगत अनादरमे यदि क्रियाफल अतिनीचार्थक तोराशब्दार्थगत हो तँ धातुसँ पर *औक* आबए। *रओ, लोकसब तोरापर प्रसन्न रहौक* ॥ ५ ॥

इच्छाधिकारमे अनाद्रितकर्तृपदक तिङ् समाप्त

कर्तृगत आदरमे *अथि* ॥६॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ *अथीन्ह* ॥७॥ तोराशब्दार्थगत सन्ताँ *अथून्ह* ॥८॥

इच्छामे कर्तृगत आदरमे धातुसँ पर *अथि* आबए। *महाराज प्रजाकँ देखथि* ॥ ६ ॥

इच्छामे कर्तृगत आदरमे क्रियाफल कर्ता, हम, अहाँ एतद्भिन्नगत सन्ताँ धातुसँ पर *अथीन्ह*, तोरा शब्दार्थगत सन्ताँ *अथून्ह* आबए। *हमरा इच्छा जे महाराज ओकरा वा हुनका देखथीन्ह*। *हओ वा रओ, महाराज तोरा सङ्ग लय जाथून्ह* ॥ ७-८ ॥

इच्छाधिकारमे आदरणीयकर्तृपदक तिङ् समाप्त

तोँ कर्तृपद रहने *अह* ॥९॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *अहक* ॥१०॥ आदरमे *अहून्ह* ॥११॥ नीचतम तोँ कर्तृपद रहने *अहिँ* ॥१२॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे *अहीक* ॥१३॥ आदरमे *अहून्ह* ॥१४॥

तोँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर इच्छामे *अह* तिङ् प्रत्यय अबैछ। *हओ सङ्गी, हमरा इच्छा जे तोँ पुस्तक देखह* ॥ ९ ॥

तोँ कर्तृपद रहने क्रियाफल यदि अन्यगत हो तँ तद्गत अनादरमे धातुसँ पर इच्छामे *अहक* आबए। *हओ सङ्गी, हमरा इच्छा जे तोँ शङ्करबाकँ देखहक; ओकरा सङ्ग अबहक* ॥ १० ॥

तोँ कर्तृपद सन्ताँ क्रियाफल यदि अन्यगत हो तँ तद्गत आदरमे धातुसँ पर इच्छामे *अहून्ह* अबैत अछि। *हओ संगी, हमरा इच्छा जे तोँ बाबूजीकँ देखहून्ह; हुनका सङ्ग अबहून्ह* ॥ ११ ॥

इच्छामे अतिनीचार्थक तोँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *अहिँ* अबैतअछि। *रओ, तोँ देखहिँ* ॥ १२ ॥

इच्छामे अतिनीचार्थक तोँ शब्द कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे धातुसँ पर *अहीक* आबए। *रओ, तोँ ओकरा देखहीक* ॥ १३ ॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अन्यगत रहने तद्वत आदरमे धातुसँ पर *अहून्ह* आबए। रओ, तोँ हुनका देखहून्ह ॥ १४ ॥

इच्छाधिकारमे तोँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

हम अहाँ कर्तृपद रहने *ई* ॥१५॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इऐक* ॥१६॥ आदरमे *इऐन्हि* ॥१७॥ क्रियाफल तोरापदार्थगत ... ॥१८॥ अतिनीच तोरा शब्दार्थगत सन्ताँ *इऔक* ॥१९॥

इच्छामे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर *ई* प्रत्यय आबए। *हम वा अहाँ देखी* ॥ १५ ॥

इच्छामे हम वा अहाँ कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्वत अनादरमे धातुसँ पर *इऐक*, आदरमे *इऐन्हि* अबैतअछि। *हम वा अहाँ ओकरा देखिऐक; हुनका देखिऐन्हि* ॥ १६-१७ ॥

इच्छामे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल तोरापदार्थगत सन्ताँ धातुसँ पर *इअहु* आबए। *हओ संगी, हम तोहर घर देखिअहु* ॥ १८ ॥

इच्छामे हम कर्तृपद रहने अतिनीच तोरा शब्दार्थगत क्रियाफल सन्ताँ धातुसँ पर *इऔक* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। *रओ, हम तोरा देखिऔक* ॥ १९ ॥

इच्छाधिकारमे हमअहाँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

इच्छाधिकारश्च संपूर्णः

सारिणी २६ : इच्छातिङ्चक्र

१	*अना.*	लोक	–	–	*अवि.*	देखय(ए)
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखैक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखैन्हि
४		,,	*हसं.*	तोरा	,,	देखहु
५		,,	*रसं.*	तोरा	,,	देखौक
१	*आद.*	महाराज	–	–	*अवि.*	देखथि
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखथीन्ह
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	,,
४		,,	*हसं./रसं.*	तोरा	,,	देखथून्ह
१		हओ तोँ	–	–	*अवि.*	देखह
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखहक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखहून्ह
१		रओ तोँ	–	–	*अवि.*	देखहिँ
२		,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखहीक
३		,,	*आद.*	हुनका	,,	देखहून्ह

१	हम वा अहाँ	–	–	*अवि.*	देखी
२	,,	*अना.*	ओकरा	*विव.*	देखिऐक
३	,,	*आद.*	हुनका	,,	देखिऐन्हि
४	हम	*हसं.*	तोरा	,,	देखिअहु
५	,,	*रसं.*	तोरा	,,	देखिऔक

अथ अनिष्पत्त्यधिकार

क्रियाक अनिष्पत्ति सन्ताँ कार्यकारणभावापन्नक्रियाबोधक धातुसँ कर्तृगत अनादरमे भूतमे नित्य भविष्यमे वैकल्पिक *ऐत* ॥१॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतैक* ॥२॥ आदरमे *इतैन्हि* ॥३॥ क्रियाफल तोरापदार्थगत सन्ताँ *इतहु* ॥४॥ अत्यधम तोरापदार्थगत सन्ताँ *इतौक* ॥५॥

क्रियाक अनिष्पत्ति अर्थात् असिद्धि गम्यमान सन्ताँ कार्य-कारणभावापन्न क्रियाबोधकसँ अर्थात् फलीभूतक्रियाबोधक ओ कारणी-भूतक्रियाबोधक दुहू धातुसँपर कर्तृगत अनादरमे भूतमे नित्य भविष्यकालमे वैकल्पिक *ऐत* तिङ् प्रत्यय अबैतअछि। भूतमे उदाहरण–*वर्षा होइत तँ अन्न उपजैत*। भविष्यकालमे *आबहुँ जँ कोनो अवलम्ब होइत तँ निर्वाह चलैत* वा *अवलम्ब होएत तँ निर्वह चलत* । एवम् आगहुँ जानब ॥ १ ॥

अन्न उपजब फल थीक, ओकर कारण वर्षा होएब। एवम् अवलम्ब होएब निर्वाह चलबाक कारण थीक। उक्त विषयमे यदि अन्यगत क्रियाफल विवक्षित हो तँ तद्गत अनादरमे *इतैक*, ओ तद्गत आदरमे *इतैन्हि* तिङ्प्रत्यय आबए। *बतहाकेँ जँ औषध होइतैक तँ उन्माद छुटितैक*। *जयलालकेँ जँ औषध होइतैन्हि तँ दुःख छुटितैन्हि* ॥ २-३ ॥

उक्त विषयमे क्रियाफल हओ पदसंबोध्य तोरापदार्थगत रहने *इतहु* तिङ् अबैतअछि। *हओ, तोरा जँ चोर देखितहु तँ डर होइतहु*॥४॥

उक्त विषयमे अत्यधम तोरा पदार्थगत अर्थात् रओपदसंबोध्य तोरा शब्दार्थगामी क्रियाफल सन्ताँ *इतौक* तिङ् अबैत अछि। *रओ, तोरा जँ चोर देखितौक तँ भय होइतौक* ॥५॥

अनिष्पत्त्यधिकारमे अनाद्रियमाणकर्तृपदक तिङ् समाप्त

कर्तृगत आदरमे *इतथि* ॥६॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ *इतथीन्ह* ॥७॥ तोरापदार्थगत सन्ताँ *इतथून्ह* ॥८॥

कर्तृगत आदरमे क्रियाक असिद्धि रहने कार्यकारणभावापन्नक्रियाबोधकधातुसँ पर भूतमे नित्य, भविष्यमे वैकल्पिक *इतथि* तिङ् अबैत अछि। *गुरुजी रहितथि तँ पाठ दितथि* ॥६॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ *इतथीन्ह* प्रत्यय अबैत अछि। *गायकलोकनि ओकरा वा हुनका देखितथीन्ह तँ प्रसन्न होइतथीन्ह*। क्रियाफलक अविवक्षामे सामान्य पूर्वोक्त *इतथि* सएह होएत। *गायकलोकनि ओकरा वा हुनका देखितथि तँ प्रसन्न होइतथि* ॥७॥

उक्त विषयमे क्रियाफल तोरापदार्थगत सन्ताँ *इतथून्ह* तिङ् प्रत्यय आबए। *पाहुन तोरा देखितथून्ह यदि बुझितथून्ह जे तोँ छह वा छँ* ॥८॥

अनिष्पत्त्यधिकारमे आद्रियमाणकर्तृपदक तिङ् समाप्त

तोँ कर्तृपद रहने *इतह* ॥९॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतहक* ॥१०॥ आदरमे *इतहून्ह* ॥११॥ अतिनीच तोँ कर्तृपद रहने *इतेँ* ॥१२॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतहीक* ॥१३॥ आदरमे *इतहून्ह* ॥१४॥

तोँ कर्तृपद रहने क्रियाक अनिष्पत्ति सन्ताँ कार्यकारणभावापन्न क्रियाबोधक धातुसँ पर भूतमे नित्य, भविष्यमे वैकल्पिक *इतह* तिङ्प्रत्यय अबैतअछि। *हओ, तोँ रहितह तँ कार्य चलबितह* ॥९॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतहक* आबए, ओ तद्गत आदरमे *इतहून्ह*। *हओ, तोँ नेनाक लग रहितहक तँ ओकर पालन करितहक। हओ, तोँ बाबाजीकेँ देखितहून्ह तँ हुनका रखितहून्ह* ॥१०-११॥

अतिनीचार्थक तोँ कर्तृपद रहने क्रियाक अनिष्पति सन्ताँ उक्त धातुसँ पर भूतमे नित्य, भविष्यमे वैकल्पिक *इतेँ* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। ई प्रत्यय परत्वात् ओ अनवकाशत्वात् *इतह* प्रत्ययक बाधक जानब। तँ *रओ, तोँ देखितह* एहन प्रयोग नहि भेल, किन्तु *रओ, तोँ देखितेँ* एतादृशे ॥१२॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतहीक*, ओ तद्गत आदरमे *इतहून्ह* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। *रओ तोँ, ओकरा देखितहीक तँ आवेश करितहीक। हुनका देखितहून्ह तँ हुनक आवेश करितहून्ह* ॥१३-१४॥

अनिष्पत्त्यधिकारमे तोँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

हम अहाँ कर्तृपद रहने *इतहुँ* ॥१५॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतिऐक* ॥१६॥ आदरमे *इतिऐन्हि* ॥१७॥ क्रियाफल तोरा पदार्थगत सन्ताँ *इतिअहु* ॥१८॥ अत्यधम तोरा पदार्थगत सन्ताँ *इतिऔक* ॥१९॥

हम वा अहाँ कर्तृपद रहने क्रियाक अनिष्पत्ति सन्ताँ उक्त धातुसँ भूतमे नित्य, भविष्यमे वैकल्पिक *इतहुँ* तिङ्प्रत्यय अबैत अछि। *हम वा अहाँ नाच देखितहुँ तँ आनन्द होइतहुँ*॥१५॥

उक्त विषयमे क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे *इतिऐक*, ओ तद्गत आदरमे इतिऐन्हि आबए। *हम वा अहाँ ओहिठाम रहने ओकरा देखितिऐक, हुनका देखितिऐन्हि* ॥१६-१७॥

उक्त विषयमे हम कर्तृपद रहने क्रियाफल तोरा पदार्थगत सन्ताँ *इतिअहु*, ओ अत्यधम तोरा पदार्थगत सन्ताँ *इतिऔक* आबए। *हओ, ओहिठाम रहने हम तोरा देखितिअहु। रओ, हम जँ तोरा देखितिऔक तँ राखि लितिऔक।*

सर्वत्र क्रियाफलक अविवक्षामे सामान्य प्रत्यय आबए ओ उत्तरोत्तर प्रत्ययक पूर्व पूर्व प्रत्यय बाधक, एहि दुहू विषयक अनुसन्धान कए लेब ॥१८-१९॥

अनिष्पत्त्यधिकारमे हमअहाँकर्तृपदक तिङ् समाप्त

अनिष्पत्त्यधिकारश्च संपूर्णः

सारिणी २७ : अनिष्पत्ति तिङ्चक्र

१.	*अना*	लोक	–	–	*अवि*	देखैत
२.		,,	*अना*	ओकरा	*विव*	देखितैक
३.		,,	*आद*	हुनका	,,	देखितैन्हि
४.		,,	*हसं*	तोरा	,,	देखितहु
५.		,,	*रसं*	तोरा	,,	देखितौक
१.	*आद*	महाराज	–	–	*अवि*	देखितथि
२.		,,	*अना*	ओकरा	*विव*	देखितथीन्ह
३.		,,	*आद*	हुनका	*विव*	,,
४.		,,	*रसं/हसं*	तोरा	*विव*	देखितथून्ह
१.	*हसं*	हओ तौँ	–	–	*अवि*	देखितह
२.		,,	*अना*	ओकरा	*विक*	देखितहक
३.		,,	*आद*	हुनका	,,	देखितहून्ह
१.	*रसं*	रओ तौँ	–	–	*अवि*	देखितैँ
२.		,,	*अना*	ओकरा	*विव*	देखितहीक
३.		,,	*आद*	हुनका	,,	देखितहून्ह
१.		हम वा अहाँ	—	—	*अवि*	देखितहुँ
२.		,,	*अना*	ओकरा	*विव*	देखितिऐक

३.	,,	*आद*	हुनका	,,	देखितिऐन्हि
४.	हम	*हसं*	तोरा	,,	देखितिअहु
५.	,,	*रसं*	तोरा	,,	देखितिऔक

अथ भविष्यद्व्यापारानुज्ञाधिकार

भविष्यद्व्यापारानुज्ञामे तौँ कर्तृपद रहने इहह ॥१॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे इहक ॥२॥ आदरमे इहौन्हि ॥३॥ अत्यधम तौँ कर्तृपद रहने इहैँ ॥४॥ क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे इहैक ॥५॥ आदरमे इहौन्हि ॥६॥

भविष्यव्यापारक आज्ञामे तौँ कर्तृपद रहने धातुसँ पर इहह अबैत अछि। *तौँ गाम जाएकँ कार्य देखिहह* ॥१॥

भविष्यद्व्यापारानुज्ञामे तौँ कर्तृपद रहने क्रियाफल अन्यगत सन्ताँ तद्गत अनादरमे इहक, ओ तद्गत आदरमे इहौन्हि प्रत्यय धातुसँ पर अबैत अछि। *तौँ ओकर कार्य देखिहक; हुनको कार्य देखिहौन्हि* ॥२-३॥

अत्यधम तौँ शब्द कर्तृपद रहने उक्त अर्थमे धातुसँ पर इहैँ प्रत्यय अबैत अछि। *रओ हरिहरबा, तौँ कालिहसँ कार्य देखिहैँ* ॥४॥

भविष्यद्व्या पारानुज्ञामे अत्यधम तौँ शब्द कर्तृपद रहने अन्यगत क्रियाफल सन्ताँ तद्गत अनादरमे इहैक आबए। *रओ, तौँ ओकर कार्य देखिहैक*॥५॥

भविष्यद्व्यापारानुज्ञामे अत्यधम तौँ कर्तृपद रहने अन्यगत क्रियाफल सन्ताँ तद्गत आदरमे धातुसँ पर इहौन्हि अबैत अछि। *रओ, तौँ हुनक कार्य देखिहौन्हि* ॥६॥

भविष्यद्व्यापारानुज्ञाधिकार समाप्त

सारिणी २८ : भविष्यद्व्यापारानुज्ञा तिङ्चक्र

१.	हओ तौँ	–	देखिहह
२.	,,	ओकरा	देखिहक
३.	,,	हुनका	देखिहौन्हि
१.	रओ तौँ	–	देखिहैँ
२.	,,	ओकरा	देखिहैक
३.	,,	हुनका	देखिहौन्हि

स्त्रीलिङ्ग कर्तृपद सन्ताँ *अताह, अलाह, अत, अलक* स्थान *अतीह, अलीह, अति, अलि* ॥१॥ भूततिङ्सँ पर प्रयुक्त अछि अव्यय समीपभूतकालक

बोधक ॥२॥ भविष्यसँ पर *गय* विप्रकृष्ट भविष्यक ॥३॥ प्रेरणासँ पर विप्रकृष्ट देशक ॥४॥ ऐन्हि संनिकृष्ट देशक ॥५॥

अताह, अलाह, अत, अल तिङ्प्रत्यय जे कहल गेल अछि स्त्रीलिङ्ग कर्तृपद रहलासँ ओकरा स्थान क्रमशः *अतीह, अलीह, अति, अलि* आदेश हो। *महारानी दान करतीह, प्रसन्न रहतीह। कन्या सासुर बसलीह। ओ स्त्री देखति; बसलि*॥१॥

भूतार्थक जे तिङ् ताहिसँ पर प्रयुक्त *अछि* ई अव्यय समीपवर्ती भूतकालक बोधक होइत अछि। *महाराज कहलैन्हि अछि। तोँ बसलाह अछि*॥२॥

भविष्यदर्थक तिङ्सँ पर *गय* ई अव्यय विप्रकृष्ट कालक बोधक होइत अछि। *महाराज देताह गय* ॥३॥

प्रेरणार्थक तिङ्सँ पर *गय* ई अव्यय दूरदेशक बोधक, ओ *ऐन्हि* समीपदेशक बोधक होइछ। *पढ़ू गय, पढ़ू ऐन्हि* ॥४-५॥

तिङन्तमे सामान्यधातु प्रकरण समाप्त

बिकादिप्रकरण

'अन' पदसँ अनादि प्रत्यय ॥१॥ 'भूत' इत्यादि पदसँ भूताद्यर्थक तिङ् ॥२॥ धातु ग्रहणमे अन्त अकार उच्चारणार्थक ॥३॥ असंस्कृत शब्दमे *य* केँ *ए* सवदिश वैकल्पिक ॥४॥

एहि व्याकरणमे *'अन'* पदसँ अनादिप्रत्यय लेल जाए अर्थात् जकर आदि अन् शब्द हो से प्रत्यय ग्राह्य थीक। यथा *अन, अना, अनाइ, अनिहार, अने* । ई प्रत्ययसभ कृत्प्रकरणमे भेटत। *अने* अनुप्रयोग प्रकरणहुमे। ओ *अल्क* स्थान *अने* विभक्तिप्रकरणहुमे कहल गेल अछि॥१॥

भूत, भविष्य इत्यादि पदसँ भूताद्यर्थक तिङ्प्रत्यय बुझब। आगाँ आबि ई संकेत कएल गेल अछि तेँ इतः पूर्वसूत्रसभमे ई संकेत नहि। आगाँ एकर उपयोग भेटत ॥२॥

धातुविशेषग्रहणमे अन्तिम अकार उच्चारणार्थक अर्थात् उच्चारणमे सौकर्यार्थ थीक, ग्रहणार्थ नहि। यथा "*ज ख* सँ *अ* प्रत्ययकेँ ओ।" एहिठाम ज तथा खमे अकार उच्चारणार्थक ॥३॥

संस्कृतसँ भिन्न शब्दमे जे *य* शब्द तकरा स्थान *ए* सवदिश विकल्पेँ होइत अछि। *खाएर, खायर। पाएर, पायर। माए, माय। अएना, अयना।* एवम् *बिकाएत, बिकायत* इत्यादि आगाँ उदाहरण आओत। *नियम, विनय, समय* इत्यादि संस्कृत थीक तेँ *ए* आदेश नहि ॥४॥

बिकादिसँ पर प्रत्ययादि *ऐ औ* केँ *आइ आउ* ॥५॥ *ई ऊ* तिङ्केँ ॥६॥

इकारादि प्रत्ययसँ पूर्व अकार आगम ॥७॥ *अत, अब, अय, अल,* प्रेरणा, इच्छाक आदि अकेँ *आ* ॥८॥ *अत, अब, अल, अन्,* भूत, भविष्यक आदि अवर्णसँ पर *य* आगम ॥९॥

बिकादिगण ग्रन्थशेष धातुपाठमे कहल जाएत। ओहि बिक इत्यादि धातुसँ पर जे प्रत्ययादि ऐ तकरा स्थान *आइ*, प्रत्ययादि औकारक स्थानमे *आउ* आदेश होइत अछि। *बिक् ऐत अछि = बिकाइत अछि। बिक् ऐक = बिकाइक । बिक्औक = बिकाउक । बिक्औन्हि = बिकाउन्हि ।* प्रत्ययादि कहलासँ *अहाँ ओकरा हेतु बिकइऔक* एहिठाम औकारकेँ *आउ* नहि भेल ॥५॥

बिकादि धातुसँ पर जे ई ऊ तिङ्प्रत्यय, तकरहु क्रमशः *आइ आउ* आदेश होइत अछि। हम *बिकाइ; अहाँ बिकाउ*। तिङ्भिन्नकेँ नहि, *हड़बड़ी* ॥६॥

बिकादिसँ पर जे इकारादि प्रत्यय ताहिसँ पूर्व अकार आगम। *हम बिकइतहुँ, तोँ नहइतह* ॥७॥

बिकादि धातुसँ पर *अत, अब, अय, अल*, प्रेरणार्थक, इच्छार्थक जे प्रत्यय ताहि सबहिक प्रथम अकारकेँ आकार आदेश हो। *वस्तु बिकाओ। महाराज नहाथु, नहाथि। बिक् आत, बिक् आब* इत्यादि स्थिति भेल ॥८॥

बिकादिसँ पर जे *अत, अब, अल, अन्* अर्थात् अनादि *अना, अनाइ, अनिहार, अने*, भूतार्थक, भविष्यदर्थक प्रत्यय तकर प्रथम अवर्णसँ पर *य* आगम होइत अछि। *य*केँ एकारादेश विकल्प पूर्वोक्त सूत्रसँ। *वस्तु बिकायत* वा *बिकाएत। हम नहायब* वा *नहाएब*। एवम् *बिकायल, बिकाएल; नहयना गेल, नहएना गेल । नहयलाह, नहएलाह । बिकयलैक, बिकएलैक*॥९॥

जसँ *अल, अन*, भूतक पहिल अवर्णकेँ *ए*, पूर्व जकेँ *ग* ॥१०॥ *ज ख*सँ *अ* प्रत्ययकेँ *ओ* ॥११॥

ज धातु बिकादि थीक। ताहिसँ पर जे *अल*, अनादि (*अना, अनिहार, अने*) ओ भूतार्थक प्रत्यय तकर पहिल अवर्णकेँ *ए* आदेश होइत अछि, तथा ओहि एकारसँ पूर्व *ज* धातुकेँ *ग* आदेश होइछ। *गेल अछि। कतेक दिन गेना भेल ? गेनिहार। गेने कार्य होएत। गेलाह*। ज गमे अकार उच्चारणार्थक जानब ॥१०॥

ज धातु ओ *ख* धातुसँ पर अकारात्मक प्रत्ययक स्थान ओकार होइत अछि। *तोँ जो; खो*। शेष बिकधातुवत् ॥११॥

बिकादि प्रकरण समाप्त

सारिणी २९ : बिकधातु तिङ्चक्र

(क) क्रियाफलक अप्रतिपादक

१. कर्त्ता	वर्तमान	भूत	भविष्य
वस्तु	बिकाइतअछि	बिकाएल	बिकाएत
भूपझा	बिकाइतछथि	बिकएलाह	बिकएताह
हओ तोँ	बिकाइतछह	बिकएलाह	बिकएबह
रओ तोँ	बिकाइतछेँ	बिकएलेँ	बिकएबेँ
हम	बिकाइतछी	बिकएलहुँ	बिकाएब
अहाँ	,,	,,	,,

२. कर्त्ता	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति
वस्तु	बिकाओ	बिकाए	बिकाइत
भूपझा	बिकाथु	बिकाथि	बिकइतथि
हओ तोँ	बिकाह	बिकाह	बिकइतह
रओ तोँ	बिका	बिकाहिँ	बिकइतेँ
हम	बिकाउ	बिकाइ	बिकइतहुँ
अहाँ	,,	,,	,,

(ख) क्रियाफलबोधक

१. कर्त्ता	फलभागी	वर्तमान	भूत	भविष्य
वस्तु	ओकरा हेतु	बिकाइतछैक	बिकएलैक	बिकएतैक
,,	हुनका हेतु	बिकाइतछैन्हि	बिकएलैन्हि	बिकएतैन्हि
,,	तोहरा हेतु	बिकाइतछहु	बिकएलहु	बिकएतहु
,,	तोरा हेतु	बिकाइतछौक	बिकएलौक	बिकएतौक
भूपझा	ओकरा हेतु	बिकाइतछथीन्ह	बिकएलथीन्ह	बिकएथीन्ह
,,	हुनका हेतु	,,	,,	,,
,,	तोहरा हेतु	बिकाइतछथून्ह	बिकएलथून्ह	बिकएथून्ह
,,	तोरा हेतु	,,	,,	,,

कर्त्ता	फलभागी	वर्तमान	भूत	भविष्य
हओ तोँ	ओकरा हेतु	बिकाइतछहक	बिकएलहक	बिकएबहक
,,	हुनका हेतु	बिकाइतछहून्ह	बिकएलहून्ह	बिकएबहून्ह
रओ तोँ	ओकरा हेतु	बिकाइतछहीक	बिकएलहीक	बिकएबहीक
,,	हुनका हेतु	बिकाइतछहून्ह	बिकएलहून्ह	बिकएबहून्ह
हम वा अहाँ	ओकराहेतु	बिकाइतछिऐक	बिकएलिऐक	बिकएबैक
,,	हुनका हेतु	बिकाइतछिऐन्हि	बिकएलिऐन्हि	बिकएबैन्हि
हम	तोहरा हेतु	बिकाइतछिअहु	बिकएलिअहु	बिकएबहु
,,	तोरा हेतु	बिकाइतछिऔक	बिकएलिऔक	बिकएबौक

२. कर्त्ता	फलभागी	प्रेरणा	इच्छा	अनिष्पत्ति	आज्ञाविशेष
वस्तु	ओकरा हेतु	बिकाउक	बिकाइक	बिकइतैक	–
,,	हुनका हेतु	बिकाउन्हि	बिकाइन्हि	बिकइतैन्हि	–
,,	तोहरा हेतु	बिकाहु	बिकाहु	बिकइतहु	–
,,	तोरा हेतु	बिकाउक	बिकाउक	बिकइतौक	–
भूपझा	ओकरा हेतु	बिकाथून्ह	बिकाथीन्ह	बिकइतथीन्ह	–
,,	हुनका हेतु	,,	,,	,,	–
,,	तोहरा हेतु	बिकाथून्ह	बिकाथून्ह	बिकइतथून्ह	–
,,	तोरा हेतु	,,	,,	,,	
हओ तोँ	ओकरा हेतु	बिकाहक	बिकाहक	बिकइतहक	बिकइहक
,,	हुनका हेतु	बिकाहून्ह	बिकाहून्ह	बिकइतहून्ह	बिकइहौन्हि
रओ तोँ	ओकरा हेतु	बिकाहीक	बिकाहीक	बिकइतहीक	बिकइहैक
,,	हुनका हेतु	बिकाहून्ह	बिकाहून्ह	बिकइतहून्ह	बिकइहौन्हि
हम वा अहाँ	ओकरा हेतु	बिकइऔक	बिकइऐक	बिकइतिऐक	–
,,	हुनका हेतु	बिकइऔन्हि	बिकइऐन्हि	बिकइतिऐन्हि	–
हम	तोहरा हेतु	बिकइअहु	बिकइअहु	बिकइतिअहु	–
,,	तोरा हेतु	बिकइऔक	बिकइऔक	बिकइतिऔक	–

अथ अबन्तधातुप्रकरण

अबन्त धातुसँ पर प्रत्ययादि अकारकेँ ओकार *त, थ, न, ल*सँ पूर्व, ताहिसँ पूर्व बकारक लोप ॥१॥ *अल, अत*सँ पूर्व दीर्घो ॥२॥ अबन्तकेँ यकार अबादिसँ पूर्व ॥३॥ अबसँ पूर्व उपान्त्यकेँ दीर्घो ॥४॥

अबन्त धातु धातुपाठमे पठित *जोगब* प्रभृति, ओ अब प्रत्ययान्त देखब्, पठब् इत्यादि, ओहि द्विविधो अबन्तसँ पर प्रत्ययक आदिभूत अकारक स्थान ओकार आदेश हो, यदि ओ अकार *त, थ, न, ल*सँ पूर्व रहए तथा ताहि ओकारसँ पूर्व बकारक लोप हो। *त* इत्यादिमे अकार उच्चारणार्थक थीक। उदाहरण–*जोगओताह*। *पठओताह*। *जोगओथून्ह*। *जोगओनिहार*। *जोगओलैँ* ॥१॥

अबन्तसँ पर *अल्क* ओ *अतक* अकारकेँ ओकार, पूर्व बलोप तथा दीर्घो होइत अछि। *देखाओल*। *जोगाओल*। *जोगाओत* ॥२॥

अबन्त धातुक अन्त्य बकारकेँ यकार हो, यदि अबादि प्रत्ययसँ पूर्व रहए। जकर आदि अब् हो से अबादि प्रत्यय भेल, यथा *अबह, अबैक, अबौक,* इत्यादि। उदाहरण–*पठयबह, पठएबह*। *यक* स्थान *ए* आदेश विकल्प ॥३॥

अबसँ पूर्व अबन्त धातुक अन्त्य बकारकेँ यकार हो तथा उपान्त्यकेँ दीर्घो हो। अन्त्यक समीप उपान्त्य। *जोगायब, जोगाएब* ॥४॥

प्राचीनक मतेँ अबादि प्रत्ययक अकारकेँ ओकार, पूर्व बलोप ॥५॥ अबसँ पूर्व दीर्घो ॥६॥ अबन्तसँ पर *अ* प्रत्ययकेँ *आ*, अबक विलोप ॥७॥ *ऊ*केँ *आउ* ॥८॥ *अथि, अथु, अह, अहिँ अहु, ई, अओ, अय*सँ पूर्व अबन्तक उपान्त्यकेँ दीर्घ विकल्प ॥९॥ एकस्वरमे नित्य ॥१०॥ स्वरपूर्वक जे अब तदन्तमे ॥११॥

प्राचीनक मतेँ अबन्त धातुसँ पर *अबह, अबैँ* इत्यादि जे अब्शब्दादिक प्रत्यय तकर प्रथम अकारक स्थान ओकार होइत अछि ओ पूर्वस्थित बकारक लोप। *पठओबह* ॥५॥

प्राचीनक मतेँ अबप्रत्ययसँ पूर्व बकारक लोप, दीर्घ, ओ अबक अकारकेँ ओकार हो–*पठाओब*। *आओब* ॥६॥

अबन्त धातुसँ पर अकारात्मक प्रत्ययक स्थान आकार होइत अछि ओ अबक विलोप–*पठा, जोगा, आ, गा* ॥७॥

अबन्त धातुसँ पर *ऊ*केँ *आउ* आदेश होइछ तथा पूर्वावस्थित अबक विलोप–*अहाँ पठाउ, आउ, गाउ* ॥८॥

अबन्त धातुक उपान्त्य स्वरकेँ दीर्घ विकल्प हो, *अथि, अथु अह, अहिँ, अहु, ई, अओ, अय*सँ पूर्व। *जोगाबथि, जोगबथि*। *देखाबथु, देखबथु*। *हँसाबह, हँसबह*। *मँगाबहिँ, मँगबहिँ*। *लिखाबहु, लिखबहु*। *जोगाबी, जोगबी*। *सिखाबओ, सिखबओ*। *हराबय, हरबय* ॥९॥

अबन्त जे एकस्वरक धातु तकर उपान्त्यकेँ दीर्घ नित्य हो *अथि* इत्यादि पूर्वोक्त प्रत्ययसँ पूर्व। *गाबथि, पाबथि, आबथि,* इत्यादि ॥१०॥

स्वरपूर्वक जे अब् तदन्तमे उक्त कार्य नित्य हो अर्थात् *ओरिअब्, भरिअब्* इत्यादिक उपान्त्यकेँ नित्यहि दीर्घ हो *अथि, अथु, अहि, अहिँ, अहु, ई, अओ, अय*सँ पूर्व। *ओरिआबथि, ओरिआबथु, ओरिआबह, ओरिआबहिँ, ओरिआबहु, ओरिआबी, ओरिआबओ, ओरिआबय(ए)*। एवम् *भरिआबथि*, इत्यादि ॥११॥

सरब, दब केँ अबन्तकार्य नहि ॥१२॥ अकर्मक लबकेँ ॥१३॥ अब् सकर्मक लबकेँ यकार अन् भूतसँ पूर्व ॥१४॥ अलसँ पूर्व उपान्त्यकेँ दीर्घो ॥१५॥

सरब धातु, दब धातु ओ अकर्मक लब धातुकेँ अबन्तनिमित्तक पूर्वोक्त कोनो कार्य नहि हो। *घैलसँ पानि सरबल*। *दङ्गलमे जयलाल दबलाह*। *हुनका भवदेव दबलैन्हि*। प्रथम वाक्यमे दब धातु अकर्मक, द्वितीयमे सकर्मक। *फलक भारसँ ठारि लबल अछि*। सकर्मक लबधातुकेँ अबन्तनिमित्तक कार्य होएबे करत। यथा *ओ पानि लबैत अछि, लाएल, लाओत*। एहीहेतु सूत्रमे 'अकर्मक' कहल अछि ॥१२-१३॥

अब धातु ओ सकर्मक लब धातु तकर बकारकेँ यकार हो अनूसँ पूर्व तथा भूतार्थकसँ पूर्व। अनूग्रहणेँ अनाइ, अने, अनिहार इत्यादिक ग्रहण पूर्व कहल अछि। अय(ए)नाइ, अय(ए)ने, अंय(ए)निहार, अय(ए)ना इत्यादि। एवं *लय(ए)नाइ, अय(ए)लाह, लय(ए)लाह इत्यादि* जानब ॥१४॥

अब धातु तथा सकर्मक *लब* धातु तकर बकारकेँ यकार हो तथा उपान्त्यकेँ दीर्घो होइत अछि *अल*सँ पूर्व। *आयल, आएल*। *लाय(ए)ल* ॥१५॥

इति अबन्तधातु प्रकरण

सारिणी ३० : अबन्त-पठब्धातु-तिङ्चक्र

(क) क्रियाफलक अबोधक

कर्त्ता	*भूत*	*भविष्य*	*प्रेरणा*	*इच्छा*
सोमना	पठओलक	पठाओत	पठा(ठ)बओ	पठा(ठ)बए
भूपझा	पठओलैन्हि	पठओताह	पठा(ठ)बथु	पठा(ठ)बथि
हओ तोँ	पठओलह	पठएबह	पठा(ठ)बह	पठा(ठ)बह
रओ तोँ	पठओलैँ	पठएबैँ	पठा	पठा(ठ)बहिँ
हम वा अहाँ	पठाओल पठओलहुँ	पठाएब	पठाउ	पठा(ठ)बी

(ख) क्रियाफलबोधक

कर्त्ता	*फलभाक्*	*भूत*	*भविष्य*	*प्रेरणा*	*इच्छा*
सोनमा	ओकरा	पठओलकैक	पठओतैक	पठा(ठ)बौक	पठबैक
,,	हुनका	पठओलकैन्हि	पठओतैन्हि	पठबौन्हि	पठबैन्हि
,,	तोरा	पठओलकहु	पठओतहु	पठा(ठ)बहु	पठा(ठ)बहु
,,	तोरा	पठओलकौक	पठओतौक	पठबौक	पठबौक
भूपझा	ओकरा	पठओलथीन्ह	पठओथीन्ह	पठओथून्ह	पठओथीन्ह
,,	हुनका	,,	,,	,,	,,
,,	तोहरा	पठओलथून्ह	पठओथून्ह	पठओथून्ह	पठओथून्ह
,,	तोरा	,,	,,	,,	,,
हओ तोँ	ओकरा	पठओलहक	पठएबहक	पठबहक	पठबहक
,,	हुनका	पठओलहून्ह	पठएबहून्ह	पठबहून्ह	पठबहून्ह
रओ तोँ	ओकरा	पठओलहीक	पठएबहीक	पठबहीक	पठबहीक
,,	हुनका	पठओलहून्ह	पठएबहून्ह	पठबहून्ह	पठबहून्ह
हम वा अहाँ	ओकरा	पठओलिऐक	पठएबैक	पठबिऔक	पठबिऐक
,,	हुनका	पठओलिऐन्हि	पठएबैन्हि	पठबिऔन्हि	पठबिऐन्हि
हम	तोहरा	पठओलिअहु	पठएबहु	पठबिअहु	पठबिअहु
,,	तोरा	पठओलिऔक	पठएबौक	पठबिऔक	पठबिऔक

अथ इबन्तधातुप्रकरण

इबन्त धातुसँ इच्छा-प्रेरणा-भिन्न अकारादि प्रत्ययक लोप ॥१॥ अत, अल, अबक वैकल्पिक ॥२॥ उक्त प्रत्ययसभसँ पूर्व इबन्तक लोप ॥३॥ अकारलोप सन्ताँ अबहुस्वर प्रत्ययसँ पूर्व इकारकेँ दीर्घ ॥४॥

इबन्त धातु *जिब्, पिब्, सिब्* तिनिएटा अछि, ओहिसँ पर इच्छार्थक ओ प्रेरणार्थकसँ भिन्न जे अकारादि प्रत्यय तकर प्रथम अकारक लोप होइत अछि। उदाहरण आगाँ भेटत ॥१॥

इबन्त धातुसँ पर *अत, अल, अब* प्रत्ययक पहिल अकारक लोप वैकल्पिक होइत अछि। एकरो उदाहरण आगाँ ॥२॥

उक्त प्रत्ययसबसँ पूर्व इबन्त धातुक अन्त्यक लोप हो, अर्थात् लुप्ताकारक वा अलुप्ताऽकारक जे इच्छार्थक प्रेरणार्थकसँ अन्य अकारादि प्रत्ययमात्र, ताहिसँ पूर्व इबन्त *(जिब्, पिब्, सिब्)* धातुक बकारक लोप होइत अछि। एकरो उदाहरण आगाँ ॥३॥

अकारक लोप सन्ताँ अबहुस्वर प्रत्ययसँ पूर्व इकारकेँ दीर्घ होइत अछि। *जील,* अकारक लोप, दीर्घ। अकारलोपक अभावमे *जिअल, जीलाह, जीलैं*। एवं *पीलक, पील* वा *पीअल, पीताह*। इच्छा ओ प्रेरणामे –*जिबए, पिबओ*। एवं *सीलक, सील* वा *सिअल*। *जीत, जिअत*। *जीब, जिअब* इत्यादि। *अलथीन्ह* इत्यादि प्रत्यय बहुस्वरक भेल, अतः *जिलथीन्ह* इत्यादिमे दीर्घ नहि ॥४॥

इबन्त प्रकरण समाप्त

सारिणी ३१ : इबन्त-जिबधातु-तिङ्चक्र

(१) क्रियाफलक अबोधक

कर्त्ता	*सोमना*	*भूप झा*	*हओ तोँ*	*रहओ तोँ*	*हम/अहाँ*
भूत	जील/जिअल	जीलाह	जीलह	जीलैं	जीलहुँ
भविष्य	जीत/जिअत्	जीताह	जीबह	जीबैं	जीब/जिअब

(२) क्रियाफलक बोधक

कर्त्ता	*फलभाक्*	*भूत*	*भविष्य*
सोमना	ओकरा हेतु	जीलैक	जीतैक
,,	हुनका हेतु	जीलैन्हि	जीतैन्हि
,,	तोहरा हेतु	जीलहु	जीतहु
,,	तोरा हेतु	जीलौक	जीतौक
भूपझा	ओकरा हेतु	जिलथीन्ह	जीथीन्ह
,,	हुनका हेतु	,,	,,
,,	तोहरा वा तोराहेतु	जिलथून्ह	जीथून्ह
हओ तोँ	ओकरा हेतु	जिलहक	जिबहक
,,	हुनका हेतु	जिलहून्ह	जिबहून्ह
रओ तोँ	ओकरा हेतु	जिलहीक	जिबहीक
,,	हुनका हेतु	जिलहून्ह	जिबहून्ह
हम वा अहाँ	ओकरा हेतु	जिलिऐक	जीबैक

,,	हुनका हेतु	जिलिऐन्हि	जीबैन्हि
हम	तोहरा हेतु	जिलिअहु	जीबहु
,,	तोरा हेतु	जिलिऔक	जीबौक

अथ द ल धातुप्रकरणम्

द ल सँ *अहक अहीक अहून्ह* सँ भिन्न प्रत्ययक आदि *अकेँ ए* ॥१॥ *ऊकेँ इअ* ॥२॥ *अब् अहु अयक* पहिल अकारसँ पर *अ* आगम ॥३॥ *अओमे* वैकल्पिक ॥४॥

द, ल एहि एक व्यञ्जनरूप धातुद्वयसँ पर *अहक, अहीक, अहून्हकेँ* छोड़ि आओर जे अकारादि प्रत्यय तकर आदि अकारकेँ एकार होइत अछि। द् + अलक = *देलक*। *लेलक*। *देनिहार, लेनिहार*। *दहक, दहीक, दहून्ह* एहिठाम *ए* आदेश नहि ॥१॥

द लसँ पर ऊ प्रत्ययकेँ *इअ* आदेश हो। *हमर पुस्तक दिअ; अपन पुस्तक लिअ* ॥२॥

द ल धातुसँ पर *अब्, अहु* तथा *अय* प्रत्ययक प्रथम अकारसँ आगाँ अकार आगम हो। प्रेरणामे वक्ष्यमाण अब्–द + *अब्*, अकार आगम –द + *अअब्*, प्रथम अकारकेँ एकार–द् + *एअब*, द् + ए क मेल–देअब्, *देअबैत* अछि। एवम् *देअहु, देअय(ए)*। *लेअबैत अछि, लेअहु, लेअय(ए)* ॥३॥

द ल धातुसँ पर *अओमे* अकारसँ आगाँ अकार आगम वैकल्पिक होइत अछि। *देअओ, देओ*। *लेअओ, लेओ*। शेष रूप देख धातुवत् ॥४॥

इति द ल धातुप्रकरणम्

सारिणी ३२ : द धातु तिङ्चक्र

कर्ता	*फलभागी*	*भूत*	*भविष्य*	*प्रेरणा*	*इच्छा*
सोमा	–	देलक	देत	देअओ, देओ	देअए
,,	ओकरा	देलकैक	दैतैक	दौक	दैक
,,	हुनका	देलकैन्हि	दैतैन्हि	दौन्हि	दैन्हि
,,	तोहरा	देलकहु	देतहु	देअहु	देअहु
,,	तोरा	देलकौक	देतौक	दौक	दौक
भूप झा	–	दैलैन्हि	देताह	देथु	देथि
,,	ओकरा	देलथीन्ह	देथीन्ह	देथून्ह	देथीन्ह
,,	हुनका	,,	,,	,,	,,
,,	तोरा	देलथून्ह	देथून्ह	देथून्ह	देथून्ह
,,	तोहरा	,,	,,	,,	,,
हओ तोँ	–	देलह	देबह	देह	देह
,,	ओकरा	देलहक	देबहक	दहक	दहक
,,	हुनका	देलहून्ह	देबहून्ह	दहून्ह	दहून्ह
रओ तोँ	–	देलेँ	देबेँ	दे	देहीँ
,,	ओकरा	देलहीक	देबहीक	दहीक	दहीक
,,	हुनका	देलहून्ह	देबहून्ह	दहून्ह	दहून्ह
हम वा अहाँ	–	देल, देलहुँ	देब	दिअ	दी
,,	ओकरा	देलिऐक	देबैक	दिऔक	दिऐक
,,	हुनका	देलिऐन्हि	देबैन्हि	दिऔन्हि	दिऐन्हि
हम	तोहरा	देलिअहु	देबहु	दिअहु	दिअहु
,,	तोरा	देलिऔक	देबौक	दिऔक	दिऔक

वर्तमानमे सामान्यधातुवत् । एहिना ल धातुक सेहो जानब ।

अथ छ धातुप्रकरणम्

छ सँ छकारसहित तिङक प्राप्तिमे छकारान्तरहित ॥१॥ *इ, अ, ऐत*सँ पूर्व छकेँ *अछ* ॥२॥ समीपोच्चारित प्रथमान्तार्थ वा तद्गत सम्बन्ध विधेय रहने वर्तमानमे *थिक* ॥३॥

छ धातुसँ पर छकारसहित *ऐतअछि* इत्यादि तिङ् प्रत्ययक प्रसङ्गमे छकारान्तरहित *इ* इत्यादि आबए। *धैल अछि*। द्वितीय सूत्रसँ *अछ* आदेश। *पिता छथि। तोँ छह वा छेँ। हम छी वा छीय* ॥१॥

*इ, अ, ऐत*सँ पूर्व छकेँ *अछ* आदेश हो। *के अछि? के अछ? धन अछैत क्लेश!* ऐत प्रत्यय कृदन्तप्रकरणमे भेटत ॥२॥

समीपोच्चारित जे प्रथमान्त पद तकर अर्थ जँ विधेय हो अथवा षष्ठ्यर्थसंबन्ध विधेय हो तँ वर्तमानमे छ धातुकेँ *थिक* आदेश होइत अछि। *ई धैल थिक, ई ब्राह्मण थिकथि* एहिठाम ब्राह्मण विधेय छथि हेतु जे अज्ञात अर्थ विधेय होइत अछि। ब्राह्मणत्वेन अनिश्चय दशामे "ई व्यक्ति ब्राह्मण वा नहि" एतादृश सन्देहयुक्त पुरुषक प्रति कहल जाइछ जे "ई ब्राह्मण थिकथि", ताहिसँ एतद्व्यक्तिधर्मिक ब्राह्मणत्वप्रकारक निश्चय होइत अछि।

ई पुस्तक हमर थिक एहिठाम पुस्तकमे पष्ठ्यर्थ स्वत्वसम्बन्ध विधेय अछि, तैँ *थिक* आदेश भेल। *हमरा पुस्तक अछि, घरमे घैल अछि* इत्यादि स्थलमे छधात्वर्थ सत्ता विधेय अछि। प्रथमान्तार्थ वा तद्गत सम्बन्ध विधेय नहि अछि, तैँ *थिक* आदेश नहि भेल। यदि सत्ताक अविधेयत्वमे *थिक* आदेश हो एतादृश सूत्र बनाओल जाए तैँ *घरमे जे अछि तकरा बहार करू* एहूठाम थिक आदेश भए जाएत हेतु जे यच्छब्दघटित वाक्य विधेयसमर्पक नहि होइत अछि, तैँ ओहि ठाम सत्ता अविधेय भेल॥३॥

***थिकसँ* इकारप्रत्ययकेँ अकार ॥४॥ *ई ईअकेँ अहुँ* ॥५॥ *अथिकेँ आह* वैकल्पिक ॥६॥ *अहकेँ* नित्य ॥७॥ स्त्रीकर्तृकसँ उभयत्र *ईह* ॥८॥ छसँ केवल वर्तमान भूत तिङ् ॥९॥**

थिकसँ पर इकारात्मक तिङ् प्रत्ययकेँ अकार आदेश हो। *ई के थिक* ॥४॥

थिकसँ पर *ई, ईअ* तिङ्केँ *अहुँ* आदेश हो। *हम भिक्षुक थिकहुँ*॥५॥

थिकसँ पर *अथिकेँ आह* वैकल्पिक हो। *पण्डित थिकाह* वा *थिकथि*॥६॥

थिकसँ पर *अहकेँ आह* आदेश नित्य होइत अछि। *हओ, तौँ के थिकाह* ? ॥७॥

स्त्रीजनकर्तृक *थिकसँ* पर *अथि, अह* दुहूकेँ *ईह* आदेश होइत अछि। *ई अहाँक कन्या थिकीह। हए, तौँ के थिकीह*? ॥८॥

छ धातुसँ पर वर्तमानार्थक तिङ् ओ भूतार्थक तिङ् द्विविधे प्रत्यय आबए। अन्यत्र रह धातुक प्रयोगसँ निर्वाह जानब ॥९॥

तिङन्तमे छ धातु प्रकरण समाप्त

सारिणी ३३ : छ धातु-तिङ्चक्र

कर्त्ता	*फलभाक्*	*वर्तमान*	*भूत*
सोमना	–	अछि	छल
,,	ओकरा हेतु	छैक	छलैक
,,	हुनका हेतु	छैन्हि	छलैन्हि
,,	तोहरा हेतु	छहु	छलहु
,,	तोरा हेतु	छौक	छलौक
भूपझा	–	छथि	छलाह
,,	ओकरा वा हुनका हेतु	छथीन्ह	छलथीन्ह
,,	तोहरा वा तोराहेतु	छथून्ह	छलथून्ह

हओ तौँ	–	छह	छलाह
,,	ओकरा हेतु	छहक	छलहक
,,	हुनका हेतु	छहून्ह	छलहून्ह
रओ तौँ	–	छेँ	छलैं
,,	ओकरा हेतु	छहीक	छलहीक
,,	हुनका हेतु	छहून्ह	छलहून्ह
हम वा अहाँ	–	छी	छलहुँ
,,	ओकरा हेतु	छिऐक	छलिऐक
,,	हुनका हेतु	छिऐन्हि	छलिऐन्हि
हम	तोहरा हेतु	छिअहु	छलिअहु
,,	तोरा हेतु	छिऔक	छलिऔक

सारिणी ३४ : छ (थिक) धातु वर्तमान तिङ्चक्र

ई पोथी	हमर	थिक	हओ तौँ	सोमनाकेँ के	थिकहक
,,	सोमनाक	थिकैक	,,	भूपझाकेँ के	थिकहून्ह
,,	भूपझाक	थिकैन्हि	रओ तौँ	के	थिकेँ
,,	तोहर	थिकहु	,,	सोमनाकेँ के	थिकहीक
,,	तोर	थिकौक	,,	भूपझाकेँ के	थिकहून्ह
ई भगवान्	केहन	थिकाह	हम वा अहाँ	पण्डित	थिकहुँ
,,	सोमनाक	थिकथीन्ह	,,	सोमनाकेँ के	थिकिऐक
,,	भूपझाक	,,	,,	भूपझाकेँ के	थिकिऐन्हि
,,	तोहर	थिकथून्ह	हम	तोहरा के	थिकिअहु
,,	तोर	,,	,,	तोरा के	थिकिऔक
हओ तौँ	के	थिकाह			

अथ जकादिप्रकरणम्

जकादि स्वरकेँ दीर्घ *अ, इवर्ण, ऊ, अत, अल, अब, अय, अथि, अथु, अह, अहि, अहु, अओ* सँ पूर्व ॥१॥ एकस्वरक धातुक उपान्त्य इकार उकारकेँ वैकल्पिक ॥२॥

जकादिगण ग्रन्थान्तमे धातुपाठमध्य पठित अछि। तकर स्वरकेँ दीर्घ होइत अछि *अ, इ, ई, ऊ, अत, अल, अब, अय, अथि, अथु, अह, अहि, अहु, अओ* प्रत्ययसँ पूर्व। *तोँ मडुआकेँ जाक। ताकि लिअ। अहाँ ताकी, ताकू। ताकत। ताकल। ताकब। ताकय। ताकथि। ताकथु। ताकह। ताकहि। ताकओ।* अन्यत्र *तकैतछथि, तकताह, तकितथि*॥१॥

एकस्वरक जे धातु तकर अन्त्य वर्णसँ पूर्वस्थित इकार उकारकेँ दीर्घ विकल्प हो *अ* इत्यादि पूर्वोक्त प्रत्ययसँ पूर्व। *पानि पिब* वा *पीब*। *पिबी* वा *पीबी*। *लिखि लिअ* वा *लीखि लिअ*। जूइत, जुइत ॥२॥

इति जकादि प्रकरणसमाप्त

सारिणी ३५ : जकादि तक्धातु तिङ्चक्र

कर्ता	*भूत*	*भविष्य*	*प्रेरणा*	*इच्छा*
सोमना	तकलक	ताकत	ताकओ	ताकए
भूपझा	तकलैन्हि	तकताह	ताकथु	ताकथि
हओ तोँ	तकलह	तकबह	ताकह	ताकह
रओ तोँ	तकलैँ	तकबैँ	ताक	ताकहिँ
हम वा अहाँ	ताकल, तकलहुँ	ताकब	ताकू	ताकी

अथ चुब, छुब, मर, कर, धर धातु

चुब ओ छुबसँ पर *अब, अन्,* भूत, भविष्यकेँ इकार॥१॥ मरसँ भूत अन्केँ *इ,* मरकेँ *मु*॥२॥ कर धरकेँ यकार भूत अन्सँ पूर्व ॥३॥

चुब ओ छुब धातुसँ पर *अब, अन्,* भूतार्थक ओ भविष्यदर्थक प्रत्ययक आदि अकारकेँ इकार होइत अछि। चुइब, चुइल, चुइने। शेष देख धातुवत् ॥१॥

मर धातुसँ पर भूतार्थक ओ अनादि प्रत्ययक आदि अकारकेँ इकार ओ *मरकेँ मु* आदेश हो–*शत्रु मुइल,शत्रुक मुइने*। शेष रूप देख धातुवत् ॥२॥

कर धर धातुक रेफकेँ यकार हो भूतार्थक ओ अनादि प्रत्ययसँ पूर्व। *कएल, कयल। धयल। कएनिहार, धएनिहार*॥३॥

इति चुब-छुब-मर-कर-धर-धातु

अथ ओकारान्तधातुप्रकरणम्

बिकादिभिन्न ओकारान्त धातुसँ भूत भविष्य *अब अल अन्केँ ए*॥१॥ *ई ऊ केँ* ह्रस्व ॥२॥ *अथीन्ह अथून्ह अहक अहीक* क लोप ॥३॥ *अ अओ*

***अथि अथु* क नवीनक मतेँ ॥४॥**

बिकादिसँ आन जे ओकारान्त धातु ताहिसँ पर भूतार्थक, भविष्यदर्थक, *अब, अल,* अनादि (*अना, अनाइ, अनिहार, अने*) एहि प्रत्ययसबहिक आदि अकारक स्थान *ए* आदेश होइत अछि। *धोएल्क, धोएत, धोएब, धोएल, धोएल करू, धोएना गेल, धोएनाइ, धोएनिहार, धोएने*। बिकादिभिन्न कहलासँ *जोआएत, सोआएल* इत्यादि स्थलमे ई सूत्र नहि लागल, हेतु जे *जो सो* धातु बिकादिगणमे पठित अछि ॥१॥

बिकादिभिन्न ओकारान्त धातुसँ पर *ई ऊ* केँ ह्रस्व आदेश होइत अछि। हम *धोइ,* अहाँ *धोउ*। बिकादित्वात् *जोआइ, जोआउ* एहि ठाम ह्रस्वादेश नहि भेल, किन्तु पूर्वोक्त सूत्रसँ *आइ आउ* आदेश भेल ॥२॥

बिकादिभिन्न ओकारान्त धातुसँ पर *अथीन्ह, अथून्ह, अहक, अहीक* प्रत्ययक आदि अकारक लोप हो। *धोथीन्ह, धोथून्ह, धोहक, धोहीक* ॥३॥

उक्त धातुसँ पर *अ, अओ, अथि, अथु* एतेक प्रत्ययक अकारक लोप नवीनक मतेँ होइत अछि। *धो, धोओ, धोथि, धोथु*। प्राचीनक मतेँ *धोअ धोअओ धोअथि धोअथु*। शेष रूप सामान्य धातुवत्। एही रीति *टो* आदि ओकारान्तक रूप जानब ॥४॥

होकेँ भूत *अल*सँ पूर्व *भ*॥५॥ *अन्*सँ पूर्व वैकल्पिक ॥६॥ होसँ पर तिङ् *अय*क विलोप ॥७॥ प्रत्ययादि *ऐ औ* केँ *इ उ*॥८॥ धोसँ पर वैकल्पिक ॥९॥

हो धातुकेँ *भ* आदेश होइत अछि भूतार्थक प्रत्यय तथा अल प्रत्ययसँ पूर्व। *कार्य भेल। ओ पण्डित भेलाह। कार्य भेल जाइत अछि*। प्रथम सूत्रसँ प्रत्ययक प्रथम अकारकेँ ए आदेश, होकेँ भ सवदिश। स्वरादि प्रत्ययक परताँ सामान्य सूत्रसँ भक अकारक लोप ॥५॥

हो धातुकेँ वैकल्पिक *भ* आदेश हो अनादि प्रत्ययसँ पूर्व। *भेनिहार, होएनिहार; भेनाइ, होएनाइ; भेने, होएने* ॥६॥

हो धातुसँ पर तिङ्संज्ञक *अय* प्रत्ययक वैकल्पिक विलोप होइत अछि। *कार्य हो* वा *होअए*। *कार्य होअए गेल अछि*, एहिठाम *अय* प्रत्यय कृत् थीक, तिङ्संज्ञक नहि, तेँ विलोप नहि भेल ॥७॥

हो धातुसँ पर प्रत्ययक आदि ऐकारकेँ इकार आदेश हो तथा प्रत्ययादि औकारकेँ उकार हो। *होइत, होइतअछि। कार्य कयनिहार होइत जाउ। होइक पड़त। होउक, होउन्हि*॥८॥

उक्त इ उ आदेश *धो* धातुसँ पर वैकल्पिक होइत अछि। *धोइत अछि, धोऐत अछि*। *धोइत, धोऐत*। *धोउक, धोऔक* ॥९॥

ओकारान्तधातुप्रकरण समाप्त

सारिणी ३६ : धोधातु तिङ्चक्र

(क) क्रियाफलक अबोधक

१. *कर्त्ता*	*वर्तमान*	*भूत*	*भविष्य*
धोबि	धोऐत अछि/धोइत अछि	धोएलक	धोएत
भूपझा	धोऐत छथि/धोइत छथि	धोएलैन्हि	धोएताह
हओ तोँ	धोऐत छह/धोइत छह	धोएलह	धोएबह
रओ तोँ	धोऐतछैँ/धोइतछैँ	धोएलैँ	धोएबैँ
हम वा अहाँ	धोऐतछी/धोइतछी	धोएलहुँ	धोएब

२. *कर्त्ता*	*प्रेरणा*	*इच्छा*	*अनिष्पित्ति*
धोबि	धोओ/धोअओ	धोअए	धोऐत/धोइत
भूपझा	धोथु/धोअथु	धोथि/धोअथि	धोइतथि
हओ तोँ	धोअह	धोअह	धोइतह
रओ तोँ	धो/धोअ	धोहिँ/धोअहिँ	धोइतेँ
हम वा अहाँ	धोउ	धोइ	धोइतहुँ

(ख) क्रियाफलबोधक

१. *कर्त्ता*	*फलभाक्*	*वर्तमान*	*भूत*	*भविष्य*
धोबि	सोमनाक हेतु	धोऐ(इ)तछैक	धोएलकैक	धोएतैक
,,	भूपझाक हेतु	धोऐ(इ)तछैन्हि	धोएलकैन्हि	धोएतैन्हि
,,	तोहरा हेतु	धोऐ(इ)तछहु	धोएलकहु	धोएतहु
,,	तोरा हेतु	धोऐ(इ)तछौक	धोएलकौक	धोएतौक
भूपझा	ओकरा हेतु	धोऐ(इ)तछथीन्ह	धोएलथीन्ह	धोएथीन्ह
,,	हुनका हेतु	,,	,,	,,
,,	तोहरा हेतु	धोऐ(इ)तछथून्ह	धोएलथून्ह	धोयून्ह
,,	तोरा हेतु	,,	,,	,,
हओ तोँ	ओकरा हेतु	धोऐ(इ)तछहक	धोएलहक	धोएबहक
,,	हुनका हेतु	धोऐ(इ)तछहून्ह	धोएलहून्ह	धोएबहून्ह
रओ तोँ	ओकरा हेतु	धोऐ(इ)तछहीक	धोएलहीक	धोएबहीक
,,	हुनका हेतु	धोए(इ)तछहून्ह	धोएलहून्ह	धोएबहून्ह
हम वा अहाँ	ओकरा हेतु	धोऐ(इ)तछिऐक	धोएलिऐक	धोएबैक
,,	हुनका हेतु	धोऐ(इ)तछिएन्हि	धोएलिऐन्हि	धोएबैन्हि
,,	तोहरा हेतु	धोऐ(इ)तछिअहु	धोएलिअहु	धोएबहु
,,	तोरा हेतु	धोए(इ)तछिऔक	धोएलिऔक	धोएबौक

२. *कर्त्ता*	*फलभाक्*	*प्रेरणा*	*इच्छा*	*अनिष्पत्ति*
धोबि	सोमनाक हेतु	धोऔक/धोउक	धोऐक/धोइक	धोइतैक
,,	भूपझाक हेतु	धोऔन्हि/धोउन्हि	धोऐन्हि/धोइन्हि	धोइतैन्हि
,,	तोहराहेतु	धोअहु	धोअहु	धोइतहु
,,	तोरा हेतु	धोऔक/धोउक	धोऔक/धोउक	धोइतौक
भूपझा	सोमनाक हेतु	धोथून्ह	धोथीन्ह	धोइतथीन्ह
,,	रूपझाक हेतु	,,	,,	,,
हओ तोँ	सोमनाक हेतु	धोहक	धोहक	धोइतहक
,,	भूपझाक हेतु	धोहून्ह	धोहून्ह	धोइतहून्ह
रओतोँ	सोमनाक हेतु	धोहीक	धोहीक	धोइतहीक
हम वा अहाँ	सोमनाक हेतु	धोइऔक	धोइऐक	धोइतिऐक
,,	भूपझाक हेतु	धोइऔन्हि	धोइऐन्हि	धोइतिऐन्हि
हम	तोहरा हेतु	धोइअहु	धोइअहु	धोइतिअहु
,,	तोरा हेतु	धोइऔक	धोइऔक	धोइतिऔक

☆ *एवम् आनो ओकरान्तक् रूप । केवल वैकल्पिक-रूपहीन ।*

सारिणी ३७ : होधातु तिङ्चक्र

(क) क्रियाफलक अबोधक

१. *कर्त्ता*		*वर्तमान*	*भूत*	*भविष्य*
कार्य		होइतअछि	भेल	होएत
भूपझा	गुणी	होइतछथि	भेलाह	होएताह
हओ तोँ	,,	होइतछह	भेलाह	होएबह
रओ तोँ	,,	होइतछैँ	भेलैँ	होएबैँ

हम वा अहाँ ,,		होइतछी	भेलहुँ	होएब	
२. *कर्ता*		*प्रेरणा*	*इच्छा*	*अनिष्पत्ति*	*आज्ञाविशेष*
कार्य		होओ/होअओ	हो/होअए	होइत	—
भूपझा	गुणी	होथि/होअथि	होथु/होअथु	होइतथि	
हओ तोँ	गुणी	होअह	होअह	होइतह	होइहह
रओ तोँ	गुणी	हो/होअ	होहिँ	होइतेँ	होइहेँ
हम वा अहाँ	गुणी	होइ	होउ	होइतहुँ	—

(ख) क्रियाफलबोधक

१. *कर्ता*	*फलभाक्*	*वर्तमान*	*भूत*	*भविष्य*
सोमना	बतहाक सङ्ग	होइतछैक	भेलैक	होएतैक
,,	भूपझाक सङ्ग	होइतछैन्हि	भेलैन्हि	होएतैन्हि
,,	तोहरा सङ्ग	होइतछहु	भेलहु	होएतहु
,,	तोरा सङ्ग	होइतछौक	भेलौक	होएतौक
भूपझा	ओकरा वा हुनका सङ्ग	होइतछथीन्ह	भेलथीन्ह	होएथीन्ह
,,	तोहरा वा तोरा सङ्ग	होइतछथून्ह	भेलथून्ह	होएथून्ह
हओ तोँ	बतहाक सङ्ग	होइतछहक	भेलहक	होएबहक
,,	भूपझाक सङ्ग	होइतछहून्ह	भेलहून्ह	होएबहून्ह
रओ तोँ	ओकरा सङ्ग	होइतछहीक	भेलहीक	होएबहीक
,, ,,	हुनका सङ्ग	होइतछहून्ह	भेलहून्ह	होएबहून्ह
हम वा अहाँ	बतहाक सङ्ग	होइतछिऐक	भेलिऐक	होएबैक
,,	भूपझाक सङ्ग	होइतछिऐन्हि	भेलिऐन्हि	होएबैन्हि
हम	तोहर सङ्ग	होइतछिअहु	भेलिअहु	होएबहु
,,	तोर सङ्ग	होइतछिऔक	भेलिऔक	होएबौक

२. *कर्ता*	*फलभाक्*	*प्रेरणा*	*इच्छा*	*अनिष्पत्ति*
सोमना	बतहाक सङ्ग	होउक	होइक	होइतैक
,,	भूपझाक सङ्ग	होउन्हि	होइन्हि	होइतैन्हि
,,	तोहर सङ्ग	होअहु	होअहु	होइतहु

,,	तोर सङ्ग	होउक	होउक	होइतौक
भूपझा	ओकर वा हुनक सङ्ग	होथून्ह	होथीन्ह	होइतथीन्ह
,,	तोहरा वा तोरा सङ्ग	होथून्ह	होथून्ह	होइतथून्ह
हओ तोँ	बतहाक सङ्ग	होहक	होहक	होइतहक
,,	भूपझाक सङ्ग	होहून्ह	होहून्ह	होइतहून्ह
रओ तोँ	ओकरा सङ्ग	होहीक	होहीक	होइतहीक
,,	हुनका सङ्ग	होहून्ह	होहून्ह	होइतहून्ह
हम वा अहाँ	बतहाक सङ्ग	होइऔक	होइऐक	होइतिऐक
,,	भूपझाक सङ्ग	होइऔन्हि	होइऐन्हि	होइतिऐन्हि
हम	तोहर संग	होइअहु	होइअहु	होइतिअहु
,,	तोर संग	होइऔक	होइऔक	होइतिऔक

अथअबन्त(ण्यन्त)प्रक्रियाँ

धातुसँ कर्तृप्रयोजक व्यापारमे अब ॥१॥ सक आदिसँ नहि ॥२॥ अबब्शब्दान्तसँ ॥३॥ अबसँ पूर्व अब्धातुकेँ अन् ॥४॥ रहकेँ रख ॥५॥ जकेँ पठ ॥६॥ खकेँ खो ॥७॥ छुब जिब पिब सिब क लोप ॥८॥ उपान्त्यकेँ ह्रस्व ॥९॥

कर्ताक जे प्रयोजक अर्थात् प्रेरक तकर व्यापारमे धातुसँ *अब* प्रत्यय अबैत अछि। भवदेव देखैत छथि, हुनका जयदेव प्रेरित करैत छथि, *जयदेव भवदेवकेँ वा भवदेवसँ देखबैत छथि।* कतोक प्रयोज्य कर्तासँ द्वितीया ओ तृतीया दुहू विभक्ति अबैत अछि, कतोकसँ केवल द्वितीया ओ कतोकसँ केवल तृतीया। *जयदेव भवदेवकेँ हँसबैत छथि; हुनकासँ कार्य करबैत छथि।* विभक्त्यर्थप्रकरणमे विभक्तिक निर्णय कहल गेल अछि। देखब् आदि धातुक रूप अबन्त अनेकस्वर जोगब धातुवत् जानब ॥१॥

सक आदि धातुसँ उक्त *अब* नहि आबए। अतः *सकबैत अछि* इत्यादि प्रयोग नहि होएत। सक, बिक, रुक, त्याग, रुच, फट, छुट, टुट, हो, जर, मर, इत्यादि सक-आदि गण जानब। एहिठाम ई ज्ञातव्य जे *सक* ओ *रुच* धातुक प्रयोगमे कर्तृप्रयोजक व्यापारक विवक्षा नहि होइत अछि। *बिक* इत्यादिक अबन्त प्रयोगक प्राप्तिमे *बेच* इत्यादि धातुक प्रयोग होइछ। यथा *वस्तु बिकाइत अछि, ओकरा बेचैत अछि। कार्य रुकैत अछि, ओकरा रोकैत छथि। ओ त्यागैत अछि, ओकरा छोड़बैत अछि। नूआ फटैत अछि, तकरा फाड़ैत छथि। रोग छुटैत अछि, तकरा छोड़बैत छथि। कलम टुटैत अछि, तकरा तोड़ैत छथि। ओ पण्डित होइत छथि, हुनका पण्डित बनबैत छथि* ॥२॥

अबब्शब्दान्त *पठबब्, जोगबब्* इत्यादि तकरासँ *अब्* प्रत्यय नहि आबए, तेँ *पठबबैत* इत्यादि नहि भेल ॥३॥

अब् प्रत्ययसँ पूर्व *अब*धातुकेँ *अन्* आदेश हो। *ओ अबैत छथि, हुनका अनबैत छथि* ॥४॥

अबसँ पूर्व *रह* धातुकेँ *रख* आदेश होइत अछि। *भवदेव अध्यापक रहैत छथि, हुनका जयदेव रखबैत छथि* ॥५॥

अब्सँ पूर्व *ज* धातुकेँ *पठ* आदेश होइत अछि। *जयदेव जाइत छथि, हुनका भवदेव पठबैत छथिन्ह* ॥६॥

अबसँ पूर्व *ख* धातुकेँ *खो* आदेश होइत अछि। *भवदेवकेँ जयदेव खोअबैत छथि* ॥७॥

अब्सँ पूर्व *छुब्, जिब्, पिब्* ओ *सिब्* धातुक बकारक लोप होइत अछि। *जयदेव भवदेवकेँ छुअबैत छथि, जिअओलेन्हि, पिअओताह। हुनकासँ वस्त्र सिअबैत छथि* ॥८॥

अबसँ पूर्व धातुक उपान्त्य स्वरक स्थान ह्रस्व आदेश हो। *भवदेव मानैत छथि, हुनकासँ जयदेव मनबैत छथि। आगि पजारैत अछि, ओ पजरबैत छथि।*

द धातुसँ अब्, द + अब। द ल धातुप्रकरणक प्रथम सूत्रसँ अकारकेँ एकार–द् + एब्। ओही प्रकरणक तृतीय सूत्रसँ *अ* आगम–द् + ए + अब्। द् + ए क मेल देअब्। आगाँ तिङादिप्रत्यय –देअबैत अछि इत्यादि। एवम् लेअबैत अछि ॥९॥

अबन्त(ण्यन्त)प्रक्रिया समाप्त

अथ नामधातुप्रक्रिया

नामसँ धात्वर्थमे इब् अब् ॥१॥ तदन्त धातु ॥२॥ प्रकृतिमध्य सकल स्वरकेँ ह्रस्व ॥३॥ इब्क विलोप ॥४॥ मूका आदिकेँ इकार अबूसँ पूर्व ॥५॥ दृष्टिकेँ *डिठि* ॥६॥ थुथूनकेँ *थुथन* ॥७॥

नामसँ पर होएब देखब प्रभृति धात्वर्थमे इब् ओ *अब्* प्रत्यय होइत अछि ॥१॥

इबन्त ओ अबन्त धातुसंज्ञक हो। तेँ ओकरासँ *ऐतअछि* प्रभृति तिङ् आओत ॥२॥

इब् *अबूक* प्रकृति अर्थात् जकरासँ पर इब् ओ अब् आबए तकर सकल स्वरकेँ ह्रस्वता हो ॥३॥

इब्प्रत्ययक विलोप हो। अतः प्रथमा विभक्तिवत् ओकर कतहु श्रवण नहि। यः शिष्यते स लुप्यमानार्थाभिधायी एहि न्यायसँ प्रकृतिभागे इब् प्रत्ययहुक अर्थबोधक जानब। घट्टी होइत अछि– *घटिआइत अछि*। इब्, ह्रस्वता, इब्क विलोप, टकार लोप कएलासँ *घटि* धातु भेल। बिकादिमे इब्प्रत्ययान्त गृहीत अछि, तेँ बिकादिवत् रूप होएत ॥४॥

मूका आदिक अन्तिम वर्णक स्थान इकार होइत अछि–अबूसँ पूर्व। मूकासँ मारैत अछि, *मुकिअबैत अछि*। टाल लगबैत अछि, *टलिअबैत अछि*। मूका आदि आकृतिगण जानब ॥५॥

अबूसँ पूर्व दृष्टिकेँ *डिठि* आदेश होइत अछि। दृष्टि दैत अछि, *डिठिअबैत अछि* ॥६॥

अबूसँ पूर्व थुथूनकेँ *थुथन* आदेश हो। थुथून लगबैत अछि, *थुथनबैत अछि* ॥७॥

इब्सँ पूर्व ढाठ आदिकेँ इकार ॥८॥ हाधिक्, विषकेँ *हदि, बिस* ॥९॥ घट्टी आदिसँ होएबमे इब् ॥१०॥ नोर आदिसँ संयुक्त होएबमे ॥११॥ संघातार्थक गोलसँ आएबमे ॥१२॥

इबसँ पूर्व ढाठ आदिक अन्तिम वर्णकेँ इकार हो। ढाठसँ रोकल जाइत अछि, *ढठिआइत अछि*। नोनसँ युक्त होइत अछि, *नोनिआइत अछि*। घरमे रोगक हेतु सतत रहैत अछि, *घरिआइत अछि*। ढाठ आदि आकृतिगण थीक ॥८॥

इबूसँ पूर्व हाधिक्केँ *हदि* ओ विषकेँ *बिस्* आदेश होइत अछि। हाधिक् बजैत अछि, *हदिआइत अछि*। विषक तुल्य आचरण करैत अछि, *बिसाइत अछि* ॥९॥

"नामसँ धात्वर्थमे अब्, इब्" एहि सूत्रक प्रपञ्च कएल जाइत अछि। घट्टी आदिसँ होएबमे इब् हो। घट्टी होइत अछि, *घटिआइत अछि*। बड्ढी भेल, *बढ़िआएल*। डलोप। काठ गोल भेल, *गोलिआएल*। कर्तृप्रयोजक व्यापारमे अब् प्रत्यय कएलासँ *गोलिअबैत अछि*। एवं आनहु इबन्त धातुसँ *घटिअबैत अछि, बढ़िअबैत अछि* इत्यादि *अब्* प्रत्यय कए *लेब*। *बहराइत अछि, बिसाइत अछि*। इबन्तसँ अब् प्रत्यय व्यवहृत नहि अछि जेना संस्कृतमे *वच्* धातुसँ *अन्ति*। बहार होइत अछि, *बहराइत अछि*। ओरिसँ युक्त होएत–*ओरिआएत*। *वस्तुजात ओरिअबैत छी* प्रयोग "ठीक होएब" अर्थमे लाक्षणिक जानब। घट्टी, बड्ढी, बासि, बूड़ि, मोट, पातर, अमत, मधुर, सोन्ह, फरीछ, मिझर, ओरि, चिक्कन, मेही, बूढ़, कारी, आगू, पाछू। घट्टी आदि आकृतिगण ॥१०॥

नोर आदि नामसँ युक्त होएब अर्थमे इब् प्रत्यय होइत अछि, *आँखि नोराएल, नोराएत* इत्यादि बिकधातुवत्। प्रयोजक व्यापारमे अब् प्रत्यय कएलापर *धूआँ आँखिकेँ नोरबैत अछि*। एवं आगुहुँ। नोर, घाम, काँची, लाज, रोग, आलस, मनसुबा, सोक, पानि, माटि, रौद, सीत, ओस, गाम्हड़, धूआँ। (छाहरि ओ आसकतिक लोप) *छहराइत छथि, असकताइत छथि*। अशक्ति शब्दक अपभ्रंश *आसकति* मिथिलाभाषा थीक। नोर आदि आकृतिगण ॥११॥

संघातार्थक गोल शब्दसँ आएब अर्थमे इब् अबैत अछि। ढाठ आदिमे ई शब्द पठित अछि, तेँ इकार अन्तादेश। गोलमे अबैत छथि *गोलिआइत छथि, गोलिअएलाह*, इत्यादि बिकादिवत् ॥१२॥

ढाठसँ अवरुद्ध होएबमे ॥१३॥ भाँजिसँ लागबमे ॥१४॥ बहारसँ जाएबमे ॥१५॥ घरसँ रोगहेतुक सतत रहबामे ॥१६॥ जड़िसँ दृढ़ करबामे ॥१७॥ झीसी, बुन्नीसँ छोड़बमे ॥१८॥ बातसँ परस्पर बाजबमे ॥१९॥ विष, पात, पाथरसँ तुल्य होएबामे ॥२०॥ हाधिक्सँ बजबामे ॥२१॥ सोति आदिसँ तुल्यक्रिया करबामे ॥२२॥ गोँ गोँ आदिसँ तत्समान ध्वनि करबामे ॥२३॥

ढाठसँ अवरुद्ध होएबमे इब् अबैत अछि। इकार अन्तादेश। *माल ढठिआएल* अर्थात् ढाठसँ अवरुद्ध भेल। अब् प्रत्यय कएलासँ *मालकेँ ढठिअबैत अछि*। *नेनाकेँ ढठिअबैत छी* इत्यादि प्रयोग लाक्षणिक थीक, ई नेना सतत उड़ैत रहैत अछि इत्यादिवत् ॥१३॥

भाँजिसँ लागबमे इब्। चोर जेमहर देने गेल से *भँजिआएल*, अर्थात् भाँजि लागल। *चोरक रास्ता भँजिअबैत छी*–इबन्त भँजि धातुसँ *अब्* ॥१४॥

बहारसँ आएबमे इब्। बहार गेल–*बहराएल* ॥१५॥

रोगादिसँ सतत रहब अर्थमे घर शब्दसँ इब् प्रत्यय हो–जयकृष्ण *घरिअएलाह*, अर्थात् रोगेँ सतत घरमे रहए लगलाह। *हमरा रोग घरिअओलक*। प्रयोजक व्यापारमे अब्। घर शब्द ढाठ आदि थीक ॥१६॥

जड़ि शब्दसँ दृढ़ करब अर्थमे इब् हो। *गाछ जड़िआएल*, अर्थात् जड़ि दृढ़ कएलक ॥१७॥

झीसी ओ बुन्नी शब्दसँ छोड़बमे इब् हो । मेघ *झिसिआइत अछि, बुनिआइत अछि*। नलोप ॥१८॥

बातसँ परस्पर बाजबमे इब् हो । *बतिआइत छथि*, अर्थात् वार्त्तालाप करैत छथि ॥१९॥

विष, पात ओ *पाथरसँ* तत्तुल्य होएबामे *इब् हो* । अभूखमे खाएल अन्न हमरा *बिसाएल*, विषवत् भेल । पूर्वसूत्रसँ विषकेँ *बिस । देह पताइत अछि, आँखि पथराइत अछि* ॥२०॥

हाधिक्सँ बजबामे इब् । हाधिक् बजैत अछि, *हदिआइत अछि* । पूर्व सूत्रसँ *हदि* आदेश ॥२१॥

सोति आदिसँ तत्तुल्य क्रिया करबामे इब् । *सोतिआइत छथि । जयलाल मौगिआएल* एहिठाम औकरो ह्रस्व जानब । अहदीक तुल्य क्रिया करैत छथि *अहदिआइत छथि* ॥२२॥

गोँ गोँ आदि अव्यक्तध्वन्यनुकरणसँ करबमे इब् अबैत अछि । *पेट गोँगिआइत अछि*, अर्थात् गोँ गोँ एतत्समान अव्यक्त ध्वनि करैत अछि । ओकारान्त एकारान्त अव्यक्तध्वन्यनुकरण ढाठ आदिमे जानब । तेँ इकार अन्तादेश भेल । *हाथी बोँबिआइत अछि, घोड़ा हिँहिँआइत अछि, छागर मेमिआइत अछि, गाए डिँड़िआइत अछि, पिजड़ामे पक्षी फड़फड़ाइत अछि, मेघ तड़तड़ाएल, पात खरखराएल, देह कड़कड़ाएल* । अनुकरण प्रायः व्यवस्थित अछि । तेँ अनुकार्यसँ बहुत भेद रहलहु उत्तर तद्बोधक होइत अछि ॥२३॥

चाड़िसँ युक्त करबमे अब ॥२४॥ थापड़ आदिसँ मारबमे ॥२५॥ आरि, धूरसँ बान्हबमे ॥२६॥ टाल, थालासँ लगाएबमे ॥२७॥ ठामसँ देखबमे ॥२८॥ दामसँ करबमे ॥२९॥ छाती, काँखसँ लगाएबमे ॥३०॥

चाड़ि शब्दसँ युक्त करबामे *अब* प्रत्यय अबैत अछि । चाड़िसँ युक्त करैत अछि–*चड़िअबैत अछि* ॥२४॥

थापड़ आदिसँ मारबमे *अब्* प्रत्यय अबैत अछि । थापड़सँ मारब–*थपड़ाएब; लठिआएब*। *मुकिआएब, लतिआएब, जुतिआएब*, एहि तीनू स्थलमे "अबसँ पूर्व मूका आदिकेँ इकार" एहि सूत्रसँ इकार अन्तादेश । *छौँकिअबैत अछि* । थापड़ आदि समाप्त ॥२५॥

आरि तथा धूरसँ बान्हबमे *अब्* होइत अछि । *अरिअबैत अछि, धुरिअबैत अछि*, मूका-आदित्वात् इकार ॥२६॥

लगाएब अर्थमे टाल ओ थाला शब्दसँ *अब्* अबैत अछि । दुहू शब्द मूका आदि थीक। टाल लगबैत अछि–*टलिअबैत अछि* । थाला लगबैत अछि–*थलिअबैत अछि* ॥२७॥

ठामसँ देखबमे *अब्* आबए । *माल ठमाए अएलहुँ* अर्थात् ठाममे देखि अएलहुँ ॥२८॥

दामसँ करबमे *अब्* । दाम करैत अछि–*दमबैत अछि, गाए दमाओल अछि* ॥२९॥

छाती ओ काँखसँ लगाएबमे *अब्* । छाती पर लगबैत अछि–*छतिअबैत अछि, नेनाकेँ माए छतिअओने रहैत अछि* । काँखमे लगबैत अछि–*कँखिअबैत अछि* ॥३०॥

दूर-दूरसँ कहबमे ॥३१॥ थुथूनसँ आघातमे ॥३२॥ आँखि दृष्टि धक्कासँ देबमे ॥३३॥ अपनसँ बनाएबमे ॥३४॥ गादिसँ लेबामे ॥३५॥ चौकीसँ सरि करबामे ॥३६॥ पाथरसँ पिजएबमे ॥३७॥

दूर-दूर शब्दसँ कहबमे *अब्* । दूर दूर कहैत अछि–*दुरदुरबैत अछि* ॥३१॥

थुथूनसँ आघातमे *अब्* । थुथूनसँ मारैत अछि–*थुथनबैत अछि* । पूर्व सूत्रसँ *थुथन* आदेश ॥३२॥

आँखि, दृष्टि ओ धक्का शब्दसँ देब अर्थमे अब् । आँखि देब *अँखिआएब*, दृष्टि दैत अछि–*डिठिअबैत अछि* । दृष्टिकेँ *डिठि* आदेश । धक्का दैत अछि–*धकिअबैत अछि* । ककारक लोप, इकारान्तादेश ॥३३॥

अपनसँ बनाएबमे *अब्* । अपन बनबैत अछि–*अपनबैत अछि*, हमर पुस्तक के *अपनओलैन्हि* ? ॥३४॥

गादिसँ लेब धात्वर्थमे *अब्* । गादि लेलक–*गदिअओलक । बाती गदिआओल जाइत अछि* ॥३५॥

चौकीसँ सरि करब अर्थमे *अब्* प्रत्यय अबैत अछि । *खेत जोतल ओ चौकिआओल* ॥३६॥

पाथरसँ पिजाएब अर्थमे अब् आबए । *बसिला पथराओल*, पाथरपर पिजाओल ॥३७॥

इति तिङन्तमे नामधातुप्रक्रिया

अथ अनुप्रयोगप्रकरण

धातुसँ पौनःपुन्यमे वैकल्पिक *अल, कर* धातुक अनुप्रयोग ॥१॥ कर्तृगामी क्रियाफलमे इकार, *ल* धातुक ॥२॥ परगामीमे *द* धातुक ॥३॥

अनुप्रयोगप्रकरण आरम्भ भेल। क्रियागत पौनःपुन्यमे धातुसँ पर *अल* प्रत्यय अबैत अछि, एहि *अल* प्रत्ययसँ आगाँ *कर* धातुक प्रयोग हो। अनुप्रयुज्यमान धातु स्वतः अनर्थक थीक, किन्तु पूर्व धातुक अर्थसँ अर्थबोधक होइत अछि, अतएव ओहिसँ वर्त्तमानादिमे *ऐतअछि* इत्यादि तिङ् होएत। यथा–लोक *देखल करैत अछि*, अर्थात् पुनः-पुनः देखैत अछि। *नहाएल करैत अछि, गेल करैत अछि*, इत्यादि स्थलमे अल-निमित्तक पूर्वोक्त कार्यसबहिक अनुसन्धान कए लेब। *देखल करैत अछि* एकर अर्थ ''दृष्टं करोति'' ई नहि थीक, हेतुजे ''नहाएल करैत अछि'' इत्यादि स्थलमे तादृश अर्थ असम्भव अछि। दोसर ''दृष्टं करोति'' एहि विवरणवाक्यमे पौनःपुन्यरूप अर्थक अभाव अछि। तस्मात् वक्ष्यमाण कृत् *अल* सँ विलक्षण ई *अल* प्रत्यय आवश्यक ॥१॥

कर्तृगत क्रियाफलमे धातुसँ इकार प्रत्यय होइत अछि, ओ एहि इकारसँ पर *ल धातुक* अनुप्रयोग हो। *हम पुस्तक देखि लैत छी, तखन अहाँ लए लेब* ॥२॥

परगामी क्रियाफलहुमे इकार प्रत्यय धातुसँ पर होइत अछि, किन्तु एहि इकारसँ पर *द* धातुक प्रयोग हो। *हम अहाँकेँ पुस्तक लीखि दैत छी*। *हम भानस कए लेल* वा *कए देल* ई दूहू वाक्य भनसिआ बाजि सकैत अछि; प्रथममे कृतकृत्यता रूप फल कर्तृगत, ओ द्वितीयमे भोजनरूप फल परगत विवक्षित बुझल जाएत। एहू ठाम अनुप्रयुक्तत्वात् *ल* तथा *द* धातु स्वार्थबोधक नहि। कारण जे *खाए लैत छी*, इत्यादि स्थलमे ग्रहण ओ दान अर्थ बाधित अछि। *नहाए लेब, जाए लेब*, इत्यादि स्थलमे *इ* प्रत्ययस्थानिक ओ तन्निमित्तक कार्य्यक अनुसन्धान कए लेब ॥३॥

कर्तृबहुत्वमे *ऐत, ज धातुक* ॥४॥ ज- भिन्नसँ सम्पत्तिमे इकार ॥५॥

कर्तृबहुत्वमे धातुसँ पर *ऐत* प्रत्यय, तथा *ऐत* सँ आगाँ*ज* धातुक प्रयोग होइत अछि। *देखैत गेल, देखैत जाएत*, इत्यादि। *नहाइत जाओ, होइत जाओ* इत्यादि स्थलमे ऐकारस्थानिक आदेशक अनुसन्धान कए लेब। *हमरालोकनि देखैत छी* एहिठाम *ऐत* प्रत्यय बिनहुँ बहुत्वबोधक *लोकनि*-रूप कर्तृपद-बलात् कर्त्ता बहुत बुझल जाइत अछि। उक्त स्थलमे क्रियापदभागसँ कर्तृगत बहुत्वक बोध हो एतादृश तात्पर्यक अभावसँ *ऐत* प्रत्यय नहि भेल। तादृश तात्पर्य सन्ताँ होइतहिँ अछि–*हमरालोकनि नाच देखैत गेलहुँ। खाइत जाउ, जाइत जाउ* इत्यादि स्थलमे गमन-रूप अर्थ बाधित अछि, तस्मात् अनुप्रयुक्त *ज* धातु स्वतः अनर्थक जानब ॥४॥

क्रियाक सम्पन्नतामे *ज*-भिन्नसँ पर इकार अबैत अछि, ओ एहि इकारसँ आगाँ *ज* धातुक प्रयोग हो। *हम चित्र देखि जाइत छी*, अर्थात् देखब सम्पन्न करैत छी। *वस्तु बिकाए गेल, हम कार्य कए गेलहुँ* इत्यादि स्थलमे इकारस्थानिक ओ तन्निमित्तक कार्यक अनुसन्धान कए लेब। *हम जे एखन कहि गेलहुँ अछि से अहाँ बुझल, अहाँ आबि गेलहुँ* इत्यादि स्थलमे गमन अर्थ बाधित अछि, तेँ प्रकृतिमे *ज* धातु स्वतः अनर्थक जानब, अतएव क्त्वास्थानीय इ प्रत्ययसँ गतार्थता नहि। तँहि एतद्विषयमे कैँ क अनुप्रयोग नहि होइत अछि। सूत्रमे ''ज- भिन्न'' एकर उपादानैँ *जाय जाइत अछि* इत्यादि प्रयोगक अभाव सिद्ध भेल ॥५॥

स्त्रीभिन्नकर्तृक *चल*सँ अकार ॥६॥ सकर्मकसँ क्रममे *अने* ॥७॥ अकर्मकसँ *अल* ॥८॥ माध्यमिकत्वमे इकार, *रहल छ क* ॥९॥ आवश्यकत्वमे *अल*, इच्छातिङ्परक *तक* धातुक ॥१०॥

क्रियागत सम्पन्नतामे स्त्रीभिन्नकर्तृक चल धातुसँ इ प्रत्ययक अपवाद अकार प्रत्यय हो, ततःपर *ज* धातुक प्रयोग। *बालक चल गेल, बालिका चलि गेलि* ॥६॥

क्रम अर्थमे सकर्मक धातुसँ *अने* अबैत अछि, ततःपर *ज* धातुक प्रयोग हो। *खेतसभ देखने जाइत अछि*, अर्थात् क्रमशः देखैत अछि। *खएने जाइत अछि, कएने जाइत अछि* इत्यादि स्थलमे *अने*-निमित्तक कार्यसबहिक स्मरण कए लेब ॥७॥

क्रम अर्थमे अकर्मकसँ *अल* अबैत अछि, ततःपर *ज* धातुक प्रयोग हो। *लोकसभ बसल जाइत अछि* अर्थात् क्रमशः बसैत अछि। *हम कहने गेलिऐन्हि, ओ हँसल गेलाह* ॥८॥

क्रमिक जायमान अनेक व्यापारक बुद्धिकल्पित समुदायरूप क्रियाक मध्यवर्त्ती जे व्यापार तादृश व्यापारसे धातुसँ पर इकार प्रत्यय तथा ओहि इकारसँ पर *छ* धातुपरक रहल शब्दक प्रयोग होइछ। *नाच देखि रहल अछि, पुराण पढ़ि रहल छलाह। खाए रहल अछि, दए रहल अछि* इत्यादिमे इ-प्रत्ययनिमित्तक पूर्वोक्त कार्यसबहिक अनुसन्धान कए लेब। *खाइत छी* ई प्रयोग प्रथम क्रिया ओ अन्तिम क्रिया ताहूमे होइत अछि। *खाए रहल छी* ई केवल माध्यमिकहिमे। अतएव एहन प्रतीत होइत अछि जे किछु खाए चुकलाह, किछु खाएब बाँकी छैन्हि ओ सम्प्रतिओ खाइत छथि ॥९॥

क्रियाक आवश्यकत्वमे धातुसँ पर *अल* प्रत्यय हो, तकरासँ आगाँ इच्छार्थक *अय* आदि तिङ्युक्त *तक* धातुक प्रयोग हो। *छात्र नाच देखल ताकए, गुरु देखल ताकथि*। इच्छाविषयीभूत आवश्यक देखब एकर अर्थ जानब। *कहल ताकी, गेल ताकी* इत्यादि स्थलक अनुरोधसँ एहिठाम *तक*धातु दर्शनार्थक नहि, किन्तु कथन-गमनाद्यर्थक, *देखल ताकी* एहिठाम दर्शनार्थक ॥१०॥

***अब, ई*-प्रत्ययान्त *चाह* धातुक, *अब*सँ *आक* प्रत्यय ॥११॥ अनुप्रयुज्यमान धातु पूर्व धातुक अर्थसँ सार्थक ॥१२॥ *जाइत* जसँ वर्त्तमान भिन्न ॥१३॥ *इ रहल छ*सँ वर्त्तमान भूत ॥१४॥ *इ गेल* जसँ तद्भिन्न ॥१५॥**

आवश्यकत्वमे धातुसँ पर *अब* प्रत्यय सेहो होइत अछि, किन्तु एहिसँ आगाँ ई-प्रत्ययान्त *चाह* धातुक प्रयोग हो, तथा मध्यमे *अबसँ* पर *आक* प्रत्यय हो। एहि *चाह* धातुसँ भावहिमे तिङ् हो से आगाँ कहल जाएत। *ओकरा वा हमरा नाच देखबाक चाही* ॥११॥

अनुप्रयुज्यमान धातु पूर्व धातुक अर्थसँ अर्थबोधक होइत अछि, अतएव ओकरा स्वार्थबोधकत्व नहि। *देखल करब, देखैत जाउ* इत्यादि पूर्वोक्त उदाहरण जानब ॥१२॥

जाइतसँ पर प्रयुक्त *ज* धातुसँ वर्त्तमानबोधक तिङ् नहि हो, तैँ *जाइत जाइत अछि* इत्यादि प्रयोग नहि भेल, किन्तु *जाइत गेल, जाइत जाएत, जाइत जाओ* इत्यादि ॥१३॥

इ रहल पूर्वक *छ* धातुसँ वर्त्तमानबोधक ओ भूतबोधक तिङ् अबैत अछि; तद्भिन्न नहि। *देखि रहल अछि, देखि रहल छल* ई प्रयोग भेल, *देखि रहल रहत* इत्यादि नहि। *खाए रहल अछि, कए रहल अछि* इत्यादिओ तत्स्थानापन्नन्यायसँ प्रकृतसूत्र-विषय जानब ॥१४॥

इ गेल ज सँ वर्त्तमान ओ भूत एतदुभयभिन्ने तिङ् आबए, तैँ *देखि गेल जाएत, देखि गेल जाओ* इत्यादि भेल, *देखि गेल जाइत अछि, देखि गेल गेल* इत्यादि प्रयोग नहि भेल। तत्स्थानापन्नन्यायसँ *खाए गेल जाओ* इत्यादिओ प्रकृत सूत्रक उद्देश्य जानब ॥५॥

तिङन्तमे अनुप्रयोगप्रकरण समाप्त

अथ कर्मकर्तृभावप्रक्रिया

धातुसँ स्वार्थमे वैकल्पिक *अल*, *ज* धातुक अनुप्रयोग ॥१॥ *इ* अनुप्रयुक्त *ज, द, ल*सँ ॥२॥

तिङ्प्रत्यय कर्ता, कर्म ओ भाव तीनि अर्थमे होइछ तकर निर्णय प्रारम्भ भेल अछि। धातुसँ पर स्वार्थमे ऐच्छिक *अल* अबैछ, एहि *अल*सँ आगाँ *ज* धातुक प्रयोग हो। एहि *ज* धातुसँ केवल कर्म ओ भावमे तिङ् आओत, कर्त्तामे नहि। *शिशु देखल जाइत अछि, वृद्ध देखल जाइत छथि, छओँड़ा देखल गेल, बूढ़ा देखल गेलाह* इत्यादि। कर्ममे तिङ् अएलासँ कर्तृबोधकसँ तृतीया, कर्मबोधकसँ प्रथमा। *हमरासँ* वा *तोरासँ नाच देखल जाइछ।* *अल्क* योगमे क्वचित् कर्तृबोधकसँ द्वितीया सेहो होइत अछि, *हमरा* वा *हमरासँ शत्रुक दुर्वाक्य नहि सहल जाएत। तोरासँ अनुचित कएल गेल,* इत्यादि स्थलमे *अल*-निमित्तक विशेष कार्यक अनुसन्धान कए लेब। आदरमे प्रायः कर्म प्रत्यय ओ भाव प्रत्यय व्यवहृत अछि। *अपने कखन आएल गेल? कतेक दिन रहल जाएत?* एहिठाम भावमे तिङ् जानब। *अहाँकेँ* अधिक आदरमे *अपने* आदेश तथा ओहिसँ पर तृतीयाक विलोप पूर्वहिँ कहल गेल अछि ॥१॥

इकार प्रत्ययसँ अनुप्रयुक्त *ज, द, ल* धातुसँ पर स्वार्थमे वैकल्पिक *अल* अबैत अछि। एहू *अल*सँ पर *ज* धातुक अनुप्रयोग हो। *अपने कहि गेल जाओ।* क्रियाक सम्पन्नतामे इकार प्रत्यय पूर्व कहि आएल छी। *अपने कहि देल जाए, तखन हमरो वक्तव्य सूनि लेल जाएत* ॥२॥

अनौचित्यमे *अना* ॥३॥ एहि *अल*, *अनाक* प्रकृति सकर्मक रहने अनुप्रयुक्त *ज*सँ कर्ममे तिङ् ॥४॥ अकर्मक रहने भावमे ॥५॥ शेषसँ कर्तामे ॥६॥ भावमे वर्तमानार्थक *ऐतअछि, ऐछ* एतावन्मात्र तिङ् ॥७॥

धातुसँ पर क्रियागत अनौचित्यमे *अना* प्रत्यय अबैत अछि, एहि *अना*सँ पर *ज* धातुक प्रयोग हो। *अनाक* योगमे कर्तासँ द्वितीया वैकल्पिक अबैत अछि। *हमरा* वा *हमरासँ देखना गेल, हँसना गेल,* अर्थात् देखबाक वा हँसबाक अनौचित्यमे हम देखल ओ हँसलहुँ। *कएना गेल, पठओना गेल* इत्यादि स्थलमे *अन*निमित्तक कार्यसबहिक स्मरण कए लेब ॥३॥

स्वार्थिक *अल* ओ अनौचित्यवाची *अना* प्रत्ययक प्रकृति धातु सकर्मक रहए तैँ एहि *अल* ओ *अना*सँ अनुप्रयुक्त *ज* धातुसँ कर्ममे तिङ् आबए। *नेना देखल जाइत अछि। हमरा बात कहना जाइत अछि* ॥४॥

स्वार्थिक *अल* ओ अनौचित्यबोधक *अना* प्रत्ययक प्रकृति धातु यदि अकर्मक हो तैँ

उक्त *अल* ओ *अनासँ* अनुप्रयुक्त *ज* धातुसँ भावमे तिङ् आबए । भाव क्रिया एक थीक। *अपने बैसल जाए, तखन उठल जाएत, अपनुकाँकाँ बहुत काल बैसना गेल* ॥५॥

स्वार्थिक *अल* ओ अयोग्यत्वबोधक *अनासँ* अनुप्रयुक्त *ज* धातुसँ भिन्न धातुमात्रसँ कर्तामे तिङ् हो । *देखैत अछि, देखल करैत अछि, देखि दैत अछि, जाइत अछि* ॥६॥

भावमे जे तिङ् होएत ताहिमे वर्तमानार्थक *ऐतअछि* ओ *ऐछ* एतावन्मात्र तिङ् आबए, *अपने बैसल जाइत अछि* वा *बैसल जाइछ । शीतभीतसँ माघ मास नहाएल नहि जाइत अछि ।* 'नहि'क प्रयोग मध्यहुमे हो तकर विचार वाक्यव्यवस्थामे भेटत ॥७॥

भूतादिमे *अल अत अओ ऐत अय* ॥८॥ यादृश कर्तृपद रहने यथायोग्य जेहन उपाधिमे वर्तमानादिबोधक *ऐतअछि* प्रभृति जे तिङ् उक्त अछि तादृश कर्मपद रहने यथायोग्य तेहन उपाधिमे वर्तमानाद्यर्थक से तिङ् कर्ममे हो ॥९॥

भावमे जे तिङ् होएत ताहि मध्य भूत, भविष्य, प्रेरणा, संभावना, इच्छामे क्रमशः *अल, अत, अओ, ऐत, अय* एतावन्मात्र । *अपने काशीमे कतेक दिन रहल गेल ? एहिठाम कतेक दिन रहल जाएत ? अपने उठल जाओ । हम जँ रहितहुँ तँ अपनहुँ रहल जाइत । हमरा इच्छा जे अपने किछु दिन रहल जाए* ॥८॥

यादृश कर्तृपद रहने यथायोग्य जेहन निमित्त सन्ताँ वर्तमानादिबोधक *ऐतअछि* प्रभृति इहौन्ह पर्यन्त जे तिङ् उक्त अछि, तादृश कर्मपद रहने तेहन निमित्त सन्ताँ वर्तमानादिबोधक से तिङ् कर्ममे अबैत अछि । यथा अनादरणीय कर्तृपद रहने वर्तमानबोधक *ऐतअछि* प्रत्यय कर्ममे आओत । *शिक्षक देखैत छथि, देखल जाइत छथि* । एवम् उक्त विषयमे आन अनादरणीयक सम्बन्धरूप निमित्तमे *ऐतछौक* उक्त अछि सेहो कर्मभिन्न अनादरणीयक सम्बन्धमे आओत । *भिखमंगासँ नेना देखल जाइत छैक* एहनो होएत । एवं *तोँ देखल गेलाह, हम देखब, हम देखल जाएब* इत्यादि उदाहरणक भावना कए लेब ॥९॥

***द ल -भिन्न अनुप्रयुक्त धातुसँ तिङ्मात्र* ॥१०॥**

द ल्सँ भिन्न अनुप्रयुक्त धातुसँ केवल तिङ् प्रत्यय आबए कृत्प्रत्यय नहि, तँ *देखल कएनिहार अछि* इत्यादि प्रयोग नहि भेल, किन्तु *देखल करैत अछि, देखल करत* इत्यादिए भेल । द ल-भिन्न कहलासँ *देखि लेल करू* इत्यादि प्रयोग भेल ॥१०॥

इति कर्मकर्तृभावप्रक्रिया

अथ तिङर्थप्रक्रिया

वर्तमानसमीपमे वर्तमानवत् वैकल्पिक ॥१॥ क्रियाक शीघ्र संपत्ति रहने वर्तमानमे भूतवत् ॥२॥ भविष्यमे आशंसा रहने ॥३॥ नित्यप्रवृत्त क्रियामे वर्तमानवत् ॥४॥ हेतुहेतुमद्भावमे इच्छावत् ॥५॥ आशङ्कामे ॥६॥ जँ तँक योगमे ॥७॥ भूतमे अनिर्णय सन्ताँ *हो* धातुसँ भविष्यवत् ॥८॥ संभावनामे इच्छावत् ॥९॥ तिङ्विधिमे धातूच्चारणव्यवस्थित वर्तमानादि ॥१०॥ कृद्विधिमे प्रधानक्रियाव्यवस्थित ॥११॥

वर्त्तमानकालक समीपवर्ती जे भूत वा भविष्य काल ताहिमे वर्तमानवत् प्रत्यय अबैत अछि वैकल्पिक । *कखन जाएब ? इएह जाइत छी । कखन जल आओत ? इएह अबैत अछि ।* पक्षमे यथाप्राप्त, *आब शीघ्रे जाएब, शीघ्रे जल आओत* ॥१॥

क्रियाक शीघ्र संपत्ति (समाप्ति) रहलासँ वर्तमानमे भूतवत् प्रत्यय होइत अछि विकल्पैँ । *भानसमे विलम्ब अछि ? मानस भए गेल वा शीघ्रे भए जाएत* ॥२॥

आशंसा (कामना) रहने भविष्यकालमे भूतवत् प्रत्यय वैकल्पिक आबए । *पानि भेल की धान रोपल,* वा *पानि होएत तखन लगले धान रोपब* ॥३॥

नित्यप्रवृत्त क्रियाक तात्पर्य सन्ताँ अवर्तमानहुमे वर्तमानवत् प्रत्यय अबैत अछि । यथा, *प्रलयकालमे जलमय रहैत अछि । खरमासमे आगि घरकेँ डाहैत अछि ।* आगिक खरमासमे गृहदाहक्रिया जे अनादि कालसँ प्रवृत्त अछि ओहिक्रियाक बोध भेल । यदि यत्किञ्चित् भूत वा भविष्य क्रियाक तात्पर्य हो तँ *खरमासमे आगि बहुत घरकेँ* डाहलैन्हि वा *डाहताह इत्यादि* ॥४॥

हेतुहेतुमद्भावमे धातुसँ पर इच्छावत् तिङ् होइत अछि । *भगवानक नमस्कार करी तँ सुखी होइ* ॥५॥

आशङ्कहुमे इच्छावत् तिङ् होइत अछि । *घर खसि ने पड़ए* ॥६॥

जँ तँक योगमे इच्छावत् तिङ् आबए –*जँ अहाँ कही तँ हम जाइ* ॥७॥

अनिश्चय सन्ताँ हो धातुसँ भूतमे भविष्यवत् प्रत्यय होइत अछि । *गेल होएताह, ओ कतहु होएताह । ओ खएने होएत* ॥८॥

संभावनामे हो धातुसँ अभविष्यमे इच्छावत् तिङ् अबैत अछि । *संभव जे ओ नाच देखैत होथि । गेल होथि* ॥९॥

तिङ्विधिमे धातुक उच्चारणसँ व्यवस्थित वर्तमानादि जानब अर्थात् जाहि धातुसँ वर्तमान कालमे तिङ् हो ताहि धातुक उच्चारणकाल वर्तमानकाल, तादृश उच्चारणकालसँ पूर्वकाल भूतकाल, ओ ओहिकालसँ अग्रिम काल भविष्यकाल जानब ॥१०॥

कृद्विधिमे प्रधानक्रियासँ व्यवस्थित वर्त्तमानादि बुझब अर्थात् प्रधान क्रियाक आधार काल वर्तमानकाल, ओहि क्रियाक कालसँ पूर्वकाल भूतकाल, ओ ओहि कालसँ अग्रिम काल भविष्यत्काल जानब। एकर उदाहरण कृत्प्रत्ययमे स्पष्ट होएत। भाषामे भविष्यत् शब्दक अपभ्रंश भविष्य शब्द व्यवहृत अछि, जेना जगत शब्दक अपभ्रंश जग। तैँ भाषामे भविष्य शब्दक प्रयोग असंतग नहि मानबाक थिक ॥११॥

तिङर्थप्रकरण समाप्त

अथ कृत्प्रकरण

***अनिहारसँ औबलि* पर्यन्त *कृत्* ॥१॥ कृत्प्रत्ययमे बाध्यबाधकभाव नहि ॥२॥ *अनिहार* प्रभृति *आइनि* पर्यन्त कर्तामे ॥३॥ *उआ* प्रभृति *आर* पर्यन्त कर्ममे ॥४॥ *अना* आदि *अक* पर्यन्त यथायथ करण अधिकरणमे ॥५॥ *अब* आदि *औबलि* पर्यन्त भावमे ॥६॥**

वक्ष्यमाण *अनिहार* प्रत्ययसँ *औबलि* प्रत्यय पर्यन्त कृत् कहाबए ॥१॥

कृत्प्रत्ययमे बाध्यबाधकभाव नहि हो, अर्थात् कृत्प्रत्ययमे कोनो प्रत्यय ककरो बाधक नहि हो, ने कोनहुसँ बाधित हो, तैँ *ठकनिहार, ठक* एहिठाम *अ* प्रत्यय *अनिहार* प्रत्ययक बाधक नहि भेल, तस्मात् दुहू प्रत्ययक समावेश सिद्ध भेल। एवम् *कमाइ, कमठान, कमाएब, कमएनाइ* इत्यादि स्थलहुमे जानब ॥२॥

अनिहार आदि *आइनि* पर्यन्त वक्ष्यमाण कृत्प्रत्यय कर्तामे हो ॥३॥

उआ प्रभृति *आर* पर्यन्त जे कहल जाएत से कर्ममे जानब ॥४॥

अना प्रत्ययसँ आरम्भ कए *अक* प्रत्यय धरि यथायथ अर्थात् यथायोग्य करणमे ओ अधिकरणमे अबैत अछि ॥५॥

अब आदि औबलि पर्यन्त जे अन्तमे प्रत्ययसभ कहल जाएत से सभ भावमे अर्थात् धात्वर्थमे अबैत अछि ॥६॥

धातुसँ *अनिहार* ॥७॥ ठक आदिसँ *अ* ॥८॥ पानि कर्मपूर्वक *भर*, लाठी-कर्मपूर्वक *धर* सँ ॥९॥ जोतसँ *आ* ॥१०॥ अधिकरण-कर्मपूर्वकसँ ॥११॥ भूतमे अकर्मकसँ *अल* ॥१२॥ अधिकरणपूर्वक पकसँ *ऊ* ॥१३॥ एहि *आ ऊ* सँ पूर्व ह्रस्वसँ पर व्यञ्जनकेँ द्विर्वचन ॥१४॥

धातुसँ पर कर्तामे *अनिहार प्रत्यय* आबए। *देखनिहार* अर्थात् दर्शनकर्ता; *हँसनिहार* हास्यकर्ता। बिकादिसँ पर *अनिहारक* प्रथम अकारसँ आगाँ *य* आगम बिकादिप्रकरणमे उक्त अछि, *बिकयनिहार, बिकएनिहार, य* केँ *ए* विकल्प। *पठओनिहार*, बकारक लोप, अकारकेँ ओकार अबन्त प्रकरणमे कहल अछि। एवम् अब्–अयनिहार, लब्-*लयनिहार*, पठब्–*पठओनिहार*। पिब, सिब्, जिब्–*पीनिहार, सीनिहार, जीनिहार*। द् ल्–*देनिहार, लेनिहार*। छुब्–*छुनिहार*। मर, कर, धर–*मुइनिहार, कयनिहार, धयनिहार* इत्यादि तत्तत्प्रकरणोक्त कार्यक अनुस्मरण कए लेब ॥७॥

ठक आदि धातुसँ पर कर्तामे *अ* प्रत्यय अबैत अछि, *ठक* ठकनिहार। फड़, झर,

गड़बड़ गजपट, अकसक प्रभृति धातुपाठमे पठित ठकआदिमे । ठक आदि आकृतिगण ॥८॥

पानि कर्मपदपूर्वक *भर* धातुसँ ओ लाठी कर्मपूर्वक *धर* धातुसँ पर *अ* प्रत्यय अबैत अछि । *पनिभर, लठिधर* ॥९॥

जोत धातुसँ कर्तामे *आ* प्रत्यय अबैत अछि, *जोता* जोतनिहार मालिक ॥१०॥

अधिकरणपूर्वक तथा कर्मपूवक धातुसँ कर्तामे *आ* प्रत्यय अबैत अछि । एकर अनादरहिमे प्रयोग । सूत्रमे अधिकरणादि शब्दैं तद्बोधक पद विवक्षित थीक । यत्पदपूर्वकसँ कृत्प्रत्यय आबए तकरा सङ्ग ताहि कृदन्तकैं समास उक्त अछि । माथमे ठेकनिहार *मथठेका* दोहारि । दूध बेचनिहार *दुधबेचा*, एवम् *घरपैसा, बघमारा* इत्यादि ॥११॥

अकर्मक धातुसँ पर कर्तामे *अल* प्रत्यय अबैत अछि ओ ई *अल* भूतकालबोधक जानब। *बसल ब्राह्मण आबथु । खसलकैं उठाउ । बिकाएल वस्तुक की शोच ?* सकर्मकसँ कर्ममे *अल* प्रत्यय आगाँ कहल जाएत। *बज* आदि अकर्मक पदसँ ग्राह्य से कहि आएल छी, तस्मात् *बाजल छलाह, गेल होएताह, आएल व्यक्तिक संमान करी*, इत्यादि सिद्ध भेल । प्रथममे उपान्त्यकैं दीर्घ, द्वितीयमे *अल्क* प्रथम अकारकैं एकार ओ *जकैं ग* आदेश, तृतीयमे बकारकैं यकार, उपान्त्यकैं दीर्घ । एवम् *बिकायल, बिकाएल, भेल* इत्यादिमे अलनिमित्तक कार्यक अनुसन्धान कए लेब ॥१२॥

अधिकरणबोधक जे पद तत्पूर्वक *पक* धातुसँ कर्तामे *ऊ* प्रत्यय अबैत अछि । अग्रिम सूत्रसँ ककारकैं द्वित्व । घरिमे पाकल *घरिपक्कू* केरा ॥१३॥

पूर्वोक्त *आ* प्रत्यय तथा *ऊ* प्रत्यय दुहूसँ पूर्व ह्रस्वसँ पर व्यञ्जनकैं द्विर्वचन होइत अछि। खढ़ कटनिहार *खढ़कट्टा* जन, *मुहदुस्सा, भितटप्पा, कनफुक्का । घरदेखा, पेटपोसा* इत्यादि स्थलमे द्विर्वचनाभाव ह्रस्वग्रहणक फल जानब ॥१४॥

रह अब ज धातुक योगमे सकर्मकसँ अने ॥१५॥ श्रूयमाण छ धातुक योगमे ॥१६॥

रह, अब, ज एहि तीनि धातुक योग सन्ताँ सकर्मक धातुसँ पर कर्तामे भूतकालार्थक *अने* प्रत्यय अबैत अछि । *देखने रहलाह । देखने अएलाह । देंखने गेलाह* । 'सकर्मक' पदक उपादानसँ *बसने रहलाह* इत्यादि नहि भेल किन्तु *बसल रहलाह* इत्यादिए । *बज* आदि सकर्मकपदैं नहि लेल जाए से पूर्व कहल गेल अछि तैं *बजने छलाह, गेने छलाह* इत्यादि नहि भेल, किन्तु *बाजल छलाह, गेल छलाह* इत्यादि भेल । अनुप्रयोग प्रकरणोक्त क्रममे *अने* प्रत्यय कएलासँ *देखने गेलाह* एकर "क्रमशः देखलैन्हि" इहो अर्थ जानब ।

'कृद्विधिमे प्रधान-क्रियाव्यवस्थित वर्त्तमानकालादि' ई तिङर्थ-प्रकरणक शेषमे कहल गेल अछि, अतएव *देखने अबैत अछि, देखने आओत* इत्यादि सिद्ध भेल ॥१५॥

श्रूयमान *छ* धातु अर्थात् जकरा स्थानमे *थिक* आदेश नहि भेल हो तादृश *छ* धातुक

योग सन्ताँ धातुसँ पर कर्ता ओ भूतकालमे *अने* प्रत्यय अबैत अछि– *देखने अछि, देखने छल । जोगअने अछि, पीने छथि, देने, लेने, छुइने, मुइने, कएने, धयने*, इत्यादि स्थलमे तत्तत्प्रकरणोक्त विशेष कार्यक अनुसन्धान कए लेब । 'श्रूयमाण' पदक उपादानसँ *देने थीक* इत्यादि नहि भेल ॥१६॥

संभावित होएबमे प्रयुक्त हो धातुक योगमे ॥१७॥ उपजसँ *आ* ॥१८॥ टुट आदिसँ, अन्तकैं द्विर्वचन ॥१९॥ घट बढ़सँ ई ॥२०॥ तच्छीलमे *अनमा* ॥२१॥ बिसर आदिसँ *आह* ॥२२॥

संभावना-विषयीभूत होएब अर्थमे प्रयुक्त जे *हो* धातु तकरा योगमे धातुसँ पर भूतकाल ओ कर्तामे *अने* प्रत्यय अबैत अछि । *देखने होएताह । देखने होथि से संभव* ॥१७॥

उपज धातुसँ भूत कर्तामे *आ* अबैत अछि । *उपजा* ॥१८॥

टुट आदि धातुसँ भूतकाल ओ कर्तामे *आ* प्रत्यय अबैत अछि ओ धातुक अन्त वर्णकैं द्विर्वचन सेहो होअए । *टुट्टा, फुट्टा, छुट्टा* ॥१९॥

घट ओ *बढ़* धातुसँ भूतकाल ओ कर्तामे *ई* प्रत्यय हो तथा अन्तकैं द्विर्वचन । *घट्टी* अर्थात् घटल, *बड्ढी*–बढ़ल ॥२०॥

धातुसँ पर तच्छील कर्तामे अर्थात् ओहि क्रियामे उत्कर्ष-प्राप्त कर्तामे *अनमा* प्रत्यय अबैत अछि । 'भूतमे' एकर निवृत्ति जानब । ई नेना *सुतनमा* अछि । ई गाछ *फड़नमा* अछि ॥२१॥

बिसर आदि धातुसँ पर तच्छील कर्तामे *आह* प्रत्यय अबैत अछि । *बिसराह*–विस्मरणशील । *अगुताह* । नाओ *डगमगाह* अछि ॥२२॥

उसर आदिसँ *आहु* ॥२३॥ चलसँ *आक अता* ॥२४॥ लड़सँ *आक अक्का* ॥२५॥ डर बुझसँ *अबुक अनुक* ॥२६॥ उड़सँ *आँक* ॥२७॥ खसँ आधिक्यमे *आधुर* ॥२८॥ गबसँ *ऐया* पुरुषमे ॥२९॥ स्त्रीमे *आइनि*, अबक विलोप ॥३०॥

उसर आदि धातुसँ तच्छील कर्तामे *आहु* प्रत्यय आबए । *उसराहु*–अधिक उसरनिहार । *उपजाहु, जुमाहु* ॥२३॥

चल धातुसँ तच्छील कर्तामे *आक, अता* दू प्रत्यय होइत अछि । *चलाक, चलता* ॥२४॥

लड़ धातुसँ तच्छील कर्तामे *आक, अक्का* दू प्रत्यय अबैत अछि । *लड़ाक, लड़क्का* ॥२५॥

डर धातुसँ *अबुक*, ओ *बुझ* धातुसँ *अनुक* आबए तच्छील कर्तामे । *डरबुक, बुझनुक* ॥२६॥

उड़ धातुसँ पर कर्तामे *आक* प्रत्यय अबैछ । *उड़ाक*–उड़निहार ॥२७॥

खा धातुसँ कर्तामे *आधुर* प्रत्यय अबैछ, भक्षणक आधिक्यमे । *खाधुर*–अधिक खएनिहार ॥२८॥

गब धातुसँ गानशील पुरुषमे *ऐया* प्रत्यय अबैत अछि । *गबैया, गबैआ*–गानशील पुरुष ॥२९॥

गब धातुसँ गानशील स्त्रीमे *आइनि* आबए ओ *गब*मे *अबक* लोपो हो । *गाइनि*–गानशील स्त्री ॥३०॥

कृत्प्रकरणमे कर्तृप्रत्यय समाप्त

कर्ममे *छन* आदिसँ *उआ* ॥३१॥ *चोरब छिपब नुकब*सँ *औआ, अब्क* विलोप ॥३२॥ *ओढ़ पहिर*सँ *अना* ॥३३॥ *द ल* सँ आवश्यकमे *अन* ॥३४॥ *ओछब बिछब* दुहूसँ *अन अना* ॥३५॥ *बुक घट*सँ *अनी* ॥३६॥ *देख*सँ सौन्दर्यमे *अनुक* ॥३७॥

आब कर्मबोधक कृत्प्रत्ययसब कहल जाइत अछि । *छन* आदि धातुसँ पर कर्ममे *उआ* अबैत अछि । *छनुआ* सोहारी । *रन्हुआ । भरुआ । किनुआ* । छन आदि आकृतिगण ॥३१॥

चोरब आदि धातुसँ कर्ममे *औआ* प्रत्यय अबैत अछि ओ *अबक* विलोप सेहो होइछ । *चोरौआ, छिपौआ, नुकौआ ।* औकारकेँ वैकल्पिक *अउ* आदेश कहल अछि । *चोरउआ, छिपउआ, नुकउआ* ॥३२॥

ओढ़ धातु ओ *पहिर* धातुसँ कर्ममे *अना* आबए । *ओढ़ना, पहिरना* ॥३३॥

द धातु तथा *ल* धातुसँ पर कर्ममे *अन* प्रत्यय हो यदि देब लेब आवश्यक हो । *देन, लेन ।* अनक *अ* केँ *ए* ॥३४॥

ओछब धातु तथा *बिछब* धातु दुहूसँ पर कर्ममे *अन* ओ *अना* अबैत अछि । *ओछाओन, ओछओना । बिछाओन, बिछओना ।* प्रत्ययक आदि अकारकेँ ओकार ओ बकारक लोप ॥३५॥

बुक धातु ओ *चट* धातुसँ पर कर्म अर्थमे *अनी* प्रत्यय अबैत अछि । *बुकनी, चटनी* ॥३६॥

देख धातुसँ कर्ममे *अनुक* आबए यदि सौन्दर्य अर्थ हो । *देखनुक* ॥३७॥

सकर्मक धातुसँ भूतमे *अल* ॥३८॥ *बज*सँ ॥३९॥ *लोढ़* आदिसँ *आ* ॥४०॥ *उसिन*सँ अन्नमे ॥४१॥

सकर्मक धातुसँ पर भूतकाल ओ कर्ममे *अल* प्रत्यय अबैत अछि । *देखल वस्तु आएल । जोगाओल वस्तु काज आबए । दब–हाथ दाबल अछि; द ल–देल वा लेल रुपैया नहि बिसरत; जक–धान जाकल अछि; कयल वा कएल कार्य मन पड़ल; धोएल हाथेँ फूल तोड़ब*

इत्यादिमे तत्तत्प्रकरणोक्त कार्यक अनुस्मरण कए लेब । *ज, अब* इत्यादि धातु सकर्मक पदसँ नहि लेल जाइत अछि से कहि आएल छी, तेँ ओहिसँ कर्ममे *अल* नहि आओत किन्तु कर्तृप्रत्ययप्रकरणोक्त कर्तहिमे, अतएव *गेल गाम फेर गेलहुँ* इत्यादि अशुद्ध जानब । 'भूतमे' एकर अधिकार 'आर' सँ पूर्व सूत्र पर्यन्त ॥३८॥

बज धातुसँ कर्ममे *अल* प्रत्यय आबए । *बाजल बात नठब नहि* । *बज* धातुकेँ सकर्मक पदसँ अग्राह्यत्व कहल अछि । तेँ *बज*सँ *अल्क* विधान करब आवश्यक । *बज* धातुसँ कर्ता कर्म दुहूमे *अल* फलित भेल ॥३९॥

लोढ़ आदि धातुसँ कर्ममे *आ* प्रत्यय अबैत अछि भूत कालमे । *लोढ़ा धान, फाँड़ा, गारा* ॥४०॥

उसिन धातुसँ कर्ममे ओ भूत कालमे *आ* प्रत्यय आबए यदि अन्नमे प्रयुक्त हो । *उसिना धान* वा चाउर । अन्नसँ आनमे *उसिनल केरा* ॥४१॥

कट*सँ पराजयमे *ऊ*, अन्तकेँ द्विर्वचन ॥४२॥ पानिकरणपूर्वक *जँत भिज*सँ ॥४३॥ *छिट* आदिसँ *आ* ॥४४॥ *लिख*सँ चीठीमे ॥४५॥ *देख चिन्ह*सँ *आर* ॥४६॥

कट धातुसँ पर कर्ममे ऊ प्रत्यय अबैत अछि ओ धातुक अन्त वर्णकेँ द्विर्वचनो होइछ, पराजय अर्थमे । *कट्टू बटेर* अर्थात् पराजित ॥४२॥

पानिरूप करणबोधक पदपूर्वक जे *जँत* धातु ओ *भिज* धातु ताहिसँ पर ऊ प्रत्यय आबए तथा धातुक अन्तिम वर्णकेँ द्वित्वो होअए । *पनिजँत्तू, पनिभिज्जू* ॥४३॥

छिट आदि धातुसँ कर्ममे *आ* प्रत्यय हो तथा धातुक अन्तकेँ द्विर्वचन । *छिट्टा, छँट्टा, झँट्टा* ॥४४॥

लिख धातुसँ पर चीठीरूप कर्ममे *आ* प्रत्यय हो भूतमे । *लिखा* अर्थात् लीखल चीठी ॥४५।

देख ओ *चिन्ह* धातुसँ पर कर्ममे *आर* प्रत्यय अबैत अछि । *देखार, चिन्हार* ॥४६॥

इति कृत्प्रकरणमे कर्मप्रत्यय समाप्त

करणमे *देख* आदिमेँ *अना* ॥४७॥ *बाढ़* आदिसँ *अनि* ॥४८॥ *कतर* आदिमेँ *अनी* ॥४९॥

करण अर्थमे *देख* आदिसँ पर *अना* प्रत्यय अबैत अछि । देखी जाहिसँ *देखना* रुपैआ, *ठेकना, टेकना, ठोकना, लारना, पिटना, मुनना, रोकना* । देखआदि आकृतिगण ॥४७॥

बाढ़ आदिसँ करणमे *अनि* प्रत्यय अबैत अछि । *बाढ़नि, चालनि* (*लागनि* मे उपधादीर्घ) *लागनि* ॥४८॥

कतर आदि धातुसँ पर करण अर्थमे *अनी* प्रत्यय अबैत अछि। *कतरनी, थकरनी,* (नह्कँ न) *नहरनी,* (जकँ गम) *बटगमनी, खोखरनी,* (झारकँ झर) *झरनी*। कतर आदि आकृतिगण ॥४९॥

कर्मपूर्वक धातुसँ करण ओ अधिकरणमे *आ* ॥५०॥ *कस* आदिसँ *अ* ॥५१॥ बैससँ भूमि अधिकरणमे *आड़* ॥५२॥ चल अधिकरणमे *अक* सक्कँ ठ ॥५३॥

कर्मपूर्वक धातुसँ करण ओ अधिकरणमे *आ* प्रत्यय अबैत अछि। *फुलतोड़ा* लग्गी वा डाली। *पएरधोआ* हथहर वा अढ़िआ। *पनिभरा* तमघैल। *भतरन्हा* खखइहर ॥५०॥

कर्मपूर्वक *कस* आदि धातुसँ पर *अ* प्रत्यय करण ओ अधिकरणमे अबैत अछि। *घोड़कस* डोरी, *बतरख* कोड़ो ॥५१॥

बैस धातुसँ भूमि आधारमे *आड़* प्रत्यय आबए। *बैसाड़* जगह ॥५२॥

बैस धातुसँ पर चल आधारविशेषमे *अक* प्रत्यय अबैत अछि ओ धातुक सकारकँ ठकार आदेश होइत अछि। भगबानक *बैठक*। बैठ धातु हिन्दीमे अछि तेँ *बैठू, बैठब* इत्यादि अशुद्ध जानब। एवम् *भेजब* इत्यादि ॥५३॥

कृत्प्रकरणमे करणाधिकरणप्रत्यय समाप्त

भावमे *अब* ॥५४॥ *अनाइ* ॥५५॥ *अ आ इ ई* ॥५६॥

'भावमे' एकर सम्बन्ध प्रकरणसमाप्तिपर्यन्त जानब। धातुसँ पर भाव अर्थात् क्रियामे *अब* प्रत्यय कृत्संज्ञक अबैत अछि। *देखब अर्थात्* दर्शन। हमरा पोथी *देखबाक* इच्छा। तिङ्संज्ञक *अब* तिङन्त प्रकरणमे कहल अछि, ओकर बिकादिधातुमे यादृश रूप तादृशे एकरो जानब। यथा, *हम बिकाएब से हमर बिकाएब अहाँकँ पसिन्द होएत*। तिङन्त क्रियापदसँ वाक्य समाप्त होइछ, क्रियान्तरक आकांक्षा नहि उठैत अछि, कृदन्त क्रियापदसँ वाक्यक समाप्ति नहि होइत अछि, ई भेद जानब। दोसर, एकरासँ विभक्ति अबैत अछि, ओकरासँ नहि। तेसर भेद जे एकरासँ कालक बोध नहि, ओकरासँ भविष्यकालक बोध होइछ इत्यादि। *बिकायब, बिकाएब*। पठब्–*पठायब, पठाएब / दबँब, लबब, सरबब / पिअब, पीब, सिअब, सीब, देब, लेब, होयब, होएब, छुइब, चुइब,* इत्यादिमे तिङन्तप्रकरणोक्त *अब*निमित्तिक कार्य सबहिक अनुस्मरण कए लेब।

यद्यपि क्रिया धातुअहिक अर्थ थीक तेँ क्रियारूप भावमे *अब* इत्यादिक विधान व्यर्थ, तथापि प्रत्यय बिना केवल धातुक प्रयोग नहि होइत अछि, तेँ प्रयोगशुद्ध्यर्थ अबादिक विधान आवश्यक, जेना भावमे तिङ्विधि ॥५४॥

धातुमात्रसँ पर भावमे *अनाइ* प्रत्यय कृत्संज्ञक अबैत अछि। *देखनाइ, पठओनाइ*।

पब–*पओनाइ,* दबनाइ, *पिनाइ, पीनाइ, मुइनाइ, कयनाइ, कएनाइ, धयनाइ, धएनाइ,* हो–*भेनाइ, धोएनाइ,* इत्यादिमे विशेष कार्यक ध्यान कए लेब ॥५५॥

धातुसँ पर भावमे अकार, आकार, इकार तथा ईकार ई चारि प्रत्यय अबैत अछि। *सक, झगड़ा, चालि, हँसी*। तृतीयमे उपधाकँ दीर्घ।

एहि ठाम ई बुझबाक थीक जे *अब, अनाइ* जेकाँ *अ* इत्यादि सब धातुसँ नहि अबैत अछि किन्तु अधिक धातुसँ *अ,* कतोक धातुसँ आकारादि। तकर यावतोक बोध लौकिक प्रयोगक आधारहिसँ होएत। तस्मात् *सक* आदिसँ *अ, झगड़* आदिसँ *आ, चल* आदिसँ *इ, हँस* आदिसँ *ई,* एवं रूपेँ आकृतिगण जानब। ताहिमे सक आदि देखबैत छी–

सक, (उपान्त्य इकार उकारकँ दीर्घ) छीक, ठीक, फूक, चूर। छेक, टेक, टोक, रोक, हौँक, मड़क, झनक, टनक, सनक, लपक, डबक, ढबक, हबक, भभक, गमक, दमक, धमक, झरक, चसक, महक, लहक, जोख, सीख, मेच, गैंच, खौँच, सीच, पहुँच, गैँट। (भेटमे अनुनासिक) भैँट, घौँट, झपट, दपट, लपट, गाड़, डाँड़, दौड, झगड़, रगड़, (ढेकर उनर ओलर पलर निबह टघड़ उपड़ सुतर सुधरमे उपान्त्यकँ दीर्घ)। नछोड़, मसोड़, दबाड़, रेबाड़, घसमोढ़, अमेढ़, खत, जित, कुत, जोत, न्योत, ब्यौँत, अरिआत, छेद, स्वाद, जप, टीप, लेप, छोप, रोप, छरप, डूब, जनम, बिलम, हार, घेर, घोर, बोर, ढौर, पौर, सुतार, नेआर, सकार, हकार, विचार, अछार, छछार, गजार, झमार, समार, खेहाड़, मचोर, फटकार, धिरकार, ललकार, परचार, तौल, ठेस, पोस, दमस, चाह, डाह, सनोह, तक, पक, जग, लँघ, जच, नच, पच, बज, कट, छँट, फट, बट, सट, छप, थप, नप, दब, बन्ह, रन्ह, चस इति सकआदि। छीक, ठीक, ताक, पाच, जाग, लाँघ।

तक आदिक उपान्त्यकँ *अ* प्रत्ययक परताँ दीर्घ उक्त अछि तेँ जाक, ताक, पाक इत्यादि रूप जानब।

झगड़ आदि–झगड़, रगड़ पनुग, झटक, सटक, पटक, खटक, छिटक, ललकार, सेब, लेब, (फक, दरक उधुकमे धात्वन्तकँ द्विर्वचन)। (सिच छिच छिकमे दीर्घाभावमे द्विर्वचन) आकृतिगण। *रगड़ा, पनुगा, झटका, सटका, पटका, खटका, छिटका, ललकारा, सेवा, लेबा, फक्का, दरक्का, उधुक्का, सीचा, सिच्चा, छीचा, छिच्चा, छीका, छिक्का*।

चल आदि–चल, हुल, बढ़, घट, छुत, हार, मार, उजह, लग, बिगाड़, लूट (उपधाकँ दीर्घ) आकृतिगण। *चालि, हूलि, बाढ़ि, घाटि, छूति, हारि, मारि, उजाहि, लागि, बिगाड़ि, लूटि*।

हस आदि–हँस, बिहुँस, मुसुक, औँघ, खोख, उमक, गमक, चमक, झलक, दलक, हुलक, भनक, पनुग, अकसक आदि आकृतिगण। उदाहरण–*हँसी, बिहुँसी, मुसुकी, औँघी, खोखी, उमकी, गमकी, चमकी, झलकी, दलकी, हुलकी, भनकी, पनुगी, अकसकी, सगबगी, हलचली, कछमछी* ॥५६॥

उलट आदिसँ *अन* ॥५७॥ रोप आदिसँ *अनि* ॥५८॥ झुक आदिसँ *अनी* ॥५९॥ गनसँ *ती* ॥६०॥ खग निबहसँ *अता* ॥६१॥ बक झोकसँ आर आरा ॥६२॥ समयक विषयमे जभिन्न गत्यर्थकसँ *अती* ॥६३॥ जसँ *ऐती* ॥६४॥ ठोक आदिसँ आइ ॥६५॥ उठसँ आब आओ ॥६६॥ हौ कुड़िसँ हठि ऐनी ॥६७॥

उलट आदि धातुसँ भावमे *अन* प्रत्यय अबैत अछि। *उलटन, पटकन, लपटन, जीवन, मरन, हरन, ऐठन, ओरिआओन, लेआओन* ॥५७॥

रोप आदि धातुसँ भावमे *अनि* अबैत अछि। रोपनि, तामनि, मढ़नि। (*गथ थकमे* दीर्घ) *गाथनि, थाकनि* / (*सिबकेँ सी*) *सीअनि* ॥५८॥

झुक आदि धातुसँ भावमे *अनी* आबए। *झुकनी / हुनका झुकनी लागल छैन्हि / कननी, कहनी, मंगनी, करनी, नोचनी, गुथनी, कपनी /* (झारमे ह्रस्वता) *झरनी* ॥५९॥

गन धातुसँ भावमे *ती* आबए। *गन्ती* ॥६०।

खग तथा *निबह* धातुसँ *अता / खगता, निबहता* ॥६१॥

बक धातुसँ *आर*, झोक धातुसँ *आरा / बकार, झोकारा* ॥६२॥

समयक विषयमे *ज* धातुसँ भिन्न गमनार्थक धातुसँ भावमे *अती* अबैछ। *अबती समय ओ भेटताह, फिरती हम / घुमती; चलती* ॥६३॥

ज धातुसँ उक्त विषयमे *ऐती / जैती समय* ॥६४॥

ठोक आदि धातुसँ *आइ / ठोकाइ, झोँकाइ, मजाइ* (उपधाह्रस्व), *उघाइ, चराइ, भराइ, चिराइ, अगुताइ, बन्हाइ, लेबाइ, छराइ, घोँटाइ* (आइसँ पूर्व सकल स्वरकेँ ह्रस्वता) ॥६५॥

उठसँ *आब* तथा *आओ* प्रत्यय आबए। *उठाब, उठाओ* ॥६६॥

हौ तथा *कुड़ि* धातुसँ भावमे *हठि* ओ *ऐनी* हो। *हौहठि, हौऐनी, कुड़िहठि, कुड़िऐनी* ॥६७॥

ओझर फरिछ घुरि सँ ओठ ॥६८॥ *घिसिअबसँ ओड़, अब्क विलोप* ॥६९॥ बँटसँ *अबारा* ॥७०॥ घट बढ़सँ धनादि विषयमे *अन्ती* ॥७१॥ जगसँ रात्रिव्यापकतामे *अरना* ॥७२॥ कमसँ *ऐनी अठान* ।७३॥ मरु आदिसँ ऐनी ॥७४॥ भविष्यमे अबसँ *ऐया*, होसँ *नी* ॥७५॥

ओझर, फरिछ, घुरि तीनू धातुसँ भावमे *ओठ* आबए। *ओझरोठ, फरिछोठ, घुरिओठ* ॥६८॥

घिसिअब धातुसँ पर भाव अर्थमेओड़ कृत्प्रत्यय आबए ओ *अबक* विलोप हो। *घिसिओड़* ॥६९॥

भाव अर्थमे बँट धातुसँ पर *अबारा; घट, बढ़* धातुसँ पर धनादिविषयमे *अन्ती, जग* धातुसँ सकलावयवेँ रात्रिसम्बन्धमे *अरना, कम* धातुसँ पर *ऐनी* ओ *अठान* कृत्प्रत्यय अबैत अछि। *बटबारा, धनक घटन्ती वा बढ़न्ती, जगरना, कमैनी, कमठान* ॥७०-७३॥

मरु आदि धातुसँ पर भावमे *ऐनी* अबैत अछि। *मरुऐनी, सुखैनी, टटैनी* ॥७४॥

भविष्यमे *अब* धातुसँ *ऐया* तथा *हो* धातुसँ *नी* भावमे। *अबैया, अबैआ, होनी* ॥७५॥

समानकर्तृक क्रियाद्वयमध्य पूर्वकालमे इ ॥७६॥ सक, संपादनार्थक चुक, सामर्थ्यार्थक होक योगमे ॥७७॥ पड़ धातुक योगमे बुझ जन सुन देख धातुसँ ॥७८॥ नहिक योगमे ॥७९॥ बिकादिसँ पर इ प्रत्ययकेँ *आय* ॥८०॥ अनेकस्वरक अबन्तसँ अन्तिम अब्क विलोप ॥८१॥

समानकर्तृक क्रियाद्वयमे पूर्वकालिक क्रिआबोधक धातुसँ पर भाव (धात्वर्थ)मे इ प्रत्यय होइत अछि। *देखि अएलहुँ* अर्थात् पूर्व देखल पश्चात् अएलहुँ। एवम् *देखि, सूनि, बूझि अएलाह* ॥७६॥

सक धातु, संपादनार्थक चुक धातु तथा सामर्थ्यार्थक हो धातु एतेक धातुक योगमे धातुसँ पर इकार प्रत्यय अबैतअछि। *ओ देखि सकत, देखि चुकल, देखि होएत* ॥७७॥

पड़ धातुक योगमे *बूझ, जन, सुन, देख* एतबा धातुसँ पर इ प्रत्यय अबैत अछि। *बूझि पड़ैत अछि, जानि पड़ल, सूनि पड़त, देखि पड़ैत* ॥७८॥

नहि शब्दक योगमे धातुसँ पर इ प्रत्यय होइत अछि। *एहि विषयमे बाजि नहि, टोकि नहि* ॥७९॥

बिकादि धातुसँ पर जे इ प्रत्यय तकरा स्थान *आय* आदेश हो। *हरिश्चन्द्र बिकाय उऋण भेलाह / चोर नुकाय रहल /* यकेँ पाक्षिक ए, *बिकाए, नुकाए* ॥८०॥

जाहिमे अनेक स्वर रहए तादृश अबन्त धातुसँ पर इ प्रत्ययकेँ *आय* आदेश हो तथा प्रकृतिक अन्तिम *अबक* विलोप हो। पठब्–*पठाए* वा *पठाय अएलहुँ*। पठबब्–पठबाय देल। एहि ठाम *पठबब्* इ एहि स्थतिमे अन्तिम *अबक* विलोप भेल, ताहिसँ पूर्व स्थित *अबक* नहि, कारण ओ अन्तिम नहि भेल। 'अनेकस्वरक' ई कहलासँ *आबि, गाबि* इत्यादि स्थलमे आदेश नहि भेल ॥८१॥

कर धरसँ य, रेफक लोप ॥८२॥ हो धोसँ होकेँ भ ॥८३॥ द लसँ, मध्यमे अ ॥८४॥ इ सँ पूर्व उपान्त्य इकार उकारकेँ दीर्घ ॥८५॥ एकस्वर अबन्तक ओ जकादिक ॥८६॥

कर धातु ओ *धर* धातुसँ पर इ प्रत्ययकेँ *य* आदेश तथा *कर धर* सम्बन्धी रेफक लोप हो। *कार्य कय पढ़ब, वस्तु धय आउ* ॥८२॥

हो धातुसँ तथा *धो* धातुसँ पर *इ* प्रत्ययकेँ *य* आदेश हो, आओर *हो* केँ *भ* आदेश सेहो होअए। *पण्डित भय छात्र पढ़ाएब। वस्त्र धोय पहिरब* ॥८३॥

द धातु ओ *ल* धातुसँ पर *इ* प्रत्ययकेँ *य* आदेश होइत अछि तथा प्रकृति-प्रत्ययक मध्यमे अकार सेहो अबैछ। *दय, लय* ॥८४॥

इ प्रत्ययसँ पूर्व उपान्त्य अर्थात् अन्तसँ पूर्व इकार उकारकेँ दीर्घ होइ अछि यदि *इ* प्रत्यय श्रूयमाण रहए। *पीबि, डूबि। बिकाय* एहिठाम *इ प्रत्यय श्रूयमाण नहि भेल* ॥८५॥

एकस्वरक जे अबन्त धातु *अब्, गब्, पब्* इत्यादि तकर उपान्त्यकेँ दीर्घ हो। तथा जकादि धातुक जे उपान्त्य तकरहु *इ* प्रत्ययसँ पूर्व दीर्घ होइछ–आबि, गाबि, पाबि। जाकि, झाँकि।

एहिठाम ई बुझब जे *आय* आदि आदेश जे *इ* प्रत्ययक स्थानमे कहल गेल अछि से अनुप्रयोग-प्रकरणोक्त वा भावकर्म-प्रकरणोक्तहु *इ* प्रत्ययक स्थानमे होएत। *ई वस्तु बिकाय गेल, बिकाय रहल अछि, बिकाय लिअ, बिकाय दिअ, अपने बिकाय गेल जाय* ॥८६॥

पूर्वकालार्थक इ प्रत्ययसँ पर केँ शब्दक ऐच्छिक प्रयोग ॥८७॥

पूर्वकालार्थक जे *इ* प्रत्यय तकरासँ पर पूर्वकालद्योतक *केँ* ई अव्यय इच्छावश प्रयोक्तव्य होइत अछि। *देखिकेँ गेलाह* वा *देखि गेलाह*। पूर्व वाक्यसँ नियमतः "पूर्व देखलैन्हि पश्चात् गेलाह" ई बुझल जाइत अछि। द्वितीय वाक्यसँ ओ अर्थ वा "देखब सम्पन्न कएलैन्हि" ई अर्थ विवक्षावश प्रतीत होएत। *केँ* शब्दक प्रयोगविधिसामर्थ्यसँ उक्तार्थानामप्रयोगः अर्थात् उक्तार्थक जे शब्द तकर प्रयोग नहि हो एहि न्यायक बाध भेल। किन्तु *पूर्व देखू पश्चात् जाउ* एहिठाम उक्त न्यायसँ *इ*- प्रत्ययक अभावे होएत ॥८७॥

क्रियार्था क्रिया सन्ताँ धतुसँ *अय* ॥८८॥ एहि *अयसँ लयक* ऐच्छिक अनुप्रयोग ॥८९॥ *जन* धातुक योगमे *अय* ॥९०॥ अनिरोधार्थक *द* धातु, प्रवृत्त्यर्थक *लग* धातु, अवगत्यर्थक *अब* धातु, अवसरप्राप्त्यर्थक *पब* धातुक योगमे ॥९१॥

धातुसँ पर *अय* प्रत्यय आबए, यदि क्रियार्था क्रियाक बोधक क्रियापद प्रयुक्त रहए। एकक्रियाफलक जे दोसर क्रिया से क्रियार्था भेल। *देखय जाइत छथि* एहिठाम गमन क्रिया दर्शनार्थक थीक, तद्बोधक *जाइत छथि* ई क्रियापद प्रयुक्त अछि। *बिकाय जाइत छथि* एहिठाम बिकादि-प्रकरणोक्त सूत्रसँ *अयक* पहिल अकारकेँ आकार। *पठाबय, पठबय* एहि ठाम उपधाकेँ दीर्घ विकल्प इत्यादिक अनुसन्धान कए लेब ॥८८॥

एहि *अयसँ* पर निमित्तार्थक *लय* अव्ययक प्रयोग इच्छया कएल जाए। *देखय लय जाइत छथि*, वा *देखय जाइत छथि* ॥८९॥

धातुसँ पर *अय* प्रत्यय हो *जन* धातुक योग रहला सन्ताँ। *काज करय जनैत अछि* ॥९०॥

धातुसँ *अय* प्रत्यय हो, अनिरोधार्थक *द* धातु, प्रवृत्त्यर्थक *लग* धातु, ज्ञानार्थक *अब* धातु ओ अवसरप्राप्त्यर्थक *पब* धातुक योगमे। *देखय दिअ* अर्थात् देखबामे निरोध जनु करी। *देखय लगलाह* अर्थात् देखबामे प्रवृत्त भेलाह। *काज करय अबैत अछि* अर्थात् काज करबाक अवगति अछि। देखय पओलहुँ, अर्थात् देखबाक अवसर पाओल ॥९१॥

बालाक विषयमे ॥९२॥

बाला प्रत्यय तद्धित प्रकरणमे कहल गेल अछि, ओहि प्रत्ययक विषयमे धातुसँ पर भावमे अय प्रत्यय होइत अछि। *देखयबाला, करयबाला। बिकायबाला,* आबयबाला इत्यादि स्थलमे अयनिमित्तक कार्यविशेषक अनुसन्धान कए लेब ॥९२॥

प्राप्त्यर्थक पड़ धातुक योग रहने आवश्यकत्वमे *अय ऐक* ॥९३॥ *हो* धातुसँ आकस्मिकत्वमे *य, हो* केँ *भ* ॥९४॥ सन्ताँक योगमे धातुसँ *अल,* ततःपर *आ* प्रत्यय ॥९५॥ परस्परक्रियामे देख आदिसँ *ई औबलि,* धातुकेँ द्विर्वचन, पूर्वखण्डसँ *आ, औबलिसँ* पूर्व उत्तरखण्डक उपान्त्यकेँ ह्रस्वतो ॥९६॥

धातुसँ पर क्रियागत आवश्यकत्वमे *अय* प्रत्यय वा *ऐक* प्रत्यय अबैत अछि, यदि प्राप्त्यर्थक पड़ धातुक योग रहए। *अहाँकेँ देखय* पड़त, वा देखैक पड़त अर्थात् अहाँकेँ देखब आवश्यक होएत। बिकादिसँ पर *अयक* आदि अकारकेँ *आ* आदेश तथा ऐकारकेँ *आइ* आदेश हो से बिकादि प्रकरणमे कहल गेल अछि। *हमरा बिकाय पड़त* वा *बिकाइक पड़त। देअय पड़ैत अछि, लेअय पड़त* इत्यादि स्थलमे *अय*निमित्तक कार्य-सबहिक अनुसन्धान कए लेब ॥९३॥

हो धातुसँ पर आकस्मिक होएब अर्थमे *य* प्रत्यय अबैत अछि, ओहिसँ पूर्व *हो* धातुकेँ *भ* आदेश सेहो होइत अछि प्राप्त्यर्थक पड़ धातुक योग रहलासँ। *एहि वस्तुक कार्य भय पड़त। कहुखन एहन भय पड़ैत अछि* ॥९४॥

सन्ताँ एहि अव्ययक योगमे धातुसँ पर *अल* प्रत्यय अबैत अछि, ताहिसँ पर *आ* प्रत्यय। *देखला सन्ताँ। नहएला सन्ताँ, गेला सन्ताँ* इत्यादिस्थलमे *अल*निमित्तक कार्यसबहिक अनुसन्धान कए लेब ॥९५॥

देख आदि धातुसँ पर परस्पर क्रियामे *ई* प्रत्यय अथवा *औबलि* प्रत्यय अबैत अछि, ताहिसँ पूर्व प्रकृतिभूत धातुकेँ द्विर्वचन (द्वित्व) होइत अछि, ओकर पूर्व खण्डसँ पर *आ* प्रत्यय सेहो होइत अछि, तथा *औबलि* प्रत्ययसँ पूर्व उत्तर खण्डक अन्तिम वर्णकेँ ह्रस्वता होइत अछि। *देखादेखी* वा *देखादेखौबलि*। अर्थात् परस्पर देखनाइ। एवम् *मारा-मारी, मारा-मरौबलि, पटका-पटकी, पटका-पटकौबलि, बजरा-बजरी, बजरा-बजरौबलि।* देख, मार, पटक, बजार, उकट, देख-आदि आकृतिगण ॥९६॥

भावार्थक कृत्प्रत्यय समाप्त

कृत्प्रकरण समाप्त

अथ व्यक्तिशब्द-प्रक्रिया

व्यक्तिकेँ *गोट* वैकल्पिक ॥१॥ मनुष्यादिभिन्नमे नित्य ॥२॥ गोटकेँ *टा* वैकल्पिक ॥३॥ आदरमे *गोटय* वा *गोटे* ॥४॥ क्वचित् अनादरहुमे ॥५॥ मनुष्यादिमे *गोटसँ आ*, विभक्ति पर रहने ॥६॥

व्यक्ति शब्दकेँ *गोट* आदेश होइत अछि वैकल्पिक। *एक गोट ब्राह्मण* वा *एक व्यक्ति ब्राह्मण आएल छथि। दुहू गोट वा हुहू व्यक्ति टहलू गेल। हमरा गाममे केओ व्यक्ति नहि रहल; ककरहु व्यक्तितारय नहि छैक* इत्यादि स्थलमे व्यक्तिशब्द परिनिष्ठितमे लाक्षणिक थीक तेँ ओकरा *गोट* आदेश नहि होएत। अलाक्षणिक व्यक्तिशब्द संख्यापूर्वके प्रायः प्रयुक्त होइछ ॥१॥

मनुष्यादिभिन्नमे प्रयुक्त व्यक्ति शब्दक स्थान *गोट* आदेश नित्य होइत अछि। *एक गोट खाट अछि, दू गोट माल अछि* एहि ठाम *एक व्यक्ति खाट* ओ *दू व्यक्ति माल* एहन प्रयोग नहि हो ॥२॥

व्यक्तिशब्द-स्थानिक *गोटकेँ* वैकल्पिक *टा* होइत अछि। *एक गोट* वा *एकटा* वा *एक व्यक्ति* चाकर अछि। *दू गोट वा टूटा खाट अछि। पुत्र टा छथि* इत्यादि स्थलमे केवलार्थक जानब। ई *टा* शब्द ओ *गोट* शब्द दुहूक सामानाधिकरण्येन प्रयोग नहि होइत अछि से वाक्य-व्यवस्थामे कहल जाएत ॥३॥

आदरमे गोटकेँ *गोटय* वा *गोटे* आदेश वैकल्पिक होइत अछि। *एक गोटय* वा *गोटे अएलाह अछि* ॥४॥

क्वचित् अनादरहुमे होइत अछि। *तोँ दुहू गोटे अएलेँ* ॥५॥

मनुष्यादिमे गोटसँ पर *आ* प्रत्यय अबैत अछि यदि आगाँ विभक्ति रहए। *एक गोटाकेँ बजाउ। ई धन दुहू गोटाक थीक। आ* प्रत्ययसँ पूर्व गोट्क ओकारकेँ ह्रस्वता होएत, एतदर्थ दीर्घ आदेश नहि कए *आ* प्रत्ययक विधान कएल गेल अछि ॥६॥

इति *व्यक्तिशब्द प्रक्रिया*

अथ गुरूच्चरण विधि

दीर्घ गुरूच्चारण ॥१॥ एकाक्षर नाम विभक्तिक अनुनासिक अकार ॥२॥ एकपदमे संयुक्त व्यञ्जनसँ पूर्व ॥३॥ षष्ठीसँ पूर्व ॥४॥ गुरूच्चारण विधिमे व्यञ्जन अविद्यमानवत् ॥५॥ नाम तिङन्तक उपान्त्य ॥६॥ यान्त-दीर्घान्त-मिथिलाभाषा-कोषानुक्त संस्कृतमे नहि ॥७॥ चकचक आदिमे स्वरसँ अव्यवहित पूर्व ॥८॥ एक पदमे गुरूच्चारणसँ पूर्व ॥९॥

दीर्घ *आ, ई, ऊ* इत्यादि वर्ण गुरूच्चारण होइछ। गुरु उच्चारण हो जकर से गुरूच्चारण भेल अर्थात् जकरा उच्चारणमे किछु बेशी काल लागए। *राम, ईश, ऊँच* ॥१॥

एकाक्षर जे नाम ओ विभक्ति तत्सम्बन्धी अनुनासिक जे अकार सेहो गुरूच्चारण होइछ। *जँ, तँ, हँ, रामसँ* ॥२॥

एकपदमे अवस्थित संयुक्त व्यञ्जनसँ पूर्व जे स्वर सेहो गुरूच्चारण होइत अछि। अक्री, बिक्री ॥३॥

षष्ठीपूर्व स्वर गुरूच्चारण हो। *रामक, हमर* ॥४॥

गुरूच्चारणविधानमे व्यञ्जनकेँ अविद्यमानवत् कार्य हो। एकर उदाहरण आगाँ देखब ॥५॥

नामक ओ तिङन्तक उपान्त्य अर्थात् अन्त्य वर्णसँ पूर्व स्वर गुरूच्चारण हो। पूर्वसूत्रबलात् व्यञ्जनक हिसाब नहि करब। *हर, भर, अछि*। (गुरूच्चारण इकार-उकारक ह्रस्ववत् वा दीर्घवत् लेख) *थिक, थीक; आजुक, आजूक*, (मतान्तरेँ ह्रस्ववते), *आजुक मालिनि* ॥६॥

यशब्दान्त तथा दीर्घान्त ओ मिथिलाभाषाकोषमे अनुक्त संस्कृत एहि तीनूमे उपान्त्य ह्रस्व गुरूच्चारण नहि हो। क्रमशः–*कार्य कय देखय गेलहुँ, झगड़ा, श्रीयुत*। मिथिलाभाषाकोषोक्त संस्कृतहुमे होएते। *मधु नहि देब* ॥७॥

चकचक आदि धातुपाठक अन्तमे उपदिष्ट धातुसँ बनल तथा आनो कतोक शब्दमे उपान्त्य ह्रस्वकेँ गुरूच्चारण नहि होइत अछि। *चकचक करैत अछि*। एवं *सदबद, गहुमन* इत्यादि ॥८॥

एक पदमे गुरूच्चारणसँ पूर्व गुरूच्चारण नहि होइत अछि। *हर, हरक। बल, बलक*। (एकपदमे उभयकेँ गुरूच्चारणताक संभवमे परे गुरूच्चारण) अतः *बलक* एहिठाम नामक उपान्त्य गुरूच्चारण नहि भेल किन्तु षष्ठीसँ पूर्व लकाराकारे। ह्रस्व गुरूच्चारणक नीचाँ बिन्दु रूप चिन्ह देबाक चाही से कहिए आएल छी ॥९॥

इति *गुरूच्चारण विधि*

एव-अपि-प्रकरण

एव-अपि क्वचित् पदसँ पर, क्वचित् पदक मध्यमे योजित होइछ ॥१॥ ओकरा स्थान क्वचित् *ए-ओ*, क्वचित् *ई-ऊ*, *ईं-ऊँ*, *अहि-अहु*, *अहिँ-अहुँ*, *अहीँ-अहूँ*, *हीँ-हूँ*, *एह-हो*, *इए-इओ* इत्यादि यथायोग्य वक्ष्यमाण आदेश ॥२॥

जाहि पदार्थक अवधारण वा समुच्चय विवक्षित हो ताहि पदसँ पर एव-अपि लगैत अछि। क्वचित् ओहि पदक मध्यहिमे योजित होइछ। पदसँ पर यथा–*रामे, रामो, सबहिँ, सबहुँ*। पदक मध्यमे–रामहिकेँ, रामहुकेँ; रामेलाल आबथि। मिथिलाभाषामे एव-अपि स्वरूपतः कतहु नहि रहैत अछि किन्तु *ए-ओ* इत्यादि रूपापन्ने से आगाँ कहल अछि ॥१॥

एव ओ *अपि*क स्थान क्रमशः *ए, ओ* अर्थात् *एव*क स्थान *ए*, *अपि*क स्थान ओकार आदेश होइछ। एवम् क्वचित् *ई-ऊ, ईं-ऊँ,, अहि-अहु, अहिँ-अहुँ, अहीँ-अहूँ, हीँ-हूँ, एह--हो; इए-इओ* इत्यादि आदेश आगाँ कहल जाएत। उदाहरणो आगाँ देखब ॥२॥

एव-अपिक स्थान आदेश संपूर्णकेँ ॥३॥ स्वरादि एव-अपिसँ पूर्व अवर्ण एवर्णक लोप ॥४॥ ई-ऊ केँ ह्रस्व ॥५॥

एव शब्दक तथा अपि शब्दक स्थान जे आदेश सब कहल जाएत से एकस्वरो आदेश संपूर्ण एवक ओ संपूर्ण अपिक स्थानमे होएए। *रामे, रामो* ॥३॥

जकर आदि स्वर हो ताहि एव-अपिसँ पूर्व अवर्णक तथा एवर्णक लोप हो। *रामे, रामो*–अकारक लोप। वर्णग्रहणेँ आकारहुक लोप–*गङ्गे, गङ्गो*। अपने–*अपनहि, अपनहु*। पहिने–*पहिनहि, पहिनहु*। वर्णग्रहणेँ अनुनासिक जे ए तकरो लोप। *पाएरँ*–*पाएरहिँ गेलाह*। *सेहो, जेहो* इत्यादि स्थलमे एव स्वरादि नहि किन्तु व्यञ्जनादि, तेँ एकारक लोप नहि। 'तत्स्थानापन्न तद्वत्' एहि सूत्रक बलेँ *ए-ओ* इत्यादि एव-अपि कहाओत ॥४॥

एव-अपिसँ पूर्व ईकार ऊकारकेँ क्रमशः ह्रस्व इकार, ह्रस्व उकार आदश होइत अछि। काली–*कालिए, कालिओ;* टहलू–*टहलुए, टहलुओ, टहलुअहिकेँ* ॥५॥

अब अल्प्रत्ययान्तक सकल स्वरकेँ ॥६॥ आकारोपध पठित धातुक स्वरकेँ नहि ॥७॥ अछैतक अनवयव प्रत्ययसम्बन्धी ऐतकेँ इत ॥८॥

अब-प्रत्ययान्त *जाएब, दहाएब* इत्यादि, *अल्*-प्रत्ययान्त *पाओल, दहाएल* इत्यादि, एहि सबहिक सकल स्वरकेँ ह्रस्वता होइछ एव-अपिसँ पूर्व। *जएबे नीक, जएबो करब / दहएबे, दहएबो / जएबहिमे बाधा / पओले रुपैआ, दहएलो वस्तु* ॥६॥

धातुपाठमे पठित जे आकारोपध *मान, हार* इत्यादि धातु तकरा स्वरकेँ ह्रस्व आदेश नहि हो एव-अपिसँ पूर्व। *मानबे नीक; हारबो करब* ॥७॥

एव-अपिसँ पूर्व प्रत्ययसम्बनधी ऐतकेँ *इत* आदेश होइत अछि, अछैत शब्दक ऐतकेँ नहि। *देखैत अएलहुँ, देखितहिँ अएलहुँ, देखितहुँ रहब / देखितहिँ अछि, देखितहुँ छल।* ऐत प्रत्यय कृत्प्रकरणमे उक्त अछि से व्यपदेशिवद्भावसँ प्रत्ययसम्बन्धी भेल। *ऐतअछि* इत्यादि तिङ्प्रत्ययमे जे उक्त अछि से स्वतः प्रत्ययसम्बन्धी भेल। *करैते साप थीक* एहि ठाम ऐतशब्द प्रत्ययसम्बन्धी नहि, अतएव ओकरा स्थान इत आदेश नहि भेल। *अछैतहिँ, अछैतहुँ* एहिठाम अछैतक ऐतकेँ इत आदेश नहि ॥८॥

आइतकेँ अइत ॥९॥ एव-अपिकेँ ए ओ ॥१०॥ अकारात्मक षष्ठीसँ पर ॥११॥ श्रूयमाण विभक्तिसँ पूर्व अहि-अहु ॥१२॥ सानुनासिक अहिँ-अहुँ ई ककरो मत ॥१३॥

एव-अपि सँ पूर्व प्रत्ययसम्बन्धी *आइतकेँ अइत* आदेश हो। *नहाइत देखलैन्हि, नहइतहिँ देखलैन्हि, नहइतहुँ अछि।* एहू ठाम पूर्ववत् प्रत्ययसम्बन्धित्व जानब। *ई वस्तु स्वाइते अछि* एहिठाम प्रत्ययसम्बन्धित्वक अभावसँ उक्त आदेश नहि भेल ॥९॥

एव-अपिक स्थान क्रमशः *ए-ओ* आदेश होइत अछि अर्थात् एव शब्दक स्थान एकार, अपिशब्दक स्थान ओकार सर्वदेश हो। तृतीय सूत्रक बलेँ सर्वदिशता जानब। उदाहरण–*मालि, मालिए, मालिओ / भालुए थीक, भालुओ देखल*। नहि, मेहीसँ *एँ-ओँ*–*नहिएँ, नहिओँ, मेहिएँ, मेहिओँ*॥१०॥

अकाररूप षष्ठीसँ पर एव-अपिकेँ क्रमशः *ए-ओ* आदेश हो। *तकर बालक*–*तकरे बालक, तकरो बालक*। यद्यपि *ए-ओ* आदेश पूर्वसूत्रसँ सिद्धे अछि तथापि उत्तर सूत्रसँ प्राप्त *अहि-अहु*क बाधनार्थ ई सूत्र ॥११॥

श्रूयमाण अर्थात् अलुप्त विभक्तिसँ पूर्व एव-अपिकेँ *अहि-अहु* आदेश हो। ई आदेश *ए-ओ* आदेशक बाधक जानब। एहि सूत्रसँ दू अंश अवगत भेल, एक तँ श्रूयमाण विभक्तिसँ पूर्वहि एव-अपि लागए; दोसर ओकरा स्थान ए-ओ क बाधक अहि-अहु आदेश हो। एहि निमित्त पूर्वसँ एव-अपिक अनुवृत्ति कए श्रूयमाण विभक्तिसँ पूर्व एव-अपि, ओहि एव-अपिकेँ *अहि-अहु* आदेश ई व्याख्या करब ॥१२॥

ककरो मत ई जे श्रूयमाण विभक्तिसँ पूर्व सानुनासिक *अहिँ-अहुँ* आबए। *गङ्गहिँकेँ देखू, जयदेवहिँ मे ई गुण* ॥१३॥

सबसँ पर अहिँ-अहुँ सर्वत्र ॥१४॥ सँस्थानिक एँसँ पर ॥१५॥ सप्तमीक विलोप सन्ताँ अकारान्तसँ पर ॥१६॥ तेँ जेँ अव्ययसँ पर ॥१७॥ ते जे सँ पर *ना* सँ पूर्व निरनुनासिको ॥१८॥

सब एहि शब्दसँ पर एव-अपिकेँ *अहिँ-अहुँ* आदेश सर्वत्र हो अर्थात् विभक्तिक विलोप भेल हो अथवा विभक्ति श्रूयमाण रहए दूहू ठाम। *सब छथि–सबहिँ छथि, सबहुँकेँ* ॥१४॥

सँ स्थानमे भेल जे *एँ* आदेश ताहूसँ पर एव-अपिकेँ *अहिँ-अहुँ* आदेश हो। *पाएरेँ–पाएरहिँ पाएरहुँ*। तृतीय सूत्रसँ *एँ*-कारक लोप ॥१५॥

सप्तमीक विलोप सन्ताँ अर्थात् विलुप्तसप्तम्यन्त अदन्तसँ पर एव-अपिकेँ *अहिँ-अहुँ* आदेश हो। *घरहिँ छथि, बाटहिँ रहलाह* ॥१६॥

तँ जँ अव्ययसँ पर एवकेँ *अहिँ*, अपिकेँ *अहुँ* आदेश हो। *तहिँ, जहिँ*। तृतीय सूत्रसँ एँकारक लोप ॥१७॥

ते शब्द ओ *जे* शब्दसँ पर *ना* प्रत्ययसँ पूर्व एवकेँ *अहिँ* वा *अहि*, अपिकेँ *अहुँ* वा *अहु* आदेश होइत अछि। *तहिँना* वा *तहिना* / *जहिँना* वा *जहिना* ॥१८॥

ऐत प्रत्ययान्तसँ *अहिँ-अहुँ* ॥१९॥ वर्तमान तिङ्क ऐतसँ ॥२०॥ *अने अपने पहिने परुकाँ तेसरुकाँसँ* ॥२१॥

ऐत-प्रत्ययान्त *अछैत, देखैत, जाइत*, इत्यादि कृदन्त, ताहिसँ पर एव-अपिकेँ क्रमशः *अहिँ-अहुँ* आदेश होइछ। *अत्र अछैतहिँ उपास; अछैतहुँ / देखितहिँ, देखितहुँ रहब, जइतहिँ देखल / ऐतकेँ इत* आदेश कहि आएल छी, एवम् *आइतकेँ अइत* आदेश कहल अछि। ऐतक ऐकारकेँ *आइ* आदेश उक्त अछि, तँ *आइत* शब्द *ऐत* कहओलक ॥१९॥

वर्तमान-बोधक तिङ्सम्बन्धी *ऐत* शब्दसँ पर एव-अपिकेँ *अहिँ-अहुँ* आदेश होइछ। *देखितहिँ अछि, देखितहुँ अछि / जइतहिँ छी, जइतहुँ छथि*। एहूठाम *आइत* शब्द उक्तरीत्या ऐतपदेँ गृहीत जानब ओ *ऐतकेँ इत, आइतकेँ अइत* आदेशो पूर्ववत् ॥२०॥

अने प्रत्ययन्त देखने, भेने इत्यादि, तथा *अपने, पहिने, परुकाँ, तेसरुकाँ* एहि सबसँ पर एव-अपिकेँ *अहिँ-अहुँ* आदेश होइछ। *देखनहिँ अएलाह, देखनहुँ जएताह / भेनहिँ, भेनहुँ / अपनहिँ, अपनहुँ / पहिनहिँ, पहिनहुँ / परुकहिँ, परुकहुँ / तेसरुकहिँ, तेसरुकहुँ*। तृतीय सूत्रसँ ए, आ एहि दुहूक लोप ॥२१॥

कृदन्त *अय* प्रत्ययान्तसँ, *अयक* विलोप ॥२२॥ *तय* प्रत्ययान्तसँ *अहि-अहु* ॥२३॥ *महर* प्रत्ययान्त *ककरा* आदिसँ ॥२४॥

अय प्रत्ययान्त जे कृदन्त तकरासँ पर एव-अपिकेँ *अहिँ-अहुँ* आदेश हो तथा *अयक* विलोप सेहो हो। *देखय गेलाह–देखहिँ गेलाह*, देखहुँ गेलाह। *देखय दिअ-देखहिँ दिअ, देखहुँ दिअ* ॥२२॥

तय-प्रत्ययान्त *ततय, जतय, एतय* इत्यादि, ताहिसँ पर एव-अपिकेँ *अहि-अहु* निरनुनासिक आदेश हो, तत्सम्बन्धी *अयक* विलोप होअए–*ततहि, ततहु, जतहि, जतहु,*

एतहि, एतहु, ओतहि, ओतहु, कतहु / कतय शब्दमे एवक योजना नहि से आगाँ कहल जाएत ॥२३॥

महर प्रत्ययान्तसँ ओ *ककरा* आदिसँ पर एव-अपिकेँ क्रमशः *अहि-अहु* आदेश होइत अछि। ककरा, तकरा, जकरा, एकरा, ओकरा, हमरा, तोरा, तोहरा, अपना कनिका, जनिका, हिनका, हुनका, अनका ई पन्द्रह शब्द सुबन्तोक्त ककरा आदि थीक। उदाहरण–*तेमहरहि, तेमहरहु*। ककरहु मतेँ *म्हर* प्रत्यय–*तेम्हरहि, तेम्हरहु / जेम्हरहि, जेम्हरहु* इत्यादि। *कोम्हर* शब्दमे एवकार नहि लगैत अछि किन्तु अपिमात्र, *कोम्हरहु*। एवम् ककरा, कनिका शब्दमे–*ककरहु, कनिकहु*। आनमे दुहूक सम्बन्ध–*तकरहि, तकरहु, जकरहि, जकरहु, ओकरहि, ओकरहु* इत्यादि ॥२४॥

***य*- प्रत्ययान्त *आय*-शब्दान्त नामसँ इए-इओ, *य* क विलोप, अवर्णक अलोप ॥२५॥ *ना* प्रत्ययसँ पूर्व *ए-ओ* सँ पर *हि-हु* ॥२६॥ प्रथमान्त *तोँ* सँ *हीँ-हूँ* ॥२७॥ ताहि आदिसँ ई ऊ, इलोप ॥२८॥ *अहाँसँ* ईँ–ऊँ सर्वत्र ॥२९॥**

य-प्रत्ययान्त कय, धय, लय, दय, भय, धोय, *आय*-शब्दान्त नाम बिकाय, पठाय, पठबाय, भाय, गाय, नेहाय, बलाय इत्यादि, ताहि सबहिसँ पर एव-अपिकेँ क्रमश इए-इओ आदेश, ताहिसँ पूर्व *य* शब्दक विलोप तथा अवर्णक अलोप अर्थात् अकारक ओ आकारक लोपाभाव होइत अछि। *कइएकेँ अयलहुँ, कइओ, धोइए, धोइओ; भाइए भाइओ; नेहाइए, नेहाइओ; बलाइए, बलाइओ* इत्यादि ॥२५॥

ना प्रत्ययसँ पूर्व *ए-ओ* शब्दसँ पर एव-अपिकेँ क्रमशः *हि-हु* आदेश हो। *एहिना, एहुना, ओहिना, ओहुना* ॥२६॥

प्रथमान्त *तोँ* शब्दसँ पर एव-अपिकेँ क्रमश *हीँ-हूँ* आदेश होइत अछि। *तोँहीँ तोँहूँ* ॥२७॥

ताहि आदि–*ताहि, जाहि, एहि, ओहि*, एहि चारि शब्दसँ पर एव-अपिकेँ *ई-ऊ* आदेश हो तथा पूर्व इकारक लोप हो। *ताही दिन, ताहू दिन / एवम् जाही काल, जाहू काल; एहीमे, एहूमे; ओहीसँ, ओहूसँ* ॥२८॥

अहाँ शब्दसँ पर एव-अपिकेँ क्रमशः *ईँ-ऊँ* सानुनासिक आदेश हो सर्वत्र अर्थात् विभक्तिक लोप वा श्रवण रहए अभयत्र। *अहीँ, अहूँ / अहीँकेँ, अहूँकेँ* ॥२९॥

विलुप्तविभक्तिक *से* जे सँ एवकेँ अएह ॥३०॥ ई ओ सँ एह, हस्वता ॥३१॥ चारूसँ अपिकेँ *हो* ॥३२॥ कोनाक्क मध्यमे *हु* वा *न्हु* ॥३३॥ दूसँ एवकेँ *हू* वा *न्* ॥३४॥ छेँ सँ *अहेँ* ॥३५॥ तीनि चारिसँ ऊ इलोप ॥३६॥

जाहिसँ पर विभक्तिक विलोप भेल हो तादृश *से* शब्द ओ जे शब्दसँ पर एवक स्थान

अएह आदेश होइछ। *सएह, जएह*। तृतीय सूत्रसँ एकारक लोप ॥३०॥

विलुप्तविभक्तिक जे *ई* शब्द तथा *ओ* शब्द दुहूसँ पर एवक स्थान *एह* आदेश हो तथा *ए, ई* कँ ह्रस्वता सेहो होअए। *इएह, ओएह* ॥३१॥

चारूसँ अर्थात् *से जे ई ओ* एहि चारूसँ पर अपिक स्थान *हो* आदेश होअए ओ पूर्व वर्णकँ ह्रस्वता सेहो होअए। *सेहो, जेहो, इहो, ओहो* ॥३२॥

कोना शब्दक मध्यमे अपिकेँ *हु* वा *नहु* आदेश होइत अछि–*कोहुना, कोनहुना* / *कोना* शब्दमे एवकार नहि लागए कारण जे प्रश्नविषयक अवधारण असंगत से आगाँ कहल जाएत ॥३३॥

दू शब्दसँ पर एवकेँ *हू* आदेश वा *नू* आदेश हो। *दूहू, दूनू* / *दूमे* एवक सम्बन्धक अभाव आगाँ उक्त अछि ॥३४॥

छैं एहि तिङन्तसँ पर एवकेँ *अहैं* आदेश हो। तृतीय सूत्रसँ *ऍं* क लोप। *रओ, तौँ छहैं*। एहूमे अपिक असम्बन्ध ॥३५॥

तीनि चारिसँ पर अपि कँ *ऊ* आदेश तथा इकारक लोप हो–*तीनू, चारू*। एवकेँ सामान्य सूत्रसँ *ए* आदेश। *तिनिए, चारिए* ॥३६॥

उपाधियुक्त संज्ञामे उपाधिसँ पर वा संज्ञासँ पर एव-अपि ॥३७॥ पुरनगरान्तमे विशेषणसँ वा विशेष्यसँ ॥३८॥ द्वन्द्वमे पूर्व पदसँ ॥३९॥

मिश्र, चौधरि, ठाकुर इत्यादि उपाधि थीक, तत्सहित संज्ञामे उपाधिसँ पर अथवा संज्ञासँ पर एव-अपि लगैत अछि। *राममिश्रे अएलाह* वा *रामेमिश्र अएलाह* / *राममिश्रो* वा *रामोमिश्र* / *विष्णु चौधरिए वा विष्णुए चौधरि* / *देवनाथ ठाकुरे* वा *देवनाथे ठाकुर, देवनाथ ठाकुरो* वा *देवनाथो ठाकुर* ॥३७॥

पुरशब्दान्त ओ नगरशब्दान्त संज्ञामे विशेषणबोधक पूर्व पदसँ पर अथवा विशेष्यबोधक पुर, नगर शब्दसँ पर एव-अपि लगैत अछि–*रामेपुर* वा *रामपुरे जाएब* / *रामोपुर* वा *रामपुरो देखल*। एवम् *राजेनगर* वा *राजनगरे; राजोनगर वा राजनगरो* ॥३८॥

द्वन्द्वसमास अन्न-पानि, लोक-वेद, भूख-पिआस इत्यादि, ताहिमे पूर्वपदसँ पर एव-अपि लगैतअछि। *अन्नेपानि चोर लेलक* / *अन्नोपानि घटल* / एवम् *लेकेवेद, लोकोवेद; भूखेपिआस, भूखोपिआस* / *सागेपात, सागोपात*। अद्वन्द्वमे *सागे-पाते, सागो-पातो* ॥३९॥

उत्तरपदहुसँ क्वचित् ॥४०॥ खन- शब्दान्त समासमे पूर्व पदसँ पर एव-अपिकेँ *हि-हु* वा उत्तर-पदसँ *हिँ-हुँ* ॥४१॥ वर्तमानसँ आन तिङक विषयमे तिङन्तसँ पर वा धातुसँ पर एव-अपि ॥४२॥ धातुसँ पर प्रयोग सन्ताँ, ओहि धातुसँ पर एव-अपिसँ पूर्व मध्यमे *अब, कर* धातुक अनुप्रयोग, ततःपर भूताद्यर्थक तिङ् ॥४३॥

द्वन्द्व समासमे क्वचित् उत्तर पदहुसँ पर एव-अपि लगैत अछि–*सागपाते आनब, शीतरौदो अपकारक* ॥४०॥

खन-शब्दान्त समासमे पूर्व पदसँ पर एव-अपि लागए, ओकरा *हि-हु* आदेश हो अथवा उत्तर पदसँ पर लागए तकरा, स्थान *हिँ-हुँ* आदेश हो। *तहिखन, तखनहिँ* / *जहिखन, जखनहिँ* ॥४१॥

वर्तमानबोधक तिङ्सँ आन तिङ् प्रत्ययक विषयमे तिङन्तसँ पर एव-अपि लागए अथवा धातुसँ पर। तिङन्तसँ पर यथा, *ओहो बात सुनबे* / *ओहो देखते* / *तौँ बसलाहो*। धातुसँ परक उदाहरण आगाँ देखू ॥४२॥

तिङक विषयमे धातुसँ पर एव-अपिक प्रयोग कएलाक उत्तर ओहि धातुसँ पर एव-अपिसँ पूर्व मध्यमे *अब* प्रत्यय हो तथा *अबसँ* आगाँ *कर* धातुक प्रयोग होअए–तकरासँ पर भूतादि बोधक तिङ्प्रत्यय आबए। *देखलक–देखबे कएलक, देखबो कएलक* / *देखत–देखबे करत, देखबो करत*। साधनप्रक्रिया यथा–'विषय' पदक उपादानसँ भूतार्थक *अलक*रूप तिङक उत्पत्तिसँ पूर्वहिँ एव-अपि लागल, *देख एव;* मध्यमे *अब–देख अब एव;* ताहिसँ पर *कर* धातुक प्रयोग–*देख अब एव कर;* एवकेँ सामान्य सूत्रसँ *ए* आदेश–*देख अब ए कर, अब*क ओ धातुक अकारक लोप–*देख् अब् ए कर*, व्यञ्जनस्वरक मेलसँ *देखबे कर;* धातुसँ भूतार्थक *अलक* तिङ्–*देखबे कर अलक;* रेफकेँ यकार–*देखबे कयलक;* यकेँ वैकल्पिक *ए–देखबे कएलक*। एवं *देखबो कएलक* इत्यादिक प्रक्रिया जानब। धातुविशेषमे *अब*-प्रत्यय-निमित्तक तिङन्तोक्त कार्यसभ होएत–*देत, देबे करत; जाएत, जएबे करत, बिकएबे करत* इत्यादि ॥४३॥

लोकनि आदिमे एव-अपिक असम्बन्ध ॥४४॥ *कथीमे* ॥४५॥ कीसँ सिद्धमे एवक ॥४६॥ अलक इत्यादि तिङन्तसँ पर एवक, अपिक ॥४७॥

लोकनि आदिमे एव-अपिक संबन्ध नहि हो। तस्मात् *अहाँलोकनिए, अहाँलोकनिओ, अहाँलोकनिअहुँकँ* इत्यादि प्रयोग नहि, किन्तु *अहीँ लोकनि, अहूँलोकनि* एहन प्रयोग। लोकनि, दू, टा, झा, साक्षात्, की, एकारान्त संज्ञा (मन्ने, बच्चे इत्यादि) ई सभ लोकनि-आदि आकृतिगण जानब। दू पदार्थमे अवधारणाद्यर्थक विवक्षामे दुइ पदक प्रयोग कएल जाइत अछि–*दुइए, दुइओ* / एवम् झाक प्रयोगमे संज्ञाशब्दहिसँ पर एव-अपि–*रामेझा थिकाह, रामोझा आबथु*। एवम् जाहिमे एव-अपिक सम्बन्ध अनुचित अछि ततए *तत्* पदक प्रयोग कए बाजल जाइत अछि। यथा, *मन्नेझा सेहो अएलाह* / *बच्चे तनिके ई बालक थिकाह* ॥४४॥

कथी शब्दमे अपि नहि लगैत अछि–*कथीमे* ? ॥४५॥

की शब्दसँ सिद्ध जे शब्द ताहिमे एव नहि लगैत अछि। कोना, कोमहर, कतए, कखन इत्यादि *कीसँ* सिद्ध जानब ॥४६॥

अलक इत्यादि जे तिङ् तदन्तसँ पर एव-अपिक प्रयोग नहि हो, तँ *ओ देखलके* वा *देखलको* इत्यादि रूप नहि, किन्तु उक्त रीत्या *देखबे कएलक, देखबो कएलक* इत्यादि प्रयोग शुद्ध जानब ॥४७॥

एव-अपि प्रकरण समाप्त

अथ वाक्यव्यवस्था

अर्थबोधयोग्य पदसमूह वाक्य ॥१॥ तिङन्तहीन किंवा विभक्त्यन्तहीन वाक्यैकदेश ॥२॥ वाक्यार्थमे ज्ञातांश उद्देश्य अज्ञात अंश विधेय ॥३॥

अर्थबोधमे समर्थ जे पदसमूह से वाक्य कहबैत अछि। विभक्त्यन्त ओ तिङन्त पद थीक से कहल अछि। *जयदेव गाम गेलाह* एहि पद-समूहसँ जयदेवक गाम जाएब अर्थ बुझल जाइत अछि तँ ओ वाक्य थीक। *जयदेवमे गाम गेलाह* एहि पदसमूहसँ अर्थबोध नहि होइछ तँ ओ वाक्य नहि भेल। देखलहुँ एतावन्मात्रो प्रकरणवशात् 'नाच'इत्यादि पदक अध्याहारेँ यद्यपि अर्थबोधयोग्य थीक तथापि पदसमूहरूपताक अभावसँ वाक्य नहि कहबैत अछि, किन्तु अग्रिम सूत्रसँ वाक्यैकदेश ॥१॥

तिङन्त पदसँ रहित अथवा विभक्त्यन्त पदसँ रहित यत्किञ्चित्पदक अध्याहारेँ अर्थबोधयोग्य जे हो से वाक्यैकदेश कहबैत अछि। *जयदेव कतए गेलाह ? काशी। किएक ? कार्यवशात्*। ईसभ प्रश्नोत्तरमे वाक्यैकदेश भेल। तद्भिन्नमे *खाउ गए,* पढ़ू इत्यादि ॥२॥

वाक्यार्थमे दू अंश रहैत अछि, एक बोद्धाक ज्ञात, दोसर अज्ञात। ताहिमे ज्ञात अंश उद्देश्य ओ अज्ञातांश विधेय कहबैत अछि। आशय ई जे श्रोताकेँ जाहि अर्थक ज्ञान नहि छैन्हि ताहि अर्थक बोध करएबाक हेतु वाक्य बाजल जाइत अछि, परञ्च केवल ओही अर्थक बोध कराएब अशक्य थीक, तँ श्रोताकेँ यत्किञ्चित् ज्ञात अर्थक सङ्ग अज्ञात अर्थक बोध शब्दद्वारा कराओल जाइत अछि। ताहिमे ज्ञात भाग उद्देश्य, अज्ञातभाग विधेय थीक। यथा *देवदत्त गाम गेलाह* एहि वाक्यार्थमे देवदत्त उद्देश्य ओ ग्राम-गमन विधेय थीक, हेतुजे देवदत्त-रूप अर्थ श्रोताकेँ पूर्वहिसँ ज्ञात छैन्हि, केवल हुनक ग्राम-गमन अज्ञात। एवम् *ई घैल कारी अछि* एहि ठाम ई घैल थीक से बोद्धाक अवगते अछि, किन्तु कारी अछि से अज्ञात, तस्मात् घैल उद्देश्य, कारी विधेय। एवं *राजाक पुरुष* एहि ठाम पुरुष उद्देश्य, राज-सम्बन्ध विधेय। *सन्ध्या काल निर्म्मल आकाशमे उत्तर दिश कारी जे देखल जाइत अछि से पर्वत थीक* एहि ठाम से-पदार्थ कारी उद्देश्य,पर्वत विधेय। अतएव विशेषण विधेय होइछ एतादृश नियम नहि, हेतु जे उक्त वाक्यमे विशेष्य-भूत पर्वते विधेय भेल ॥३॥

उत्तरोत्तर भासमान विशेष्य, पूर्व-पूर्व विशेषण ॥४॥ व्यावर्तक उपरञ्जक उपलक्षण त्रिविध विशेषण ॥५॥

वाक्यार्थमे उत्तरोत्तर जे भासित अछि से पूर्वपूर्वपिक्षया विशेष्य थीक, ओ पूर्वपूर्व जे भासित होइत अछि से उत्तरोत्तरक विशेषण। यथा, *चतुर्भुज भगवानक ध्यान करू,* एहिठाम चतुर्भुज प्रथम भासित होइत छथि, तदुत्तर भगवान भासित छथि, तँ ओ विशेष्य

भेलाह, पूर्वभासमान चतुर्भुज अभेद (तादात्म्य) सम्बन्धेँ विशेषण। एवम् भगवान् ध्यानक विशेषण, ध्यान भगवानक विशेष्य तथा ध्यान करबाक विशेषण, करब ध्यानक विशेष्य। एवं रूपेँ विशेषणविशेष्यभावक परिचय कए लेब। यद्यपि खलेकपोतन्यायसँ ज्ञानमे युगपत् अर्थक सम्बन्ध अभिमत अछि तथापि क्रमिकान्वयपक्षमे ई सूत्र जानब ॥४॥

विशेषण तीनि प्रकारक होइत अछि–व्यावर्तक, उपरञ्जक, उपलक्षण। ताहिमे व्यावर्तक विशेषण ओ थीक जे विशेष्यक व्यावृत्ति करए अर्थात् इतरसँ भिन्नतया प्रतीति कराबए, यथा *उजर फूल लाउ* एहिठाम शुक्ल विशेषण पुष्परूप विशेष्यक पीतकृष्णादि पुष्पसँ व्यावृत्ति अर्थात् व्यवच्छेद करैत अछि, अन्यथा पीतकृष्णादि सर्वविध पुष्पक बोध होइत, तेँ *उजर फूल लाउ* एहि ठाम उजर व्यावर्तक विशेषण भेल।

उपरञ्जक विशेषण ओ थीक जे विशेष्यक विशेषरूपेँ बोधन-मात्रफलक हो। यथा, *भक्तवत्सल* इत्यादि ककरो व्यावृत्ति नहि करैत अछि, केवल विष्णु एतादृश थिकाह से बुझएबाक हेतु कहल जाइत अछि, तकर फल भजनमे प्रवृत्ति। तेँ ओ विशेषण उपरञ्जक भेल। व्यावर्तक उपरञ्जकमे भेद ई जे व्यावृत्ति-फलक धर्मक बोधक व्यावर्त्तक, ओ तदफलकधर्मबोधक उपरञ्जक।

उपलक्षण ओ थीक जे पूर्वकालमे विशेष्यगत हो, तत्काल नहि। यथा *युधिष्ठर महाराज चौदह वर्ष वनमे छलाह।* ओ अपन राज्य हारिकेँ वन गेल छलाह तेँ यद्यपि तत्काल महाराज नहि छलाह तथापि महाराज कहबैत रहथि। यद्यपि उपलक्षणो व्यावर्तक ओ उपरञ्जक होइत अछि तथापि क्षति नहि। तत्काल रहि जे व्यावर्त्तन वा उपरञ्जन करए से व्यावर्त्तक वा उपरञ्जक, जे तत्कालमे नहि रहि व्यावर्त्तन वा उपरञ्जन करए से उपलक्षण, एवं रूपेँ असंकीर्ण लक्षण जानब ॥५॥

समानाधिकरण व्यधिकरण भेदसँ द्विविध ॥६॥ अविधेय समानाधिकरण विशेषणक विशेष्यसँ पूर्व प्रयोग ॥७॥

विशेषणक त्रैविध्य कहल गेल। आब प्रकारान्तरेँ ओकर द्वैविध्य कहल जाइत अछि। समानाधिकरण ओ व्यधिकरण भेदसँ दू प्रकारक विशेषण होइत अछि। ताहिमे समानाधिकरण ओ थीक जे विशेष्यसँ अभिन्न हो। यथा, *लाल फूल लाउ* एहि ठाम फूल ओ लाल एके वस्तु भेल तेँ फूलरूप विशेष्यसँ अभिन्न जे लाल से समानाधिकरण विशेषण भेल। ओकरा अभेद सम्बन्धसँ विशेषणता होइत छैक, तस्मात् अभेद अर्थात् तादात्म्यसम्बन्धेँ जकरा विशेष्यमे अन्वय हो से समानाधिकरण भेल।

व्यधिकरण ओ थीक जे विशेष्यसँ भिन्न हो। ओकरा अभेद सम्बन्धसँ भिन्न स्वस्वामिभाव, जन्यजनकभावादि सम्बन्धसँ अन्वय होइत अछि। यथा, *जयलालक गाए, मैत्रक बालक*। एहिठाम जयलाल गाएसँ भिन्न थिकाह, हुनका स्वस्वामिभाव सम्बन्धसँ गाएमे अन्वय अछि तेँ जयलाल व्यधिकरण विशेषण भेल। एवम् बालकमे जन्य-जनक भावसम्बन्धसँ अन्वित मैत्र सेहो व्यधिकरण विशेषण भेल ॥६॥

जे विधेय नहि रहए तादृश समानाधिकरण जे विशेषण तद्वाचक शब्दक प्रयोग विशेष्य वाचकसँ पूर्वहिँ होअए। यथा *चतुर्भुज भगवानक ध्यान करू,* एहि ठाम ध्यान करब विधेय अछि तेँ चतुर्भुज विधेयभिन्न भेल, तद्वाचक चतुर्भुज शब्दक प्रयोग विशेष्यसमर्पक भगवान् शब्दसँ पूर्वहिँ भेल, पर नहि। *भगवान चतुर्भुज थिकाह, जयलाल पण्डित छथि* इत्यादि स्थलमे चतुर्भुज, पण्डित आदि विधेय अछि, तेँ तद्बोधक चतुर्भुज, पण्डित आदि शब्दक विशेष्यवाचकसँ परे प्रयोग भेल, हेतु जे उद्देश्यक पूर्व प्रयोग कहल जाएत। समानाधिकरण कहबाक फल ई जे व्यधिकरण विशेषण यदि विधेयो रहए तँ ओकर पूर्वहि प्रयोग हो। यथा, *ई देवदत्तक बालक थिकाह।* अन्यथा विशेष्यसँ पूर्व केवल अविधेय विशेषणक पूर्व प्रयोग हो एतादृशनियमवशात् उक्त स्थलमे देवदत्तक पूर्वप्रयोग असंगत होइत ॥७॥

व्यधिकरणमात्रक ॥८॥ उद्देश्यक विधेयसँ पूर्व ॥९॥ तिङन्तक वाक्यान्तमे ॥१०॥ नहि आदिक तिङन्तसँ पूर्व वा पर ॥११॥ अनुप्रयुक्तसँ पूर्वहुँ ॥१२॥ वर्तमान तिङन्तमे ऐतसँ पर वा धातुसँ ॥१३॥

विधेय वा अविधेय सर्वविध व्यधिकरण विशेषणक विशेष्यसँ पूर्व प्रयोग हो। *ई हमर पोथी; हमर पोथी अन्यत्र अछि।* कारक क्रियाक व्यधिकरण विशेषण थीक, ताहि सबहिक युगपत् धातुसँ अव्यवहित पूर्व प्रयोगक असंभव, तेँ अव्यवहित नहि किन्तु पूर्व प्रयोग अवश्य। यथा–*जयलाल घरमे हाथसँ लड्डू खाइत छथि,* एहिठाम चारू कारकक धातुसँ पूर्व यथेच्छ उनटा-पनटा प्रयोग होएत ॥८॥

उद्देश्यबोधकक प्रयोग विधेयसमर्पकसँ पूर्व हो। *ई बैल कारी अछि, ई पुस्तक हमर थीक* ॥९॥

तिङन्तक प्रयोग वाक्यक अन्तमे हो। *देवदत्त गाम गेलाह* ॥१०॥

नहि आदिक प्रयोग तिङन्तसँ पूर्व वा पर हो। *नहि गेलाह* वा *गेलाह नहि*। नहि, जनु, किएक इत्यादि अव्यय नहि-आदि थीक ॥११॥

नहि आदिक प्रयोग अनुप्रयुक्तसँ अव्यवहित पूर्वहुँ होइत.अछि। *नहि खाए दिऔन्हि* वा *खाए नहि दिऔन्हि। जनु देखल जाए* वा *देखल जनु जाए* ॥१२॥

नहि आदिक प्रयोग वर्तमान तिङन्तमे *ऐत*सँ पर वा धातुसँ पूर्व हो। *देखैत नहि अछि* वा *नहि देखैत अछि* ॥१३॥

एव-अपिक योजनामे ततःपरहि ॥१४॥ झा प्रभृति उपाधिक संज्ञासँ परहिँ ॥१५॥ पण्डित प्रभृतिक पूर्वहुँ ॥१६॥ पूर्वपरप्रयोगानुशासन प्रायिक ॥१७॥ स्त्रीपुरुषसामान्य तात्पर्यमे पुंवत् प्रयोग ॥१८॥ लोकादिपदक अर्थमे आदरक अविवक्षा ॥१९॥

तिङन्तमे एव-अपिक योजना रहने एव-अपिसँ परहिँ *नहि* आदिक प्रयोग हो।

देखितहिँ नहि छथि । देखबो नहि करताह ॥१४॥

झा, मिश्र प्रभृति उपाधि ओ संज्ञा दुहूक प्रयोगमे संज्ञासँ परहि उपाधिक प्रयोग हो। पुलकित झा, भवनाथ मिश्र । झा, मिश्र, चौधरि, दास इत्यादि प्रसिद्ध उपाधि लोकतः वा कोषतः जानब । झाप्रभृति कहलासँ महामहोपाध्याय इत्यादिक पूर्व प्रयोग भेल ॥१५॥

पण्डित, आचार्य, बकशी इत्यादि उपाधिक संज्ञासँ पूर्वहु प्रयोग हो । *पण्डित देवदत्त* वा *देवदत्त पण्डित* ॥१६॥

पूर्व प्रयोगक जे अनुशासन कहल अछि से प्रायिक अर्थात् बाहुल्याभिप्रायक उत्सर्ग थीक, नियम नहि। अतएव घैल पैघ लाउ, छाँछ छोट एहिठाम अविधेय विशेषणक विशेष्यसँ पर प्रयोग भेल । *ई पुस्तक हमर थीक,* एहि ठाम व्यधिकरण विशेषणक पर प्रयोग भेल। एवम् तिङन्तक प्रयोग वाक्यान्तमे कहल अछि किन्तु क्रोध-स्नेहादिरूप उपाधिमे अन्यत्रो प्रयोग होइत अछि। क्रोधमे–*ओ गेल कतए ? पकडू ओकरा*। स्नेहमे–*आउ, मित्र, छलहुँ अछि निकेँ ?* सन्तोषमे–*बाहबाह; पटकलैँ तोँ पहलमानकेँ*। एवम् अन्यत्रहु जानब ॥१७॥

स्त्रीपुरुष सामान्य तात्पर्य रहलासँ पुंवते प्रयोग हो, स्त्रीवत् नहि । यथा, *के सभ गेल अछि ?* ॥१८॥

लोक, मनुष्य, पुरुष इत्यादिक अर्थमे आदरक विवक्षा नहि हो । *हमरा आँगनमे लोक नहि अछि। ओ नीक लोक छथि* एहिठाम *ओ* पदक अर्थमे आदरक विवक्षा जानब ॥१९॥

छ हो धातुक योगमे *अबाकसँ* पर इच्छाशब्दक ओ आवश्यकता शब्दक यथेच्छ विलोप ॥२०॥ समुच्चयार्थक आओर ओ तथा शब्दसँ पूर्व विभक्तिक ॥२१॥ *अहाँ* आदिसँ नहि ॥२२॥ शीघ्रोच्चारणमे व्यञ्जनादि पृथक् पदसँ पूर्व पदान्त अकारक लोप ऐच्छिक ॥२३॥

छ धातु तथा *हो* धातुक प्रयोगमे *अबाकसँ* पर इच्छा शब्दक तथा आवश्यकता शब्दक विलोप वैकल्पिक हो । *हंमरा जएबाक अछि,* वा *जएबाक इच्छा अछि। जएबाक होएत* वा *जएबाक आवश्यकता होएत* ॥२०॥

समुच्चयबोधक जे *आओर ओ तथा* शब्द एहि तीनूसँ पूर्व विभक्तिक विलोप विभाषा होइत अछि । *राम आओर लक्ष्मणक प्रभाव,* वा *रामक आओर लक्ष्मणक प्रभाव,* एवं *राम तथा रावणकेँ संग्राम भेल,* अथवा *रामकेँ तथा रावणकेँ*। एवम् *दान ओ तपमे* वा *दानमे ओ तपमे सन्तोष नहि करी । राममे आओर गुण छैन्हि, राममे ओ भक्तिमान् छथि, यथा राममे तथा गुरुमे भक्ति राखी* एहि तीनू वाक्यमे समुच्चयार्थकताक अभावसँ लोप नहि भेल ॥२१॥

उक्त विषयमे *अहाँ* आदिसँ पर विभक्तिक विलोप नहि हो । *अहाँक ओ हमर एके पाठ अछि*। अहाँ, हम, तोँ, की, ते, जे, ए, ओ, ई, अहाँ-आदि जानब ॥२२॥

शीघ्रोच्चारणमे पदान्त अकारक इच्छया लोप कएल जाइत अछि यदि व्यञ्जनादि पृथक् पद पर रहए । *राम गेलाह* एकर शीघ्रोच्चारणमे *राम् गेलाह* एहन बाजल जाइत अछि । किन्तु लेखमे अकारान्ते शुद्ध थीक ॥२३॥

कृत् अने ऐतक सम्बन्ध प्रधान क्रियहिमे ॥२४॥ अर्थनिमित्तक कार्य तद्विवक्षामे ॥२५॥

कृत्संज्ञक जे *अने* ओ *ऐत* तकर सम्बन्ध प्रधानीभूत क्रियहिमे हो । *देखने अएलहुँ। देखैत अएलहुँ* ॥२४॥

अर्थनिमित्तक जे कार्य कहल गेल अछि से ओहि अर्थक विवक्षा(बोधनेच्छा)मे होइत अछि, स्थितिमात्रमे नहि, अर्थात् ओ अर्थ अबाधितो रहने ओकर अविवक्षामे तन्निमित्तक कार्य नहि हो, बाधित रहलहु पर तद्विवक्षामे हो । यथा, *गाछक पात खसैत अछि,* एहिठाम गाछमे यद्यपि विभागावधित्व अछि तथापि वृक्षावधिक विभागक अविवक्षासँ अपादानता वा तत्प्रयुक्त पञ्चमी विभक्ति नहि भेल; तद्विवक्षामे *गाछसँ पात खलैत अछि* एहि ठाम भेल। एवम् *गाछसँ पात नहि खसैत अछि,* एहिठाम विभागक अभावसँ तदवधित्वो गाछमे नहि, तथापि वृक्षावधिक विभागजनक व्यापाराभाव एतादृश अर्थक विवक्षामे अपादानत्व ओ तत्प्रयुक्त पञ्चमीरूप कार्य भेल । एवम् अन्यत्रो सूक्ष्म दृष्टिसँ भावना कए लेब ॥२५॥

यत्पदयुक्त वाक्यसँ अग्रिम वाक्यमे तत्पद आवश्यक ॥२६॥ यत्पदयुक्त पर वाक्यसँ पूर्व वाक्यमे तत्पदक आवश्यकता नहि ॥२७॥ यत्पदयुक्त पूर्व वाक्य विधेयसमर्पक नहि ॥२८॥

यत्पदयुक्त वाक्यसँ साकाङ्क्ष जे अगिला वाक्य ताहिमे तत्पद अवश्य रहए। यथा–*जे आएल छलाह से गेलाह, जनिक बालक पण्डित होथि तनिका अनाउ*। तत्पदक स्थानमे *अदस्* शब्दहुक प्रयोग होइतअछि, तेँ सूत्रमे तत्पद अदस्शब्दहुक उपलक्षण थीक। अतः *जे आएल छथि हुनका सम्मान करू* इत्यादिओ शास्त्रसिद्ध जानब ॥२६॥

यत्पदयुक्त जे अग्रिम वाक्य तत्साकाङ्क्ष पूर्व वाक्यमे तत्पदक आवश्यकता नहि। अर्थात् ओहिमे तत्पद देल जाए वा नहिओ देल जाए । *अयाची दूबेमिश्र मिथिलामे छलाह जनिक बालक शङ्करमिश्र,* एहि ठाम पूर्व वाक्यमे *से* ई नहि अछि, किन्तु रहनहु क्षति नहि, यथा *से अयाची दूबेमिश्र प्रसिद्ध भवनाथमिश्र छलाह जनिक बालक जगद्विख्यात शङ्करमिश्र* ॥२७॥

यत्पदयुक्त जे पूर्ववाक्य से विधेयसमर्पक नहि हो, किन्तु नियमतः उद्देश्यसमर्पके। उदाहरण पूर्वोक्त जानब ॥२८॥

अव्ययक क्रियहिमे प्रायः सम्बन्ध ॥२९॥ *मना* शब्दक प्रयोग द, कर, *हो,* एही तीन धातुक योगमे ॥३०॥ काकुसँ विपरीत अर्थ ॥३१॥ दूरसँ

सम्बोधनमे क्वचित् वाक्यक अन्त्यकेँ प्लुत ॥३२॥ क्वचित् उपान्त्यकेँ ॥३३॥

अव्ययार्थक सम्बन्ध अधिक ठाम क्रियामे होइत अछि। *नहूँ नहूँ चलैत अछि। ओमहर देने गेलाह*। एव-अपि प्रभृति कतोक अव्ययक सम्बन्ध क्रिया-भिन्नहुमे देखि 'प्रायः' कहल गेल ॥२९॥

मना एहि अव्ययक सम्बन्ध *द, कर, हो* एहि तिनिअहि धातुक अर्थमे होइत अछि, इतर धात्वर्थमे नहि। *मना देल, मना कएल, मना भेल* ॥३०॥

काकु अर्थात् ध्वनिविशेष, ताहिसँ विलक्षण अर्थक बोध होइत अछि। *अपनो कार्य नहि कए सकब* ? अर्थात् कए सकब। *एहनो कार्य लोक करैत अछि* ॥३१॥

क्वचित् दूरसँ सम्बोधनमे वाक्यक अन्त्य स्वरक स्थान प्लुत अर्थात् त्रिमात्र आदेश होइत अछि, क्वचित् उपान्त्य अर्थात् अन्तिम स्वरसँ पूर्व स्वरक स्थान। यथा, *आउ जयलाल अओ ३। जयला ३ल* ॥३२-३३॥

इति वाक्यव्यवस्था समाप्त

अथ छान्दसप्रक्रिया

छान्दस कार्य वैकल्पिक ॥१॥ छन्दमे छन्दोनुरोधसँ गुरुकेँ लघुता ॥२॥

गीत, कवित्त, चौपाइ इत्यादि छन्द कहबैत अछि। एकर मूल संस्कृत छन्दस् शब्द थीक। छान्दस अर्थात् छन्दमे जे कार्य आगाँ कहल जाएत से सभ वैकल्पिक जानब ॥१॥

छन्दमे छन्दक अनुरोधेँ अर्थात् छन्दोभङ्ग जनु हो एहि हेतु गुरुकेँ लघुता कएल जाए। गुरु दू मात्राक होइत अछि, लघुता भेलापर एक मात्राक भए जाइत अछि। इहो बुझबाक थीक जे लघुता भेलहु पर *ए ऐ ओ औक* लेख ओहने रहैत अछि, किन्तु *आ ई ऊक* लघुता सन्ताँ ह्रस्व लिखल जाए वा दीर्घ परन्तु उच्चारणमे एकमात्रिके रहत। आकारकेँ लघुताक उदाहरण रमापतिकृत *रुक्मिणीस्वयंवरमे*–

पदभर व्याकुल सेस कमठ दुहु, यतनहुँ धरए न पाब धरा
अतिकम्पित भए चललि रसातल, डगमग कर गिरि टुटलि तरा।

एहिठाम *तारा*मे प्रथम आकारकेँ लघुता कएल गेल अछि। बहुत ठाम लघुता भेलहुपर दीर्घस्वरूपे आकार लिखल जाइत अछि। यथा, गोविन्ददासक

बाघछाल पहिरन, कलितउरग तन, के परिछए छवि देखि डरू।
ललित गौरि छवि, भनथि गोविन्द कवि, गौरि कुमारि रहथु बरू ॥

एहिठाम *बाघछाल*मे आकार, *गौरि*मे इकार, *गोविन्द*मे ओकार लघु कएल गेल अछि। एवं. म. म. मिथिलेश महेशठाकुरक

जेहिखन देखल धवल जलधार, जीवन जन्म सुफल संसार।

एहि मध्य एकारकेँ लघुता कएल गेल अछि, अन्यथा दू मात्राक आधिक्यसँ छन्दोभङ्ग होइत। 'छन्दमे' एकर अधिकार अन्त धरि जानब ॥२॥

लघुकेँ गुरुता ॥३॥ पादक अन्तमे अवर्णकेँ *आ ए* ॥४॥ विभक्तिक विलोप ॥५॥

छन्दमे छन्दोनुरोधसँ क्वचित् लघुकेँ गुरुता होइत अछि। यथा विद्यापति–

चञ्चल चरन चित्त चञ्चल भान। जागल मानसिज, मुदित नयान ॥

गोविन्द दास–

छोड़ल सुखमय कुसुम शयान ॥३॥

पादक अन्तमे अवर्णकेँ आकार ओ एकार आदेश वैकल्पिक हो। यथा रामदासकृत

आनन्दविजयमे, ओ पारिजातहरणमे उमापति–

सरस राम भन समुचित रे रस बुझ रसमन्ता ।
नृप सुन्दर गुनमन्दिर रे कमलावतीकन्ता ॥
अवतरु अवनी तेजल अकाशे । न थिक दिवाकर न थिक हुताशे ॥४॥

छन्दमे छन्दोनुरोधसँ सभ विभक्तिक विलोप होइत अछि । यथा परिजातहरणमे–

पारिजात तरु गरुड़ चढ़ाओल, हरि करकमल उपारि ।

हरि पारिजात तरुकेँ करकमलसँ उपाड़ि गरुड पर चढ़ाओल ई अर्थ थीक । एहि ठाम द्वितीया, तृतीया, ओ सप्तमीक विलोप भेल । एवम् म. म. मिथिलेश महेशठाकुरक

जेहिखन देखल धवल जलधार, जीवन जन्म सुफल संसार ।

एहिठाम *संसार*सँ पर सप्तमीक विलोप भेल । एवम् विद्यापतिक

भुज भय पङ्क मृडाल नुकाएल ।

भुज (बाँहि) क भयसँ मृडाल पङ्क (पाँक) मे नुकाएल । एहि ठाम षष्ठी, पञ्चमी ओ सप्तमीक विलोप ॥५॥

अन्यभाषाशब्दक परिग्रह ॥६॥ पाणिनीय ति-सि प्रत्ययक ॥७॥

छन्दमे भाषान्तरहुक शब्द परिगृहीत होइछ । ताहिमे संस्कृत शब्दक उदाहरण उमापतिकृत पारिजातहरणमे

असकति कर कङ्कण नहि पहिरसि हृदय हार भेल भारे ।
गिरिसम गरुब मान नहि मुञ्चसि अपरुब तुअ व्यवहारे ॥

हिन्दीभाषाशब्दपरिग्रह हर्षनाथकृत सोहरमे–

तुरत गजरथ कनक मानिक रतन मुकता साथ ओ ।
पाबि नट भट गणक चटपट भेल सकल सनाथ ओ ॥

वङ्गभाषाशब्दपरिग्रह गोविन्ददास ओ विद्यापतिक गीतमे

रोष विमुख जब चल वर नाह, अब कातर दिठि मोरें सुख चाह ॥
तुहु बिनु आन इथे नहि कोइ, बिसरए चाह बिसरि नहि होइ ॥

सखी नायिकाकेँ कहैत अछि–जखन रोषसँ विमुख भए नायक चल गेलाह, आब कातर दृष्टिसँ अहाँ हमर मुह चाह अर्थात् देखैतछी । दर्शनार्थक *चाह* धातु बङ्गभाषामे अछि । तथा तेसरामे *इथे* शब्द "एतए" एतदर्थक वङ्गभाषा थीक ओ एहि दुहूमे *जब, अब, कोइ* तीनि शब्द हिन्दीभाषा थीक ॥६॥

छन्दमे पाणिनिकृत व्याकरणक जे *ति* तथा *सि* प्रत्यय तकरो परिग्रह होइत अछि ।

उदाहरण क्रमशः गोविन्ददास ओ विद्यापतिक

कत कत पदुमिनि पञ्चम गाबति, मधुकर धरु श्रुति भासे ।
नूपुर उपर करसि कसि थीर । दृढ़ कए पहिरसि तम सम चीर ॥
उठसि बिहँसि हँसि तेजिअ सार । तोर मन भाव सघन अँधिआर ॥७॥

पाणिनिप्रोक्त उपसर्गसहित ओ केवल धातुक ॥८॥ आदरानादरक अविवक्षा ॥९॥ नाममे वर्णक लोप-विकार-आगम ॥१०॥ *पाबि आबि* इत्यादिक स्थान *पाए आए* ॥११॥

पाणिनिकृत धातुपाठमे उक्त जे धातु तकरो ग्रहण छन्दमे होइत अछि । क्वचित् केवल धातुक, क्वचित् उपसर्गसहितक; ताहूमे क्वचित् तद्रूप, क्वचित् सविकारक गृहीत होइछ । *प्र परा* इत्यादि उपसर्ग पाणिनीयमे उक्त अछि । केवल तद्रूप, यथा–

भजु हरिचरन सरोज ।

सोपसर्ग तद्रूप

योगिआ एक अदभूत भूतगण संचरु हे ।

उपसर्गरहित सविकार यथा, ओही चरणसँ आगाँ–

बसथि तपोवन हरलन्हि मोर मन रे
हरलन्हि हमरो गेआन आन नहि मन बसु हे ।

यदि *हर* धातुक सामान्यतः परिग्रह अछि तँ *सिरजल* इत्यादि उदाहरण जानब । सोपसर्ग सविकार यथा–*परिहरि, अबतरु, पेखब, उपेखब* इत्यादि ॥८॥

छन्दमे आदर ओ अनादरक विवक्षा नहि । उदाहरण–*तोहैँ प्रभु त्रिभुवननाथ* इत्यादि ॥९॥

नाममे वर्णक लोप, वर्णक विकार ओर वर्णक आगम होइत अछि छन्दमे । यथा विद्यापति–

भमर आबथि लहु लहु

भ्रमर मे रेफक लोप । गोविन्ददास–

उचित न विहि तोहि

विधिक धकारकेँ हकार । *केओ, प्रतीति* इत्यादिमे अकारक आगम –केअओ *परतीति । श्री प्रीतिमे इकारागम–सिरी पिरीति ।* एवम्

कर धरु करु मोहे पारे

मोहिक इकारकेँ एकार । *हाँ* प्रत्ययमे आकारकेँ अकार

जहँ जहँ तरल विलोचन पड़ई ।
तहँ तहँ नील उतपल वन भरई ॥१०॥

छन्दमे पाबि, आबि इत्यादिक स्थान पाए, आए इत्यादि होइत अछि । रत्नपाणिक उषाहरणमे

संप्रति बाणाऽसुर सबल गौरीवर वर पाए ।
हरि-बाणासुरसमर हम भावी देखब आए ॥११॥

प्रथमामे तोँ केँ तोहेँ, तोहँ ॥१२॥ अप्रथमामे तोहि, तोय ॥१३॥ की केँ काहि ॥१४॥ ते केँ ताहि, तेहि, तनि ॥१५॥

छन्दमे प्रथमा विभक्तिक विषयमे *तोँ केँ तोहेँ, तोहँ* आदेश हो । क्रमशः विद्यापति-उमापति

तोहँ *मतिमान सुमति मधुसूदन ।*
तोहँ *हरि अन्तरयामी ।* ॥१२॥

छन्दमे प्रथमासँ आन विभक्तिक विषयमे *तोँ केँ तोहि, तोय* आदेश हो । रमापति–विद्यापति क्रमशः

अञ्जलि बाँधि निवेदिअ तोहि, *हरगेहिनि परसन रहु* मोहि ।
माधव बहुत मिनति कर तोय ।
दय तुलसी तिल देह समर्पल दय जनि छाड़ब मोय ।

क्वचित् प्रथमहुमे–

तोय हँसि हेरह, मोय बड़लाज (विद्यापति) ॥१३॥

छन्दमे अप्रथमाविभक्तिक विषयमे *की केँ काहि* आदेश होइत अछि । *पारिजातहरणमे* उमापति–

ब्रह्मा शिव सेब जाहि, काहि *भजब तेजि ताहि* ॥१४॥

छन्दमे अप्रथमामे *तेकेँ ताहि, तेहि, तनि* आदेश होइछ। उदाहरण क्रमशः–

काहि भजब तेजि ताहि *।*
अपन वचन पिकरव अनुमाने, हरिहरि तेहुपरि तेजए पराने ॥
योगहु न जानिअ जनि, दिठिभरि देखब तनि ॥१५॥

जेकेँ जाहि जेहि जनि ॥१६॥ओकेँ हुनि ॥१७॥ हमकेँ मोहि, मोय ॥१८॥ ते जे केँ षष्ठीमे तसु जसु ॥१९॥

छन्दमे *जेकेँ* पर्यायेण *जाहि, जेहि, जनि* आदेश होइत अछि । *जाहि जनिक* पूर्वोक्त उदाहरण ।

जेहि *खन देखल धवल जलधार* (म. म. महेश) ॥१६॥

ओकेँ *हुनि* आदेश हो छन्दमे ।

हमहि करिअ तिन साखी, तकर कुसुम हुनि राखी ।

एहि ठाम प्रथमहुमे *हुनि* आदेश भेल ॥१७॥

छन्दमे अप्रथमामे *हमकेँ मोहि मोय* आदेश होइत अछि । गोविन्द ओ विद्यापति–

उचित न विहि तोहि कि देखि लिखल मोहि *।*
तोय हँसि हेरह मोय *बड़ लाज* ॥१८॥

छन्दमे षष्ठीक विषयमे *ते जे केँ* क्रमशः *तसु जसु* आदेश हो । ई *तस्य यस्य* एहि संस्कृतक वा *तस्स जस्स* एहि प्राकृतक अपभ्रंश थीक तेँ एकर प्रयोग षष्ठिअहिमे होअए। उदाहरण गोविन्ददासक ओ रमापतिक–

जय जय श्रील राम रघुनन्दन जनकसुता रतिकन्त ।
सुर नर वानर खचर निशाचर जसु *गुण गाब अनन्त ॥*
कमल युगल विधु नहि एकठाम ।
की लए देब तसु *वदन उपाम* ॥१९॥

तो केँ तुअ ॥२०॥ हमकेँ मोर ॥२१॥ षष्ठी-सप्तमीमे ते-जेकेँ ता-जा ॥२२॥

छन्दमे षष्ठीक विषयमे *तोँ केँ तुअ* आदेश होइत अछि । उदाहरण विद्यापति ठाकुरक ओ म० म० महेशठाकुरक

विद्यापति कवि तुअ पदसेवक पुत्र बिसरि जनु माता ।
जय जय जय भयभञ्जिनि भगवति आदिशक्ति तोहँ माया ।
जनि नव सजल जलद तुअ तनरुचि पदरुचि पङ्कजछाया ॥

एहिठाम "आदिशक्ति तुअ माता" एहन पाठ *पारिजातहरणक* चेतनाथझानिर्मित भूमिकामे उपलब्ध अछि । तथा अन्यत्र "तुअ माया" एतादृश पाठ अछि, परन्तु से दुहू अपपाठ थीक । कारण, प्रथममे तुकक भङ्ग, दोसरामे *तुअ* शब्द प्रथमान्त मानबाक होएत । यदि तादृशे पाठ प्रचलित हो तँ रहओ ॥२०॥

छन्दमे षष्ठीक विषयमे *हमकेँ मोर* आदेश कएल आए । उदाहरण म० म० महेशठाकुरक गीत–

दिअ दरशन मन आतुर मोरा । *करिअ कृतारथ लोचनजोरा* ॥२१॥

छन्दमे षष्ठी तथा सप्तमीक विषयमे *ते जेकेँ* क्रमशः *ता जा* आदेश हो । क्रमशः गोविन्द ओ विद्यापति–

कविपति विद्यापति मतिमाने ।
जाक *गीत जगचीत चोराओल गोविन्दगौरिसरसरसगाने ॥*
तापर *भमरा पिबए रस सजनि गे ॥ ॥२२॥*

तेकर्कें त ॥२३॥ धन्याकें धनि ॥२४॥ केओकें केहु ॥२५॥ उत्प्रेक्षामे जेनाकें जनि ॥२६॥ अपनकें अपनुक ॥२७॥

छन्दमे *तेक* प्रययकें *त* आदेश हो । *तेक* प्रत्यय तद्धित कहल अछि–कतेक, जतेक, ततेक, एतेक ओतेक । ओकर रूप छन्दमे *कत, जत, तत* इत्यादि होइत अछि । क्रमशः रत्नपाणि ओ विद्यापति–

कहब कत *हम कुसुम* कत *विधि देखि नहि रह धीरही ।*
जत *बिसरिअ* तत *बिसर न जात । ॥२३॥*

छन्दमे धन्याकें *धनि* आदेश होइत अछि । यथा–

कि कहब माधव तनिक बिसेसे ।
अपनहु तन धनि पाब कलेसे । (उमापति) ॥२४॥

छन्दमे *केओकें केहु* आदेश । विद्यापति–

केओ कहे सैवल छपला । केहु बोले नहि नहि मेघे झपला ॥२५॥

उत्प्रेक्षा अर्थमे जेनाकें *जनि* आदेश । उमापति–

नव मधुर मधुरस मुगुध मधुकर कोकिला रस भावहीं ।
जनि *माननीजन मान भञ्जन मदन गुण गुरु गावहीं ॥२६॥*

छन्दमे अपनकें *अपनुक* आदेश । उमापतिक–

अपनुक *आनन आरसि हेरि । चानक भरम कँाप कत बेरि ॥२७॥*

वर्तमानार्थक तिङ्कें *अ, अहिँ, अइ, अए, अथि* सवदिश ॥२८॥ असँ पूर्व उपधाकें दीर्घ ॥२९॥ ऊकें *इअ* ॥३०॥

छन्दमे वर्त्तमानार्थक तिङ्कें *अ, अथि, अहिँ, अइ, अए* एतादृश आदेश सभ होइत अछि । यथा–

भाँगए चाह *चिकुर भर सजनि गे ।*
सुमति उमापति भन *परमाने ।*
विद्यापति कह *पूरब आस ।*
भनथि *गोविन्द कवि ।*
भनहिँ *विद्यापति ।*

एवम् भनइ, भनए । एवम् भनुनाथ-कृत *प्रभावती-हरणमे*

सुजन सिनेह कबहु नहि बिसरथि जनिक प्रथम देल वासे ।
मृग परिहरि हिमकर नहि ऊगथि सहथि जगत उपहासे ॥२८॥

उक्त *अ* प्रत्ययसँ पूर्व उपधाकें दीर्घ होइत अछि–

सुमति उमापति भाने *माधव ।*

एहिठाम पदान्तमे अकारकें एकार भेल अछि । एवम् *जान, गाब, पाब* इत्यादि ॥२९॥

ऊकारतिङ्कें *इअ* आदेश हो छन्दमे । क्रमशः महेशठाकुर ओ रमापति–

दिअ दरसन मन आतुर मोरा । *करिअ* कृतारथ लोचनजोरा ॥
तुअ पद प्रनत रमापति भान । *हेरिअ* पुत्र करिअ वरदान ॥३०॥

निमित्तभेदहुमे तिङ् ॥३१॥ पादक अन्त ह्रस्वकें दीर्घ ॥३२॥

जाहि निमित्तकें रहला सन्ताँ जे तिङ्प्रत्यय कहल अछि ताहि निमित्तसँ अन्य निमित्त रहलहु ओ तिङ् क्वचित् छन्दमे अबैत अछि । यथा, *अहाँ* वा *हम* कर्तृपद सन्ताँ ऊ तिङ् उक्त अछि; *अहाँ करू, हम देखू ।* से तिङ् के कर्तृपदहु सन्ताँ–

के करु उमत जमाए ।

एहिठाम आएल । एवम् *अब* तिङ् *अहाँ, हम कर्तृपदमे* अबैत अछि, से तदन्य कर्तृपदहुमे–

अङ्कुर तपन ताप यदि जारब कि करब वारिद मेह ।

एहिठाम आएल । एवम् इऐन्हि तिङ् इच्छामे अबैत अछि, *हमरा इच्छा जे हुनका देखिऐन्हि,* से भूतकालहुमे

सुनिऐन्हि *छथि गजरथ पर,* देखिऐन्हि *बूढ़ बड़द पर ।*
सुनिऐन्हि *पाट पटम्बर,* देखिऐन्हि *फटले बघम्बर ॥*

एहिठाम आएल । 'वर्तमानार्थक तिङ्कें अ, अहिँ' इत्यादि सूत्र जे कहल गेल अछि सेहो एहि सूत्रक प्रपञ्च जानब, हेतु जे *अ, अहिँ* इत्यादि प्रत्यय उक्ते अछि, से भेदहु सन्ताँ आएल ॥ ३१॥

पादक अन्त ह्रस्वकें दीर्घ होइत अछि । उदाहरण, क्रमशः गोविन्द, सरसराम, महेश, उमापति–

दिनमणि किरण मलिन मुखमण्डल घाम तिलक बहि गेला ।
कोमल चरन नयन पथ बालुक आतप दहन सम भेला ॥
अति उतफाल अनल से पसरल जेहि भसम भेल कुसुमसरा ॥
दिअ दरसन मन आकुल मोरा । करिअ कृतारथ लोचान जोरा ॥

नव मधुर मधुरस मुगुध मधुकर कोकिला रस भावही ।
जनि मानिनीजन- मान- भञ्जन मदन गुण गुरु गाबही ॥

छन्दमे जतेक विशेष कार्य कहल अछि से वैकल्पिक थीक तेँ पूर्वोक्तानुसारो छन्दमे प्रयोग हो । संक्षेपसँ छान्दस कार्य देखाओल अछि; एतद्भिन्नो महाकविप्रयोगानुसार छन्दक कार्यक अनुसन्धान कए लेब ॥३२॥

छान्दसप्रक्रिया समाप्त

परिशिष्ट प्रकरण

आदरमे केँ विभक्तिक स्थान काँ वैकल्पिक ॥१॥ एक पदमे अइकेँ ऐ ॥२॥ एव-अपिसँ पूर्व अवर्णोत्तरवर्ती ओकेँ ब ॥३॥ मस्थानिक केँ म ॥४॥

केँ एहि विभक्तिक स्थान काँ आदेश वैकल्पिक हो आदरमे । *गुरुजीकाँ वा गुरुजीकेँ बजबिऔन्हि । ओझाकाँ* वा *ओझाकेँ* आसन *दिऔन्हि* । विभक्त्यर्थ-प्रकरणमे द्वितीयाक स्थान काँ आदेश जे कहल अछि तकर आब प्रयोजन नहि ॥१॥

एक पदमे स्थित अइक स्थान ऐ आदेश वैकल्पिक हो । *जइतहिँ* वा *जैतहिँ* देखल, *मकै* वा *मकइ* । 'एक पदमे' ई कहलासँ *हम इहो कएल* एहिठाम ऐ आदेश नहि भेल ॥२॥

एव-अपिसँ पूर्व अवर्णसँ आगाँ स्थित ओकारक स्थान ब आदेश नित्य होइत अछि यदि अवर्ण तथा ओकार दुहू एकपदमे रहए । *जओ--जबे, जबो । छओ--छबे, छबो । नाओ--नाबे, नाबो । भाओ--भाबे, भाबो । नाबहिँ पार होइक पड़त ।* 'एक-पदमे' एकर अनुवृत्ति कएलासँ *हम ओएह कार्य करब* एहि ठाम ओकारकेँ ब आदेश नहि भेल ॥३॥

एव-अपिसँ पूर्व मस्थानमे व्यवहृत ओकेँ म आदेश हो । *नाओँ--नामे, नामो । गाओँ --गामे, गामो । ठाओँ करू, ठामे करू, ठामो करू ॥४॥*

सविभक्तिक विशेष्यक विलुप्तविभक्तिक विशेषणसँ पर एव-अपिकेँ अहि-अहु वैकल्पिक ॥५॥ अव्ययक विशेषणसँ नित्य ॥६॥

विलुप्तविभक्तिक जे विशेषणपद तकरासँ पर एव-अपिकेँ क्रमशः अहि-अहु आदेश वैकल्पिक हो, यदि विशेष्यपद सविभक्तिक अर्थात् श्रूयमाणविभक्तिक रहए । *एकहि घैलसँ* वा *एके घैलसँ कार्य भेल । एकहु* वा *एको घैलसँ कार्य होएत । एके घैल अनलहुँ* एहि ठाम विशेष्यपद सविभक्तिक नहि भेल, तेँ अहु आदेश नहि, किन्तु सामान्य सूत्रसँ एकारे भेल । *रामहिक बालककेँ अनाउ* एहि ठाम विशेषणपद श्रूयमाणविभक्तिक भेल, तेँ वैकल्पिक उक्त आदेश नहि, किन्तु सामान्य सूत्रसँ नित्ये ॥५॥

अव्ययक विशेषणसँ पर एव-अपिकेँ अहि-अहु नित्य होइत अछि । *गामहि देने गेलहुँ । घैलहि दए कहल । बालकहि लए मधुर आनल ॥६॥*

कर्तृसम्बन्धिबोधक शब्दार्थमे क्रियाफलक अविवक्षा ॥७॥ कीसँ सिद्ध पदमे एवकारक असम्बन्ध ॥८॥ *कनमा* आदिसँ परिमाणमे *ही* तद्धित ॥९॥ सेर-मोनशब्दान्तसँ ई ॥१०॥

कर्ताक सम्बन्धिकक बोध करओनिहार जे शब्द तकरा अर्थमे क्रियाक उद्देश्य फलक विवक्षा नहि हो। देवदत्त *अपना मायक सङ्ग काशी गेलाह*, एहि ठाम *मायमे* सहगमनरूप क्रियाक उद्देश्य सुरक्षितत्वरूप फलक विवक्षाक प्रतिषेधसँ देवदत्त *अपना मायक सङ्ग काशी गेल्थीन्ह* एतादृश प्रयोग नहि भेल ।।७।।

की शब्दसँ बनल जे शब्द (ककर, कोना, कखन इत्यादि) ताहिमे एवशब्दक सम्बन्ध (योजना) नहि हो। तस्मात् *ककरे लग* इत्यादि प्रयोग नहि भेल ।।८।।

कनमा आदिसँ परिमाणमे *ही* तद्धित अबैत अछि। *कनमाही पैली, पौआही, सेरही, मोनही* ।।९।।

सेरशब्दान्त ओ मोनशब्दान्त समाससँ परिमाणमे ईकारस्वरूप तद्धित आबए। *अधसेरी, अधमोनी, पसेरी* (चलोप), *एकमोनी* ।।१०।।

स्त्रीप्रत्यय ओ तद्धित दूहूक प्राप्तिमे पहिने स्त्रीप्रत्यय ।।११।। आदेशापन्न तृतीयासँ पूर्व *आना-टाका* क प्रथम आकेँ ह्रस्वता ।।१२।।

स्त्रीप्रत्यय तथा तद्धित-प्रत्यय दूहूक प्राप्ति सन्ताँ पहिने स्त्रीप्रत्यय आबए, पश्चात् तद्धित। *बतहिआ* एहि ठाम *बताह* शब्दसँ प्रथमतः इकाररूप स्त्रीप्रत्यय आएल, ततपश्चात् अनादरमे आकार तद्धित भेल ।।११।।

तृतीयाक स्थान एँ आदेश कहल गेल अछि, ताहिसँ पूर्व *आना* शब्दक ओ *टाका* शब्दक आकारकेँ ह्रस्व अकार आदेश होइत अछि। *अने सेर आलू देत, बारह अनेँ घृत। चारि टकेँ भगवानक मुकुट लेल* ।।१२।।

इच्छामे विहित तिङ् प्रेरणहुमे ।।१३।। अकर्मक अबन्तकेँ अबन्तकार्य नहि ।।१४।।

जे तिङ् इच्छा अर्थमे कहल गेल अछि से *अय, ऐक* इत्यादि प्रेरणहु अर्थमे अबैत अछि। *लोक कार्य देखए। तोँ दे अहिँ। हमहु देखी। अहाँ हमर कार्य करी* ।।१३।।

अकर्मक जे अबन्तधातु तकरा अबन्तनिमित्तक कोनो कार्य नहि हो। *करछु तबल, उजरी धबल, ई क्रिया फबल, मन नहि भबल, पानि सरबल*। आब अबन्त-धातु प्रकरणमे *सरब* धातुक उपादानक काज नहि, तथा 'अकर्मक लबकेँ' एहि सूत्रहुक प्रयोजन नहि ।।१४।।

परिशिष्टप्रकरण समाप्त

मैथिल-श्रोत्रिय-माण्डरवंशोद्भव *धर्मनाथ* प्रसिद्ध-फेकूशर्मतनूज

पण्डित श्रीदीनबन्धु झा

विरचित

मिथिलाभाषाविद्योतन (प्रथम खण्ड) समाप्त

मिथिलाभाषाविद्योतन

द्वितीय खण्ड

धातुपाठ